गाँव

मुल्कराज आनन्द

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

'THE VILLAGE'

का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

शिवदानसिंह चौहान

श्रीमती विजय चौहान

मूल्य : पांच रुपये पचास नये पैसे

प्रथम संस्करण : १९६३

प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

GAON :

MULKRAJ ANAND : NOVEL

गाँव

गांव

जब निहालसिह नंदपुर स्टेशन के होल से बाहर निकला तो उसकी हृष्ट-पुष्ट टांगें सुन्न पड़ गई थीं क्योंकि उसने मानाबाद से नंदपुर तक दस मील का सफर थर्ड क्लास के डिब्बे में किया था जो भीड़ से खचाखच भरा था।

साफ-सुथरे धूप में नहाए अहाते में पहुंचकर, जहां टूटे हुए सफेद पत्थर बिखरे पड़े थे और लाल ईटों की इमारत से ताज़ी कोलतार की गन्ध आ रही थी क्योंकि इमारत के बाहरी हिस्से पर कोलतार पोती गई थी, निहालसिंह क्षण-भर के लिए ठिठक गया। वह देख रहा था कि हमेशा की तरह उसके बेटों में से कोई उसे लेने आया है या नहीं, लेकिन अहाते में सिर्फ रेलवे के कुली की बीवी थी जो चूज़ों को बासी दाल खिला रही थी।

निहालसिंह ने मोटे तलेवाले चमरौधों को ज़मीन पर पटका। इस डर से कि जूते कहीं ट्रेन में न छूट जाएं, वह उन्हें हाथ में पकड़े हुए था। जूते पहनते वक्त उसके सांवले चेहरे पर शिकन पड़ गई। सत्तर बरस की उम्र में भी निहालसिह का धूप-पानी में मोर्चा खाया हुआ चेहरा खूबसूरत दिखाई देता था। उसने सफेद चद्दर में बंधी गठरी को पीठ पर लादा और दायें हाथ में लाठी पकड़कर अपने गांव के लिए चल पड़ा, जो करीब डेढ़ मील दूर था।

अचानक इंजन ने ज़ोर से सीटी दी। बूढ़ा चौंक गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह घबराहट में सिर से लेकर पांव तक कांप उठा। वह इस तरह खड़े होकर पैर हिला रहा था जैसे डर के मारे उसका पेशाब निकल गया हो। ठिठककर अनायास ही उसने पीछे मुड़कर स्टेशन की तरफ देखा। फिर वह मुस्कराया। उसने झेंपकर चोरों की तरह आसपास देखा कि कहीं किसीने उसे सीटी की आवाज़ से भयभीत होते तो नहीं देख लिया। जब से मानाबाद से नंदपुर तक रेल लाइन बनी थी, लोग इंजन की सीटी सुनने के अभ्यस्त हो गए थे। निहालसिंह ने

छाती पर हाथ रखकर जोर से एक गर्म सांस ली।

हाथी की सूंड जैसे पंप में से पानी लेने के बाद इंजन ने ज़ोर से फूत्कार करके सीटी मारी और वह 'छक-छक, फक-फक' करता हुआ, ख़ेतों पर धुएं का बादल छोड़ता हुआ चला गया।

बूढ़े ने अपने को संभाला और काले धुंए के बादलों को कनखियों से देखने के बाद वह गांव की तरफ चल पड़ा।

"बापू!" उसके सबसे छोटे बेटे लालसिंह की आवाज़ सुनाई दी जो भागता हुआ उसकी तरफ आ रहा था। भागते-भागते उसकी सांस फूल गई थी और उसका चेहरा लाल हो गया था।

"आओ लालू बेटे।" निहालसिंह ने एक भारी सांस लेकर कहा। अभी तक वह पूरी तरह से सुस्थिर नहीं हो पाया था। "यह मशीन बिलकुल शैतान की तरह है। इसकी वजह से तो मेरा कलेजा धड़कने लगा था। वाह गुरु! वाह गुरु! और इसका धुआं तो खेतों का सत्यानास कर देता है, फसलें जल जाती हैं। मुझे खुशी है कि रेल की पटरी के पास मेरा कोई खेत नहीं है। ज़रा सोचो तो सही, अगर हमारा नया अनाज इन इंजनों के गंदे धुएं और चिंगारियों से जल जाता तो क्या होता! दिन-रात, रात-दिन ये इंजन पत्थर के कोयले की चिन्गारियां और धुआं छोड़ते हैं। घोर कलियुग आ गया है।"

"लेकिन इंजन कितनी बहादुरी से 'छकछक-फकफक' करता उत्तर की तरफ जाता है!" लालू ने जवाब दिया। उसके खूबसूरत, गुलाबी चेहरे पर शरारत-भरी बालसुलभ मुस्कान फैल गई थी। बचपन में निहालसिंह का जब दुनिया से वास्ता पड़ा था तो उसका चेहरा भी हू-ब-हू इसी तरह का था। "अगर मैं ड्राइवर बनकर रेलगाड़ी के साथ लाहौर और बम्बई जा सकूं तो मुझे बुरा नहीं लगेगा। बापू, तुम चाहे जो कहो, लेकिन तुम भी पीठ पर लादकर अनाज की बोरियां मानाबाद और शेरकोट पहुंचाना पसन्द नहीं करोगे। बैलगाड़ी हांकनेवाले रास्ते में बीसियों बार बीड़ी पीने और बैलों को चारा डालने के लिए रुकते हैं। कई बार वे नशे में धुत हो जाते हैं और उन्हें मानाबाद और शेरकोट तक पहुंचने में दो दिन और कभी-कभी एक और रात भी लग जाती है। लेकिन मालगाड़ी से कोई भी चीज़ एक घंटे में शहर पहुंचाई जा सकती है।"

"तुम बेवकूफ हो।" निहालसिंह ने अधीर और क्रुद्ध स्वर में कहा, "तुम नहीं

सोचते कि मालगाड़ी से माल भेजने में दोनों तरफ के गोदाम के बाबुओं को रिश्वत देनी पड़ती है। चुंगीवाले राक्षसों की नज़र बचाकर कोई भी चीज़ नहीं निकाली जा सकती। बैलगाड़ी को तो सौ तरीकों से छिपाकर शहर ले जाया जा सकता है।"

"अच्छा बापू, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," लालू ने विनोदपूर्वक कहा, "लेकिन आओ तुम्हारी पीठ पर से गठरी उतार दूं। भारी होगी।"

"नहीं पुत्तर, इसका ज्यादा वज़न नहीं," बूढ़े ने सर हिलाकर कहा। उसने पूरब की तरफ देखा जहां सूरज कभी का निकल चुका था। बुढ़ापे में भी निहालसिंह की आंखों की रोशनी मंद नहीं हुई थी। सड़क पर कीकर के पेड़ों की विरली पत्तियों से धूप की तेज़ रोशनी छनकर आ रही थी। उसकी चमक से बूढ़े की आंखें चौंधिया गईं और वह समतल ज़मीन की तरफ देखने लगा।

क्षण-भर के लिए बाप-बेटे के बीच तनावभरी खामोशी छाई रही और वे तेज़ी से कदम बढ़ाने लगे। उनकी बायीं तरफ से रेल गुज़र रही थी; लगता था, रेल की गति से उन्हें भी अपनी चाल तेज़ करने की प्रेरणा मिली थी। रेलवे लाइन से मिलनेवाला पक्की सड़क का टुकड़ा खत्म हो गया और धूलभरी, ऊबड़-खाबड़ कच्ची सड़क शुरू हुई। हवा में एक सुहानी कुनखी थी, चिड़ियों की चहचहाहट और कौओं की कांव-कांव में रॉबिन पक्षी के गीत के स्वर सुनाई दे रहे थे।

निहालसिंह ने चैन की सांस लेकर कहा, "भीड़भाड़वाले तंग शहर से निकल-कर जान में जान आई है। यहां का पानी और हवा साफ है···"

और उसने सूखे पत्तों से भरे गड्ढों को देखा जिनपर धूल और कीचड़ जमा हो गई थी। उसने जामुन और कटहल की गेरुई और सुनहरी डालों को देखा। जहां कीकर के पेड़ों की कतार खत्म होती थी। वहां करीब आधे दर्जन सफेदे के ठिगने पेड़ खड़े थे, जिनके तनों से लम्बी लताएं सांप की तरह लिपटी हुई थीं। यहीं से नीम के पेड़ शुरू होते थे। जल्द ही पतझड़ आनेवाला था।

और फिर निहालसिंह की नज़र सड़क के किनारे की ऊसर ज़मीन में उगी धूसरित नागफनी और कंटीली झाड़ियों से हटकर खेतों को सींचनेवाली छोटी नहर के किनारों पर उगे सरकंडों पर गई। पेड़ों से पत्ते झड़ रहे थे, हालांकि दूर कुओं के आसपास पेड़ों के झुरमुट अभी भी हरे थे।

"बस ज़रा-सी ठंडी हवा चलेगी या बारिश आएगी तो सारे पेड़ नंगे हो

जाएंगे," बूढ़े ने यह बात लालू से ज़्यादा अपने को संबोधित करके कही। ऐसा लगता था जैसे मौसम के ख्याल ने उसे प्रफुल्लित कर दिया हो। "और फिर, वाह गुरु की कृपा से फसलें तैयार हो जाएंगी···लेकिन पता नहीं क्या होगा।" वह परेशान हो गया और उसकी खुशी एक घबराहट-भरे सन्देह में बदल गई।

"क्यों बापू ?" लालू ने आतुर स्वर में पूछा।

"क्योंकि ज़मीन के मुकदमे का अभी फैसला नहीं हुआ और कल मैंने मंडी में जो रुई और मक्की बेची थी, उससे तो लगान देने के लिए भी पैसे वसूल नहीं हो सके। हमें लगान जल्द ही अदा करना है। हमारी किस्मत में क्या लिखा है यह तो सिर्फ वाह गुरु ही जानता है···" निहालसिंह की भंवें सिकुड़ गई और वह लालू से नज़रें बचाकर आसपास देखने लगा।

उसकी नज़र ज़मीन पर फैली कंटीली झाड़ियों के पीले, झबरीले गोल गेंद-नुमा फूलों पर पड़ी जिनकी चमक सुबह की रोशनी से होड़ कर रही थी। धूल में भी वे फूल पनप रहे थे। निहालसिंह को झरते हुए पत्तों, फूलों और बदलते हुए मौसम की अदाओं में एक विषादपूर्ण सुख मिल रहा था। पर उस मौसम के संदेशवाहक थे सरसराती हवा के वे शर्मीले झोंके, जो उसके चेहरे को छू रहे थे।

"बापू, अगली बार फसल बेचने के लिए मुझे भेजना," लालू ने कहा, "अगर तुम मुझे उस वकील से मिला दो तो मैं जल्द ही उसे मुट्ठी में कर लूंगा।"

"नहीं पुत्तर, ऐसी बातों में होशियारी बरती जाती है," निहालसिंह ने कहा।

"होशियारी की ऐसी-तैसी," लालू ने तैश में आकर कहा, "मैं उनके सिर फोड़ दूंगा और उन्हें ऐसा सबक सिखाऊंगा कि वे ज़िन्दगी-भर याद रखेंगे। सब लोग तुमसे फायदा उठाते हैं, सूअर कहीं के···क्योंकि तुम बूढ़े हो···"

"अगर हम हाथ चला सकते हैं तो उनमें से कुछ बनिये ज़बान चला सकते हैं," निहालू को न चाहते हुए भी बनियों की तारीफ करनी पड़ी। "और बिना बनिये के क्या मंडी चल सकती है ?···यह ठीक है कि मैं बूढ़ा हो रहा हूं···" उसने दुःखी स्वर में कहा। बिना मेंड़ के एक खेत की पगडंडी पर से गुज़रते हुए बूढ़े ने सिर झुका लिया। "अजब बात है कि मैं जब भी शहर जाता हूं, अपने को मौत के नज़दीक पाता हूं," वह बड़बड़ाया।

"क्योंकि उन चालाक सूअरों से सौदेबाज़ी करते-करते तुम थक जाते हो,"

लालू ने झगड़ालू स्वर में कहा, "मैंने तुमसे कहा न बापू, वे लोग तुम्हारे बुढ़ापे का फायदा उठाते हैं।"

"हां, यह सच है। मैं बूढ़ा हो रहा हूं।" निहालसिंह ने अपनी बात दुहराई, "लेकिन मुझे मानावाद शहर कभी पसन्द नहीं आया। उसे मादर···फिरंगियों ने बनाया है। मुझे न फिरंगी और न उनके तौर-तरीके ही पसन्द हैं। उन्होंने सिख राज को तो खत्म कर दिया और हरबंससिंह जैसे चोरों का साथ दिया, जिन्होंने अपनी कौम के साथ गद्दारी की थी और नेक लोगों का कत्ल किया था।"

"कसूर तो गद्दारों का है और उस काने रणजीतसिंह का है," लालू ने चपल स्वर में कहा।

"ओए नई ! ओए नई !" बूढ़े ने अधीर स्वर में प्रतिवाद किया, "उन टोपी-वाले लालमुंहों को हरा देते अगर···"

क्षण-भर के लिए गुस्से से उसका गला रुंध गया। उसे लम्बी गलमुच्छों और अजब पोशाकवाले गोरों का ख्याल आया, जिनके खिलाफ वह साठ बरस पहले लड़ने गया था। "जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो तुम्हारी तरह निकम्मा नहीं था। पंथ की फौज में मुझे पूरी तनख्वाह मिलती थी," निहालसिंह ने लालू को धिक्कारा।

पंथ का नाम लेकर उसने अपने दायें हाथ से जूड़े के पास पगड़ी से लिपटे गेंदे के फूलों के हार को छुआ, जो आज सुबह उसे गुरुद्वारे से मिला था। फूलों का स्पर्श उसे ठंडा मालूम हुआ। उसने श्रद्धापूर्वक हार को पगड़ी से सटा दिया और बांहें नीचे लटकाकर चलने लगा। उस समय उसका हृदय धार्मिक भावना से ओतप्रोत हो रहा था। हर रोज़ सुबह ग्रन्थ साहब के सामने सिर झुकाने की पुरातन रस्म पूरी करने के बाद उसे ऐसा ही महसूस होता था। हालांकि बरसों तक दुहराए जाने से यह भावना केवल औपचारिक बनकर रह गई थी। फूलों के स्पर्श ने उसकी धार्मिक श्रद्धा और अतीत की स्मृतियों को गहरा कर दिया था। उसने फिर अपने जवानी के दिनों के कारनामों की घिसी-पिटी कहानी शुरू की।

"ओए पुत्तर, तू नहीं जानता, अलीवाल में पंथ के साथ कैसी गद्दारी की गई थी। खालसों ने दरबार साहब का पवित्र पानी पीकर कसम खाई थी कि वे महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद एक हो जाएंगे। अगर दुष्ट मंत्री गद्दारी न करते तो फिरंगी कभी पंजाब को न जीत सकते। पंचायत को वज़ीर जवाहर-

सिंह के फिरंगियों के नाम लिखे खत मिले। हर आदमी ने मांग की कि उस बदमाश को सजा देनी चाहिए।...''

हमेशा अपने आस्थाहीन बेटे को कायल करने की कोशिश में निहालसिंह का दिल जायज़ गुस्से से तिलमिला उठता था। ''यह था इन्साफ,'' उसने गुस्से से कहा, ''ये फिरंगी बरसों तक मुकदमे को लटकाते हैं, मुकदमे को एक के बाद दूसरे मजिस्ट्रेट की अदालत में भेज देते हैं, जब तक वकील सारा पैसा नहीं खा जाते।''

''इसमें हमारा कसूर है,'' लालू ने हंसकर कहा, ''तुम यह मुकदमा मुझे लड़ने दो। मैं जल्द ही दुश्मनों की गरदन मरोड़कर रख दूंगा।''

''ओए पुत्तर!'' निहालसिंह भावुकता में अपने बेटे के व्यंग्य को भूल गया था, ''वह सचाई का ज़माना था जब जवाहरसिंह की बीवियां अपने पति की चिता पर बैठकर सती हुई थीं, वह कैसा शानदार नज़ारा था। सिपाहियों ने अपने पागलपन से उनकी कुर्बानी की पवित्रता को नष्ट कर दिया, औरतों के ज़ेवर लूट लिए और उनके कानों से कर्णफूल उतार लिए।''

''फिर भी वह सचाई का ज़माना था बापू!'' लालू ने छेड़खानी की।

''शायद इसी कसूर की वजह से खालसों का पतन हुआ था,'' वह ज़ोर से बोला। फिर वह क्षण-भर के लिए ठिठक गया, मानो वह उस भाग्यनिर्णायक दिन को कल्पना में देख रहा हो जब सतलज के किनारे अलीवाल की लड़ाई लड़ी गई थी। फिर वह अपने को सम्बोधित करते हुए बोला :

'मरा हुआ आदमी घोड़े के पास नहीं लौट सकता,' वह बुदबुदाया, 'और वे औरतें मर चुकी थीं। लेकिन हमें जवाहरसिंह की गद्दारी पर इतना गुस्सा था कि हमें न तरस आया न गुस्सा आया। हम गुरुओं के हुक्म के मुताबिक सत बचन कहकर पंथ की सेवा में जुट गए। मैं कंधे पर बन्दूकें लादकर चलता था और घोड़ों के लिए घास काटता था।

'कश्तियां खेकर नदी के पार पहुंचता था। फौजी लंगरों में खाना पकाता था। और बर्तन मांजता था। ओए पुत्तर, तेरे बापू ने ज़िन्दगी में कुछ कर दिखाया है! कुछ कर दिखाया है! लेकिन फिरंगियों के पास ज़्यादा तोपें थीं और हमारे पक्ष की बागडोर गद्दारों के हाथ में थी। मुड़की में खालसों ने लाल मुंहवाले बन्दरों को तोपों में सरसों के बीज डालकर डराया—वे पूरे सौ बमों जैसा धमाका करती

थीं। लेकिन अलीवाल में—ओए, मैं नहीं जानता उस दिन हमारी किस्मत को क्या हो गया था। लेकिन पुत्तर ! मैंने भी कुछ कर दिखाया था। मैं दुश्मन की छावनी में जासूसी करने गया था। अंधेरे में भी मुझे डर नहीं लगा था। एक संतरी घंटी के आकार के तम्बू की रखवाली कर रहा था। मैं ऊंघते हुए संतरी पर झपटा और उसे खत्म कर दिया। ज़िन्दगी में पहली बार मैंने किसी आदमी का खून किया था। मैं अगर चाहता तो तंबू फाड़कर भीतर के लोगों को भी कत्ल कर सकता था। लेकिन संतरी की लाश इतने ज़ोर से ज़मीन पर गिरी थी कि सारे फिरंगी चौंक पड़े। वे भीतर बैठकर डबल रोटी के साथ चाय पी रहे थे। ···और फिर पुत्तर मैं वहां से भाग आया। जीतकर···जीतकर···'

अपने ही शब्दों की आभा से उसका चेहरा लाल हो उठा। तेज़ कदमों से चलते हुए वह सूरज की हंसी में नहाई ज़मीन को देख रहा था, और ठूंठों से भरे एक अनजुते खेत को देखकर सिर हिला रहा था। उसकी स्मृतियां हवा के झोंकों की तरह तेज़ और बिखरी हुई थीं, लेकिन अनवरत भावावेश की लड़ियों में पिरोई होने के कारण वे युद्ध के दिनों के उन्माद का पुनर्जागरण मालूम देती थीं।

वह ज़ोर से बोला, "खालसा कितनी बहादुरी से लड़े थे, ओए पुत्तर, काश तू वहां होता। बल्ले, बल्ले ! और जब वे ज़ख्मी हो गए और लड़ने से बेकार हो गए तो उन्होंने नदी में कूदकर जान दे दी···अगर जरनैल तेजासिंह गद्दारी न करता तो जीत हमारी ही होती। घमासान लड़ाई में हमने सैकड़ों फिरंगियों को मौत के घाट उतार दिया था और उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया।"

"बापू, तेजासिंह क्या हरबंससिंह का बेटा था ?" स्थानीय घटनाओं का ब्यौरा सुनकर उसकी जिज्ञासा उमड़ पड़ी थी।

"हां, पुत्तर, वही सूअर नन्दपुर के इस नामुराद खानदान का पुरखा था। जब वह भाग गया तो सिपाहियों ने देखा कि इस गद्दार ने कश्तियों के पुल को तोड़ दिया था, ताकि फिरंगी उसका पीछा न कर सकें। लेकिन जिन्होंने दरबार साहब में बैठकर अमृत छका था, वे उसके पीछे नहीं जाना चाहते थे। वे चाहते तो तैर कर नदी पार कर सकते थे, लेकिन उन्होंने दुश्मन की तोपों के सामने अपने चौड़े सीने तान दिए और गुरु ग्रन्थ साहब का जै-जैकार करते हुए मौत के मुंह में कूद पड़े। हममें से कुछ ने सब कठिनाइयों के बावजूद सचाई की मशाल को जलाए रखा। नेक जरनैल शामसिंह, जो गुरु गोविन्दसिंह का पूरा अवतार था,

रेशमी चोगा पहने सफेद घोड़ी पर घमासान लड़ाई के बीच बिजली की तरह लपकता रहा। सुना है कि उसने गुरुओं का नाम लेते हुए अपने प्राण दिए।

"मैंने भी बडी तकलीफें झेली हैं, पुत्तर। मैं भी उसी जगह लड़ रहा था और फिर मेरी टांग में ज़ोर का दर्द हुआ और मैं चकराकर खड़गसिंह के पास गिर पड़ा, जो तुम्हारी नानी का चचेरा भाई है। अंग्रेज़ डागदर के तम्बू में पहुंचकर मुझे होश आया···उसकी लाल दाढ़ी और मुस्कराहट बिलकुल तुम्हारे दादा जैसी थी···

"लेकिन ये अंग्रेज़ लोग बड़े चालाक और मक्कार हैं। साहब ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'सत् श्री अकाल।' भला इस डागदर ने पंथ का नारा कहां से सीखा? ये लोग हमारी नस-नस से वाकिफ हैं। हम भी अपने को इतना नहीं पहचानते।

"लेकिन वह बड़ा मेहरबान था। जब उसने मुझे बहुत मजबूर किया तो मैंने अंग्रेज सरकार की वफादारी की कसम खा ली और फिरंगियों को माफ कर दिया। सिर्फ एक बात मैं नहीं भूल सकता। फिरंगियों ने पंजाब पर धोखे से कब्ज़ा किया है। तेजासिंह को ज़मींदार बना देना, कैसा अंधेर है, लोगो! सरकार की इस ठगी की वजह से ही हमारे पल्ले पच्चीस की बजाय सिर्फ दस एकड़ ज़मीन रह गई। और उस गद्दार की मौत के बाद उसके बेटे हरबंस की इतनी जुर्रत कि उसने तुम्हारे दादा के जाली दस्तखत बनाकर हमसे पांच एकड़ ज़मीन और छीन ली? कहता है, तुम्हारे दादा ने यह ज़मीन गिरवी रखकर उससे कर्ज़ लिया था। ज़ुल्म है। झूठों का ज़माना है। मेरे बापू तो तेजासिंह की दाढ़ी पर थूकते भी न। गंदा, बदतमीज़, सूअर! हरबंससिंह और उसका लुच्चा खानदान! ओह, मुझे इन चोर, लुटेरे और खून चूसनेवाले कुत्तों से कितनी नफरत है। मैं भी इन्साफ करवा के ही रहूंगा, चाहे मुझे अपनी पांच एकड़ ज़मीन के लिए दस साल तक मुकदमा लड़ना पड़े।" उसने इतनी ज़ोर से ज़मीन पर पैर पटका कि उसकी टांगें लड़खड़ा गईं और वह गिरते-गिरते बचा।

लालू ने हाथ बढ़ाकर फूहड़ ढंग से अपनी हमदर्दी जतलाई। हालांकि बार-बार दुहराई जाने से यह कहानी बासी पड़ गई थी, फिर भी लालू को जोश आ जाता था लेकिन बूढ़े बाप का लिहाज़ करके वह अपने जोश को शब्दों में प्रकट नहीं करता था।

तेज़ चिलचिलाती धूप में लालू ने अनजुते खेतों की झुलसी हुई लाल मिट्टी को देखा। फिर उसकी नजर सफेद सड़क की तरफ गई जो दूर जाकर खो गई थी।

"मैं बदला लेकर रहूंगा। मैं उन्हें सबक सिखाऊंगा," बूढ़े का सहज क्रोध फिर उभर पड़ा, "चाहे मुझे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े। मेरे जीते जी अगर यह मामला तै न हुआ और अगर तुम मेरी असली औलाद हो तो तुम अपनी मरदानगी दिखाना और उन दुश्मनों का नाश करना जिन्होंने हमसे हमारा जायज़ हक छीना है।"

लालू ने सिर उठाकर अपने बाप के गंदुमी चेहरे की तरफ देखा, जिसका रंग पके अनाज की बालियों जैसा हो गया था। क्रोध और आवेश की थकान से उसका गला रुंध गया था, अधखुले मुंह से झाग बह रहे थे, बौराए कुत्ते की तरह उसने गहरी सांस ली और उसका भावावेश दम तोड़नेवाली खांसी में बिखर गया। खांसते-खांसते उसकी आंखों में पानी आ गया, "बापू, यह गठरी मुझे दे दो। तुमसे इतना वज़न नहीं उठाया जायगा।"

निहालसिंह क्षण-भर के लिए रुका और उसने हठपूर्वक अपना सर हिलाया। वह अपनी लाठी की मूंठ का सहारा लेकर खड़ा था। उसने ज़मीन पर थूका और हल्की-सी सांस लेकर अपनी आंखें खोलीं और फिर एक ठंडी आह भरी। लगता था कि क्रोध का परदा उठाकर बाहर झांकने पर उसे अंधेरा नज़र आया था।

आस-पास शान्त धरती फैली थी। नई फसल बोने के लिए जहां हल चलाए गए थे, वहां से सोंधी, सीली गंध उठ रही थी।

उस सोंधी निस्तब्धता से जैसे निहालसिंह की आत्मा में पूर्वज्ञान जागा और वह अस्फुट स्वर में बोला, "शर्म करो! तुमने अभी परमात्मा को नहीं देखा।" फिर ईश्वर की कृपा पाने के लिए उसने अत्यन्त दीन और भक्तिभाव से एक गहरी सांस ली। चलते-चलते उसने कहा :

"हे परमात्मा! मैं एक तुच्छ प्राणी हूं।"

लालू ने भीरु स्वर में पूछा, "तुम्हारी तबियत तो खराब नहीं, बापू?" उसे उम्मीद थी कि उसका बापू इस सवाल को बदतमीज़ी नहीं समझेगा।

"भाई रे इहो सिर जाणहु काल, जिऊं मच्छी तिऊं माणसा पवै अचिंता जाल"

बूढ़ा अत्यन्त भक्तिभाव से अपने बेटे को चुप रखने और अपनी अन्तरात्मा

को सान्त्वना देने के लिए गा रहा था।

लेकिन लालू के लिए ईश्वर एक अदृश्य वस्तु थी और उसका बूढ़ा बाप उसे बेहद अकेला, अयोग्य मालूम हो रहा था, लगता था कि उसके गुनाह माफ नहीं किए गए थे।

"बापू लाओ, तुम्हारी पीठ से गठरी मैं उठा लूं।" लड़के ने फिर आग्रह किया।

"नहीं पुत्तर नहीं," निहालसिंह ने हठपूर्वक कहा, "मैं बूढ़ा हो रहा हूं पुत्तर। बस बात सिर्फ इतनी है। मैं बूढ़ा हो रहा हूं।"

उसने यह शब्द इस तरह दुहराए जैसे वह प्रार्थना-गीतों का असर मिटा देना चाहता हो, ताकि किसी कीमत पर भी उसे 'मौत' शब्द न दुहराना पड़े, क्योंकि जवानी से लेकर अधेड़ उम्र तक वह सभी शक्तिशाली और प्रबल इच्छा-शक्तिवाले आदमियों की तरह सोचने लगा था कि वह कभी नहीं मरेगा।

"बापू, तुम्हें महन्त नंदगीर के सामने जाकर माथा टेकना चाहिए," लालू ने अपनी आवाज में व्यंग्य छिपाते हुए कहा।

"पता नहीं क्या बात है पुत्तर," निहालसिंह ने कहना शुरू किया, "आज सुबह मैंने खाली पेट पानी ज़रूर पिया था, लेकिन चुल्लू-भर पानी से आखिर इतना नुकसान कैसे हो सकता है क्योंकि बाद में मैंने गुरुद्वारे से बाहर आकर पूरियां और हलवा भी खाया था, और एक लोटा लस्सी पी थी।"

"इस बार फसल बेचने में तुम्हें जो नुकसान हुआ है, उसका तुम्हें इतना रंज नहीं होना चाहिए था। मानाबाद जाने से पहले ही तुम्हें मालूम था कि अनाज का भाव गिर रहा है। रही मुकदमे की बात, तो तुम जानते हो कि खून चूसनेवाला बालमुकन्द कैसा आदमी है। वह अपने को वकील कहता है लेकिन उसके दिमाग में तोते जितनी अक्ल भी नहीं है।"

"मैं चाहता हूं, यह मामला खत्म हो जाए। मैंने उस गू खानेवाले कौए को जो दलीलें बताई थीं, अगर वह उन्हें कचहरी में पेश करता तो मजिस्ट्रेट ने बहुत पहले ही हमारे हक में फैसला दे दिया होता······और मैं चाहता हूं कि वह ज़मीन हमें वापस मिल जाए, ताकि तुम्हारी तीन बहनों ईशरी, मेली और अकी की शादियों में और तुम्हारे बड़े भाई शमंसिह की शादी में हमने जो कर्ज़ सेठ चमनलाल से लिया था, उसे अदा कर सकें······लेकिन सब कुछ वाहे गुरु के हाथों

में है।"

"हां, हमें वाहे गुरु और उसके सेवादारों की सेवा करनी चाहिए, अगर हम योग्य साबित हुए तो हमें ईश्वर की कृपा मिलेगी," लालू ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"ओए, कुफ्र मत बक, बेवकूफ," निहालसिंह ने प्रतिवाद किया। "जिस ईश्वर ने हमें गीला किया है वही हमें सुखाएगा भी !"

"ईश्वर का नाम ज़रूर लो, लेकिन अपनी नाव को चट्टानों से बचाकर खेवो। मैं इस पगडंडी से बिजलीघर जाता हूं और देखता हूं कि मिस्त्री ने फावड़े की मरम्मत की है या नहीं। तुम अपनी गठरी तो उठाने नहीं देते, इसलिए मेरा यहां कोई काम नहीं है," लालू ने कहा।

निहालू ने बेटे को पीछे से आवाज़ दी, "दिन-भर वहां बैठके गप्पें मत मारना !" और आगे चल पड़ा।

आगे जाकर सड़क तंग हो गई थी और नई नहर का पुल शुरू हो गया था। दिल्ली के दरबार में जब जार्ज पंचम का अभिषेक हुआ था तो उसके हुक्म से रावी और चिनाव के बीच के इलाके को सींचने के लिए यह नहर बनाई गई थी। इस नहर की वजह से निहालसिंह का लगान और भी बढ गया था और उसे उस बिजलीघर से चिढ़ हो गई थी, जिसे पानी में से बिजली तैयार करने के लिए बनाया जा रहा था। लाल रंग के बिजलीघर से दिन-भर लाल गर्जन की आवाज़ आती रहती थी। कलयुग की शैतानी मशीनों का रहस्य निहालसिंह की समझ में अभी तक नहीं आ सका था, हालांकि उसका बेटा हमेशा कहता था कि ये मशीनें बड़ी चतुर हैं और बड़े-बड़े चमत्कार कर दिखाती हैं।

पानी गिरने की तेज़ आवाज़ सुनकर उसे कंपकंपी महसूस हुई। उसे अपना शरीर रेत के टीले की तरह भुरभुरा मालूम हुआ। जाड़े के दिन शुरू हो गए थे।

उसने अपनी चाल तेज़ कर दी।

इसी वक्त उसे ज़मींदार की चारे से लदी हुई बैलगाड़ी दिखाई दी। मरियल बैलों को देखकर वह कटुतापूर्वक मुस्कराया, क्योंकि वह जानता था कि उस कोढ़ी हरबंससिंह के पास बेशुमार दौलत थी, जो उसे अपने बाप-दादों से विरासत में मिली थी। फिर भी वह अपने बैलों का पेट काटकर चारे को मंडी में बेचने के लिए भेजा करता था।

निहालसिंह बड़ी मुश्किल से एक बड़े पत्थर पर चढ़कर खड़ा हो गया, ताकि वह

बैलगाड़ी के पहियों से उड़नेवाली धूल और कीचड़ से बच सके। लेकिन भारी पहियों को खींचने में बैलों को ज्यादा वक्त लग गया, हालांकि तगड़ा मुसलमान गूंगा उन्हें बेरहमी से पैना मारकर हांक रहा था। गूंगे ने सर घुटवा रखा था और वह नीले और लाल रंग के चारखाने की तहमद पहने था।

निहालसिंह ने नीचे उतरकर आवाज़ दी, "ओए, गाड़ी को जल्दी से निकालकर ले जा।"

लेकिन इसी वक्त दायें बैल ने निहालसिंह की तरफ इस तरह देखा जैसे उसे अपने मालिक का पुश्तैनी दुश्मन नज़र आ गया हो, और उसने जूए में से गरदन निकाल ली। गूंगे ने ज़ोर से रास खींची और भयभीत बैल की पूंछ मरोड़कर कहा, "मैं तेरे चाम की जूतियां पहनूंगा, मर जा तू, तेरी मां मर जाए!"

बैल फिर जूए तले आ गया। गूंगे ने बेरहमी से दूसरे बैल की पीठ में पैर से ठोकर लगाई और उसे पैने से मारा। जब बैलगाड़ी चल पड़ी तो वह ज़ोर से चिल्लाया, "सत सिरी अकाल, बाबा निहालसिंह तुम शहर गए थे क्या?"

"जीते रहो पुत्तर। हां, मैं शहर गया था," बूढ़े ने अपनी पैनी दृष्टि से गाड़ी का निरीक्षण करते हुए कहा, "देखता हूं तुम चारे के नीचे अनाज छिपाकर ले जा रहे हो।"

"उस कंजूस के खलिहान से अगर मैं अनाज की दो-चार बोरियां ले भी आऊं तो क्या हर्ज है? तुम नहीं जानते, वह मुझे कितनी कम दिहाड़ी देता है," गूंगे ने आंख मारी और मुस्कराकर कहा।

"खाली पेट से आधी रोटी मिल जाए तो बेहतर है। उस ठग को यही बदला मिलना चाहिए। पुत्तर, अनाज उठा सकते हो, उठाओ। उसकी पाप की दौलत इसी तरह चोरी में जाएगी," और निहालसिंह आगे चल पड़ा। उसकी प्रतिशोध-भावना को नया प्रोत्साहन मिल गया था। निहालसिंह की चाल तेज़ हो गई।

इसी वक्त नहर के ऊपर बने पुल पर गधों का एक झुंड भागता हुआ गुज़रा। उनपर लाला भगतराम ठेकेदार के भट्ठे की ईंटें लदी थीं। पीछे-पीछे एक गधे पर शेखू कुम्हार था, जो आजकल बर्तन तैयार करने की बजाय ईंटों के भट्ठे में मज़दूरी करता था।

"ओए, उल्लू के पट्ठे! कितनी धूल उड़ा रहा है!" बूढ़े ने दूर से चिल्लाकर कहा। वह जल्द से जल्द घर पहुंचकर आराम करना चाहता था।

"सत सिरी अकाल बाबा," लड़के ने अदब से कहा। उसने बाबा की झिड़कियां सह ली थीं, और बेरहमी से गधों को सोंटी मार रहा था। गधे खतरनाक चाल से चलने लगे। निहालसिंह घबराकर कभी एक पैर का सहारा लेता था कभी दूसरे का। उसका ख्याल था कि एकाध गधा ज़रूर नीचे खड्ड में गिरेगा जहां से पानी की तेज़ आवाज़ आ रही थी।

"तुम्हें किसी बात का डर नहीं है क्या, शैतान!" बूढ़े ने कुम्हार छोकरे को डांटा। "कोई गधा ज़रूर तुझे दुलत्ती मार देता और तू नहर में गिर पड़ता।"

"नहीं, बाबा निहालू। इस नहर में तो मैंने अक्सर लालसिंह के साथ गोते लगाए हैं," छोकरा लापरवाही से बोला।

बूढ़े ने गुस्से से ऐंठकर कहा, "लालू तो मौत के मुंह में जाता है, मैं उसकी पिटाई करूंगा।" लेकिन अपने बेटे के दोस्त के लिए उसके मन में स्नेह उमड़ पड़ा। उसने पूछा, "इन ईंटों को लेकर कहां जा रहे हो?"

"बिजलीघर," लड़के ने कहा।

"लालू भी वहीं होगा। वह अभी यहां से गया है।"

"अगर तुम कुछ देर रुक जाओ तो मैं तुम्हें गधे पर घर पहुंचा दूंगा या गठरी को पहुंचा दूंगा।" छोकरे ने कहा।

"नही पुत्तर, जीते रहो। गांव दूर नहीं है। मैं पहुंच जाऊंगा," बूढ़े ने कहा।

"ओह बाबा निहालू है! सत सिरी अकाल," उत्तमसिंह ने आवाज़ दी, जो गांव का राजगीर था और इस वक्त एक इमारत बनाने में लगा था। "आकर कुछ आराम कर लो और हमारी कारीगरी का नमूना देखो।"

"हां, बाबा आओ," नौजवान बढ़ई दीपसिंह ने मज़ाक किया, "थोड़ी-सी अंग्रेज़ी शराब पिओ। मेरे पास शर्बत भी है।"

बूढ़े ने पीछे मुड़कर कहा, "नहीं, मैं चलता हूं। लोग अंग्रेज़ी शराबें पीकर और शैतानी मशीनें बनाकर अपना सत्यानाश करते हैं।"

"ओए, आ भी जा। बिजली तुझे काटेगी तो नहीं।" गांव के बूढ़े लुहार मिराजदीन ने कहा। वह भी बिजलीघर में काम कर रहा था।

"नहीं भाइयो," निहालसिंह ने जवाब दिया। वह अपनी गठरी पीठ पर लादकर चल पड़ा।

नहर के पार सड़क चौड़ी हो गई थी और मीलों तक फैले हुए जुते खेतों से

समतल हो गई थी। ये खेत धूसर पहाड़ियों तक फैले थे। आकाश को छूती हुई पहाड़ियां नदपुर के पूर्व और उत्तर-पूर्व में स्थित थीं।

इस सड़क पर चलते हुए निहालसिंह ने परिचित धरती से अपनापा महसूस किया। गांव की सुरक्षित ज़िन्दगी की गरिमा से उसका हृदय आलोकित हो उठा। गांव में उसका आदर-मान था। उसने हवा को इस तरह सूंघा जैसे वह अमृत हो और गांव के खेतों का दृश्य उसे अलौकिक मालूम हुआ, जहां जीवन का सारा सुख था और जो मर्द, औरतों, बच्चों, पशुओं, फलों और फूलों से भरपूर था। कारखाने की राख से भरे गड्ढों और जली हुई मिट्टी के टीलों की वजह से गांव नहीं दिखाई दे रहा था, लेकिन अब बूढ़ा खेतों के उस हिस्से को भी जुते हुए खेतों का उल्टा हिस्सा समझने लगा था, जिसे तबाह कर दिया गया था। ये ढेर कई बरसों से वहां जमा थे, इसलिए वे गांव की पृष्ठभूमि का अंग बन गए थे।

सूरज अपनी लम्बी आग्नेय जीभ से आसमान को चाट रहा था और उसकी सांस से धरती झुलस रही थी। बूढ़ा किनारे के शहतूतों की कतार के साये में चलने लगा।

टूटी-फूटी कारवां सराय और गन्दे तालाब के परे, गांव की कच्ची झोंपड़ियों की रेखाएं स्पष्ट हो चली थीं। गन्दगी के ढेर के मुकाबले में तालाब का पानी स्वच्छ और फीरोज़ी दिखाई देता था। निहालसिंह को यह बात अजब मालूम हुई कि दूर से देखने पर झोंपड़े धरती में धंसे हुए मालूम होते थे और नज़दीक से वे बड़े दिखाई दे रहे थे, आसमान से भी ऊंचे।

सड़क छोड़कर वह पगडण्डी पर आ गया जहां पानी के छप्पड़ जमा थे। खेतों में सूखे गोबर के ढेर, टूटे घड़ों के ठीकरे, चीथड़े और लोहे के टुकड़े बिखरे थे। बूढ़े ने देखा कि ज़मींदार, साहूकार, हलवाई और दूकानदारों के नये फैशन के तिमंज़िले और चौमंज़िले मकानों की वजह से गांव के मकानों की आकृतियां बिगड़ गई थीं!

"दुर्र! दुर्र!" बूढ़े ने गांव के काले कुत्ते कालू को देखकर कहा, जिसकी कोई परवाह नहीं करता था। वह घूरों का रखवाला कूड़े के ढेर पर पड़ी एक हड्डी को सूंघ रहा था।

बूढ़े को देखकर कालू ने हड्डी छोड़ दी और उत्साह एवं स्नेह दिखाता हुआ

आगे बढ़ा।

बूढ़े की बीवी हमेशा कहा करती थी कि घर से बाहर जाते या लौटते वक्त काले कुत्ते का दिखाई देना अच्छा शकुन होता है।

बूढ़ा ज़ोर से चिल्लाया, "आ पुत्तर, आ मैं तुझे दूध पिलाऊंगा। दूध या लस्सी! गोश्त खाएगा?"

लेकिन कालू ने रंगबिरंगे भरपूर पंखोंवाले एक मोर को देखा था, जो खाद के ढेर पर जा बैठा था। यह कालू का साम्राज्य था। कालू मोर के पीछे इस तरह भागा जैसे कोई दुबला शिकारी कुत्ता खरगोश का पीछा करता है। मोर चीखकर उड़ गया।

"ओए बदमाश! ओए बदमाश!" बूढ़ा चिल्लाया वह मोर की रक्षा के लिए चिन्तित हो उठा था।

मोर को उड़ते देखकर उसे तसल्ली हुई। सामने एक पेड़ था, जिसके तने से मुसाफिर अपने घोड़े बांधा करते थे। उसके पास से वह गांव के मुख्य बाज़ार में दाखिल हुआ।

मोर की चिन्ता में वह कुर्ते के छोर से अपनी नाक ढकना भी भूल गया था। नज़दीक ही मुसलमान तम्बाकू सुखा रहे थे। एक धर्मभीरु सिख के लिए तम्बाकू की ज़रा-सी भी गंध वर्जित होती है, और तम्बाकू का धुआं ज़हर के बराबर होता है। उसने हथेली से नाक ढंकने की कोशिश की और फूंस की छत वाले नाज के कोठे के पास से तेज़ी से गुज़र गया, जहां तम्बाकू के पत्ते कपड़ों की तरह एक कतार में सुखाए जा रहे थे।

इस जल्दबाज़ी से बूढ़े का सर चकरा गया और वह वट-वृक्ष के नीचे बने चबूतरे से, जो गांव का केन्द्र था, निकलकर एक गली में घुस गया ताकि बाज़ार में उसे लोगों से दुआ-सलाम न करनी पड़े।

जुलाहों की गली में दो बच्चे नाली में बैठे पाखाना कर रहे थे। बूढ़े को देखकर वे उसके पीछे भागे, "बाबा निहालू, हमें एक पैसा दो!"

"जाने भी दो पुत्तर, जाने दो," बूढ़े ने जवाब दिया। उसने एक ठंडी सांस लेकर अपनी चाल तेज़ कर दी। लगता था जैसे उसकी टांगें उसके शरीर को पीछे छोड़ आई हों।

उसकी तबियत खराब हो गई थी। उसने सोचा, अच्छा हुआ कि लोगों ने

उसे नहीं देखा। वह बेहोश होकर गिर सकता है, लोगों को बेकार परेशानी होगी। बुढ़ापे में वह किसीके ऊपर बोझ नहीं डालना चाहता था।

एक गहरी सांस लेकर उसने सफर की आखिरी मंजिल तय करने के लिए अपनी ताकत समेटी। उसका सर चकरा रहा था और माथा आग की तरह दहक रहा था। फिर भी वह चलता गया।

'रब्बा! मुझे अभी मौत न आए।' उसने मन ही मन कहा।

उसके नेत्र-पक्षी सूरज की ओर उड़े, लेकिन तेज़ किरणों से चकाचौंध होकर और घबराकर वापस लौट आए। क्षण-भर के लिए उनके आगे अंधेरा छा गया। फिर उन्होंने छिपकर अपने पंख खोले और अपने घर जानेवाली गली में उड़ गए।

बूढ़े ने अपनी पूरी ताकत लगाकर शरीर को चलने के लिए मजबूर किया। ऊंची-नीची गलियों में कौओं की कांव-कांव और मुर्गियों की आवाज़ों के बीच चलता हुआ वह गुरुद्वारे के बाहर बने कुएं के पास पहुंचा।

जहां दो गलियां मिलती थीं, वहां नुक्कड़ पर उसे अपने घर का सामनेवाला कमरा दिखाई दिया। वह सुन्दर सजे हुए दरवाज़ों की छांह में जाकर खड़ा हो गया। उसका शरीर पसीने से तर हो रहा था।

"मां, मां बापू आ गया है," उसकी बड़ी बहू केसरी ने शर्मीली आवाज़ में अपनी सास से कहा। केसरी वहां मूंज की पीढ़ी पर बैठी क्रोशिये का काम कर रही थी।

विशाल कच्चे आंगन को पार करके, जहां खाना पकता था, निहालू अन्न-भण्डार में पहुंचा। परिवार के छः जने इसीमें रहते थे।

एक नशीली कोमलता उसपर छा गई। उसने धैर्यपूर्वक अपनी पीठ से गठरी उतारकर फेंक दी, और सोटी को पटककर एक सर्द आह भरी। फिर वह आले के नीचे बिछी खाट पर बेहोश होकर गिर पड़ा।

उसकी बहू पानी का गिलास लेकर भागी-भागी आई।

उसकी बीवी गुजरी, जो आंगन के कोने में तंदूर पर रोटियां सेंक रही थी, आकर एक टूटे हुए मोरपंखोंवाले पंखे से उसे हवा करने लगी, फिर वह कोने में रखे घड़ों की कतार की तरफ गई जहां पैसे, सब्ज़ियां, हल्दी-नमक, सरसों का तेल और जड़ी-बूटियां रखी रहती थीं।

निहालू पानी का घूंट पीकर फुसफुसाया, 'मैं तो मरने ही वाला था। ज़रा

उठकर देखूं तो सही कि लड़के क्या कर रहे हैं। मैंने लालू से कहा कि वह जल्दी से काम पर चला जाए। मुझे दोपहर में जाकर महंत से भी मिलना चाहिए...'

२

दोपहर के वक्त पति और बेटों के लिए खाना ले जाती हुई गुजरी सोच रही थी—उसकी ज़िन्दगी पति की ज़िन्दगी के साथ कितनी कसकर बंधी हुई है। बाप-बेटे कुएं के नज़दीक दोपहर को आराम किया करते थे।

उसके हाथ में उठाई हुई पीतल की थाली के किनारे धूप में चमक रहे थे। गर्मी के कारण उसका चेहरा पसीने से तर हो गया था और उसका मन और शरीर भी पिघल गया था। वह एक आलोकपूर्ण रोमांच का अनुभव कर रही थी। चारपाई पर जब वह अपने बेहोश पति पर झुकी थी, तो उसे एक अजब परेशानी महसूस हुई थी।

'अगर सचमुच उसे कुछ हो जाता तो!' उसके मन में सवाल उठा और उसके चेहरे की कान्ति जो अभी-अभी लालिमा लिए हुए हाथीदांत की तरह दिखाई दे रही थी, फीकी पड़ गई। 'ईश्वर ऐसा न करे। हम लोगों ने बच्चों को पाला है और खानदान का नाम बनाए रखा है। बिरादरी में हमारी इज़्ज़त है, हालांकि ईश्वर ने हमें किसी पाप की सज़ा दी है और हम दिन-ब-दिन कर्ज़ में धंसते जाते हैं। लेकिन अगर आदमी का दिल बड़ा हो तो गरीबी कोई चीज़ नहीं होती। सब जानते हैं कि शर्मसिंह के बापू का दिल कितना बड़ा है। बस उसकी ज़िन्दगी बनी रहे...' वह मन ही मन कह रही थी।

पति की मृत्यु के डर ने उसके श्रद्धालु हृदय में एक टीस पैदा कर दी। प्यार की जगह हमेशा उसके मन में सेवाभाव रहा था।

वह सोच रही थी, 'दोनों छोटे लड़कों की भी जल्द ही शादी हो जाएगी। वे अपनी-अपनी बीवियों के साथ अलग हो जाएंगे। बची-खुची ज़मीन भी बंट जाएगी और मुझे उन लोगों के घरों की दहलीज़ों पर बैठना पड़ेगा...'

'नहीं! रब्बा, मैं हाथ जोड़ती हूं। परिवार को अलग न होने देना।'

लेकिन उसे लगा कि परिवार तो अलग होकर ही रहेगा और हो ही गया है। पिछले कुछ दिनों से उसने इन समस्याओं पर गहराई से सोच-विचार किया था, वह आंगन के कोनों में लड़कों के लिए ईंटों के तीन कोठे बनवा देगी। लेकिन पुराने अन्न-भण्डार को ज्यों का त्यों रहने देगी। उनके पुरखों ने अपने हाथों से इस मज़बूत कोठे को बनाया था, और जान-बूझकर इसमें कच्ची मिट्टी लगाई थी ताकि पड़ोसियों और सरकार को जलन न हो, ताकि उसे किसीकी नज़र न लगे।

और शायद वह अपने प्यारे बेटे लालू को अपने साथ उसमें ही रखने की कोशिश करेगी। वह एक अच्छी-सी नन्ही-मुन्नी बहू लाएगी जो आज्ञाकारी होगी और बुढ़ापे में उसकी सेवा करेगी। पैतृक सम्पत्ति और खानदान के गहनों का मालिक भी वही बनेगा।

दूसरे लड़कों को भी वह घाटे में नहीं रखेगी। वह उन्हें जर्जर कच्ची घास-फूंस की झोंपड़ियों में नहीं रहने देगी, जिस किस्म की झोंपड़ियों में गांव के भिखारी और कमीन लोग रहते हैं। जो भी हो। उसके परिवार की हालत अभी इतनी खराब नहीं हुई।

नहीं, वह अपने बेटों के लिए दुमंज़िले मकान बनाएगी, और छज्जों पर नीले रंग के गमले लगवाएगी, ताकि हरबंससिंह और साहूकार जैसे नये रईस यह न सोचें कि सिर्फ वे लोग ही नये मकान बनवा सकते हैं और छज्जों को सजा सकते हैं।

उसकी त्वचा में सन्तोष की सरसराहट होने लगी और उसे अहसास हुआ कि दुनिया में उसकी भी कोई हस्ती है, उसने धूप में एक मुस्कान बिखेर दी और ध्यान से उस दृश्य को देखने लगी—वह ज़मीन के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थी। हर्षोल्लास में उसने प्रार्थना की, "भला हो रब्ब का!" खेतों में सरसों के घने पत्ते उगे थे। पहाड़ियां वृक्षों के सघन कुंजों तक फैली हुई थीं। ताज़े जुते अचेत सोए हुए खेतों की पृष्ठभूमि में वीरान पहाड़ियां थीं—धूप में नहाई, खामोश। इतनी खामोश कि लगता था उनमें मौत छिपी है। निस्तब्ध पहाड़ियों पर जमी धूल की परतों पर, जहां कभी इन्सान का कदम नहीं पड़ा था, एक गहरी उदासी छाई थी।

गुजरी तेज़ चाल से उस तरफ बढ़ रही थी। साठ बरस की उम्र में भी उसका व्यक्तित्व शानदार था। उसने इस अर्से में छः बच्चे पैदा किए थे और कड़ी मेहनत की थी। फिर भी उसमें एक अजब शर्मीलापन और मासूमियत थी। उसके माथे

पर एक तेज था, गड्ढों में आंखें चमक रही थीं, झुर्रियों से ढंके होंठ बड़े शानदार ढंग से फूल जाते थे, उनमें उसकी लम्बी ठुड्डी की संकल्पशीलता और उसके उदास ढलकते हुए मटमैले गालों की कोमलता थी।

"आओ पुत्तरो! खाना खा लो!" उसने आवाज़ दी। उसने देखा कि शर्मसिंह धीरे-धीरे बाजरे की बालियों को पीट रहा है। वह बोली, "पुत्तर, तू थक गया होगा। दयालसिंहा, आ! मैं बाद में बालियों से दाने अलग करने में तुम्हारी मदद करूंगी, दोपहर के बाद हवा भी चलेगी, आ! मेरा लालू कहां है?"

"ओए लालसिंहा! लालसिंहा, आ!..." शर्मसिंह ने आवाज़ दी। वह गुजरी का सबसे बड़ा बेटा था। उसकी उम्र चालीस के करीब थी और कद लम्बा था। वह सर झुकाकर चलता था। उसके सर पर ढीली-ढाली पगड़ी रहती थी और उसका पीला चेहरा नुकीली लाल दाढ़ी में आलोकित था।

चारों तरफ निस्तब्धता छाई थी। निहालसिंह के जुते खेतों से दूर दरांती चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। सेठ चमनलाल ने अपने पिता घनश्यामदास की जो समाधि बनवाई थी, उसके तालाब के किनारे एक धोबिन पत्थर पर पटक-पटककर कपड़े धो रही थी। वहां से 'छपाक-छपाक' की आवाज़ आ रही थी।

निहालसिंह ने अपनी हड्डियों को झटककर कहा, "उठ मना उठ!" फिर उसने शर्मसिंह की आवाज़ में आवाज़ मिलाई, "ओए लालसिंहा! ओए!"

तपती हुई दोपहर में से लालसिंह की आवाज गूंज उठी:

"आया! ओए आया!"

गुजरी ने थाली और लस्सी की मटकी नीचे रख दी और अपना दमकता हुआ चेहरा पोंछकर शर्मसिंह से पूछा, "तुम घर जाओगे या अपने बापू और भाइयों के साथ यहीं खाना खाओगे?" हर बार अपने बड़े बेटे को देखकर उसके भीतर कोई चीज़ सख्त हो उठती थी। घर के लोगों की तरह वह सहृदय न होकर करख्त और खामोश स्वभाव का था। इसलिए गुजरी हर बार उसके खामोश अक्खड़पन को दूर करने के लिए स्पष्टवादिता से काम लेती थी।

"नहीं," शर्मसिंह ने लापरवाही दिखाने का उपक्रम किया। दरअसल उसे यह बात बुरी लगी थी कि मां उसके साथ भेदभाव बरत रही थी।

गुजरी चुपचाप यंत्रवत् तीन थालियों में खाना लगाने लगी। शर्मसिंह ने गिलास में लस्सी डाली।

गुजरी ने अपने पति को पुराने, परिचित ढंग से संबोधित किया, "शर्मसिंह के बापू, क्या तुमने मानाबाद में किसीसे दयालसिंह की मंगनी की बात चलाई थी ?"

"वे लोग वट्टा[1] चाहते हैं," बूढ़े ने जवाब दिया। उसने खाने के लिए पलथी मार ली थी लेकिन वह अभी भी माला जप रहा था। "दुनीचन्द की घरवाली ने बेलीराम की मां से कहा है कि वह अपनी बेटी हमें तभी देगी, अगर हम अपनी मेली की सबसे बड़ी बेटी पूरो का रिश्ता दूनी के सबसे छोटे भाई के साथ करें।"

"कैसी मक्कारी है !" गुजरी ने तैश में आकर कहा। "हम लोग अभी इतने गए-गुज़रे नहीं हैं कि उन लोगों के साथ वट्टा करते फिरें। शहरी लड़कियों से तो हमारी तोबा है !" उसकी भंवें और चेहरा गुस्से से तन गया था।

"अच्छा, मां, खाना दे," शर्मसिंह ने कहा। वह शहर की लड़कियों की निन्दा के पीछे छिपा संकेत समझ गया था, क्योंकि उसकी बीवी शहरी थी, जो उसकी मां की चिढ़ का कारण थी। उसने गुस्से से कहा, "तुम जानती हो कि आजकल हमारे लड़कों के लिए लड़कियां मिलनी मुश्किल हो गई हैं।"

"क्योंकि बेशर्म गांव वाले अपनी बेटियों को बेच रहे हैं। हमारे बेटों के लिए गांव में लड़कियां नहीं रहीं। इन शहरवालों ने उनके दिमाग आसमान पर चढ़ा दिए हैं। न उनमें धर्म-कर्म रहा है, न शर्म-हया—वट्टा चाहते हैं वट्टा !" गुजरी ने कहा।

"लेकिन मां, दयालसिंह बूढ़ा हो रहा है। उसकी उम्र पैंतीस की हो गई है। कुछ दिनों बाद उसे कोई भी अपनी लड़की नहीं देगा। हमें मेली के घरवाले अर्जुन को समझा बुझाकर···" शर्मसिंह ने कहा।

"खसम नूं खा ! तू जाके उनसे बात कर और एक और बिगड़ी हुई दुलहिन मेरे घर में ले आ जो हलवे-पूरी का नाश्ता करने की आदी हो, दिन-भर सलमे-सितारेवाली पोशाकें पहने और काम का नाम सुनते ही जिसकी जान निकलती हो···" गुजरी ने जवाब दिया।

"वाहे गुरु ! वाहे गुरु !" दयालसिंह बोला। वह अपने बैलों के साथ अभी-

१. अदला-बदली—पंजाब के कुछ हिस्सों में लोग जब लड़की देते हैं तो बदले में उनकी लड़की का रिश्ता लेते हैं। इसे 'वट्टा' कहते हैं।

अभी वहां आया था। वह हट्टा-कट्टा जवान था। धूप में उसका चेहरा पक गया था, उसके भरपूर होंठों और गहरी आंखों में हर वक्त मुस्कराहट रहती थी। उसने दोनों बैलों को नांद के पास गड़े हुए खूंटों से बांध दिया और जपजी साहब का पाठ करता हुआ आया। उसने शर्मसिंह की क्रुद्ध नज़र और मां के खामोश भिंचे हुए होंठों को देखकर पूछा, "क्या बात है?"

"कुछ नहीं दयालसिंहा, कुछ नहीं पुत्तर," गुजरी ने जवाब दिया और लस्सी का एक गिलास उसके सामने रख दिया और दूसरा गिलास पति के आगे सरका दिया। उसकी आंखों में आंसू आ गए थे और उसने हमदर्दी पाने के लिए अपने दूसरे बेटे की तरफ देखा। बेटा अनासक्त, नेक और शान्त, भोले भाव से सामने की ओर देख रहा था। बेटे के चेहरे को देखकर गुजरी को शान्ति मिली और वह बड़बड़ाई, "वाहे गुरु तुमपर कृपा करें।" उसका ख्याल था कि लगातार प्रार्थना करने से दयालसिंह के भीतर दिव्य ज्योति पैदा हो गई है। वह उसी ज्योति को नमस्कार कर रही थी।

दयालसिंह इस बार गद्य में मां की बजाय अपने आपको संबोधित करके बोला, "गुरु महाराज ने कहा है कि अगर हाथ-पैर और चमड़ी कीचड़ से सन जाएं तो वे पानी से धुल जाते हैं; हमारे कपड़े भी धोने से साफ हो जाते हैं; लेकिन जब हमारा दिल पाप से गंदा हो जाता है, तो ईश्वर के नाम से ही वह फिर उजला हो सकता है; हे ईश्वर तुम्हारे नाम से ही···"

"ओए, गुरुजी, सच्चे बादशाहो···आकर मेरे सर से बोझ उतारो, बैलों की भूख धार्मिक गीतों से नहीं मिट सकती, मेरे भाई!" लालसिंह ने मज़ाक किया। वह सर पर चारे का गट्ठर लादे आ रहा था। गट्ठर के नीचे से उसकी आवाज़ भी धीमी पड़ गई थी।

"ओही जो, ओही जो," निहालसिंह माला जपते-जपते बीच में बोल उठा।

"मेरा पुत्तर! देखो तो सही, कितनी गर्मी में आया है। भूख-प्यास से परेशान होगा। मैं सदके जाऊं।" गुजरी ने स्नेहपूर्वक एक गिलास में लस्सी उंडेलते हुए कहा।

शर्मसिंह ने रूखे स्वर में कहा, "और मांओं के लाल भी गर्मी में काम करते रहे हैं।" फिर उसने लालू से कहा, "तुम भैंस के लिए भी चारा लाए हो न! वरना वह भी दूध सुखा देगी।"

"अच्छा बाबा, अच्छा," लालसिंह ने एक चौड़ी मुस्कान के साथ कहा, "मां खाने को क्या बना है ?"

मां के कुछ कहने से पहले ही शर्मसिंह ताने के स्वर में बोल उठा, "शलजम !"

"शलजम तेरे लिए बने होंगे। मैं तो बैंगन का भर्ता खाऊंगा," लालसिंह ने कहा।

"अच्छा बड़े भाई से झगड़ा बंद करो," गुजरी बोली।

"शुरू तो उसीने किया था," लालू ने कहा। उसकी आंखों में याचना भरी थी।

गुजरी ने अपने सिवा सबकी थालियां परसीं। कुछ किसान औरतें आज भी मर्दों के बाद, उनकी थालियों की बची-खुची चीज़ों से पेट भरती हैं।

"कम से कम खाने से पहले हाथ तो धो लो," शर्मसिंह ने कहा।

"भला सिंह भी कभी मुंह धोते हैं ?" लालू ने मुंह में रोटी का कौर ठूंसते हुए लापरवाही से कहा। वह 'सिंह' शब्द का श्लेष कर रहा था क्योंकि हर सिख के नाम के आगे सिंह शब्द रहता है।

"पुत्तर, हाथ धोने चाहिए," गुजरी बोली।

"मां, काम खत्म करके मैंने हाथ-मुंह धोया था। हरी घास से हाथ खराब थोड़े ही हो गए होंगे।" लालू ने जवाब दिया।

"तू किसी दिन बुखार से मरेगा," शर्मसिंह ने धमकाया, "काम करने के बाद गर्म शरीर पर ठंडा पानी भी कोई डालता है ? क्या स्कूल में मास्टर लोग यही सिखाते हैं ? और तू तो किताबें पढ़कर खेती करने की बातें करता है और हमें सीख देता है !"

"...तुम्हें कैसे पता है कि मैंने काम के बाद आराम नहीं किया ?" लालसिंह ने झूठ बोला। "खैर पसीने में अगर मैं ठंडे पानी से नहा लूं तब भी मुझे कुछ नहीं होगा।"

"होगा क्यों ! जादू से तेरी ज़िन्दगी जो बच जाएगी !" शर्मसिंह ने गुर्राकर कहा।

"वे, उसे आराम से खाना खाने दे," गुजरी बोली और उसने दयालसिंह को आवाज़ दी, जो बैलों के लिए चारा काट रहा था, "दयालसिंहा, आवे तेरा खाना

ठंडा हो रहा है।"

"संतों को खाने की क्या ज़रूरत है!" शर्मसिंह बोला।

"कम से कम उसमें सेवाभाव तो है," लालू ने जवाब दिया।

शर्मसिंह का सुस्त दिमाग कोई जवाब सोच रहा था, लेकिन दयालसिंह को आते देखकर वह खामोश हो गया। वह भी अपने छोटे भाई की इज़्ज़त करता था।

"मैंने सुना है बापू, तुम शहर से लौटते वक्त बहुत थक गए थे?" दयालसिंह ने पूछा। उसकी पितृभक्ति दो हज़ार साल पुरानी परम्परा से भी ज़्यादा स्वाभाविक थी।

"हां पुत्तर।" निहालसिंह ने जवाब दिया। वह चारपाई पर बैठा अपने दन्तहीन मसूड़ों से रोटी के कौर चबा रहा था, "आजकल शहर जाकर मैं थक जाता हूं। मोटूकार, बग्घियां और टांगे टूं-टूं, पों-पों करते रहते हैं। और इन इंजनों का धुआं! मुझे शहर नहीं अच्छे लगते।"

"हां बापू, लेकिन वाहे गुरु की कृपा से तुम्हें शहर जाने की ज़रूरत भी नहीं है।" दयालसिंह ने खाना शुरू करते हुए कहा। "अगली बार मैं फसल बेचने जाऊंगा और शर्मसिंह केस की देखभाल करेगा।"

"तुमने खेत जोत लिए हैं? पुत्तरो!" गुजरी ने पूछा।

क्षण-भर के लिए सब खामोश रहे, क्योंकि सबके मुंह में रोटी थी।

"नहीं मां, महंत की जमीन के पास दो एकड़ खेत बाकी रह गया है।..."

"उसे जोतने के लिए हल की फाल तेज़ होनी चाहिए। मैंने मिराजदीन लुहार को पुरानी फाल तेज़ करने के लिए दी थी, उसे ले आऊंगा।" लालू बीच में बोल उठा।

"गुजरिए, एक लोटा लस्सी का पिला" हरनामसिंह ने कहा, जो रिश्ते में उसका चचेरा भाई लगता था। वह दुहरे बदन का खुशमिज़ाज आदमी था। "ला लस्सी से अपना गुस्सा ठंडा करूं। मैं अभी शेरकोट से आया हूं, जहां अंधेर मच गया है।"

"क्या बात है, हरनामसिंह? इतने चिढ़े हुए क्यों हो?" गुजरी ने पूछा।

"दुनिया में अंधेर मच गया है, गुजरिए अंधेर! शहरवालों के दिमाग आसमान पर चढ़ गए हैं!"

"मुझे मालूम है। कलजुग आ गया है। बच्चे अब न बड़ों की इज़्ज़त करते हैं

न उनकी सलाह मानते हैं। लोग अपनी घरवालियों को मारने लगे हैं। मेरी अकी के शराबी पति ने उसे पीटा था और वह बेचारी यहां तक नहीं आ सकी क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे। पता नहीं दुनिया में क्या होने वाला है!" गुजरी ने कहा।

"पता नहीं तुम्हारे साथ क्या बीता, बाबा निहालू" हरनामसिंह ने लस्सी का लोटा लेकर अपना सफेद तहमद हाथों से इकट्ठा कर लिया और चारपाई के दूसरे सिरे पर बैठ गया। "लेकिन शेरकोट की अानाजमंडी में लूट मची हुई है। सुना है कि अनाज का टैक्स बढ़ गया है, और सरकार सस्ते दामों पर अनाज लेकर खत्तियों में भर रही है, ताकि बाद में उसे मुनाफे पर बेच सके। अनाज के दाम गिर गए हैं। हम लोग लगान कहां से देंगे ? हम एक-दूसरे का गला काट रहे हैं। हमारे ज़िले के कुछ किसान इतने सस्ते दामों पर मंडी में अनाज बेच रहे थे कि मुझे अपनी फसल की अच्छी कीमत नहीं मिल सकी," हरनामसिंह ने एक ही सांस में लस्सी का लोटा खाली कर दिया।

"मानाबाद में भी यही हालत थी भाई," बूढ़े ने दाढ़ कुरेदते हुए कहा, " मुझे तो लगता है कि अकाल पड़ेगा। हर जगह अनाज के भाव गिर रहे हैं। मैं मंडी में बहस करने के लिए नहीं रुक सका। क्योंकि मैं बालमुकन्द वकील से अपने केस के बारे में मिलना चाहता था। वह पक्का चोर है। जब से उसने यहां बंगला बनाया है और मानाबाद में मकान खरीदा है, उसका कमीनापन बढ़ता जा रहा है। उसकी मां भड़भूंजिन थी, लेकिन वह अपने को राजा समझता है। घंटों तक तो उस खरदिमाग ने मुझे बाहर बिठाए रखा और बदतमीज़ी दिखाई। जब मुंशी मुझे भीतर ले गया तो वह इज्ज़त से पेश आया। मुझे कुर्सी पर बिठाया और पूछने लगा कि मैं लस्सी पीऊंगा या मिठाई खाऊंगा। कहने लगा कि मुझे केस की चिन्ता बिलकुल नहीं करनी चाहिए। जब कचहरी में उस जैसा दोस्त मौजूद है तो मुझे बिलकुल नहीं डरना चाहिए। केस में हमारी जीत होगी।

" फिर उसने अगली पेशी तक टाल दिया, फीस ले ली और कहा कि मैं उसे फिर आकर मिलूं। तुम जानते ही हो, हालत क्या है। मुझे उस वक्त तो यकीन हो गया कि वह भरसक कोशिश कर रहा है, लेकिन··· "

"कभी कबूतरों को गेहूं उठाने के लिए नहीं भेजना चाहिए, न ही किसी वकील या रंडी की चिकनी-चुपड़ी बातों में आना चाहिए," लालू ने कहा।

"बालमुकन्द से बात करने के लिए तुम मुझे जाने दो...मां, अगर और लस्सी है तो दो।"

"तुझे गधे की ज़रूरत है लेकिन अपने स्वार्थ के लिए। तू शहर मज़े उड़ाने के लिए जाना चाहता है।" शर्मसिंह ने कहा।

"हां, मैं दीवाली के मेले में जा रहा हूं।" लालू बोला। वह लस्सी का कटोरा वहीं छोड़कर उठ गया।

"देखेंगे," शर्मसिंह ने कहा।

"वे, पुत्तर, आकर लस्सी पी ले। वड़े भाई की बात पर बुरा न मना," गुजरी ने पुचकारा।

तनाव को कम करने के लिए हरनामसिंह ने पूछा :

"बापू, केस का कुछ हो रहा है?"

लालू जाकर बाप के पास चारपाई पर बैठ गया।

"वह गीध बात तो खूब बना रहा था। कह रहा था कि अगर हम थोड़ा-सा पैसा और लगा दें तो जीत हमारी होगी। लेकिन मुझे पता है कि केस दीवानी अदालत में है और हरबंससिंह कोढ़ी की सैशन जज से वाकफियत है। और मैंने सुना है कि बालमुकन्द और हरबंससिंह में समझौता हो गया है। मुझे वकील की नीयत पर शक है।"

"कैसी बुरी दुनिया है। इसमें सिर्फ चोर-डाकू मज़े लूटते हैं," गुजरी ने तसल्ली दी। "जरा हरबंससिंह की सफेदपोशी और उसके निकम्मे बेटों की तरफ तो देखो! और उस साहूकार की तरफ भी जिसने हवेली बनवाई है, उस गंदे काले मारवाड़ी को खाना भी नसीब नहीं होता था, जब वह यहां आया था।"

'ईमानदारी और मुनाफा एक ही थाली में कभी नहीं मिलते,' बाबा निहालू ने सोचा। "शहर के बजाज़ों के सामने तो यह साहूकार कुछ भी नहीं है। वे लुटेरे 'आओ सरदार जी! आओ सरदार जी!' कहकर हमें पास खींचते हैं और अपना रद्दी माल हमें दिखाते हैं, दामों का तो कुछ हिसाब ही नहीं! वाह गुरु जानता है, वे कितना झूठ बोलते हैं। शहर में जहां भी जाओ यही हाल है। कचहरी में, बाज़ार में, थोक मंडी में। वकील लूटता है, सेठ इतनी जल्दी गिनती गिनता है कि हम लोगों को साथ गिनते नहीं बनता। महसूल चौकी से पुलसिया

बैलगाड़ी ही नहीं गुज़रने देता जब तक उसकी मुट्ठी न गर्म की जाए। रब्ब इन लोगों से बचाए…"

"गुरु नानक महाराज ने कहा हैं :

राती रुत्ती तिथिवार, पौण पानी अगनी पाताल,
तिस विच धरती थाप रखी धर्मसाल;
तिस विच जी जुगत के रंग, तिनके नाम अनेक-अनंत,
करमी करमी होय विचार, सच्चा आप सच्चा दरबार।
तित्थां सोयेने पंच परवान,
नदरी करम पवै निसान,
कच्च पकाई उत्थै पाये,
नानक गया जापै जाये।"

दयालसिंह ने ये शब्द पूरे उतार-चढ़ाव के साथ गाकर कहे जिससे उनकी गहराई और ज़्यादा बढ़ गई। श्रोताओं पर अलंकारपूर्ण भाषा का प्रभाव तो पड़ा, लेकिन इन शब्दों के गूढ़ आध्यात्मिक संदेश का सम्बन्ध तात्कालिक समस्या से नहीं था, इसलिए वह सत्य ठोस न होकर सूक्ष्म था।

लालू ने कहा, "अप्राप्य महान है। बाज़ कभी मक्खियों का पीछा नहीं करेगा अगर मक्खियां अज्ञानी न हों।"

"पता नहीं सरकार क्या करना चाहती है। पिछले बरस हमें कहा गया था कि हम जितना अनाज उगा सकें उगाएं, हम फसल बेच सकेंगे और हमें मुनाफा होगा। और अब हमें फसल बेचकर बीजों की कीमत के सूद का दसवां हिस्सा भी नहीं मिलता—जो हिस्सा हमें सरकार को देना है।"

इसी वक्त फज़लू तेली, जो पास ही के तालाब के पास सब्ज़ियां उगाता था, हाथ में एक बड़ा-सा हुक्का लेकर वहां आ गया और बोला, "सुना है तुम शहर गए थे बाबा निहालू ?"

हरनामसिंह ने कहा, "हां भाई, बापू मानाबाद गया था और मैं शेरकोट गया था।"

"मेरा चचेरा भाई मुहम्मद रफी, जो वकील है, ज़िला कमेटी का इलेक्शन लड़ रहा है," फज़लू ने अपने तालुक्कात का रौब छांटा।

"हां भाई ! अगर तुम कोई अर्ज़ी लेकर उसके बंगले पर जाओ तो उसे तुमसे

मिलने की फ़ुर्सत भी नहीं होगी। क्या तुमने उसे वोट डाली थी? सुना है कि वोट देनेवालों में लड्डू बांटे जाते हैं," हरनामसिंह ने कहा।

"तुमने वोट क्यों नहीं डाली?" फज़लू ने फौरन मुंहतोड़ जवाब दिया।

"जो भी मुझे फसल से अच्छे दाम और लगान में छूट दिलाएगा, मैं उसीको वोट दूंगा," हरनामसिंह ने कहा, "लेकिन मैंने सुना है कि मुहम्मद रफी न अनाज के दाम बढ़वा सकता है न लगान कम करवा सकता है। वह सिर्फ इलेक्शनों से कुछ दिन पहले लोगों में लड्डू बांटता है और बाद में चाहता है कि लोग उसे लड्डू खिलाएं!

"ऐसे घटिया कमीने सूअर से और उम्मीद भी क्या की जा सकती है? हरबंससिंह की तरह वह भी हरवक्त सरकार के जूते चाटता है?" हरनामसिंह ने कहा।

फज़लू ने प्रसंग बदलने के लिए पूछा, "मंडी में सब्ज़ियों का क्या भाव था?"

न बूढ़े ने जवाब दिया, न हरनामसिंह ने ही, क्योंकि फज़लू हमेशा डींग हांकता था। दूसरी वजह यह भी थी कि हिन्दू और सिख किसानों की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जाती थी, हालांकि स्वाभिमान के मारे वे अभी भी बाज़ार में बेचने के लिए सब्ज़ियां उगाने को राज़ी नहीं थे। फज़लू को सब्ज़ियों से अच्छी-खासी आमदनी हो जाती थी इसलिए भी वे उससे चिढ़े हुए थे।

"सुना है, तुम्हारी तबियत ठीक नहीं थी, बाबा निहालू," फज़लू ने स्थिति की नज़ाकत भांप ली। "मुझे भी गठिए की शिकायत है। सब्ज़ियों की सीलन मेरी हड्डियों में घुस जाती है।"

"आजकल शहर जाकर ये थक जाते हैं," गुजरी बोली।

"अगर तुम फैज़ाबाद में होते तो मैं तुम्हें दिल्लीवाले हकीम के पास ले जाता, जिसने पिछले बरस मेरे बुखार का इलाज किया था," हरनामसिंह ने बूढ़े से कहा।

"मैं बीमार नहीं हूं। मैं बूढ़ा हो गया हूं पुत्तर। शरीर में पहले जैसी ताकत नहीं रही। कभी न कभी तो प्राण निकलेंगे ही।"

"रब्ब ऐसा कभी न करे।" गुजरी चिन्तित स्वर में बोली।

"शायद महन्त के पास कोई नुस्खा हो। जब चढ़ावा लेकर उसके पास जाओगे तो पूछ लेना," शर्मसिंह ने कहा।

लालू बोल उठा, "अफलातून ने कहा है कि ऐसी कोई संजीवनी नहीं है जो

मुर्दों को ज़िन्दा कर सके, और ऐसे धार्मिक गुरु से बचकर रहना चाहिए जो पेटू और लालची हो और गरीबों का खून चूसता हो।"

"एक अमरीकन डाकडर मिस साहब और उनकी मां के साथ पादरी साहब से मिलने आ रहा है," दयालसिंह ने सूचना दी।

"हाय, हाय! वे गऊ का मांस खाते हैं, खसमनूं खाने! क्या पता दवाइयों में क्या मिलाते होंगे," गुजरी चिल्लाई।

"मां, लेकिन वे ईश्वर से डरते हैं। तुम्हें उनकी बातें सुननी चाहिए। वे कहते हैं कि ईश्वर उनका पिता है और जब इन्सान मर जाता है तो ईश्वर का पुत्तर यीसु मसीह ही आत्मा की रक्षा करता है," दयालसिंह ने कहा।

"हां, उनका पैगाम तो अच्छा है," फज़लू बोला, "बिलकुल हज़रत मुहम्मद के पैगाम की तरह। यीसू मसीह ने उन्हें भी पैगम्बर माना था इसीलिए हम मुसलमान और मजहबों की बजाय ईसाई मज़हब के ज़्यादा नज़दीक हैं।"

"असली चीज़ तो पैगाम है," दयालसिंह ने कहा। इसके बाद एक तनावपूर्ण खामोशी छा गई।

"बापू, क्या लोग मेले की तैयारियां कर रहे थे!" लालू यह सवाल पूछने के लिए देर से इन्तज़ार कर रहा था।

"पता नहीं आजकल प्याज़ किस भाव पर बिक रहे हैं। मेरे पास बेचने के लिए काफी प्याज़ जमा हो गए हैं," फज़लू ने बीच में टोककर कहा।

लालू ने फज़लू की बात काटी, "जब प्याज़ों की चर्चा खत्म हो जाए तो मुझे बताना। तब मैं बापू से मेले के बारे में पूछूंगा।"

"बड़ों से इस तरह बात नहीं की जाती। खैर जो भी हो, मेले में तुम्हें भेजने के लिए हमारे पास पैसे नहीं हैं," शर्मसिंह ने कहा।

"ओए! ओए! झगड़ा न करो। इस बदमाश से बहस मत करो! सचमुच हमारे पास फालतू पैसे नहीं हैं,"···बाबा निहालू ने चिढ़कर कहा।

"वे! लड़के को न सता। अगर वह मेले में जाना चाहता है तो जाए। आ पुत्तर, यह लस्सी पी ले," गुजरी बोली।

लालू ने तपाक से लोटा पकड़ लिया और लस्सी पीकर जोश से काम करने के लिए तैयार हो गया। जब वह उठा तो उसने एक डकार ली और बांहें फैला-कर झूठमूठ की लापरवाही दिखाई।

"स्कूलों की पढ़ाई ने हमारे लड़कों को खराब कर दिया है। उनके दिल में किसीकी इज़्ज़त नहीं रहीं," फज़लू ने कहा।

"अगर तुम्हारी इजाज़त हो तो तुम्हारे नीचे से मैं कुदाल उठा लूं। मुझे काम पर जाना है," लालू ने शिष्टाचार का अभिनय किया।

यह कहकर उसने फज़लू के नीचे से कुदाल निकाल ली। इसके बाद सब लोग वहां से उठकर चले गए।

३

लालू मन ही मन बड़बड़ाया, 'वे लोग चाहे जो कहें, मैं मेले में ज़रूर जाऊंगा।' उसने फिर दुहराया, 'ज़रूर!'

उसने ज़मीन में कुदाल चलाई। उनके जुते हुए खेतों में दूर एक किनारे पर कुआं बना था, उसकी तलछट पानी की नाली में जमा हो गई थी।

हर बार कुदाल चलाने पर उसके गले से अपने-आप 'हूं! हूं!' की आवाज़ निकलती थी। उसने अपने सूती कुर्ते की बांहें चढ़ा ली थीं, क्योंकि वह नाली को गहरा खोद रहा था। वह हांफने लगा था और गन्दे पानी के एक छप्पड़ पर जमा मच्छर उसे काट रहे थे, लेकिन उसे कोई परवाह नहीं थी।

बीच-बीच में वह क्षण-भर के लिए कुदाल छोड़कर अपनी भैंस सुच्ची की तरफ देख लेता था, जो चरने के बाद ग्वाले के साथ गांव में लौट रही थी।

लालू ने काम फिर शुरू कर दिया, लेकिन क्षण-भर के लिए उसका दिमाग खाली हो गया। वह केवल कुदाल की फार से टूटकर बिखरते हुए मिट्टी के ढेलों के प्रति सचेत था। उसे सिर्फ इतना अहसास था कि तीसरे पहर की तेज़ गर्मी में उसका चेहरा झुलस रहा था और बदन में जहां-जहां पसीना रेंग रहा था, वहां उसे खुजली हो रही थी।

वह टांगें चौड़ी करके इस इन्तज़ार में खड़ा हो गया कि पतझड़ की हवा के मन्द झोंके उसके चेहरे को सहलाएंगे। उसने देखा कि तालाब से बहती हुई पानी की पतली धार धरती को दो साफ हिस्सों में काट रही थी।

बस छप्पड़ के किनारे पर एक हाथ और चलाने की देर है, पानी खुलकर बहने लगेगा और नाली गहरी हो जाएगी ।

किशोरावस्था के सहज अहंकार में भरकर लालू सोच रहा था कि यह काम कितना आसान है । और अगर आदमी को कुदाल सीधा न पकड़ना आता हो तो यह काम कितना मुश्किल भी है। शर्मसिंह गुस्से में आकर उसे अक्सर याद दिलाया करता था कि कुदाल चलाना फुट और परकाल की मदद से कागज़ पर त्रिकोण खींचने या पांच का वर्गमूल तलाश करने की तरह आसान नहीं है। कुदाल चलाने में किसान की सहज प्रतिभा का होना ज़रूरी है। लेकिन शर्मसिंह यह भूल जाता था कि कुदाल चलाने में भी एक प्रकार की गणित की ज़रूरत होती है । पढ़ाई की वजह से लालू की खेत में काम करने की शक्ति में कोई फर्क नहीं आया था, जैसाकि उसके भाई और गांव के बुजुर्गों का ख्याल था । उनके ज़िद्दी दिमागों में यह पूर्वाग्रह घर कर गया था । उन बैलों को कोई भी नहीं समझा सकता था। एक माने में उनका दृष्टिकोण सही भी था, लालू ने सोचा । वह जब भी सोच-विचार करता था तो समस्या की जड़ तक पहुंचने की कोशिश करता था । सारा कसूर हरबंससिंह के बड़े बेटे का था, जो सरकारी नौकरी करना चाहता था और दूसरे गांवों के छोकरों का था जो क्लर्क बनना चाहते थे। कुछ हद तक गांववाले ठीक ही सोचते थे, क्योंकि शहर के लालाओं का हर लड़का धरती मां के नक्शे पर सीधी लकीर नहीं खींच सकता था, क्लास रूम में उसके नक्शे की लकीरें चाहे कितनी सीधी हों । लेकिन दूसरों के कसूर लालू के मत्थे क्यों मढ़े जाएं ? वह मुस्कराया। अपनी योग्यता के आत्मविश्वास से वह सुखी था । क्षण-भर उसने यह देखने के लिए कि नाली गहरी हुई या नहीं, अपनी पीठ सीधी की ।

नाली अभी भी कहीं-कहीं टेढ़ी-मेढ़ी थी। लालू फिर छप्पड़ के पास लौट आया और नये सिरे से काम करने लगा । कुदाल चलाकर उसने गहरी खुदाई की । अब नाली की रेखा सीधी हो गई थी और उसमें से पानी की धार बहने लगी थी । सूरज की हंसी के साथ उसके शरीर में एक रोमांचपूर्ण गर्मी व्याप गई थी, जिसकी वह मन ही मन तारीफ कर रहा था ।

उसने एक सिरे से दूसरे सिरे तक खेतों में नज़र दौड़ाई । जब पूर्वजों ने यह गांव बसाया था, उस ज़माने में ज़मीन कैसी थी ? लालू मन ही मन सोच रहा था। ज़मीन जैसी अब है, तब भी वैसी ही रही होगी। उसमें ज़्यादा तबदीली

नहीं आई होगी।

उसने एक गहरी सांस ली और उसकी उदास नज़रें कहीं दूर खो गई।

हल चलाना, बीज डालना, फसल काटना, अनाज से छिलका अलग करना—मेहनत से उसके हाथ मज़बूत होते थे। "सलाह के लिए बूढ़े के पास जाओ, मेहनत नौजवान से करवाओ"—लोग कहा करते थे। लेकिन अगर वे लोग उसे मौका देते तो वह ज़मीन की उपज बढ़ा सकता था, घर के सारे मसले तय कर सकता था, कि वह इतना पाटेखां नहीं था जितना कि वे लोग उसे समझते थे।

वह कल्पना में तपती हुई धूप में लहलहाती शानदार फसल को देख रहा था। उसने कल्पना की कि वह अप्रैल में तेज़ दरांती से फसल काट रहा है और उसकी मां फसल के पूले तैयार कर रही है। तपती धूप में मेहनत करने के बाद छांह में कितनी सुख-शान्ति मिलेगी! कितना आराम मिलेगा!

वह परिवार के लोगों के सामने अपनी योग्यता प्रमाणित कर देगा। वह उनकी हमेशा की मुसीबतों पर हंसेगा, उनका मज़ाक उड़ाएगा, किसी सहज चालाकी या इशारे से उन्हें छेड़ेगा। उनके चकित चेहरों को देखकर जीभ निकालेगा और चिढ़ाएगा। बुढ़ापे की खामोशी से खदेड़कर वह उन्हें ज़िन्दगी में ले आएगा। ऐसा हो सकता है···ज़रूर होना चाहिए···

उसने अपने सर को एक झटका दिया और विद्रोहपूर्ण मुद्रा से अपने चारों तरफ देखने लगा।

खेत में जहां रबी की फसल के बीज डाले गए थे, पक्षियों को डराने के लिए एक पुतला खड़ा था, उसके ऊपर बैठा एक कौआ कांव-कांव कर उठा। वह लालू के साहसपूर्ण विचारों से बिलकुल प्रभावित नहीं हुआ था। यह शोर जैसे लालू के हर्षोन्माद का मज़ाक उड़ा रहा था। इस हास्यास्पद व्याघात से चिढ़कर उसने मिट्टी का ढेला उठाकर कौए की तरफ फेंका।

कौआ अपने पंख फड़फड़ाता हुआ खेतों की तरफ झपटा, जहां हल चलाने-वाला एक किसान बड़ी देर से अपने बैलों को मुड़ने के लिए बाध्य कर रहा था।

लालू ने जुते हुए खेतों के परिचित दृश्य से नज़रें हटा लीं और दूर अस्पष्ट धुंधलेपन में देखने लगा। तपती दोपहर में बंजर चरागाह के ऊपर धूल का एक बादल उठ रहा था। तेज़ रोशनी से बचने के लिए उसने हथेली से आंखों को ढक लिया। उसकी नज़र गांव के पशुओं के रेवड़ पर पड़ी जो चरने के बाद घर लौट

रहा था। उसे पहले से यह मालूम था। पशुओं की काली, भूरी और सफेद आकृतियां, उनकी सुरीली घंटियों और उनके रंभाने की मंद आवाज़ें बता रही थीं कि अभी रेवड़ दूर है।

लालू ने अपने माथे से पसीना पोंछा, कुदाल ज़मीन पर पटक दी और सर से पगड़ी उतार ली। काम की तेज़ी में पगड़ी का एक छोर खुल गया था। उसके लम्बे बालों का जूड़ा ऊंचे टीले की तरह नज़र आता था। उसने जूड़े में खोंसी हुई हाथीदांत की कंघी निकाली और अपने लम्बे बालों को गालियां देकर खोला, और नये सिरे से गांठ लगाकर जूड़ा बांधा। फिर पगड़ी की तहें संवारकर बांधने लगा।

'अगर मैं शहर मेले में गया तो इस जंगल को कटवा डालूंगा,' उसने बेचैनी से कहा, 'यह गधों और बैलों का मजहब है। बारह बजे के बाद सिख की अक्ल मारी जाती है।' उसने होंठ सिकोड़कर ग्लानि प्रकट की। जिस ज़माने में गुरु गोविन्दसिंह औरंगज़ेब से लड़ रहे थे, उस वक्त कच्छा, कड़ा, किरपान, केश और कंघा ज़रूरी रहा होगा। कहते हैं कि गुरु ने अपने शिष्यों को कच्छा पहनने का हुक्म इसलिए दिया, क्योंकि उन्हें कपड़े नहीं मिलते थे, और चिह्न के लिए तलवारें और कड़े नहीं मिलते थे। चूंकि बाल काटने के लिए नाई नहीं मिलते थे इसलिए उन्होंने अपने शिष्यों को लम्बे बाल रखने की आज्ञा दी और कहा कि वे बालों की सफाई के लिए कंघा रखें। यह ज़रूरत और अक्लमन्दी का तकाज़ा था। लेकिन जिसके दिमाग में रत्ती-भर भी अक्ल है वह यही कहता है कि इन रिवाजों को मानने की अब क्या ज़रूरत है? आखिर लम्बे बाल रखना भी कोई मज़हब हुआ?' लालू को अपने लम्बे बालों पर गुस्सा और शर्म महसूस होती थी। उसे बाकी कक्कों[१] पर एतराज़ नहीं था। वे भी फज़ूल और अंधविश्वास की चीज़ें थीं, लेकिन उनकी वजह से खास दिक्कत नहीं होती थी।

बचपन में जब उसकी मां उसके बालों की चुटिया गूंथती थी, तो वह और सिख लड़कों के मुकाबले में लड़कियों जैसा दिखाई देता था। स्कूल में उसके बाल खोलकर ड्रामों में उसे लड़कियों का पार्ट दिया जाता था और दूसरे लड़के हमेशा उसे पीटते थे। इसीलिए वह अपने बालों को रूखा रखने लगा था। लेकिन बालों को न धोने से उनमें जुंएं पड़ जाती थीं। गर्मी के मौसम में बड़ी मुसीबत होती थी, खास तौर पर भारी पगड़ी के नीचे। काश, वह केश कटवा सकता!

१. पाण, कंघा, कच्छा, कड़ा।

नाली गहरी हो गई थी और पानी की धार से लालू का दायां पैर भीग रहा था। उसने अपने पैर को एक झटका दिया। उसने देखा कि दूसरे लोगों के मुकाबले में उसका पैर बहुत बड़ा था। जूते न पहनने का यही नतीजा होता है। लेकिन खेत में देसी जूते नहीं पहने जा सकते, क्योंकि उनमें मिट्टी और कंकर घुस जाते हैं। कहते हैं कि अमरीका और विलायत के किसान रबड़ के लंबे जूते पहनते हैं। लेकिन जब तक उसका भाई और गांव के बड़े-बूढ़े ज़िन्दा हैं, वे इस बात का मज़ाक उड़ाएंगे। उनकी समझ में नहीं आएगा कि विलायत के किसान काम के वक्त अलग कपड़े पहनते हैं और फ़ुर्सत के वक्त दूसरे। जब ज़मीन की आमदनी बढ़ जाएगी तो वह भी छुट्टियों में शहर जाने के लिए कुछ अंग्रेज़ी फैशन की चीज़ें खरीद सकेगा।

पगडंडी से आते हुए कौओं और भैंसों की सम्मिलित आवाज़ से उसकी विचारधारा भंग हो गई। उसने देखा कि पशुओं के रेवड़ की धूल का बादल, जो दूर पहाड़ियों के नीचे दिखाई दे रहा था, पास वाले खेतों में आ गया है और उसे भागकर सुच्ची को ले आना चाहिए।

उसने नाली का निरीक्षण किया। सचमुच बिना किसी रुकावट के पानी बह रहा था। पानी की धार सांप की तरह बल खाती हुई चल रही थी। उसने सोचा कि कल जब कुआं चालू होगा तो वह फ़ुर्सत निकालकर नाली को ठीक कर देगा।

वह कुदाल कंधे पर रखकर खेतों में चला गया। बार-बार वह अपने मोटे खद्दर के कुर्ते के सिरे से पसीना पोंछ रहा था।

पतझड़ आने वाला था, लेकिन सूरज की गर्मी में बिलकुल फर्क नहीं आया था। उसके पैर गर्म ज़मीन पर जल रहे थे। उसने अपनी चाल तेज़ कर दी और वह तीसरे पहर की गर्म हवा में सांस लेता हुआ आराम की तलाश में निकला। लेकिन उसके शरीर से गर्मी की लपटें निकल रही थीं, जिससे कपड़ों की सरसराहट से पैदा होने वाली हवा भी गर्म हो गई थी। तेज़ चलने से उसकी नसें झुलसी जा रही थीं।

खेतों के पूर्वी हिस्से पर बनी नाली को पार करके उसने देखा कि रेवड़ की गाय-भैंसें ग्वाले गोपाल से भी आगे भागी आ रही हैं। कुछ जानवर तो तालाब के किनारे पहुंच चुके थे। लालू छोटे रास्ते से फ़ज़लू के बाग में पहुंच गया और धूल के बादल में छिप गया।

भूरी, काली, सलेटी, लाल और सफेद रंग की गाएं और भैंसें तेज़ चाल से भागी आ रही थीं। उस उन्मत्त जलूस में सबकी आवाज़ें एकसाथ मिल गई थीं।

लालू धूल के बादल में अपनी भैंस को तलाश करता हुआ चिल्ला रहा था :

"ओए सुच्ची ! ओए सुच्ची ! ओए गोपालू, सुच्ची कहां है ?"

"तेरे दीदों पर चर्बी चढ़ गई है। वह तो तेरे पास है। उसे पकड़ ले। मैं ज़मींदार की गौओं को संभालूंगा। वे इधर-उधर भाग रही हैं। अगर शाम तक दूध दुह लिया तो तेरे साथ कबड्डी खेलने आऊंगा," गोपाल ने कहा।

लालू को अभी भी सुच्ची दिखाई नहीं दी। वह सोच रहा था कि कहीं वह तालाब में न घुस गई हो। उसे तालाब से बाहर निकालना बड़ा मुश्किल होता था।

सचमुच सुच्ची एक मरियल गाय को धकेलकर तालाब की ओर भागी जा रही थी।

"गधे की बच्ची ! तेरा खसम मर जाए !" लालू ज़ोर से चिल्लाया और मिट्टी के ढेरों को कूदता-फांदता भैंस के पीछे भागा।

सुच्ची ने अभी पानी में अपने अगले खुर भिगोए ही थे कि लालू ने उसकी पूंछ पकड़ ली। लगता था कि वह सिर्फ पानी पीने वहां आई थी।

सुच्ची ने अपना मुंह पानी में से बाहर निकाला। उसके मुंह से पानी की बूंदें टपक रही थीं। लालू ने उसकी गरम पीठ सहलाई और जब तक भैंस ने पेट भरकर पानी नहीं पी लिया, वहीं खड़ा रहा। "ठीक है मेरी बच्ची, ठीक है !"

अब उसका मन शान्त हो गया था और उसने तालाब के सड़े हुए काई लगे पानी को शून्य दृष्टि से देखा।

तालाब की सीढ़ियों पर गांव की कुछ औरतें बैठी कपड़े धो रही थीं। कुछ दूरी पर एक धोबिन पत्थर पर कपड़े पटक रही थी। दो लड़कियां पानी में डुबकी लगाकर अभी निकली थीं, उनकी गीली धोतियां उनके शरीर से चिपक गई थीं। न चाहते हुए भी लालू की नज़रें तेज़ हो गईं और उसके खून में गरमी आ गई। उसने कनखियों से उनके शरीर के उभारों को देखा। उसे डर लगा कि कोई उसे औरतों की ओर घूरते हुए न देख ले। साथ ही उमड़ती हुई आकांक्षाओं के ज्वार ने उसके हृदय में सुख का स्पन्दन भर दिया था। एक लड़की अपनी गीली धोती उतारकर क्षण-भर के लिए नंगी खड़ी रही, फिर उसने

शरीर पर एक सूखा कपड़ा लपेट लिया। लालू ने सकपकाकर अपनी नज़र हटा ली और वह सुच्ची को सहलाने लगा। संतोष से भैंस के शरीर में फुरफुरी दौड़ गई, लेकिन लालू को अपनी झेंप पर गुस्सा आ रहा था। क्षण-भर के लिए वह ठिठक गया। एक तरफ लड़की का आकर्षण उसे खींच रहा था, दूसरी तरफ वह वहां से जाना चाहता था। तालाब की सीलन और काई में से उठकर मच्छर सुच्ची की तरफ आ रहे थे। एक मेंढक सर निकालकर सुच्ची की इन्द्रधनुषी आंखों में झांक रहा था। सुच्ची पीछे हट गई।

"चल, फिर चलें, घर चलें," लालू ने कहा। सुच्ची ने लालू की ओर मुंह फेरा और कोमल स्वर में रंभाकर अपनी रज़ामन्दी दी और फिर वह सीधी घर की ओर भागी।

लालू खेतों में से भागता हुआ सुच्ची के पीछे जाने लगा। लेकिन जानवरों के खुरों से गुंधी हुई गीली मिट्टी उसके पैरों से चिपक गई। वह पगडंडी की समतल ज़मीन पर आ गया और खाद के ढेरों को फांदता हुआ भागा, जो फज़लू ने अपनी सब्ज़ी की क्यारियों के पास जमा किए थे।

गाय-भैंसों का रेवड़ अभी-अभी गांव में घुसा था। उनके खुरों से उठी धूल के कण सोने के कणों की तरह हवा में छा रहे थे। इसके विपरीत खेतों की हरियाली में कहीं-कहीं धूप के तालाब बन गए थे और तीसरे पहर की निस्तब्ध हवा में गांव के कच्चे-पक्के मकानों की रेखाएं उभर आई थीं। लालू ने मन ही मन कहा, 'सुच्ची को घर पहुंचाकर मैं घुग्घी और चौरंगी के पास जाऊंगा और उनसे मेले के बारे में पूछूंगा।'

४

जब लालू घर के करीब पहुंचा तब सूरज कच्ची दीवारों के पीछे छिप रहा था। गलियों के साये की हवा में थोड़ी-सी कुनख थी।

सुच्ची म्हां-म्हां करती हुई फूहड़ ढंग से ड्योढ़ी के भीतर घुस गई, जैसे कोई बच्चा अपने घर आने की सूचना दे रहा हो।

"ओ, रुक जा, ज़रा सब्र कर" लालू उसके पीछे-पीछे गोशाला में गया। पहले तो उस छोटी-सी कोठरी के अंधेरे में घुसकर उसे कुछ नज़र नहीं आया। लेकिन जब उसकी आंखें अंधेरे की अभ्यस्त हो गई तो उसने एक कोने में गड़े खूंटे के रस्से को अपने हाथों से टटोला। पास ही उनके बैलों–ठिब्बा और रोंडू–की भूरी आकृतियां दिखाई दीं, जो नांद में से सानी खा रहे थे। उनकी गोबर से सनी टांगों पर मक्खियां भिनभिना रही थीं, जिन्हें वे पूंछ हिलाकर उड़ा रहे थे।

इसी वक्त शर्मसिंह काले रंग के पड़वे को लेकर आया, जो करुण स्वर में रंभा रहा था और अपनी मां के थनों तक पहुंचने के लिए छटपटा रहा था।

"इस मां के यार को सुच्ची से दूर बांध दे। इसने तो मेरी बांह तोड़ दी," शर्मसिंह ने कहा, और वह दरवाज़े की रोशनी में लकड़ी के खंभे के पास बैठकर दयालसिंह और लालू की लाई हुई चरी की कुटी काटने लगा। हमेशा की तरह वह खामोश था और उसकी मुद्रा कठोर थी।

शर्मसिंह के सधे हुए हाथ गंड़ासे से चरी को काट रहे थे। लालू को उसकी आवाज़ के बीच अपने भाई की कठोर लोहानी सांस सुनाई दे रही थी। लालू को लगा कि उसके भाई की खामोश प्रबल इच्छा-शक्ति गरम सांसों और गंडासे की चोट से उसका गला घोंट रही है और उसे दबा रही है। उसने भैंस के बेचैन पड़वे को खूंटे से बांध दिया। फिर ठिब्बा और रोंडू को सहलाकर कोठरी से बाहर निकल आया।

"मेरा ख्याल है कि बापू महन्त के लिए जो चढ़ावा लाया था, उसमें से कुछ चीज़ें बच गई हैं; मां तुम्हारे हाथ उन्हें मठ में भेजना चाहती है," शर्मसिंह ने सर ऊपर उठाए बगैर क्रुद्ध स्वर में कहा।

लालू बिना कुछ कहे चला आया। आंगन में उसकी भाभी सूरज की आखिरी किरणों की रोशनी में बैठी क्रोशिये का काम कर रही थी। नाज के कोठे के पास आंगन के कोने में भूसे का ढेर लगा था। लालू रसोईघर के पास आया, जहां उसकी मां बैठी चरखा कात रही थी। भाई को देखकर हमेशा उसके दिल में जो डर पैदा होता था, वह गायब हो गया था। उसने भाभी से छेड़खानी की :

"केसरो, यह रूमाल मेरे लिए बुना जा रहा है न ?"

उसे केसरो का नारी-सुलभ आकर्षण, उसकी स्निग्ध और विनोदपूर्ण स्पष्टवादिता बहुत पसन्द थी।

"नहीं, तेरे ब्याह के लिए पलंगपोश तैयार कर रही हूं," केसरोने उसे चिढ़ाया। वह जानती थी कि लालू को मंगनी और ब्याह की चर्चा पसन्द नहीं है।

"आ मेरे पुत्तर, तेरे लिए दूध गरम कर दूं या चाय पीएगा?" गुजरी ने काले पेंदे की एक हंडिया में लकड़ी की कड़छी चलाते हुए कहा। हंडिया में रात के लिए दाल चढ़ी हुई थी।

"मुझे दूध नहीं चाहिए मां। कहां हैं वे चीज़ें जिन्हें शर्मसिंह मेरे हाथ मठ में भेजना चाहता है?"

"क्या बात है पुत्तर? उसने फिर तुमसे कुछ कहा है? मैं उससे कह दूंगी कि तुम्हें तंग न किया करे।"

"नहीं मां, उसने मुझे कुछ नहीं कहा," लालू ने झूठ बोला।

"अच्छा पुत्तर, आकर दूध पी ले," गुजरी ने लाड़ से होंठ बाहर निकालकर कहा। "धर्मसाला में गुरु गोविन्दसिंह के जनम दिन की तैयारियां हो रही हैं। दयालू वहां गया है। तू यह गठरी मठ में पहुंचा आ।"

केसरो ने अपने पति के दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगते हुए कहा, "लालू बच्चे, यह तो उसकी आदत है। वह मेरे साथ भी झगड़ता है। अगर कुछ कहती हूं तो मुझे पीटता है। तुम्हें बुरा नहीं मनाना चाहिए।"

"अच्छा तो वह मेरी नन्ही-मुन्नी भाभी को पीटता है?" लालू ने होंठ फुलाकर कहा और लाड़ से भाभी का सर थपकने लगा। "बेचारी नन्ही-मुन्नी केसरो! ...क्या मैं उसे कत्ल करके तुझसे शादी कर लूं?" उसने मज़ाक किया।

केसरो खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसने लालू को डांटा, "जा बे भेंड़े![1] तू तो कहता था कि तूने शादी ही नहीं करनी!"

"सो तो कहा था," लालू ने झूठमूठ सन्तों जैसी मुद्रा बनाकर जवाब दिया और रसोईघर के पास मूढ़े पर बैठ गया। उसने एक ठंडी सांस ली और अपने हाथ-पैर धोने लगा। शर्मसिंह की बातें हमेशा चोट पहुंचाती थीं, चाहे उसे समझने की कितनी ही कोशिशें की जाएं।

गुजरी हाथ में दाल के कुछ दाने निकालकर देख रही थी कि दाल गल गई या नहीं। उसने सोचा कि अभी कुछ सख्त है और उसने सर को झटका दिया। लेकिन उसे छौंक का सामान तैयार कर लेना चाहिए। वह अलग से घी में प्याज़ भून

१. हट ओ बुरे!

रही थी । अभी उसे रोटियां पकानी थीं और दो और चीज़ें भी तैयार करनी थीं ।

अचानक उसने अपनी बहू को आवाज़ दी, "केसरो, जाकर कनस्तर में से घी ले आ और अपने देवर को साबुन और तौलिया दे । क्रोशिये का शानदार डिज़ाइन कल पूरा कर लेना । दिन-भर इसीमें लगी रही हो ।"

मां की आवाज़ की कठोरता से लालू हमदर्दी से मुस्कराने लगा । वह शर्मसिंह के खिलाफ लालू से हमदर्दी दिखाने के लिए उसकी बीवी पर रौब डाल रही थी। बेचारी नन्ही-मुन्नी केसरो !

"मां, दूध लाओ । मैंने हाथ मुंह-धो लिया है। मुझे साबुन नहीं चाहिए । मैं तुम्हें घी ला दूंगा," और फिर उसने अपनी भाभी की तरफ मुस्कराकर देखा और गुजरी का परिचित ताना दिया :

"केसरो की नाजुक मेंहदी लगी उंगलियां मैली हो जाएंगी ।"

"अच्छा, मैं खुद ही घी ले आती हूं," बेटे के ताने को सुनकर न चाहते हुए भी गुजरी को अपनी क्षुद्रता पर शर्म आ गई ।

लेकिन क्या केसरो ने उससे नहीं कहा था, 'बूढ़े से तुम संतुष्ट नहीं हो । तुम्हें चार-चार खसम चाहिए और तुम अपने लड़कों पर डोरे डालती हो । मेरे घर वाले को छोड़ दो, बाकी लड़कों को अपने पास रखो !' गुजरी ने कैसी-कैसी बातें कही थीं ! 'मेरी तो कोई भी बेटी इतनी बेशरम नहीं है । सारा दिन बन-ठन कर और कीमती गहने पहनकर बैठी रहती है । न शरम है न हया । इसे इतनी तमीज नहीं कि समझदार और होशियार औरतें अपने गहनों को संभालकर रखती हैं और ब्याह-शादी या त्यौहार के मौके पर ही बाहर निकालती हैं ।'

गुजरी, जो अभी तक पैरों के बल बैठी थी, कुढ़ती हुई उठी । लेकिन सीधे खड़े होने से उसके स्वभाव की कठोरता भी जैसे दूर हो गई और वह मुस्कराने लगी ।

लालू अपना कुरता और तहमद बदलने के लिए बैठक में चला गया । इस वक्त उसे महसूस हो रहा था कि वह फिर से छोटा बच्चा बन गया है और अपनी मां के पीछे-पीछे घर में घूम रहा है । कपड़े बदलकर उसने हमेशा की तरह लोहे के फ्रेम से मढ़े शीशे में अपनी सूरत देखी, जिसे वह शेरकोट से लाया था । नाज के कोठे की पुराणपंथी दुनिया में यह शीशा इनी-गिनी आधुनिक चीज़ों में से था। उसने जल्दी से पीतल के कटोरे में से दूध पिया जो उसकी मां लेकर आई थी, फिर महन्त को पहुंचाने के लिए गठरी ले ली और मां के आदेशों को अनसुना

करके अपने देहाती तेल-चुपड़े जूते पहनकर बाहर निकल गया।

५

किसानों के घरों से निकलकर उपलों का दम घोंटने वाला धुआं गलियों में भर गया था। छोटे-छोटे बालकों के दल गेंद-बल्ला खेल रहे थे और भरी हुई नालियों का गंदा पानी उछाल रहे थे।

लालू जिस गली से गुज़रा उसमें सबसे ज़्यादा बदबू फैली हुई थी। उसने पगड़ी के छोर से नाक ढंक ली थी और एक हाथ से तहमद को उठा रखा था। लेकिन नाली में अटके हुए रोटी के टुकड़ों, फटे चीथड़ों, सड़ी दालों, कीचड़-पाखाने और गन्दगी की वदबू ने उसका पीछा नहीं छोड़ा क्योंकि हवा का रुख बाज़ार की तरफ था, जिधर वह जा रहा था। बदबू इतनी तेज़ थी कि शरबत बेचने वाले और अत्तार मोतासिंह की दुकान भी गन्दगी का चहबच्चा बनी हुई थी।

बीच़-बीच में वह घरों के खुले हुए दरवाज़ों में से औरतों को झांकने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उनके ऊबड़-खाबड़ आंगनों में जमा मिट्टी, गोबर और पेशाब ने उसके मन में विरक्ति पैदा कर दी।

उसे याद आया कि उसके बाप के एक बूढ़े दोस्त की मौत पिस्सुओं की वजह से हुई थी। उसकी नाक के भीतर पिस्सू चिपक गए थे जिन्हें निकाला नहीं जा सकता था। उसे डर लगा कि कहीं उसे भी किसी ऐसी अलामत का सामना न करना पड़े। मान लो अगर प्लेग फैल गई तो!

पिछली बार जब प्लेग फैली थी तो उसका छोटा भाई और दो चचा चल बसे थे। मां ने उसे बड़ी बहन अकी के पास भेज दिया था।

काश गांव में आग लग जाती और ये मनहूस दरबे जल-भुनकर खाक हो जाते! वह चाहता था कि गांव के मकान नये सिरे से बनाए जाएं, बिजलीघर के पास बने मिस्त्रियों के मकानों जैसे।

कालू कुत्ता बादड़ी हलवाई की कढ़ाई चाट रहा था।

"ओए! दुर, दुर! कुत्ते!" लालू ने कुत्ते को भगाने के लिए आवाज़ दी,

और कहा, "हट, हट !" लेकिन कालू दूर खड़ा मज़े में जीभ चाटता रहा।

"कोई बात नहीं पुत्तर, कढ़ाई में सिर्फ जूठन है। चाटने दे," बादड़ी ने कहा, जो मैले चीकट कपड़ों में राख से बर्तन मांज रहा था।

"चाचा, यह कुत्ता गंदा और कूड़े में मुंह डालता फिरता है···" लेकिन यह देखकर कि बादड़ी से कुछ भी कहना फिजूल है, वह बड़बड़ाया, 'सबसे ज़्यादा अंधा तो वह है जो जान-बूझकर देखना ही नहीं चाहता।' और वह वहां से चल पड़ा।

गांव के साहूकार चमनलाल की दुकान के नज़दीक पहुंचकर भी उसे चुरंजी को बुलाने की हिम्मत नहीं पड़ी। उसने तय किया कि वह धीमी चाल से वहां से गुज़रेगा और चुरंजी को अपने पीछे आने का इशारा करेगा।

गावतकिये के सहारे साहूकार दुकान में बैठा था। लोगों ने उसका नाम चमूना और पिस्सू भी रख छोड़ा था। नीचे फर्श पर चुरंजी चुपचाप बैठा था। अगर वहां गाहक बैठे होते तो वह चुरंजी को बुला सकता था लेकिन अब··· उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह चमनलाल की गालियां नहीं खाना चाहता था।

वह आसपास देखे बगैर वहां से गुजर गया। चुरंजी ने उसको देखा है या नहीं, इसकी भी उसने परवाह नहीं की।

जब बनिये की दुकान आंखों से ओझल हो गई तो उसकी जान में जान आई। वह सोचने लगा कि थुल-थुल मोटे बेवकूफ चुरंजी को पैसे वाले साहूकार का बेटा नहीं होना चाहिए। उसको जेबखर्च तो जरूर ज़्यादा मिलता था, लेकिन उसकी ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी थी?

अपने मोटे थुल-थुल दोस्त की बात सोचकर लालू अनायास मुस्करा दिया। लोग उसे छेड़ते हैं, यह कितने शरम की बात है। लेकिन इसी वक्त उसका ध्यान स्कूल के बाहर खड़ी बच्चों की कतार की तरफ गया, जो मास्टर हुकमचन्द के सामने कान पकड़कर खड़े थे। स्कूल कभी का बन्द हो चुका था। 'हाय रब्बा ! गरीबों पर कितना जुल्म है···।'

'लम्बूतरे चेहरे और बकरे जैसी दाढ़ीवाला यह बूढ़ा सूअर अभी तक मरा नहीं !' लालू के दिल में एक पुरानी शिकायत की कटुता जाग पड़ी। पांचवीं पास करके जब वह शेरकोट के मिडिल स्कूल में दाखिल हुआ था, तब उसने चैन की

सांस ली थी। हुकमचन्द उससे इसलिए जलता था, क्योंकि निहालू ने हर फसल पर उसे गेहूं की एक बोरी देने से इन्कार कर दिया था; न लालू ही शेरकोट जाकर मास्टर जी का आटा पिसवाने को तैयार था। उन दिनों उसकी हथेलियों पर रोज़ सुबह पांच बेंत पड़ा करते थे।

लेकिन अब हुकमचन्द हमेशा मीठा बनने की कोशिश करता था। लालू मिडिल स्कूल की पढ़ाई में तेज़ निकला था, शायद इसलिए। हुकमचन्द की मुस्कराहट बनावटी थी, क्योंकि उसीने लालू के बाप से कहा था, 'लड़के को गांव से दूर सात मील शहर भेजोगे तो वह शौकीन लोगों के ऐब सीख जाएगा। धरती पर थूकने के बजाय रूमाल में थूकेगा और नाक साफ करेगा। उसका मिज़ाज भी साहबज़ादे जैसा बन जाएगा।'

'जाहिल, बेवकूफ, राक्षस!' लालू ने ज़हर उगला और वहां से इस तरह भागा जैसे ज़ालिम की ताकत अभी भी उसका पीछा कर रही हो।

लेकिन जब उसकी घबराहट कुछ कम हुई तो उसे अपने डरों पर हंसी आने लगी।

'मैं आखिर इस रास्ते से क्यों आया?' उसने अपने को डांटा। उसकी हालत उस डरपोक आदमी की सी हो रही थी जो भेड़ियों से डरता हो और जिसे पछतावा होता हो कि वह जंगल में क्यों आया। लेकिन बाजार का एक हिस्सा अभी भी उसके सामने था और रोज़ के मुकाबले में आज वहां ज़्यादा भीड़ थी क्योंकि किसान पंसारी की दुकान पर चीज़ें खरीद रहे थे और ईश्वर के बहुत-से स्थानों में प्रार्थना के लिए जाने से पहले गपशप कर रहे थे।

अचानक लालू की नज़र लम्बी दाढ़ी और चोगेवाले मिशनरी साहब फादर अनाण्डेल पर पड़ी जो शेरकोट के मिडिल स्कूल के हैडमास्टर थे। शायद वे अछूतों के मकानों से मोटर में बैठकर आ रहे थे, जहां वे भंगियों और मोचियों के परिवारों से मिलने गए थे। वे परिवार ईसाई हो गए थे। लालू ने सोचा कि हो सकता है, पादरी साहब उसके भाई दयालसिंह को ढूंढ़ रहे हों। वे ज़रूर उसे रोक लेंगे। उसने सोचा कि उसे अपने ज़िम्मे और काम नहीं लेने चाहिए।

वह गुलाम को बुलाने के लिए जुलाहों की गली में घुस गया।

"वह खसमनूंखाना घर नहीं है। चला जा यहां से हरामज़ादे! सारे दिन खेल-कूद के सिवा तुम्हें कुछ नहीं सूझता!" गुलाम की मां ने गाली दी।

लालू एक टूटे मकान के छेदों में से निकलकर जुते हुए खेतों में आ गया, जहां सांझ के झुटपुटे में अपनी ज़मीन के उत्तर-पश्चिमी भाग में एक पहाड़ी पर बना महन्त नंदगीर का मठ दिखाई दे रहा था।

उसने चौकोर विशाल इमारत की सीमेण्ट लगी पक्की दीवारों को देखा जो किले की दीवारों की तरह मज़बूत बनाई गई थीं। बचपन में उसे मठ के नज़दीक जाने से डर लगता था क्योंकि उसने मठ के बारे में बहुत-से किस्से और किंवदंतियां सुन रखी थीं। पहले महन्त नंदगीर का शरीर हवा में गायब हो गया था और उसकी आत्मा सुनहरे मन्दिर की गुफा में चली गई थी जहां बैठकर वह समाधि लगाया करता था। उसकी आत्मा नये महन्तों को प्रेरणा देती थी। बचपन में इस किस्से को सुनकर लालू की नज़रों के सामने पहले महन्त का खौफनाक प्रेत दिखाई देता था। अब वह बड़ा हो गया था और प्रेत का सामना कर सकता था, लेकिन अभी भी उसे गुफा में घुसने से डर लगता था, क्योंकि गुफा के रास्ते में चूहों के बिल और चिमगादड़ों के डेरे थे और वह रास्ता इतना तंग था कि सिर्फ एक आदमी पेट के बल रेंगकर वहां पहुंच सकता था। लोगों का ख्याल था कि अपनी आत्मशक्ति के द्वारा महन्त लगातार गुफा के सात हिस्सों में एकसाथ मौजूद रह-कर प्रार्थना करता रहा था। वह एक सुरंग के रास्ते दो सौ मील चारों पंजों के बल चलकर हरिद्वार में गंगा के किनारे जा पहुंचा था। अब सरकार के हुक्म से वह सुरंग बन्द कर दी गई थी।

मठ के चौकोर आंगन में मिट्टी के गोल चबूतरों पर बैठना भी एक अद्भुत अनुभव था, क्योंकि समाधियों के चारों तरफ उजाड़ था और पहाड़ियों परसे उठती हुई धुंध के सामने सूरज धीरे-धीरे अस्त हो रहा था। घाटी में फैलते हुए अंधेरे की तरह लालसिंह की हड्डियों में एक विलक्षण भय समा रहा था। उसने चारों तरफ नज़र डाली और अपने डर पर काबू पाने की कोशिश की। दाईं तरफ की बंजर भूमि में दो घोड़े चर रहे थे और अपने नज़दीक मंडराते हुए मेंढकों और गुबरीलों को भगाने के लिए बार-बार हिनहिना रहे थे। एक किसान अपने घोंसलों में लौटते हुए पक्षियों को देखकर आवाज़ें कर रहा था। लालू को सामने मठ की दीवारों की पृष्ठभूमि में भूरे रंग की एक रेखाकृति दिखाई दी।

क्षण-भर के लिए लालू ने आंखें फाड़कर देखा। वह नेक सीतलगर था, जो सारी उम्र गांव से महन्त और मठ के श्रद्धालुओं के लिए पानी ढोते-ढोते गंजा हो

गया था।

"रुको, बाबा सीतलगर, मैं तुम्हारा पानी का घड़ा उठाऊंगा," लालू ने बूढ़े को आवाज़ दी। बूढ़े का शरीर सिकुड़कर छोटा हो गया था और उसके शरीर पर सिर्फ एक लंगोटी थी।

"नहीं पुत्तर," बूढ़े ने थकान से हांफते हुए कहा। वह अपने दायें हाथ की उंगली उठाकर जैसे लालू को घड़ा उठाने की मनाही कर रहा था और आशीर्वाद दे रहा था।

लालू ने भी अनुरोध नहीं किया क्योंकि उसे मालूम था कि बूढ़े को अपने काम में किसीकी मदद लेना मंज़ूर नहीं है। यह साधू तीस बरस पहले मठ में आया था। लोगों का कहना था जम्मू के एक बनिये ने उसकी सारी जायदाद और ज़मीन कुर्क करवा ली थी। वह यहां सच्चा संत समझा जाता था, हालांकि उसका भोला-पन निरे मूर्खों जैसा था। वह कुत्ते की तरह वफादार था, अथक परिश्रम करता था और दूसरों की सेवा में उसने अपने-आपको मिटा दिया था। ये सब बातें उसके चरित्र की गहराई की प्रतीक थीं, जिसको कभी नहीं आंका गया था। 'सत बचन' और 'मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूं' के सिवा उसके मुंह से कभी कोई शब्द नहीं निकला। जब दूर इलाकों के किसान आकर उसके सामने अपने दुखड़े रोते थे तो वह तोते की तरह रटा-रटाया फार्मूला दुहरा देता था, 'ईश्वर एक है, ईश्वर एक है, बाकी सब माया है।' इसके बाद वह हमेशा कहा करता, 'क्या सही है और क्या गलत है यह तो महन्तजी से जाकर पूछो, क्योंकि मुझे ईश्वर ने कोई रहस्य जानने योग्य नहीं बनाया और न मैं किसीको सलाह ही दे सकता हूं।'

आम तौर पर किसान उसका मज़ाक उड़ाते थे और जब भी बातचीत गंभीर हो जाती थी तो महन्त बूढ़े का मज़ाक उड़ाता था।

पहाड़ी पर चढ़ने के बाद लालू ने एक गहरी सांस ली, उसे इस बात पर अफ़-सोस हो रहा था कि वह बूढ़े के साथ-साथ चल रहा था फिर भी उसका वज़न हल्का नहीं कर पा रहा था।

"बाबा, तुम सारे दिन पानी के घड़े ढोते-ढोते थक जाते होगे," उसने हिम्मत करके पूछा।

सीतलगर ने कोई जवाब नहीं दिया।

लालू ने इस उम्मीद से बूढ़े के चेहरे की तरफ देखा कि शायद वहां प्रतिरोध

या प्रार्थना का संकेत मिले, लेकिन वहां कुछ नहीं था। उसकी लंबी बदसूरत नाक और नीले ओठों पर अधमुंदी आंखें झुकी थीं, जिनपर घनी भौंहों का साया था। उसकी विकराल अधपकी दाढ़ी ज़मीन की तरफ झुकी हुई थी। वह सहज धीमी चाल से चल रहा था। फिर सीतलगर का मुंह खुला और उसने हांफकर कहा :

"पुत्तर, अगर इन्सान के दिल न हो तो पैर तो होने चाहिए···"

लालू दया और संकोच-भरे स्नेह से बूढ़े को देखने लगा। वह सीतलगर के ऊबड़-खाबड़ चेहरे, गंजे सर और माथे की झुर्रियों की तरफ देख रहा था।

कुछ देर तक वह बूढ़े के साथ-साथ चलता रहा। फिर उसके मन में बूढ़े को बातचीत में घसीटने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन उसकी समझ में न आता था कि वह क्या बात करे। आखिर उसने कहा, "बाबा, मैं तुम्हें मेले में ले चलूंगा।"

"हां पुत्तर, मैं चलूगा, लेकिन मठ में आनेवाले श्रद्धालुओं के लिए पानी कौन भरेगा?"

लालू सोचने लगा, 'आखिर बूढ़ा क्या सोचता और महसूस करता है? क्या सचमुच मेले में जाएगा? शहर की भीड़भाड़ में उसे कैसा लगेगा?'

जब वे मठ के किलेनुमा फाटकों के पास पहुंचे तो सीतलगर ने पहले की तरह हाथ हिलाया, फिर वह दीवार में बने एक आले के पास रुक गया। सर से घड़ा उतार-कर उसने संगमरमर के एक टुकड़े पर रख दिया, जो चौकी के काम आता था। फिर गांठ खोलकर उसने एक रुपया निकाला और लालू की हथेली पर रख दिया जैसे वह रुपया न होकर ठीकरा हो। पहले तो लालू का सर चकरा गया, फिर उसने विरोध करने के लिए अपने होंठ खोले। लेकिन सीतलगर ने हाथ हिलाकर कहा, "मेले में मेरी तरफ से यह रुपया खर्च लेना, पुत्तर!"

"लेकिन बाबा सीतलगर···" लालू ने कुछ कहना चाहा, वह आंखें फाड़कर, मुंह खोले बूढ़े की तरफ देखने लगा। बूढ़े ने झुककर घड़ा उठाया और ड्योढ़ी लांघकर रसोईघर की तरफ चल पड़ा।

लालू उसके पीछे-पीछे अंधेरी ड्योढ़ी लांघकर एक बड़े आंगन में पहुंचा, जहां एक छज्जे के सामने, गावतकिये का सहारा लेकर भगवे कपड़ों में महन्त बैठा था। वह एक लम्बी चिलम पी रहा था, और बीच-बीच में खांसते हुए तीन-चार किसानों से बातें कर रहा था। लालू ने अपने जूते सीढ़ियों के पास उतार दिए और महन्त के सामने घुटने टेककर उसके पैर छुए। फिर घर से लाई चीज़ें महन्त के सामने

रख दीं।"

महन्त ने भारी, प्रसन्न आवाज़ में कहा, "ओए लालसिंहा, यार तू बहुत दिनों से इधर नहीं आया, लगता है तू परदेसी बन गया है।" महन्त की नज़र लालसिंह की लाई हुई चीज़ों पर गड़ी थी।

लालू ने संकोच से सर झुका लिया। महन्त की बेतकल्लुफी से वह सकपका गया था। वह जानता था कि गांव के नौजवानों की टीका-टिप्पणी से बचने के लिए महन्त जी इतनी दोस्ती जतलाते थे, वे नहीं चाहते थे कि कोई उनके चरित्र पर आक्षेप करे। भगवे कपड़ों के बावजूद उनकी दुश्चरित्रता किसीसे छिपी नहीं थी। लोग जानते थे कि मेलों और बर्सियों के मौकों पर खूबसूरत औरतों को महन्त की मालिश करने के लिए चुना जाता था और वे महन्त की वासना के आगे समर्पण करती थीं।

"आकर मेरे पास बैठ! दूर क्यों बैठा है?" महन्त ने कहा। "तू मुझे अपने भेद बेशक न बता, लेकिन नज़दीक आ जा। मैंने सुना है कि तेरा बापू तेरी कुड़माई[1] की बातचीत कर रहा है।"

"नहीं, बापू दयालसिंह की शादी की बात कर रहा होगा।" लालू ने जवाब दिया। वह सर झुकाकर अपनी जगह खड़ा रहा। शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया था।

"आ पुत्तर! मैंने महन्तजी के लिए जो सामान खरीदा था, वह तू ले आया है न!" निहालसिंह ने समाधियों के पास बने रसोईघर में से निकलकर कहा। वह मठ की बाईं दीवार के साये में खड़ा था। उसके हाथ में दौरी-डंडा था। "आ तू ठंडाई पीने के वक्त आया है।" फिर वह छज्जे पर चौकड़ी मारकर बैठ गया।

फुर्ती से वह ठंडाई रगड़ने लगा और ऊंची आवाज़ में गाने लगा :

"आओ पुत्तरो, भाइयो, सब जने आओ,
आओ भांग रगड़ें
जिसे देवता चाव से पीते हैं
रगड़ें और पिएं···"

अपने बाप की बेहयाई को देखकर लालू को शर्म महसूस हुई, वह वहीं बैठ

१. सगाई

गया। उसे लगा कि निहालू ताजी ठंडाई रगड़ने से पहले काफी मात्रा में भांग चढ़ा चुका है।

"शाबाश, बाबा शाबाश।" हरनामसिंह बोला जो महन्त के दायीं तरफ बैठा था। बाकी के तीन किसान शायद दूर के गांवों से आए थे, क्योंकि उनके चेहरे लालू के लिए अपरिचित थे। वे भी दबी ज़बान में निहालू को प्रोत्साहित कर रहे थे, "वाह, वाह, बाबा! वाह, वाह!" महन्त भी उत्साह में भरकर कुछ कहने वाला था, लेकिन चरस का धुआं उसके गले में अटक गया और उसे ज़ोर से खांसी आने लगी...उसने छज्जे पर बलगम थूक दी।

"आओ भांग रगड़ें,
आओ..."

निहालू जोश से ठंडाई रगड़ रहा था, उसकी अदृश्य सोई शक्ति जैसे एकत्रित हो गई थी। वह लट्टू की तरह उछलता था, फिर चौकड़ी मारकर बैठ जाता था।

"आओ भांग रगड़ें
आओ..."

अपने बाप को कड़ी मेहनत करते देखकर लालू के दिल में डर की टीस उठी। बूढ़ा हमेशा की तरह शानदार स्वाभाविक ढंग से चहक रहा था। लालू के खून में स्नेह की लहर दौड़ गई। जब निहालू का जोश इतना बढ़ गया कि डंडा उसके घुटनों से टकरा गया और ठंडाई नीचे गिर गई तो लालू का डर बढ़ने लगा। सब भांग पीने और रगड़ने वालों की तरह उसपर भी पागलपन सवार हुआ था। बूढ़े को रोकने का सिर्फ एक ही तरीका था कि डंडा उसके हाथ से छीन लिया जाए। लेकिन बूढ़ा इसे गुस्ताखी समझेगा। वह कभी यह बात कबूल नहीं करना चाहता था कि उसके जिस्म की ताकत कम होती जा रही है। हो सकता है, अगर हरनामसिंह या किसी और किसान के कहने से बूढ़ा मान जाए।

लालू बेचैनी से इन्तज़ार करने लगा कि शायद कोई बूढ़े को रोकेगा, लेकिन श्रोतागण कूंडी-सोटे की लय में तल्लीन हो गए थे। किसान भी अधमुंदी आंखों से सर हिलाकर झूम रहे थे और चटखारे ले रहे थे, जैसे उनपर भी नशा चढ़ गया हो।

लालू ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला, लेकिन इसी वक्त बूढ़े ने डंडा एक

तरफ रख दिया, अपने मद्य-गीत को धीमा कर दिया और धर्मोपदेशक की तरह अपना दायां हाथ ऊपर उठाकर गाना शुरू किया :

"पौण गुरु पानी पिता माता धरत महत्त
दिवस रात दोये दाई दाया खेले सकल जगत
चंगेआईयां, बुर्याइयां, वाजे धरम अधूर
करमी आपो आपणी के नेड़े के दूर
जिन्नी नाम ध्यायआ गए मशक्कत घाल
नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल।"

"सत बचन सत बचन !" किसानों ने कहा। उनका भक्तिभाव चरम सीमा तक पहुंच गया था। हरनामसिंह ने सिख धर्म का नारा बुलन्द किया, "जो बोले सो निहाल ! सत सिरी अकाल।" महन्त ने आंखें बन्द कर लीं। लालू सोचने लगा, 'महन्त ने धार्मिक गीत के अर्थ पर ध्यान लगाने के लिए आंखें मूंदी हैं या धर्म से ध्यान हटाकर चरस के स्वाद में लगाने के लिए ?'

"अगर गुरु साहब के ये शब्द सच्चे हैं तो मुझे भी मुक्ति मिलेगी न महन्त-जी ?"

निहालू ने अचानक धर्मोन्माद छोड़कर दास्यभाव अपनाते हुए पूछा।

महन्त ने लापरवाही से इस तरह सर हिलाया जैसे वह कहीं दूर बैठा हो।

"भाइयो ! मैं खालसा पक्ष के लिए लड़ा था, पंथ की खातिर, भाइयो !" निहालू ने नशे में डींग हांकते हुए कहा। "मैंने उससे पहले भी गुनाह किए थे और बाद में भी गुनाह किए हैं, लेकिन सबकी तरह मैं भी तलवार लेकर उस लड़ाई में लड़ा था। लड़ने के साथ-साथ मैं लंगरों में मसाले भी पीसा करता था, जिस तरह मैं ठंडाई घोंट रहा हूं। हम हाथ जोड़कर एक-दूसरे से कहते थे 'सत बचन !' हम दुश्मनों से, फिरंगियों और गद्दारों से भी लड़े थे। हमें धोखा दिया गया, फिरंगियों के पास तोपें थीं जिनकी आवाज़ सैकड़ों मील तक सुनाई देती थी। लेकिन हम आखिरी दम तक लड़ते रहे। क्या मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी ? उन सिपाहियोंकी तरह जो लड़ाई के मैदान में शहीद हुए थे ? भाइयो, क्या मुझे इसलिए बुरा समझा जाएगा, क्योंकि मैं ज़िन्दा बच गया हूं और मेरे साथी शहीद हो गए थे ! मैं बुज़दिल नहीं हूं भाइयो, यह कहे देता हूं। मैं बुज़दिल नहीं हूं। यकीन करो भाइयो मैं, लड़ाई के मैदान से भागना नहीं चाहता था। मैंने अपने-आपको मौत

के मुंह में झोंक दिया था।"

यह कहकर वह रुक गया। उसे डर लगा कि शायद बुज़दिली की चर्चा से श्रोताओं को संदेह न हो जाए कि वह नीच है।

लोगों ने न उसकी तारीफ की, न ही निन्दा की। उसने आंखों में आंसू भर-कर कहा, "वाह गुरु की सौगन्ध, मैं सच बोल रहा हूं। मैं लड़ा था और बुज़दिल नहीं था। लेकिन मुझे डर है कि अब मैं बुज़दिल हो गया हूं, क्योंकि मेरी मौत नज़दीक आ गई है। आज सुबह जब मैं स्टेशन से पैदल आ रहा था तो मुझे मौत से डर लगा था, मुझे मौत दिखाई दे रही थी, अभी भी दिखाई दे रही है—वह चोर की तरह दबे पांव मेरी पीठ के पीछे से आ रही है और मैं उस चोर का डर दूर नहीं कर सकता, अपनी पीठ से उस डर के बोझ को उठाकर फेंक नहीं सकता··· मैं···"

शब्दों की बाढ़ से उसका गला रुंध गया था और उसके गालों पर आंसू बह रहे थे। उसने सर झुकाकर आस्तीन से आंसुओं को पोंछा और सीना पकड़कर खांसने लगा। उसने फिर अपनी बात जारी रखने की कोशिश की :

"ज़िन्दगी बिस्तर में हमें बुज़दिल बना देती है! काश मैं फिरंगियों से लड़ते-लड़ते जंग में मारा जाता तब मैं उस कुत्ते हरबंससिंह को अपनी ज़मीन छीनते हुए तो न देखता···"

उसका गला सूख रहा था, और आवाज़ भर्रा रही थी।

महन्त नन्दगीर ने बीच में दखल देते हुए कहा, "निहालू, उस बात को छोड़ो। जिन किसानों ने मठ को अपनी ज़मीनें दान की हैं, वे भी हम संतों को गाली देते हैं, जिस तरह तुम ज़मींदार के खिलाफ बोल रहे हो। छोड़ो इस बात को। ईश्वर ने हर आदमी के लिए जगह बनाई है। तुम अच्छी तरह जानते हो कि एक मुज़ारे की उतनी इज़्ज़त नहीं है जितनी कि तुम जैसे किसान की है। इसलिए अपनी इज़्ज़त बनाए रखो, लेकिन और लोगों से मुकाबला न करो, क्योंकि ऐसा करना पाप है। सच्चा धर्म यही सिखाता है कि तुम्हें अपने से बड़े लोगों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, वरना संसार में अराजकता फैल जाएगी। दुश्मन को गाली देकर तुम बेशक अपने घर को गन्दा करो, लेकिन संतों के घर में थूकने से खौफ खाओ।" निहालू को डांटते वक्त महन्त घबराहट-भरी हंसी हंसा।

"मैं सच्चाई के लिए लड़ा हूं, महन्त जी, ईश्वर के यहां मेरी सुनवाई ज़रूर

होगी," निहालू ने प्रतिवाद किया।

"अच्छा, मान गए, लेकिन तुम हम संतों से ऊपर उठकर तो ईश्वर तक अपनी बात नहीं पहुंचा सकते। तुम आकर हमें अपनी मुसीबतों के बारे में बताओगे तो ईश्वर तुम्हारी ज़रूर सुनेगा। तुम जितने ज़्यादा हलीम होगे, उतनी ही आसानी से हम ईश्वर तक तुम्हारी बात पहुंचा सकेंगे।"

"दुनिया में इन्साफ होना चाहिए।" निहालू अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। "अगर छोटी अदालत ने मेरे हक में फैसला न किया तो मैं हाईकोर्ट में मुकदमा लड़ूंगा और अगर वहां भी इन्साफ न मिला तो मैं ईश्वर की अदालत में जाऊंगा। मैं कभी हार नहीं मानूंगा। मैं अपना हक क्यों छोड़ूं? और उस गद्दार के सामने झुकूं, जिसने ज़मीन की चोरी में कोई कसर नहीं छोड़ी?"

"इन्साफ तो बाबा, उसीको मिलता है जो समर्थ हो," हरनामसिंह ने कहा।

"इन्साफ हमेशा ईश्वर की मेहर से नहीं मिलता," महन्त ने कहा।

"लेकिन मेरा ईश्वर सुनेगा, मेरा ईश्वर सुनेगा," निहालू चिल्लाया। उसका उन्माद बढ़ता जा रहा था। लालू ने कहा, "आओ बापू, सर्दाई मैं रगड़ दूं। तुम थक गए हो।"

लालू उठकर अपने पिता के पास गया। निहालू खांसता हुआ महंत के पास उठ आया और अपनी गलतियों का प्रायश्चित्त करने के लिए महन्त की टांगें दबाने लगा।

महन्त की बायीं तरफ बैठे एक किसान ने कहा, "मैं जानता हूं मौत का डर कैसा होता है। लोग कहते हैं कि चोर और सांप के डर से बड़ा डर कोई नहीं होता! खेतों में जब सांप ने मेरे लड़के को काटा, उस वक्त मैं घास काट रहा था। सांप मेरे पास से रेंगता हुआ गुज़र गया। ज़रा सोचो, मुझे कैसा खौफ महसूस हुआ होगा!"

"पालकी कितनी दूर रह गई है?" हरनामसिंह ने पूछा, "मैं चाहता हूं कि चंडी के आने तक लड़के की सांस बनी रहे—या तब तक जब तक कि महन्तजी उसे छू नहीं लेते।"

"बाबा निहालू, तुम बूढ़े हो गए हो, अब तुमसे भांग नहीं रगड़ी जाती। अब हमें लालू को इस अमृत के भेद बताने चाहिए, ताकि दयालसिंह की गैरमौजूदगी में यह लड़का आकर साधुओं की सेवा कर सकता है," महन्त ने मुस्कराकर बूढ़े

की पीठ थपथपाई।

निहालू ने हाथ जोड़कर कहा, "सत बचन महाराज! सत बचन! लेकिन एक परिवार में भांग पीनेवाले दो जने ही काफी हैं। क्यों?"

महन्त ने चिलम एक तरफ रख दी और अपना हाथ उठाकर इस सवाल को अनसुना करके लापरवाही से कहा, "डरो नहीं! ज़िन्दगी कभी न कभी खत्म होगी। संतों की सेवा का बदला तुम्हें ज़रूर मिलेगा। माला जपने का भी इतना फल नहीं मिलता जितना कि संतों की सेवा का।"

"महन्त जी ज़रा गठरी खोलकर देखिए, जो रेशम मैं आपके लिए लाया हूं वह आपको पसंद है या नहीं। इस बार फसल से अच्छी कीमत वसूल नहीं हो सकी। मैं......"

चिलम पीते-पीते महन्त गठरी की बात भूल गया था। उसने फूहड़-आतुर उंगलियों से गठरी को खोला।

भांग घोंटते-घोंटते लालू का खून गर्म हो गया। उसे लगा जैसे वह पिंजरे में कैद हो गया है। उसने सोचा था कि वह सिर्फ दिखावे के लिए एक मिनट वहां रुकेगा और महन्त को गठरी देकर अपने दोस्तों से मिलने खेतों में चला जाएगा। उसे न धर्म का ज्ञान था, न ही उसमें दिलचस्पी थी। उसे लगा कि 'संतों की सेवा' के आग्रह के पीछे महन्तजी की अधार्मिकता छिपी है। लालू के संदेह की पुष्टि हो गई थी। उसकी समझ में आ गया कि लोग महन्त को 'कुत्ता' क्यों कहते हैं। महन्त के धूर्तता-भरे कटाक्ष और व्यवहार भी सब महन्तों जैसा ही था।

"कितना सुन्दर रेशम है!" महन्त ने रेशम को छूते हुए कहा, लेकिन साथ ही दबी आवाज़ में बोला, "लेकिन यह जापानी रेशम है।" वह जैसे पास बैठे किसानों को जतला देना चाहता था कि उसने तोहफा कबूल तो कर लिया है, लेकिन वह महंगे किस्म के असली रेशम को ज़्यादा पसन्द करता है।

लालू के दिल में महन्त नंदगीर के लिए गहरी नफरत पैदा हो गई। वह सोचने लगा कि महन्त कितना कमीना है कि बूढ़े को जतला रहा है कि रेशम सस्ता है। लालू के पिता ने कहा था कि फसल से ज़्यादा आमदनी नहीं हुई। उसके परिवार के लोग महन्त जैसे धूर्तों को तोहफे देकर क्यों पैसा बर्बाद करते हैं? क्यों? बरसों से महन्त उन लोगों के किसी काम नहीं आया था। हर बार फसल के पकने पर वह अनाज का हिस्सा और कपड़े लेने आ धमकता था। बदमाश, बदचलन कहीं का! वह

बढ़िया खाना खाता है, रेशम के भगवे कपड़े पहनता है । चरस और भांग पीता है। अगर लोगों की बातें सच हैं तो वह वेश्यागमन और व्यभिचार भी करता है। ऐसे आदमी को पवित्र और गुरु समझा जाता है !

लालू का दिल गुस्से से जल रहा था। उसके मुंह में झाग आ गए थे—और वह दांत भींचकर अपने दिल की कड़वाहट को पीने की कोशिश कर रहा था। उसके हाथ पहले से ज़्यादा ताकत से भांग घोंट रहे थे।

"माई कुत्तेयां वाली ! कुत्तों की माई !" मठ के बाहर बच्चों की आवाज़ें सुनाई दीं। वे दीवारों पर पत्थर बरसा रहे थे।

"वे, मर जाओ ! वे, तुम्हारा कुछ बाकी न रहे ! वे! तुम्हारी मांएं मर जाएं। मुझे तुम लोग कितना सताते हो !" जादू-टोना करनेवाली बुढ़िया चण्डी की परिचित आवाज़ सुनाई दी। वह गांव के श्मशान के पास फूस की एक झोंपड़ी में रहती थी। उसकी झोंपड़ी एक कन्दरा में बनी थी । गर्मियों में वह दो आवारा कुत्तों को पालती थी और जाड़ों में वह सराय में जाकर रहती थी।

"माई कुत्तेयां वाली ! माई कुत्तेयां वाली !" लड़के छेड़खानी कर रहे थे।

"वे, तुम्हारा बेड़ा गर्क हो जाए ! वे तुम्हारा कुछ बाकी न रहे ! तुम्हारी मांएं-बहनें नहीं हैं जो मुझे इतना तंग करते हो !" चण्डी की आवाज़ चिलखनी होती जा रही थी। वह ड्योढ़ी के दरवाज़े पर खड़ी किसी दरख्त की सूखी टहनी की तरह पतली दिखाई दे रही थी। बच्चों की छेड़छाड़ के जवाब में वह पागलों की तरह झूम रही थी और अपने हाथ हिला रही थी। उसने एक हाथ से अपनी फटी धोती को कमर पर लपेटा और दूसरे हाथ से अपने बिखरे बालों को समेटा।

"वे, खसमनूंखाने ओ !" चण्डी की आवाज़ हद से ज़्यादा ऊंची हो गई। वह लड़कों के पीछे-पीछे भागी । पत्थर बरसने बन्द हो गए और लड़के चीखते हुए भागने लगे।

"ओए ! कोई जाकर माई को उन सूअरों से छुड़ाकर लाओ !" महन्त ने लापरवाही से कहा ।

"पालकी आ गई है ! वह रहा हमारा लड़का।" किसान एकसाथ बोल उठे।

पालकी में लड़के को लाया गया था। उसका बाप लड़के के शरीर को छूकर देख रहा था कि जिस्म में जान है या नहीं।

हरनामसिंह चण्डी को लाने के लिए बाहर भागा लेकिन उसके जाने से पहले

ही गुस्से में भुनभुनाती हुई चण्डी मठ में दाखिल हुई। उसके मुंह से झाग निकल रहे थे, आंखें अंगारों की तरह चमक रही थीं और हांफती हुई घोड़ी की तरह उसके नथुने फूले हुए थे।

"ये खसमनूंखाने मुझे सताते हैं और तंग करते हैं महन्तजी। देखो उन्होंने मेरी बांहों और टांगों को ज़ख्मी कर दिया हैं। वे मेरी जान के दुश्मन क्यों हैं? अपनी मांओं-बहनों को क्यों नहीं छेड़ते? मरजाने!"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। वे लुच्चे हैं। तुम्हें खामोश रहना चाहिए और उनकी बातों की परवाह नहीं करनी चाहिए। ढोलक बनानेवाला हफीज़ कहां है? जब तक वह नहीं आता, तुम यहीं आराम करो।"

चंडी थककर बैठ गई और उसने आंखें मूंद लीं। लगता था उसे नींद आ गई थी।

"वह जहन्नुम में गया है," हरनामसिंह ने कहा और वह ज़ोर से चिल्लाया, "ओए हफीज़ा! आ!"

दाढ़ीवाला साज़िन्दा हफ़ीज़ अपनी ढोलक लेकर आ गया। शादियों और बच्चों के जन्म के मौकों पर अभी भी वह किसानों के घर साज़िन्दों के दलों का नेतृत्व करता था। नीची जात का होने की वजह से महन्त की मौजूदगी में वह तभी आता था जब उसे बुलाया जाता था। उसने हाथ उठाकर कहा, "सलाम, महन्तजी, माई-बाप।"

लालू ने सुना था कि चंडी पर सांपों के राजा की रूह सवार होती है। वह महन्त की मदद और आशीर्वाद से सांप के काटे किसी भी आदमी को ठीक कर सकती है।

लालू भांग छानकर प्याले में डाल रहा था। इसी वक्त हफीज़ ने ढोलक बजानी शुरू की और चंडी, जो अभी तक बिना हिले-डुले खामोश बैठी थी, इस तरह कांपने लगी जैसे उसे तेज़ बुखार चढ़ा हो।

धीरे-धीरे वह मस्त हो रही थी। बचपन में लालू ने चंडी को इस रूप में कई बार देखा था। लेकिन आज वह कुंडी-सोटा छोड़ मन्त्रमुग्ध होकर उसे देखने लगा।

धीरे-धीरे चंडी के शरीर की कंपकंपी दूर हो गई और वह ज़ोर से झूमने लगी। वह फुफकार रही थी। लालू ने मठ के आंगन में बैठे लोगों की तरफ देखा,

जिनके चेहरों पर एक पैशाचिक तनाव था। सांप द्वारा काटा गया लड़का मुर्दे की तरह लेटा था। चंडी फुफकारती हुई सांप की तरह अपने शरीर को हिलाने लगी, उस सांप की तरह जो अपने शिकार का पीछा करता है। ढोलक की आवाज़ तेज़ होकर लालू के खून में पैठ गई। उसे घबराहट महसूस होने लगी।

लेकिन चंडी जैसे पागल हो गई थी और अपने अधपके खुले बालों को एक शाही अदा से हिला रही थी। उसके ओठों पर एक मुस्कान थी जिसने उसके रुक्ष, पिचके गालोंवाले चेहरे में उन्माद का आलोक भर दिया था। फुफकारें छोड़ती हुई वह अपने सर को कोब्रा सांप की तरह हिलाने लगी। उसका सिर एक चक्कर में घूमता गया, घूमता गया। यहां तक कि लालू को यह देखकर एक गुद-गुदी-सी महसूस हुई और उसकी हंसी छूटने लगी। उसे लगा कि चंडी के चेहरे का खून एक मायावी आग के आवर्त में बदलकर चक्कर काट रहा है। इस तरह सर को चक्कर देते हुए और फुफकारती और झाग उगलती हुई वह एक चौपाये की तरह हाथों और पैरों के बल पालकी की परिक्रमा करने लगी।

कांपने से बदलकर झूमने और झूमने से बदलकर ऐंठने-मरोड़ने और ऐंठने-मरोड़ने से बदलकर रेंगते-सरकते हुए वह चक्कर काटने लगी। फिर वह उछलने और कूदने लगी, सांप की तरह नहीं, बल्कि बन्दर की तरह; और उसका सिर लगातार वात-चक्र की तरह चक्कर काट रहा था और वह क्रुद्ध फुफकारें छोड़ रही थी और हवा में चारों ओर इस तरह थूक रही थी मानो गुस्से से सारे संसार में अपना ज़हर फैला देना चाहती हो। कभी-कभी उसका चेहरा ज़मीन से टकरा जाता था, और एक बार तो उसका सिर बेकाबू होकर इतने ज़ोर से पालकी के कोने से टकराया कि खून बहने लगा। लेकिन वह सांप के नाच की बलखाती हुई चक्करदार मुद्रा में मस्त होकर झूमती रही। मानवीय और पाशविक मुद्राओं का यह मिश्रण देखने में एकसाथ ही मनमोहक और भयानक लग रहा था। इस उन्मत्त नाच में समय और स्थान खो गए थे। ढोलक ने इस उन्माद को और भी बढ़ा दिया था। ज़िन्दगी का अर्थ जैसे लुप्त हो गया था, केवल दर्शकों की स्थिर दृष्टि में ही जीवन का अर्थ बच गया था, जिसमें सन्देह और उम्मीद थी। सब लोग किसी चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहे थे।

थकी और हिंस्र चंडी नृत्य के उन्माद में जब अपना असली उद्देश्य भूल गई तो वातावरण में एक विचित्र तनाव छा गया। दरअसल चण्डी को सांपों के

बादशाह की रूह बुलाने का काम सौंपा गया था। वह नाचती-नाचती रसोईघर के कोने तक चली गई थी। अछूत होने की वजह से वह स्थान उसके लिए वर्जित प्रदेश था। वह अमृतसर के एक भंगी की बीवी थी और अपना गांव छोड़कर यहां आ गई थी।

अचानक चंडी वहां से हट गई। ऐसा लगता था कि उन्माद की दशा में भी उसे अपनी नीची हैसियत का अहसास था। वह आंगन के कोने में उगे बरगद के पेड़ की घनी छांह में नाचने लगी और पेड़ की जड़ों में फूंक-फूंककर नागदेवता को रिझाने की कोशिश करने लगी। फिर अपने नृत्य के वैभव में तल्लीन होकर वह पालकी के नज़दीक पहुंची, जहां सांप का काटा किसान बालक लेटा था। वह बालक के शरीर को ज़ोर से फूंकने लगी। बीच-बीच में वह दूर हट जाती थी, ताकि वह ज़ोर से फूंक मार सके। बालक के पिता ने फुसफुसाकर कहा, "वाह गुरु, हे! वाह गुरु!" लगता था उसके दर्द से खिंचे दिल पर हर क्षण का बोझ अनेक सदियों की तरह मालूम हो रहा था।

इसी वक्त महन्त उठकर चंडी के पास गया। लगता था कि वह सांप की रूह के कान में कोई अलौकिक भेद बताना चाहता था। ढोल बजाने वाले ने भी चंडी का उत्साह बढ़ाने के लिए चिल्लाकर ढोल की आवाज़ तेज़ कर दी।

चंडी सांप की तरह फुफकारती और बलखाती हुई महन्त के पीछे-पीछे बालक के पास गई और पालकी के चक्कर काटने लगी। महन्त बालक के ज़ैतूनी रंग के शरीर में वह जगह तलाश करने लगा, जहां सांप ने काटा था। लेकिन उसे वह जगह नहीं मिली।

बालक का पिता दुविधा को न बर्दाश्त कर सका। वह उठकर सामने आया और उसने अपने बेटे के बायें टखने को छुआ।

महन्त सांप की रूह को बालक के टखने के नज़दीक ले गया और उसने चंडी के कानों में कुछ कहा।

मतवाली औरत सिर हिलाती हुई बैठ गई। वह अपने खुले बालों से फर्श को झाड़ रही थी। धीरे-धीरे उसकी हरकत तेज और भयानक होती गई। फिर बालक के टखने पर गिरकर वह बार-बार अपने बालों को झटकारती हुई फर्श पर थूकने लगी और ज़ख्म को अपने बालों से रगड़ने लगी।

कुछ क्षणों के बाद महन्त ने झुककर चंडी के कान में कुछ कहा।

महन्त ने पालकी वालों को इशारा किया कि वे बालक को उठाकर छज्जे के सामने लिटा दें। महन्त के इशारे पर ढोलक वाले ने ढोलक बन्द कर दी।

क्षण-भर चंडी पागलों की तरह वैसे ही सिर हिलाती रही जैसे बालक का टखना फूंकते वक्त हिला रही थी। फिर ऐसा लगा जैसे उसकी हरकत का ईंधन चुक गया था। और ढोलक बंद होने के साथ ही उसकी हरकत भी सुस्त होती जा रही थी, उसकी मस्ती धीरे-धीरे ऐंठन में और फिर शान्त होकर कंपकंपी में बदल गई। धीरे-धीरे कंपकंपी भी शान्त हो गई। अन्त में चंडी निश्चल होकर बैठ गई। जब हरकत की गर्मी ठंडी पड़ गई तो उसका पतला बदसूरत चेहरा पूर्ववत् कठोर, रूखा और झुर्रीदार हो गया।

महन्त ने हुक्म दिया, "सीतलगर, इसे कुछ रोटियां और थोड़ी-सी दाल लाकर दे।" महन्त फिर अपने आसन पर जाकर बैठ गया।

बालक हिला-डुला, और चौंककर उसने आंखें खोल दीं। उसका पिता खुशी से चीखकर बालक पर गिर पड़ा और बच्चे के हाथ-पैर सहलाने लगा। महन्त की तरफ देखकर उसने कृतज्ञभाव से कहा, "धन्न हो! वाह गुरु धन्न है! धन्न है नंदपुरवाला संत!"

श्रोताओं की सांसें रुक-सी गई थीं। वे एकसाथ फुसफुसा उठे, "वाह गुरु! वाह गुरु!"

मन्दिर में शाम की आरती के लिए घंटिया बज रही थीं। चमत्कार के इस तांत्रिक उत्सव के बाद सबने चैन की सांस लीं।

कहीं वाह गुरु का नाम न लेना पड़ जाए, इसलिए लालू सबको भांग देने लगा। लोग जब फिर पवित्र कसमें खाने लगे और आरती की तैयारियां करने लगे तो लालू वहां से खिसक गया।

पहाड़ी से नीचे उतरते वक्त उसे मिस्त्री उत्तमसिंह और बढ़ई दीपसिंह दिखाई दिए जो बिजलीघर में काम खत्म करके लौट रहे थे और 'संतों की सेवा' करने के लिए मठ में जा रहे थे। खेतों में पाखाने के लिए गए किसान भी लौटकर इकट्ठे हो रहे थे।

६

गोधूलि का समय था। लगता था कि ईश्वर दुनिया की आंखों में अदृश्य धूल झोंक रहा था। क्षितिज के पर्दे में स्थूल और सूक्ष्म पदार्थों का संसार एक होता जा रहा था। बीच-बीच में पीले, ताम्र और मोम के रंग के पत्तों वाले वृक्षों के कुंजों में से हवा की सरसराहट सुनाई दे रही थी, अभी तक इन वृक्षों के पत्ते नहीं झड़े थे।

लालूसिंह को चमत्कार में आस्था नहीं थी, उसने पहले भी कई बार ऐसे चमत्कार देखे थे। वह जानता था कि बालक के फिर से ज़िन्दा होने के पीछे कोई रहस्य था, लेकिन वह रहस्य क्या था, यह लालू नहीं जानता था। उसका मन चमत्कार पर विश्वास करने के लिए तैयार न था, हालांकि वह अपने अविश्वास के हक में कोई दलील नहीं दे सकता था। वह चमत्कार की चकाचौंध से बचना चाहता था, हालांकि उस चमत्कार के तीव्र आलोक ने उसके शरीर के कवच को भेद कर उसमें छेद कर दिए थे।

पहाड़ी से नीचे उतरकर वह कुएं के नज़दीक खेतों पर गुज़र रहा था। जहां शाम के वक्त आम तौर पर गांव के लड़के, जब नहर पर कबड्डी खेलने नहीं जाते थे, तो वहां जमा होते थे। लालू की चकित भूखी नज़रें कभी झुक जातीं और कभी दूर कहीं खो जातीं।

'मैं किस जादू में फंस गया?' उसने अपने-आपसे पूछा, 'क्या वह मदारी का करतब था, या पागल चंडी में सचमुच कोई अलौकिक शक्ति थी?'

महन्त ने तो कुछ भी नहीं किया था, लेकिन चंडी तो पागल थी। वह लोगों को धोखा नहीं दे सकती थी। हो सकता है कि चंडी में सचमुच कोई अलौकिक शक्ति हो। लालू ने शहर में मदारी का खेल देखा था। मदारी ने अपने-आपको ज़हरीले सांप से कटवाया था, फिर ज़ख्म पर कोई जड़ी-बूटी मल दी थी, जिसने ज़हर को खींच लिया था। कहीं चंडी ने भी तो लोगों की नज़रें बचाकर बालक के ज़ख्म पर कुछ मल तो नहीं दिया था? उसने ज़हर चूस तो नहीं लिया था? हो सकता है, वह सांप के काटे का इलाज किसी जड़ी-बूटी से करती हो और रहस्यमय वातावरण पैदा करने के लिए महन्त के हुक्म पर यह खेल दिखाती हो, क्योंकि शहर के डाक्टर भी जिन्होंने चिकित्साशास्त्र पढ़ा है, बिना किसी जादू-टोने के सांप के काटे का इलाज कर सकते हैं।

हवा में कस्तूरी या धूप जैसी भारी सुवास फैली थी, जो कुएं के किनारे उगे पीपल के दरख्तों में, मठ की ठोस दीवारों और कब्रों के उभरे हिस्सों में मिल गई थी। ये कब्रें प्रेतों-भूतों और चुड़ैलों का डेरा मालूम होती थीं।

ढलान पर लालू एक चट्टान पर बैठकर सुस्ताने लगा। सामने गांव के अछूतों के मकान थे। गांव की परिचित पृष्ठभूमि में उनके मकानों की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाकृतियां साफ दिखाई दे रही थीं। ग्वालों के अंधेरे गन्दे आंगनों में, जहां जुंओं और चूहों की भरमार थी, गोबर के ढेरों के पास कुछ बच्चे किसी बछिया को घसीटकर, खेंचातानी करके तंग कर रहे थे और चारों तरफ से उसे उमेठकर अधमरा कर रहे थे। बच्चों की गालियां साफ सुनाई दे रही थीं, "मर जा नी बच्छिए! मर जा औत्री[1]!"

कितने ज़ालिम हैं ये बच्चे! इनका कद तो बढ़ता नहीं है! शरीर दुबले हैं, पेट बढ़े हुए हैं, लेकिन इनके शरीर में ताकत कहां से आई! बछिया हिलने से इन्कार कर रही थी, इसीलिए बच्चे उसे पीट रहे थे।

लालू चिल्लाकर कहना चाहता था, 'ओए, बस करो!' लेकिन इसी वक्त एक बूढ़ा गाय के दूध की आखिरी बूंद दुहकर उठ खड़ा हुआ। उसने लापरवाही से बछिया को पकड़ा और गोबर और पेशाब में सनी ज़मीन पर उसकी मां के थनों के नज़दीक धकेल दिया। बछिया ने थनों में मुंह मारा और कुछ ही देर बाद दूर हटकर भूख से 'औंएं-औंएं' करने लगी।

ग्वाले की बेरहमी देखकर लालू का हृदय ग्लानि से भर गया, उसने बेसब्री से अपने जुलाहे दोस्त गुलाम के घर की ओर देखा जो अपनी मां के साथ एक छोटी-सी खोली में रहता था। खोली के बीचोंबीच एक करघा था, एक कोने में मिट्टी का तन्दूर था और एक बड़ी-सी खाट बिछी थी जिसपर मां-बेटा सोते थे। चारों तरफ भेड़ों की मेंगनी, मुर्गियों और कबूतरों की बीटें बिखरी थीं, जहां जानवर घूमते रहते थे। घर में से किस्म-किस्म की बदबूएं उठ रही थीं। और बेहद गन्दगी फैली थी।

लालू की मां हमेशा कहा करती थी, 'ये मुसलमान लोग बड़े गन्दे होते हैं। बस दिन में दो बार गोश्त खाने के लिए जिन्दा रहते हैं।'

'लेकिन हर आदमी अपने बजाय दूसरों में नुक्स निकालता है। वे लोग गन्दे

१. बुरी

तो हैं, लेकिन वे गांव में सबसे ज़्यादा गरीब भा तो हैं।' लालू को अंधेरे में अपनी बड़बड़ाहट सुनकर अपने ऊपर खीज आई। वह एक कंकर उठाने के लिए ज़मीन पर झुका।

इसी वक्त किसीने पीछे से आकर ज़ोर से उसकी आंखें मूंद लीं। पहले ता वह अनुमान न लगा सका, फिर उसने अचानक कहा, "घुग्घी ! अरे सूअर, छोड़ दे !"

"पहले मुझसे माफी मांग। तू गालियों से अपनी ज़बान गन्दी कर रहा था," घुग्घी ने मज़ाक में कहा।

"अरे बेवकूफ, छोड़ मुझे !" लालू ने कहा।

"अब दो बार माफी मांग। तूने अपनी ज़बान गन्दी की है और मुझे बेवकूफ कहा है," घुग्घी बोला।

"ओए हरामज़ादे, छोड़ भी," हंसी और खाज से लालू का गला रुंध गया था।

"अब तुझे नाक से ज़मीन पर दस बार लकीरें खींचनी पड़ेंगी, क्योंकि तूने मेरी मां की इज़्ज़त पर कीचड़ उछाला है" घुग्घी ने लालू की आंखें और ज़ोर से बन्द कर लीं।

लालू हंसने लगा। उसने फिर घुग्घी से मिन्नत की कि वह उसे छोड़ दे। वह जानता था कि हमेशा की तरह घुग्घी शरारतें कर रहा है। उसको भी इन शरारतों का मज़ा चखाना चाहिए।

"अच्छा बच्चू देखना।" लालू ने धमकी दी।

"अच्छा तू ज़ोर लगाकर मेरे हाथों को दूर झटक दे," घुग्घी ने जवाब दिया।

लालू ने बांहें उठाकर घुग्घी की गरदन पकड़ी और घुग्घी कलाबाज़ी खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसे अपनी दुर्गति पर हंसी आ रही थी।

लेकिन अगले ही क्षण, जब लालू बांहें फैलाकर सुस्ता रहा था, घुग्घी ने आकर लालू की गरदन पकड़ ली और उसे चट्टान से नीचे गिराने की कोशिश करने लगा। लालू का शरीर हृष्ट-पुष्ट था। मां ने उसे मलाई और बादामरोगन खिला-खिलाकर पाला था। मेहनत से तन्दुरुस्त हुआ उसका लोहे जैसा शरीर हार के लिए नहीं बना था। घुग्घी ने पूरी ताकत लगाकर अपने दोस्त की गर्दन में बांहें डाल दीं और हार की तरह लटक गया। लेकिन लालू टस से मस नहीं हुआ।

घुग्घी का खास दोस्त काले रंग का कुत्ता कालू पीछे आकर भौंकने लगा।

"ज़रा ठहर पुत्तरा!" लालू ने बाएं हाथ से घुग्घी की कमर पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया और उसे सबक सिखाने के लिए पहाड़ी से नीचे फेंकने का धमकी देने लगा।

"ओए छोड़ दे! छोड़ दे! मुझसे भूल हो गई," घुग्घी चिल्लाया।

"ठहर तो सही! अगर मैंने तुझे अपनी बांहों में उठाकर घुमाना शुरू किया तो तू अपनी सारी चालबाज़ियां भूल जाएगा।" लालू ने गंभीरता का अभिनय करते हुए कहा।

"ओए प्यारे, भाई लालसिंहा, मुझे छोड़ दे। भई, मुझसे भूल हो गई थी!" घुग्घी ने विनय का अभिनय करते हुए कहा, "छोड़ दे तेरी मेहरबानी होगी।"

"अच्छा, वादा कर, आगे से तमीज़ से पेश आएगा," लालू ने कहा।

"वादा करता हूं," घुग्घी बोला। घुग्घी हवा में मुदगर की तरह लटका हुआ था। लालू ने उसे उठाकर फिर चट्टान पर खड़ा कर दिया। इस 'औपचारिक' अभिवादन के बाद लालू ने स्नेह-भरे स्वर में पूछा, "तू चोरों की तरह दुबककर क्यों आया था रे सूअर! तुझे कैसे पता चला कि मैं यहां हूं?"

"मैं तेरे घर गया था। भाई शर्मसिंह ने बताया कि तू मठ में गया है, मठ में पहुंचकर तेरे बापू से पता चला कि तू वहां से जा चुका है। मेरा अन्दाज़ था कि तू खेतों की तरफ जाएगा। अरे बेवकूफ आदमी, किसीका पता लगाने के लिए क्या अफलातून की अक्ल चाहिए?"

लालू जवाब में घुग्घी की पसलिओं को गुदगुदाने वाला था लेकिन घुग्घी वहां से सरक गया। लालू ने अचानक मुस्कराकर घुग्घी के चेहरे की तरफ देखा, पहाड़ी पर गिरती नीली धूल से उसका रंग कुछ हल्का सांवला था। उसे लगा जैसे वह नये सिरे से उस चेहरे को देख रहा हो। हालांकि लालू उस शरारत-भरे चेहरे की नस-नस से वाकिफ था—चपटी बहती हुई नाक, छोटी आंखें, मोटे ओठ और बगैर ठुड्डी का मुंह, बन्दर जैसे हिंस्र दांत।

"बापू शहर से बदमाश महन्त के लिए रेशमी कपड़े लाए थे, मैं उन्हें मठ में देने के लिए गया था," लालू ने लापरवाही से बताया। शाम को उसके दोस्त उसे बुलाने के लिए आया करते थे।

"तेरे बापू किस वक्त लौटे थे ?" घुग्घी ने पूछा।

"सुबह। वे कहते हैं कि इस साल शहर में दीवाली पर खास रौनक नहीं होगी, क्योंकि चीज़ों के भाव गिर रहे हैं। फिर भी हम लोग जरूर जाएंगे। तुम चलोगे न ? शायद बापू ने यह बात इसलिए कही थी ताकि मैं न जाऊं। फिर बापू की सेहत भी अच्छी नहीं है।"

"झंडू बीमार होता तो अच्छा रहता," घुग्घी ने कहा। झंडू उसका बाप था, जो ज़मीन से बेदखल होने के बाद किराये का इक्का चलाता था।

"क्यों ?"

"क्योंकि अगर झंडू सही-सलामत रहा तो मैं मेले में नहीं जा सकूंगा उसने मेले में चलाने के लिए अपने इक्के की मरम्मत करवा ली है। अगर वह शहर गया तो किसीको पीछे घर की देखभाल करने के लिए रुकना पड़ेगा।"

"उसके पीछे उसकी कोई बीवी भागेगी नहीं। और अगर तुम पीछे रह गए तो तुम भी कुछ नहीं कर पाओगे। न अपनी मां की ज़बान पर लगाम लगा सकते हो, न ही वज़ीर-बेगम को रोक सकते हो। अगर दोनों में झगड़ा हो गया तो उन्हें कौन समझा सकेगा ? इसलिए फिक्र क्यों करते हो। वक्त आने पर तुम ज़रूर वहां पहुंच जाओगे। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं।"

"नहीं, मैं सच कह रहा हूं," घुग्घी की आवाज़ में परेशानी थी। "मैं नहीं जा सकूंगा, मैंने आज झंडू से पूछा था।"

क्षण-भर के लिए उसके दिल पर बाप की दहशत छा गई और वह बोल न सका।

"मैंने तुम्हें बताया है न कि मेरे बापू को भी मेरा मेले में जाना पसंद नहीं है और आज जब मैंने यह बात उठाई तो भाई शर्मसिंह ने तो मुझे मना कर दिया। लेकिन हम लोग कोई न कोई तरकीब निकालकर वहां पहुंच ही जाएंगे," लालू ने हमदर्दी जतलाई।

"तुम्हारी बात और है," घुग्घी ने अपने दयनीय स्वर में कहा। "तुम अपनी मर्ज़ी के मालिक हो।"

लालू को यह फर्क समझ में आ गया। वह जानता था कि वह अपने मां-बाप का लाड़ला बच्चा है और बचपन से ही उसे सर चढ़ाया गया था। उसके परिवार के पास गरीबी के बावजूद दस एकड़ ज़मीन थी, पुरखों का बड़ा नाम था,

हालांकि अब उनके सर पर कर्ज़ चढ़ गया था, ज़मींदार ने उनकी ज़मीन हड़प ली थी और उन्हें ज़मीन रहन भी रखनी पड़ती थी। जब घुग्घी चिथड़े पहने गांव की गलियों के कीचड़ में घूम-घूमकर दुकानदारों के काम करता था या ज़मींदार के अस्तबल में लीद साफ करता था, या गाड़ीवानों, मश्कियों, घसियारों और मुगल कारवां सराय के बरामदों में रहनेवाले कमीनों के लिए हुक्के भरता था जहां घुग्घी के बाप ने दो झोंपड़ियां बनाई थीं, उन दिनों लालू स्कूल जाया करता था। कुछ बरस तक वह शेरकोट के बोर्डिंग हाउस में भी रहा था। गांव के बड़े-बूढ़े उसकी तारीफें करते थे क्योंकि वह कहीं दिखाई नहीं देता था। घुग्घी नंदपुर में हर जगह आवारा घूमता दिखाई देता था। वह शरारती था और हर काम ज़िन्दादिली से करता था। उसके लंगोटिया यार उसे बदमाश कहते थे। साहूकार का बेटा चुरंजी, रिटायर्ड रिसालदार फतेहसिंह का बेटा अमरसिंह, जुलाहा गुलाम, शेखू कुम्हार और गड़रिया गोपाल उसके लंगोटिया यार थे।

"अरे टुंडी लाट की परवाह मत किया कर," लालू ने कहा। एक-दूसरे को तसल्ली देने के लिए या बातचीत का विषय बदलने के लिए वे इस मुहावरे का प्रयोग किया करते थे, लेकिन इस बार इस मुहावरे का कोई असर न हुआ।

एक तनावपूर्ण खामोशी छाई थी। पतझड़ की रात की सीलन-भरी गन्ध गांव के धुएं में मिल गई थी जिससे गांव के मकानों की शक्लें बड़ी विलक्षण दीखने लगी थीं। मालूम होता था कि सामने खूनी रंग के आकाश में चुड़ैलें देग में कुछ उबाल रही हैं, जिसमें से धुआं उठ रहा है। दोनों बिना हिले-डुले वहीं बैठे रहे।

फिर लालू की हड्डियों में गुस्से की चिन्गारियां सुलगने लगीं। वह दांत पीस-कर अस्पष्ट स्वर में बड़बड़ाया। उसने सर झुका लिया। चारों तरफ अंधेरा छा गया था। लगता था उसकी ज़िन्दगी का रोम-रोम ज़हरीली सांस से झुलस गया हो।

"बाकी जने आज कहां हैं?" घुग्घी ने पूछा। उसकी उदासी जल्द ही गायब हो जाती थी।

"चुरंजी के बाप ने उसको आंखों से ओझल नहीं होने दिया। मैं आज उसे इशारा भी नहीं कर सका। और गुलाम की मां ने मुझे गालियां दीं," लालू बोला।

"बेटी···" घुग्घी ने गाली दी। "ये लोग लड़कों को घंटे-भर भी खेलने नहीं

देते।" लेकिन उसने देखा कि लालू का ध्यान कहीं और था।

दोपहर से लालू के दिल में जो चिंगारियां सुलग रही थीं, वे प्रचण्ड हो उठीं थीं। वह गुस्से से सर हिला रहा था। घरवाले हमेशा मना करते हैं और आज़ादी पर पाबन्दियां लगाते हैं। कोई बात सोचो, उसमें रोड़े अटकाते हैं। उनके सामने तो कोई हंस भी नहीं सकता! बस हाथ जोड़कर गंभीर स्वर में कहना पड़ता है, 'आपके पैर पड़ता हूं जी!' और ये बदसूरत, बेवकूफ, गोश्त के लोथड़े, बछिया के ताऊ हर वक्त परमात्मा का नाम लेते रहते हैं और प्रार्थना करते रहते हैं—उस वक्त भी जब वे बाज़ार में से गुज़रती जवान लड़कियों को बुरी निगाहों से देखते हैं!

लालू का सर नीचे झुक गया...काश...काश क्या? वह क्या कर सकता है? कोई क्या कर सकता है? सब लड़के मां-बाप की मर्ज़ी के आगे झुकते हैं और अगर गांव का कोई लड़का मां-बाप की मर्ज़ी के खिलाफ जाता भी है, तो सब उसके मां-बाप का ही पक्ष लेते हैं। अगर कोई भागकर कहीं जाना भी चाहे तो बिना पैसों के कहां जा सकता है?

"आखिर क्या बात है?" घुग्घी ने पूछा, आम तौर पर जब लालू गुमसुम हो जाता था तो घुग्घी उसकी तरफ ध्यान नहीं देता था, लेकिन आज रात उसे लगा कि वही अपने दोस्त की उदासी का मुख्य कारण है।

"मुझे गुस्सा है," लालू के स्वर में एक किसान की स्पष्टवादिता और कठोर दृढ़ता थी। वह एकदम घोंटने वाले दुर्भावनापूर्ण गुस्से से कांपने लगा। उसे महसूस हुआ कि उसने गलत तरीका अपनाया था।

लालू ने चुनौती दी, "तुम मेले में ज़रूर आओगे घुग्घी!"

"ठीक है। आऊंगा।"

"चाहे कुछ भी हो!" लालू ने मुस्कराकर ज़ोर दिया।

"चाहे कुछ भी हो," कहकर घुग्घी हंस पड़ा और उठकर खड़ा हो गया। वह नहीं चाहता था कि कोई भी बात से उसकी ज़िन्दादिली को घोंटे। उसने पहलवानों के अंदाज़ में लालू की जांघ पर हाथ मारकर कहा, "आओ घर चलें।"

"ओए हरामज़ादे! तू मुझे ही सबक सिखाने चला है? लेकिन यह बता कि हम मेले में कैसे जाएंगे? पैदल?" लालू ने हंसकर पूछा।

"नहीं, मुझे एक तरकीब सूझी है," घुग्घी ने नीली हवा में उछल कूद मचाते हुए

कहा।

"कौन-सी ?"

"ज़मींदार बैलगाड़ियों में भरकर मेले में भूसा भेजेगा। हम उन्हींमें से किसी गाड़ी में बैठकर चले जाएंगे। मैं गाड़ीवान को पटा लूंगा। वह सराय में हमारे नजदीक ही रहता है।"

"मक्कार सूअर !" लालू दायीं तरफ चट्टानों और दरारों के पास पहाड़ी के उभरे हुए हिस्से से नीचे उतरकर बड़बड़ाया। उसकी आंखें कूद-फांद मचाते हुए घुग्घी का पीछा कर रही थीं, जो कन्दरा को पार कर रहा था। सामने गांव था।

और अचानक लालू उछलकर अपने दोस्त की पीठ ठोंकने के लिए पहुंचा। उसने प्यार से गाली दी, "सूअर, बेटी का यार !"

दरारों के टूटे हिस्सों को पार करके वे गांव की तंग गलियों में से होते हुए टेढ़ी-मेढ़ी कच्ची दीवारों के साये में चल रहे थे। ऊपर सितारे झिलमिला रहे थे। लगता था स्वर्गवासी लोगों की चमकदार आंखें नीचे झांक रही थीं; हुक्कों की गुड़-गुड़ के बीच में जलती आग के गिर्द इकट्ठे किसानों की भारी, खूबसूरत आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। झगड़ते हुए बच्चों की आवाज़ों के मुकाबले में किसी मां की झिड़कियों या कोमल लोरी की आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं: "एक ज़माने की बात है..."

७

लालू और घुग्घी भूसे से भरी बैलगाड़ी पर चढ़ गए थे, जो रात होने पर गांव से चली थी, और बायीं तरफ के खतरनाक ढीले पहिये पर से चुरंजी को ऊपर खींच रहे थे।

"ओए आ भी, जल्दी से ऊपर चढ़ ! बेटी..." घुग्घी ने आवाज़ दी। लालू और घुग्घी ने मिलकर उसे ऊपर खींचा और उसे गालियां दीं। चुरंजी का दाल-भात पर पला शरीर मोटा फफ्फस था, जिसकी वजह से लालू और घुग्घीको काफी परेशानी होती थी। और फिर चुरंजी के बाप की इजाज़त के बगैर वे उसे अपने साथ शहर

ले जाकर जोखिम मोल ले रहे थे। लेकिन चुरंजी के पास ज़्यादा पैसे थे। बाप की नज़रें बचाकर उसकी मां उसे जो जेबखर्च देती थी, उसमें से उसने कुछ पैसे बचा लिए थे। उसने दोस्तों के सामने चालाकी की जो स्कीम रखी थी, वह उनको बहुत पसंद आई थी।

"अमरसिंह मानाबाद में होगा क्योंकि वह स्कूल के नज़दीक बोर्डिंग हाउस में रहता है। अगर वह अकड़ में न हुआ तो हम उसे जाकर मिलेंगे," चुरंजी ने कहा, "हालांकि उसे साथ ले जाने में सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है। शेखू और गोपाल को काम है, इसलिए गुलाम और मैं बच गए। अगर मैं तुम्हारे साथ भाग जाऊं तो गुलाम मुझे ढूंढ़ने का बहाना बनाकर आ सकता है। अगर मेरे बापू गुलाम को मुझे ढूंढ़ने भेजेंगे तो गुलाम की मां कुछ नहीं कह सकेगी क्योंकि उसने मेरे बापू से कर्ज़ लिया है। इस तरह हम सब मेले में इकट्ठे हो जाएंगे।"

चुरंजी हांफ रहा था और अपने फफ्फस शरीर पर से पसीना पोंछने के लिए खड़ा होने लगा।

"लेटा भी रह सूअर!" घुग्घी ने बांह मारकर उसे लिटा दिया। "गांव अभी भी नज़र आ रहा है और सरदार बहादुर हरबंससिंह के घर के लोग अगली बैल-गाड़ी में सफर कर रहे हैं। अगर लोगों ने हमें देख लिया तो गाड़ीवान के पास हमें नीचे उतारने के सिवा कोई चारा नहीं रहेगा और तुम्हारे बदन पर तो इतनी चर्बी है कि तुम एक कदम भी नहीं चल पाओगे।"

चुरंजी किसी थकी भैंस की तरह लेटकर हांफ रहा था। लेकिन वह फफ्फस शरारती और ज़िन्दादिल था। वह ज़्यादा देर तक खामोश नहीं रह सकता था।

"क्या तुम लोग ताश लाए हो?" चुरंजी ने सर उठाकर पूछा।

"ताश की बात करते हो? जनाब, हम अपने साथ मिठाई भी लाए हैं। तुम्हें भी हिस्सा मिलेगा, हालांकि तुम जब भी मिठाई खरीदते हो, अकेले ही उड़ा जाते हो, कमीने शैतान," घुग्घी ने जवाब दिया।

"ओए, दोनों एकदम झगड़ा न शुरू करो। कुछ देर आराम कर लो," लालू ने बड़े-बूढ़ों की तरह गंभीरता का अभिनय करते हुए कहा। सुहावनी हवा चल रही थी। लालू ने अपनी कमीज़ के बटन खोल दिए और चांद में से निकलते हुए प्रकाश-पुंज को देखने लगा। पूर्णमासी में अभी एक दिन कम था। नीले आसमान से लटकते सितारों को देखकर लगता था जैसे आसमानवाले धरती के वासियों से

एक दिन पहले ही दीवाली मना रहे हों।

"सरदार बहादुर ! मालपूए किधर हैं ?" घुग्घी ने मज़ाक किया।

"मेरे नये कपड़ों की गठरी के पास मिठाई की टोकरी लटकी है।" लालू ने लापरवाही से कहा।

"अच्छा, तो मैं तुम्हारे आराम में खलल डालूंगा। हमें भूख लगी है और तुम गठरी को सिरहाना बनाकर लेटे हो।" घुग्घी ने कहा।

लालू ने सर उठाकर पूछा, "अब कौन-सी खुराफात है ? तुमने ही तो कहा था कि हमें लेटे रहना चाहिए, ताकि कोई हमें देख न ले।"

"हां। यह जो बातें औरों को मना करता है खुद वही बातें करता है। मां का यार !" चुरंजी ने टिप्पणी का।

"नहीं, अब कोई खतरा नहीं," घुग्घी ने बेशर्मी-भरे आत्मविश्वास से आंख मारी और जल्दी से यह देखने के लिए गठरी खोलने लगा कि कहीं लालू के नये कपड़े मिठाई से खराब तो नहीं हो गए। उसे डर था कि अगर लालू के कपड़े खराब हो गए तो वह उसको मेले में अपनी पुरानी कमीज़ और तहमद नहीं पहनने देगा जो उसने इस वक्त पहन रखी थी, और घुग्घी को पुराने चिथड़े पहनने पड़ेंगे।

लेकिन लालू की मां ने गठरी में ऐसी सख्त गांठ लगाई थी जो घुग्घी से खुल नहीं पा रही थी। उसने दांत लगाकर गांठ खोलने की कोशिश की। लालू ने दिल्लगी से उसे एक तरफ हटा दिया और गठरी छीन ली।

"अरे बन्दर, तू तो गठरी के चिथड़े कर डालेगा," फिर उसने आसानी से गठरी का गांठ खोल दी, जिसे घुग्घी ढीला कर चुका था। उसने अपना रौब जमाने के लिए कहा, "ओए निकम्मे शोहदे, देख इसमें क्या है।"

घुग्घी ने टोकरी छीनकर कुछ मालपुए उठा लिए और इस तरह चटखारे लेने लगा जैसे वह पेट भरकर मिठाई खा रहा हो।

"ओए सूअर के पुत्तर !" चुरंजी घबराकर चिल्लाया। उसे डर था कि कहीं घुग्घी उसका हिस्सा भा न हड़प ले।

"अच्छा, अच्छा, तसल्ली कर भाई," घुग्घी ने दिल्लगी बन्द कर दी। "जो जितना खा सकता है उसे उतना हिस्सा मिलेगा।"

"तब तो मुझीको सबसे ज़्यादा मिलेगा।" चुरंजी ने घुग्घी की लापरवाही का फायदा उठाते हुए कहा। "मेरा पेट तुम दोनों से बड़ा है।"

"नहीं, मेरा मतलब था कि जो जितना हज़म कर सकता है उसीके मुताबिक मिलेगा। इस लिहाज़ से सबसे ज़्यादा हिस्सा लालू को मिलेगा, उससे कुछ कम मुझे और मुझसे भी कम तुझे।"

"मैं जानता था कि यह धोखेबाज़ी होगी।" चुरंजी ने विरोध प्रकट किया।

"अपने घर में तुम्हें हम लोगों से ज़्यादा मिठाई मिलती है। तुम्हें लालच दिखाने की क्या ज़रूरत है ?" घुग्घी ने दुर्भावनापूर्वक कहा।

"अरे बेवकूफो, मेरी मिठाई के पीछे मत झगड़ा करो। ओए घुग्घी, इधर ला मिठाई। हम एकसाथ बैठकर खाएंगे।" लालू ने कहा।

घुग्घी ने लालू को टोकरी पकड़ा दी और सब मिठाई पर टूट पड़े। कुछ देर तक तो सब आराम से खाते रहे। जब घुग्घी ने चुरंजी को दो मालपुए एकसाथ खाते देखा तो उसने भी एक मालपुआ उठाकर मुंह में ठूंस लिया। इसपर लालू ने भी एक टुकड़ा छीन लिया और घुग्घी ने टोकरी पर झपट्टा मारा। धक्का-मुक्की से सारी चीज़ें भूसे पर बिखर गईं। तीनों जने कहकहों के बीच मिठाई खाते जाते थे और ज़मीन पर थूकते जाते थे।

घुग्घी ने लेटकर मस्ती-भरी एक धुन छेड़ दी। चुरंजी ने ताश फेंटी और यह देखने लगा कि चांदनी में पत्ते नज़र भी आएंगे या नहीं। बैलगाड़ी पर से लालू खेतों की तरफ देख रहा था।

सब खेतों में बुवाई की गई थी, सिवाय उन ज़मीनों के जहां घास उगी थी। बाजरे के खेत कटाई के लिए तैयार खड़े थे। कटाई जल्द ही होने वाली थी क्योंकि चारे की किल्लत थी। बारिश भी अच्छी नहीं हुई थी और किसान सारा चारा मंडियों में भेज चुके थे। लालू की नज़रें हाल ही में जोते गए खेतों पर टिकी हुई थीं। वह सोच रहा था कि जुताई गहरी नहीं की गई। उसे इस बात का सन्तोष था कि उसने अपने खेतों की अच्छी तरह जुताई की है। बैलगाड़ी में लेटे-लेटे उसे अपने पैरों पर ताज़ी गीली मिट्टी का स्पर्श महसूस हो रहा था। खेतों में कई बार वह इस स्पर्श से खीज उठता था, फिर भी उसे यह स्पर्श अच्छा लगता था।

जब वह कसरत का अभ्यास किया करता था तब भी उसे ऐसा ही महसूस होता था। हल के पीछे बैलों की पूंछें मरोड़ते हुए भागना उसे बहुत अच्छा लगता था। बचपन से ही उसकी यह ख्वाहिश रही थी कि वह जल्दी से मर्द बन जाए और अपने भाइयों और हरनामसिंह की तरह हल चलाना सीखे—धरती का मालिक

बनकर भारी कदमों से हल में जुते बैलों को गन्दी गालियां दे। उसने सोचा कि बचपन में वह निरा बुद्धू था।

चांदनी रात में दूर-दूर तक फैले खेतों में उसकी नजरें किसी छिपे अर्थ की तलाश कर रही थीं, जो उसपर जादू की तरह छा रहा था। लेकिन मीलों तक फैले हुए बिना बाड़ के खेतों में कोई रहस्य नहीं था सिर्फ गीली धरती का स्पर्श था जिससे उसको मन ही मन बड़प्पन का अहसास होता था। उसे लगा कि जब से उसने खेतों में काम करना शुरू किया है, वह पहले से ज़्यादा बड़ा हो गया है। कई महीनों से उसे ऐसा अहसास नहीं हुआ था, वह जिज्ञासा-भरी दृष्टि से खेतों की तरफ ताक रहा था। क्षितिज से टकराकर अंधेरे में उसकी आंखें निराश हो जाती थीं।

उसकी आंखों के सामने उसकी मां के चेहरे की कठोर मुद्रा प्रकट हुई। उसकी मां के होंठों पर चालाकी-भरी मुस्कराहट और उसकी ठोड़ी पर एक ज़ालिम का-सा निरंकुश भाव था। लेकिन लालू सोच रहा था कि मां उसपर मेहरबान है। उसने लालू को मेले में जाने के लिए प्रोत्साहित किया था और खर्च के लिए पैसे भी दिए थे।

फिर लालू को सन्नाटे की उन परतों का अहसास हुआ जो धरती और धरती से दूर क्षितिज तक फैली थी। वह जानता था कि धरती का अन्त क्षितिज की रेखा तक ही नहीं है। मानाबाद एक तरफ है और शेरकोट परली तरफ है, वह सोचने लगा कि शेरकोट से परे कौन-सी दुनिया होगी और उस दुनिया में क्या होता होगा।

घुग्घी ने गीत गाना बंद कर दिया और हवा में तूंबे की ऊंची आवाज़ छेड़ दी, जिससे लालू की विचारमग्नता में खलल पड़ गया। पहले तो उसे परेशानी हुई, फिर लोकगीत की लय उसके खून में समा गई।

"ताश नहीं खेलोगे? ओए, आओ ताश खेलें!" वहशत-भरे संगीत के बीच चुरंजी की मिन्नत-भरी आवाज़ उठी।

चुरंजी के मां-बाप दोनों शहरी थे। उसके तौर-तरीके किसान लड़कों से अलग थे, और उनमें ग्रामीण सहज भाव नहीं था। उसके स्वभाव में वह फास्फोरस नहीं था जो आग में प्रज्वलित होकर जीवन में श्वास फूंक सकता। ज़िन्दादिल, भोंडे लोकगीत ने उसके मन में एक अज्ञात घबराहट पैदा कर दी।

लेकिन तूंबे की ऊंची आवाज़ ने एक मज़ाक का रूप धारण कर लिया और उसकी मस्ती से गाड़ीवान और ज़मींदार की गाड़ी हांकने वाला भी न बचे रह सके। ऊपर तारों से जड़ा उज्ज्वल आकाश था और नीचे मन्द-मन्द हवा में गीत के स्वर गूंज रहे थे जिनमें कभी घंटियों की गूंज, कभी मंजीरे की झंकार और कभी लकड़बग्घे की मादा का खूंखारपन आ जाता था। दूर किसी अदृश्य सड़क पर मेले की ओर जाते हुए किसान इस गीत का जवाब देते और यह गूंज दूर किसी खेत के किसानों तक फैल जाती थी। गीत की मधुर लहरियां, उसके अटपटे शब्द और सामूहिक हंसी की आवाज़ वातावरण को भेद रही थी। सारी धरती पर एक आकस्मिक सुख और ग्रामीण हार्दिकता का उन्माद छा गया था।

"हमारी बैलगाड़ी के ऊपर कौन है?" सामूहिक गान के बाद इस समय घुग्घी और लालू बैठकर चुरंजी की लाई हुई ताश खेल रहे थे।

तीनों लड़के क्षण-भर के लिए खामोशी से सुनते रहे। फिर कीचड़-भरी सड़क पर अचानक एक धक्के से गाड़ी रुक गई। वातावरण में खौफ छा गया। लड़के कांप रहे थे। शायद ज़मींदार के रौबीले नौकर ने एतराज़ किया हो और उन्हें गांव से दो या तीन मील दूर ही गाड़ी से उतार दिया जाएगा। लेकिन उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ जब गाड़ीवान ने सर उठाकर कहा, "ओए बदमाशो! इस छोटे बच्चे और उसकी बहन को नींद नहीं आ रही। वे तुम्हारे साथ बैठना चाहते हैं—ज़रा उनके लिए जगह कर दो।"

गाड़ीवान ने ज़मींदार के सबसे छोटे लड़के तारा को, जो आठ बरस का था, और जिसकी आंखें नींद से भारी थीं, उठाकर लड़कों के पास बैठा दिया। उसके साथ उसकी बहन माया थी। पिछली बार लालू ने जब माया को देखा था तो वह निरी बच्ची मालूम हुई थी लेकिन जब वह ऊपर भूसे के ढेर पर आई तो उसने बूढ़ी दादी की तरह आवाज़ बनाकर कहा, "लड़को, कौन-सा खेल खेल रहे हो? मैं भी तुम्हारे साथ खेलूंगी।" उस वक्त माया लालू को घुग्घी जितनी लम्बी दिखाई दे रही थी।

"जा, जा, मर्दों में बैठना तेरा काम नहीं।" जब माया आकर बैठ गई तो घुग्घी ने कहा।

"चुप रह बन्दरमुंह, मैं खेलूंगी!" माया तपाक से बोली।

"माया, भैणे, यह मर्दों का खेल है।" चुरंजी ने मर्दाने अहंकार से कहा। वह

घुग्घी ने इस उपद्रव का फायदा उठाकर अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लेने के लिए लालू के हाथ से ताश छीन ली और पत्ते फेंटने लगा।

"बेवकूफ, मैं यह बाज़ी खेलना चाहती थी। हमारे बहुत अच्छे पत्ते आए थे। मैं तुम्हें हरा सकती थी।"

"यह बेवकूफ और बदमाश आदमी है।" लालू ने हंसकर कहा। वह भी उस बाज़ी को खेलना चाहता था, क्योंकि उसके ऊपर झुकी माया के शरीर की गर्मी ने उसके रोम-रोम में उन्माद भर दिया था और अचानक उसे माया के सामीप्य की अनुभूति हुई थी।

घुग्घी ने लापरवाही से कहा, "अच्छा भौंक मत।" लेकिन उसके स्वर में दुर्भावना का पुट था। ज़मींदार की बेटी की शह पर, जो ज़रा-सी छोकरी थी, लालू ने जो मज़ाक किया था उससे घुग्घी के स्वाभिमान को चोट पहुंची थी।

लालू ने माया से कहा, "इसकी घुड़कियों की परवाह न कर। सामने बैठकर खेल में मेरी साथिन बन जा।" माया ने अपने सोए भाई को घसीटकर गोद में लिटा लिया और लालू के सामने बैठ गई। लालू ने पहली बार उसके चेहरे और गालों की गोलाई को गौर से देखा। बचपन की मासूमियत और हंसी जब नारीत्व की गरिमा में बदलेगी तो माया के गाल और ज़्यादा सुडौल हो जाएंगे।

घुग्घी ने जोश में आकर पत्ते बांटे और सब तुरुप की बोली बोलने लगे।

इसी वक्त अगली बैलगाड़ी से जैसे किसीने कब्र फाड़कर कहा, "माया, नी माया, खसमनूंखानी मर जा। तुझे मर्दों में बैठकर शर्म नहीं आती? तेरा छोटा भाई सर्दी खाकर मर जाएगा। अब तू बच्ची तो नहीं है! अब तुझे शर्म-हया सीखनी चाहिए!"

फिर बैलगाड़ियां रुक गईं। गाड़ीवान ज़मींदार के बेटे को उठाकर ले गया।

बैलगाड़ी के कोने पर झुककर माया सोच रही थी कि वह बिना किसी सहारे के नीचे उतरे या नहीं। लालू गाड़ीवान की जगह आ गया। उसने माया को उठाकर नीचे उतार दिया। गाड़ीवान ने उसे पकड़कर ज़मीन पर खड़ा कर दिया।

वह तेज़ी से भाग गई।

माया के पतले-दुबले शरीर के स्पर्श के अहसास से लालू सिहर उठा। माया बिना पीछे देखे, एक पक्षी की तरह 'फुर्र' से उड़ गई थी। लालू को यह सोचकर घबराहट हुई कि कहीं ज़मींदार का परिवार नाराज़ न हो जाए। माया की तस्वीर

फीकी पड़ गई, केवल उसके शरीर की सुवास और स्पर्श की याद बाकी थी। वह ज़ोर लगाकर बैलगाड़ी पर चढ़ गया। उसकी नाड़ी का स्पन्दन खुशी और अफ़-सोस से बढ़ गया था। उसे लगा जैसे अभी-अभी वह एक खतरनाक और विशाल अंधेरे गड्ढे तक पहुंच गया था।

अपने को सुस्थिर करने के लिए वह लेट गया। सूखे भूसे को हाथों से मसलता हुआ वह अपने दिल की धड़कन सुन रहा था।

उसकी आंखों के सामने उस शरारती लड़की के शरीर के सामीप्य और उसके खिले चेहरे की खुशी की याद उभरती थी और फिर खो जाती थी। घुग्घी और चुरंजी सर पर कंबल डालकर सो रहे थे।

'अगर इन बेवकूफों ने शोर न मचाया होता तो कितना अच्छा होता!' घुग्घी बुदबुदाया।

"हमारा बेड़ा गर्क हो गया," घुग्घी ने कंबल में से सर निकालकर कहा।

"मेरा बेड़ा तो गर्क हो ही गया है!" लालू ने अपनी भावनाएं छिपाने के लिए मज़ाक के अन्दाज़ में कहा। भूसे की मादक गर्मी और चांद-सितारों के ज़ुल्म के बीच लालू अंधेरे में खोया था...

८

लालू की नींद जल्दी खुल गई। उसे अच्छी तरह नींद नहीं आई थी। सर्दी ने और माया को देखकर उसके मन पर लिखी गई अधूरी गज़ल ने उसे जगाए रखा था। पहले भी जब वह अपने भाई की कठोर इच्छा-शक्ति या बुज़ुर्गों के तानों से परेशान हो जाता था तो उसे रात को नींद नहीं आती थी और वह उधेड़बुन में लगा रहता था लेकिन इस बार उसके मन में एक मंगलकारी उत्तेजना थी, हालांकि उसे लगता था कि यह निष्फल होकर रहेगी।

पतझड़ की हवा के तेज़ झोंकों के साथ पौ फट रही थी। धरती पर छाई धुंध और पाले से हवा के झोंके सर्द हो गए थे।

इस अनिर्वचनीय सुख-दुःख की भावना की उत्तेजना से लालू ने उबासी ली

और शिकारी की कमान की तरह अपनी बांहों और टांगों को झुकाया, फिर घुग्घी को एक लात जमाकर वह मुस्कराया। उसके भीतर शक्ति का संचार हुआ और वह अपनी गर्मी की आभा में लोटने लगा।

"ओए, लात न मार।" कंबल के नीचे से घुग्घी मिनमिनाया।

लालू ने चुरंजी के नज़दीक सरककर फिर घुग्घी को लात जमाई।

जैसा कि लालू का अनुमान था, घुग्घी ने सोचा कि चुरंजी उसे लातें मार रहा है, उसने साहूकार के लड़के की पीठ में ज़ोर से ठोकर मारी। चुरंजी को उसने कंबल में से बाहर धकेलकर भूसे को नीचे गिरने से बचाने के लिए लगाए गए बांस तक पहुंचा दिया।

चुरंजी अपनी गंदी आंखों को मलता हुआ उठ बैठा और गाली देने लगा, "मां के···मुझे सोने दे।"

लालू ने दोनों दोस्तों के बीच शक्ति का संतुलन रखने के लिए हमदर्दी-भरी आवाज़ में कहा, "आओ चुरंजी, इस सूअर को सबक सिखाएं।" उसने घुग्घी के शरीर से कंबल हटा दिया।

लेकिन घुग्घी किसीसे हार नहीं मानने वाला था। वह कंबल हटाए जाने की परवाह किए बगैर लेटा रहा।

"ज़िद्दी गधा है!" चुरंजी ने कहा। घुग्घी ने कोई जवाब न दिया, और वह बिना हिले-डुले पड़ा रहा। लेकिन वह अपने साथियों की चालाकी का अनुमान नहीं लगा सका।

लालू ने उसके सर पर भूसा फेंकना शुरू किया।

बछड़े की तरह छींकता, और गुस्से से हांफता हुआ घुग्घी गालियां देने लगा। फिर जानवर की तरह गुस्से का अभिनय करता हुआ वह अपने शिकारियों पर टूट पड़ा—झूठ-मूठ की लड़ाई छिड़ गई। घुग्घी 'होए-होए' करते हुए चुरंजी की छाती पर चढ़ बैठा और लालू ने घुग्घी को अपनी दाहिनी टांग से दबा दिया।

गाड़ीवान ने, जो बैलों की रास थामे ऊंघ रहा था, डांटकर कहा, "ओए बदमाशो, क्या गड़बड़ मचा रहे हो?"

घुग्घी और चुरंजी ने जल्दी से लालू से कंबल छीन लिया और सर छिपाकर सो गए।

कुहनियों के बल झुककर लालू ने पीछे से आती हुई ज़मींदार की दो बैल-

गाड़ियों को देखा। रात में और गाड़ियां भी नज़दीक आ गई थीं। कुछ गाड़ियों में पर्दे लगे थे, किसान वासना-भरी दृष्टि से पर्दों को घूर रहे थे। कुछ किसान पीठ पर चारा लादे जा रहे थे, औरतें, बच्चे और मर्द इकट्ठे थे। कुछ के पास सिर्फ रस्से और बोरियां थीं।

दूर सड़कों से मेले की ओर जाती बैलगाड़ियों की लालटेनों की पीली बत्तियां हिल-हिलकर जागती हुई सृष्टि का मज़ाक उड़ा रही थीं। जुती हुई ज़मीन से परे सभ्यता के प्रहरी तार के खम्भों से पार, ऊबड़-खाबड़ सड़क पर जहां अब बैलगाड़ी चल रही थी, केलों के झुरमुट के पार आकाश में उगते हुए सूरज की लालिमा छाई थी।

लालू की पगड़ी रात को ढीली हो गई थी। उसने हाथ से एक झटका देकर पगड़ी को खोल दिया और कपड़े की सिलवटों को ठीक करने लगा। शहर नज़दीक आ गया था, लालू परेशान हो उठा। उसकी खीज और भी बढ़ गई जब उसने देखा कि हमेशा की तरह उसके बालों का जूड़ा खुल गया था। उसने जूड़े में खोंसी हुई हाथीदांत की कंघी निकाली और जूड़े पर लिपटी रस्सी खोली। उसके बाल कैसे अस्त-व्यस्त हो गए थे! उसने मन ही मन खीजकर कहा, 'मज़हब रहे या न रहे। मैं शहर पहुंचकर बालों को कटवा दूंगा, इतने लम्बे बालों को लेकर मैं गांव नहीं लौटूंगा।'

अपनी नई शक्ल की कल्पना से उसका रोम-रोम थिरक उठा। उसने यह फैसला गांव में ही कर लिया था। कोई यह नहीं कह सकता था कि उसने बिना सोचे-विचारे जोश में आकर बाल कटवाए थे।

इस डर से कि कहीं लोग उसे देख न लें, वह जल्दी-जल्दी अपना जूड़ा बांधने लगा, 'बस यह आखिरी बार है। फिर इन मनहूस बालों की वजह से मुझे परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी।'

बालों को सुलझाकर वह जूड़ा बांध ही रहा था कि बैलगाड़ी रुक गई।

'ओए, मेरा बेड़ा गर्क हो।' लालू बड़बड़ाया और उसने झटपट पगड़ी बांध ली।

"ओए मुंडेओ! नीचे उतरो! चुंगी आ गई है।" गाड़ीवान ने कहा।

"अच्छा," लालू ने जवाब दिया, ताकि गाड़ीवान समझ जाए कि लड़के जाग गए हैं। उसने घुग्घी और चुरंजी को लात मारकर कहा, "ओए उठो!"

"चुप रह !" घुग्घी ने जवाब दिया। उसकी बांह लार से गीली हो गई थी। चुरंजी भी नींद में कुड़कुड़ा रहा था।

"ओए हरामज़ादे, उतर भी नीचे !" सांवले रंग के क्लर्क ने, जिसके गाल भीतर धंसे थे, गुस्से से कहा। उसकी चुटिया हिल रही थी और वह अपने जनेऊ को उंगलियों से खींच रहा था। उसके बदन पर एक निकर के सिवा कुछ न था।

लालू ने कहा, "ओए घुग्घी और चुरंजी, नीचे उतर आओ। लगता है बाबू ने लाल मिर्चें खाई हैं और वह कुश्ती लड़ना चाहता है।"

लड़के जाग उठे और नीचे उतर आए। पहले लालू उतरा फिर घुग्घी। चुरंजी बांस पकड़कर लटका रहा।

बाबू ने चुरंजी को नीचे घसीटते हुए कहा, "नीचे उतर कुत्तेया !"

लालू बाबू को घुड़कने वाला था, लेकिन गाड़ीवान ने बाबू को पहले ही डांट दिया।

"लगता है हम लोगों ने तुम्हें जल्दी जगा दिया है, इसीसे तुम्हारा मिज़ाज बिगड़ गया है। लेकिन इस लड़के को मत छूना। इसका बाप तुम्हें और तुम्हारे शहर के सारे बाबुओं को खरीद सकता है और मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि ये गाड़ियां नंदपुर के ज़मींदार सरदार हरबंससिंह बहादुर की हैं।"

"अच्छा, अच्छा, चुप रह," बाबू ने कहा। हरबंससिंह का नाम सुनकर बाबू का गुस्सा ठंडा पड़ गया। उसने बैलगाड़ी से नज़रें हटाकर पूछा, "महसूल का कोई सामान तो नहीं है ? चारे के नीचे कोई और चीज़ तो नहीं ले जा रहे ?"

"नहीं !"

"अच्छा जाओ !" मुंशी ने कहा फिर वह लालू और घुग्घी की ओर देखकर बोला, "क्या तुम लोग सरदार बहादुर के नौकर हो ?"

"हम उनके दास हैं।" लालू ने विनयशीलता का अभिनय करते हुए कहा।

"अच्छा जाओ।" मुंशी ने हुक्म दिया और वह पीछे वाली गाड़ियों का मुआइना करने लगा।

लड़के अपनी टांगें सीधी करने के लिए आगे बढ़कर धूप में चले गए लेकिन वे पीछे गर्दन घुमाकर देख रहे थे कि मुंशी बकरियों के रेवड़ से किस तरह पेश आता है, जिसने पीछे वाली गाड़ियों को रोक लिया था। उन्होंने देखा कि चरवाहे ने दूध से भरा एक मटका मुंशी को देकर शहर में दाखिल होने की इजाज़त ले ली थी।

मुंशी के माथे की त्योरियां मुस्कराहट में बदल गई थीं। उसके मातहत घी, दूध और पनीर की मटकियों को संभालकर रख रहे थे, जो उन्होंने पहले गुज़रने वाली गाड़ियों से वसूल की थीं, साथ ही उन्होंने चारे और मवेशियों का महसूल नकद भी वसूल किया था।

चुरंजी ने कहा, "मैं भी चुंगी का बाबू बनना पसंद करूंगा।"

"बड़े होकर तुम इस बाबू से भी ज़्यादा बड़े सूअर बनोगे, लाला चुरंजी लाल, अगर तुम अपने बाप के बेटे हो।" घुग्घी ने कहा।

"सुबह-सुबह झूठी तारीफ न करो।" लालू ने धार्मिकता का अभिनय किया। आसपास कुछ किसान जाप कर रहे थे, "रब्ब का नाम लो और शौच से निपट लो। शहर में मौका नहीं मिलेगा।"

दोनों लड़के खामोश रहे और मिट्टी के ढेले चारों तरफ फेंकने लगे।

लालू ज़ोर से चिल्लाया, "गाड़ियां आगे निकल गई हैं। तुम पीछे रह गए हो।"

चुरंजी आगे भागा लेकिन गाड़ियों को खड़ा देखकर वह फिर खेत में लौट आया। घुग्घी ने हंसकर उसकी खिल्ली उड़ाई।

लेकिन जब घुग्घी नहर में हाथ-मुंह धो रहा था, लालू ने उसे सज़ा देने के लिए पीछे से जाकर उसके सर को पानी में एक डुबकी दी।

इन मसखरियों के बीच उन्हें गाड़ियों के पहियों की चूं-चूं सुनाई दी। जब गाड़ीवान ऊपर चढ़कर बैलों की पूंछें मरोड़ रहा था, तो तीनों लड़के भागकर भूसे के ढेर के ऊपर चढ़ गए, जहां हज़ारों मक्खियां आ बैठी थीं।

गाड़ियों की कतार ज़िला जेल, अंग्रज़ों के बंगलों, संतरे के बागों और खेल के मैदानों को पार करती हुई आगे बढ़ रही थी, गोरों का डर भी पीछे छूट गया था। रेलवे पुल के पार मानाबाद दिखाई दे रहा था, जहां लम्बे मकान, छोटे मकान, सुनहली गुम्बदों वाले मन्दिर, सीमेंट के गुम्बदों वाली मस्जिदें उगते सूरज की शानदार लाली में कुकुरमुत्तों की तरह दिखाई दे रही थीं। आखिरकार वे ग्रांड ट्रंक रोड पर पहुंच गए।

अचानक किसी अदृश्य ताकत ने उनका रास्ता रोक लिया और आसमान तक उठती हुई धूल के बादलों में से कोई कड़का, "कुत्ते के बच्चे! गन्दे देहाती! बेवकूफ!"

इसके सिवा कुछ नहीं सुनाई दिया।

फिर खाकी वर्दी में एक पुलिस सब-इन्स्पेक्टर भूरी घोड़ी पर सवार होकर ज़मींदार की गाड़ी की तरफ बढ़ा। उसके पीछे पांच सिपाही थे। उसने गाड़ीवान को एक बेंत मारकर कहा :

"तुम इतने खतरनाक ढंग से सड़क पर क्यों आए ? कुत्ते के पुत्तर ! गधे !"

"सरकार, मेरे आगे दूसरी गाड़ियां थीं, मैं तो उनके पीछे-पीछे आ रहा था।" गाड़ीवान गिड़गिड़ाया।

"बकवास न कर हरामज़ादा, जा अपने रास्ते पर !" थानेदार चिल्लाया।

गाड़ियां फिर धूल की परत में से गुज़रने लगीं और तांगों, इक्कों, ऊंटों, बैलों, गायों, बकरियों और घोड़ों के भंवर में डूब गईं।

लेकिन अभी गाड़ी मुश्किल से सौ कदम बढ़ी होगी कि कुछ देहाती गाड़ी के पास जमा हो गए। वे थानेदार के दुर्व्यवहार की आपस में शिकायत कर रहे थे।

"कैसा अकड़ा फिरता है।" एक ने कहा।

"हां, अगर किसीको वर्दी मिल जाती है तो वह अपने को खुदा समझने लगता है।" दूसरा बोला। "जब किसीके हाथ में ताकत आ जाती है तो वह सूअर बन जाता है और गरीब बेगुनाहों पर ज़ुल्म करता है।" तीसरे ने कहा।

"तुम किस बात की शिकायत कर रहे थे ?"

अचानक थानेदार पीछे से घोड़े पर दनदनाता और धूल के बादल उड़ाता आया। घोड़े की नालों से चिनगारियां फूट रही थीं। काली टांगों और सफेद दाढ़ियों वाले किसान, जो हाथों में लाठियां और पीठ पर गठरियां लादे जा रहे थे, एक तरफ हट गए। चिथड़े पहने भिखारियों को रौंदता हुआ घोड़ा आगे बढ़ गया। पीछे से सिपाहियों ने पैदल चलने वालों पर लाठियां बरसाईं और वे रहम की भीख मांगने लगे।

लड़कों ने गर्दन उठाकर इस नज़ारे को देखा। डर से उनकी घिग्घी बंध गई और वे चुपचाप लेट गए। दो फर्लांग आगे जाकर फिर रोने-धोने की जगह हंसी और ज़िन्दादिली ने ले ली।

रामसर के तालाब के किनारे एक मन्दिर था जहां बेहद भीड़ थी। श्रद्धालु लोग मन्दिर से निकल रहे थे। कलफ की गई सफेद बुर्राक धोतियां, तिल्ले वाले जूते, कमीज़ें और पगड़ियां पहने मोटे थुलथुल लोग, बनारसी रेशम के लहंगे पहने पीली मरियल औरतें। ये सब लोग मेले की तरफ जाने वाली भीड़ में शामिल

हो गए। बैलगाड़ियों, तांगों, इक्कों, बग्घियों, आदमियों और मवेशियों की अलग-अलग कतारें तीन दिशाओं से आकर एक अथाह जन-सागर में खो गई। तालाब के किनारे पेड़ों के नीचे खिलौनों और मिठाइयों की दुकानें लगी थीं। कोढ़ी अपने ज़ख्म दिखा रहे थे, भिखारी शोर मचा रहे थे, "एक पैसा दे दो!"

आगे जाकर बहुत-सी छोलदारियां दिखाई दीं, ऊसर ज़मीन पर मंडराते हुए धूल के बादलों से भी ऊंची जो सड़क की बाईं तरफ गाड़ी गई थीं। जन-कोलाहल के बीच घोड़ों की हिनहिनाहट, गाय-भैंसों की रंभाहट और गधों की बेवकूफी-भरी हेंचू-हेंचू सुनाई दे रही थी।

तीनों लड़के आंखें फाड़कर इस दृश्य को देख रहे थे। किसी अज्ञात, अपरिचित वस्तु ने उनके मन में एकसाथ डर और जिज्ञासा पैदा कर दी थी।

एक उजाड़ बाग के अहाते में गाड़ीवान ने बैलगाड़ी खड़ी कर दी। पास ही एक कुआं और किसी पीर का मज़ार था। उसने लड़कों को आवाज़ दी :

"छोकरो, नीचे उतरो, कहीं सरदार बहादुर तुम्हें देख न लें।"

लड़के नीचे उतर आए, नये अनजान स्थान पर पहुंचकर उन्हें एकसाथ घबराहट और खुशी महसूस हो रही थी। अचानक उनकी खुशी में खलल पड़ गया।

चुरंजी ने पूछा, "कहीं थानेदार हमारी पिटाई तो नहीं करेगा?"

"ओए बेवकूफ! वह हमें क्यों पीटेगा, चल ऐश करें!" लालू ने कहा।

यह सुनकर घुग्घी खुशी से खिल उठा। चुरंजी अभी भी हिचकिचा रहा था लेकिन वह अपनी बुज़दिली पर खुद मुस्करा दिया।

९

घुग्घी चक्कर खाने वाले झूले पर सवार होना चाहता था, जो बिना तेल लगे कब्ज़ों पर घूम रहा था और जिसमें से आंधी की सी सरसराहट सुनाई दे रही थी।

सड़क के किनारे एक हलवाई लोहे के बड़े-बड़े कड़ाहों में पूरियां और सूजी का हलवा बना रहा था। चुरंजी के मुंह में पानी भर आया।

लालू इस उम्मीद में कुएं पर जाना चाहता था कि शायद वहां माया की एक और झलक मिल जाए। इसलिए उसने कहा कि मेले में जाने से पहले वह नहाना चाहता है।

इसपर लम्बी-चौड़ी बहस हुई। घुग्घी ने कहा कि नहाना बेकार होगा, क्योंकि वे फिर धूल में अंट जाएंगे। चुरंजी ने समझाया कि सुबह खाली पेट झूले पर चढ़ने का फायदा नहीं होगा लेकिन लालू ने कहा कि सभ्यता का तकाज़ा है कि खाने या झूले पर चढ़ने से पहले नहाया जाए। इसपर दोनों लड़के हाथ-मुंह धोने के लिए तैयार हो गए। लेकिन यह कहने की ज़रूरत नहीं कि जब लालू डोल में रस्सी बांधकर पानी खींच रहा था तो उस बीच घुग्घी भागकर झूले पर चला गया था और चुरंजी ने चुपके से पूरी का नाश्ता कर लिया था।

उधर सरदार बहादुर हरबंससिंह के परिवार के लोग पीपल के पेड़ के नीचे गड़े हुए एक खेमे में चले गए। सरदार बहादुर खुद आगे-आगे गए। वे नाटे कद के तन्दुरुस्त आदमी थे। उनकी दाढ़ी सफेद थी और शरीर पर फुलबहरी थी, जिससे उनका चेहरा अंग्रेज़ के चेहरे की तरह दिखाई देता था। उनके चेहरे पर गंदुमी रंग के दाग थे जिससे चेहरे की बदसूरती ज़्यादा बढ़ गई थी। लेकिन उनके ठाट-बाठ निराले थे। रेशमी पगड़ी, रेशमी अचकन, गले में मलमल का सफेद दुपट्टा, भारी-भरकम पैरों पर पेटेण्ट लेदर के पम्प शूज़ थे। मुग्दर जैसी टांगों पर सफेद चूड़ीदार पाजामे में से चारखाने डिज़ाइन के बढ़िया मोज़े दिखाई दे रहे थे। सरदार साहब के सामने आंख उठाने की किसीमें जुर्रत नहीं थी। ज़ैतूनी, गंदुमी, धूप में झुलसे चेहरों के बीच सरदार बहादुर का कोढ़ियों जैसा चेहरा रौबीला और विचित्र नज़र आता था। उनके खेमे के भीतर तांक-झांक करना उतना ही नामुमकिन था, जितना किसी अंग्रेज़ की मौजूदगी में सातवें आसमान में झांकना।

लालू अपने 'जिगर' के बारे में गुनगुनाता हुआ नहाने लगा। ताज़े ठण्डे पानी का स्पर्श बड़ा ही झकझोरने वाला था। अपना बदन पोंछने के बाद उसने घुग्घी और चुरंजी पर पानी उछाला।

फिर सर्दी से कांपते और दांत किटकिटाते हुए वे हलवाई की दुकान पर गए और एक लकड़ी की बेंच पर बैठ गए। नज़दीक ही एक भट्ठी पर कड़ाही में घी खौल रहा था।

हलवाई के सर पर बड़ी-सी पगड़ी थी और मोटे थुलथुल शरीर पर एक

बनियान के सिवा कोई कपड़ा न था। उसने घुग्घी की तरफ आग्नेय नेत्रों से देख-कर पूछा, "ओए, ओए, तू कौन है ? हिन्दू, मुसलमान या भंगी ?"

इस बदतमीज़ी से लालू की आत्मा जल उठी।

"तुम्हें इससे क्या, वह तुम्हें नकद पैसे देगा !" लालू गरजा।

"मैं नहीं जानता था कि यह छोकरा तुम्हारे साथ है सरदार जी। आज-कल तो बहुत-से भंगी-चमार शरीफ लोगों की तरह घूमते हैं, क्योंकि उन कमीनों के पास पैसा है। अच्छा बताओ तुम्हें क्या चाहिए सरदार जी ! मिठाई दूं ?"

"मुझे तुम्हारी मक्खियों वाली मिठाई नहीं चाहिए।" लालू ने कहा।

"तो फिर दूध दे दूं ? सिर्फ मैं ही ऐसा हलवाई हूं जिसका दूध सीधा गऊ के थनों से आता है। आज तक मैंने दूध में पानी नहीं मिलाया। यह अधर्म है।"

"खैर यह तो कहा ही जाता है।" लालसिंह ने लापरवाही से कहा।

हलवाई ने जलेबियों के ढेर से मक्खियां उड़ाते हुए पूछा, "तो फिर मैं लस्सी बना दूं ? खोए के लड्डू खाओगे ? तुम तो सरदार बहादुर हरबंससिंह के गांव में रहते हो न ? वह मेरा ज़मींदार है। उसीने मुझे दुकान लगाने के लिए यह जगह दी है।"

"अच्छा !" लालू ने कहा और फिर वह अस्फुट स्वर में बुदबुदाया, 'तुम एक ही थैली के चट्टे-बट्टे मालूम होते हो।'

"तुम तो बड़े पढ़े-लिखे आदमी मालूम होते हो," हलवाई ने अपनी पहली बदतमीज़ी का असर कम करने के लिए कहा, "मेरा भी एक बेटा स्कूल में पढ़ता है। मैं उसे थानेदार बनाना चाहता हूं।"

लालू ने कहा "तीनों को चार-चार आने की पूरियां और सूजी का हलवा दो।"

"हलवा रुपये का एक सेर है। चार आने में तो कबूतर का पेट भी नहीं भरेगा, तुम जैसे सरदारों और लालाओं का तो क्या कहना !"

"खैर कोई बात नहीं।" लालू ने आत्मविश्वास से कहा। उसे अफसोस हुआ कि वह वहां क्यों आकर बैठा था। लेकिन वह जानता था कि मेलों-ठेलों में शहर के दूकानदार बेवकूफ गरीब देहातियों की जेबें खाली करवाने के लिए चीज़ों के दाम बढ़ा देते हैं। उसे धोखेबाज़ शहरियों पर तो गुस्सा था ही, साथ ही उसे देहा-

तियों पर भी गुस्सा आ रहा था कि लोग उन्हें जाहिल समझते हैं और उनके बच्चे भी नालायक हैं।

हलवाई ने तीन पत्तलों में पूरियां और हलवा तौलकर रखा और ऊपर से गाजर के अचार का एक-एक टुकड़ा फेंका। फिर पैसों के लिए हाथ बढ़ा दिया।

लालू ने अपनी तहमद के एक छोर में से एक ऊनी थैली निकाली, जो उसकी मां ने उसके लिए तैयार की थी। थैली पैसों से भरी थी। लालू ने हलवाई को पैसे दे दिए। लड़कों ने आनन-फानन पूरियां खत्म कर दीं। एक-एक पूरी तो दो कौरों में ही खत्म हो गई। घुग्घी की आंखों में भूख थी, चुरंजी अपने होंठों से चटखारे ले रहा था। लालू अपने साथियों की नीयत ताड़ गया। उसने और चीज़ों का आर्डर देने के लिए मुंह ऊपर उठाया ही था कि अचानक हलवाई उनपर बरस पड़ा।

"इन पत्तलों को उठाकर कहीं दूर फेंक दो। मेरी दुकान के सामने मत फेंकना!"

लालू मुंह बाए हलवाई को देखता रहा। एक किसान का सहज क्रोध उसकी नसों में खौल रहा था। उसकी आंखों में लाल डोरे उतर आए और उसकी बांहें हलवाई की गर्दन पकड़कर उसे सबक सिखाने के लिए फड़क उठीं। घुग्घी कूदकर पहले से ही हलवाई के पास पहुंच गया था। लेकिन लालू ने अपने गुस्से पर काबू पाकर घुग्घी को पीछे घसीटते हुए कहा :

"चलो चलें।"

"ज़रा ठहरो। देहातियो! मैं पुलिस को बुलाता हूं!" मार के डर से हलवाई पीछे दुबक गया था। लेकिन खतरा टला देखकर वह अकड़ दिखाने लगा।

लड़कों के माथे पर त्योरियां पड़ गईं। वे घबराकर मुस्करा दिए और वहां से चल पड़े। फिर उन्हें हलवाई की गालियों की बौछार याद आई और वे ज़ोर से हंस पड़े।

अचानक एक पुलिस का सिपाही लाठी हाथ में लिए पीछे से आकर चिल्लाया, "ओए, उचक्को! ठहरो!"

"जा-जा किसी और को अपनी शान दिखा। तू दोनों तरफ से फायदा उठाना चाहता है। हलवाई से भी रिश्वत लेना चाहता है और हम लोगों से भी। मैं तुम लोगों को अच्छी तरह जानता हूं।"

सिपाही ने लालू के खाए-पीए तगड़े शरीर को देखा और कहा, "अगर तुम बाज़ न आए तो मैं तुम्हें पकड़कर हवालात ले जाऊंगा।"

"ओए देख, तेरी एक चीज़ गुम हो गई," घुग्घी ने संजीदा चेहरा बनाकर सिपाही की परछाईं की तरफ इशारा किया।

"क्या गुमा है ?" सिपाही ने पीछे मुड़कर देखा।

"तुम्हारे चूतड़ गायब हो गए हैं," घुग्घी ने जवाब दिया और खिलखिलाता हुआ भाग गया।

सिपाही ने हाथों से पीठ सहलाई। अचानक उसे अहसास हुआ कि उसे बुद्धू बनाया गया है। आसपास खड़े लोग ज़ोर से हंस पड़े।

सिपाही ने घुग्घी का पीछा किया, लेकिन घुग्घी छोलदारियों के खूंटों और रस्सों में से नंगे पांव तेज़ी से भाग निकला।

सिपाही अपना-सा मुंह लेकर फिर ड्यूटी पर जा खड़ा हुआ।

लालू की ज़िन्दादिली और उत्साह इस मज़ेदार घटना के बाद फिर लौट आया। वह चुरंजी को लेकर भीड़ में चला गया। भीड़ के शोर-शराबे और सुबह की धूप से उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा।

मैदान में लगी छोलदारियों के नज़दीक ग्रांड ट्रंक रोड का एक पूरा लंबा टुकड़ा रातों-रात बाज़ार में बदल गया था। सड़क के दोनों ओर छोटे-छोटे शामियाने लगाकर दूकानें सजाई गई थीं, जिनमें घटिया किस्म के फल, खुरदरे रंगीन कपड़े, मोती, चूड़ियां, साबुन, चाकू, चम्मच, हंसिए, झाड़ू, हलों की फालें और अनाज बिक रहा था। दूकानदार ऊंची आवाज़ें लगाकर ग्राहकों को आकर्षित कर रहे थे।

"आओ सरदार जी!" एक दूकानदार ने एक सीधे-सादे किसान को इतने शिष्ट ढंग से पुकारा कि किसान का गधा भी शर्म से लाल हो उठा।

"आओ लाला जी इधर आओ! यह मशहूर दुकान है। हमारे पास सबसे बढ़िया माल है और हम गज़ों कपड़ा ग्राहकों को मुफ्त दे देते हैं।" दूसरे दूकानदार ने एक देहाती से कहा।

"आओ मियां साहब, आओ खान साहब!" तीसरा दुकानदार एक फटीचर किस्म के आदमी से कह रहा था।

एक आदमी बांस पर बच्चों के खिलौने सजाकर खड़ा था। घुग्घी ने एक

बाजा खरीदा और लालू के कानों में 'पी-पी' की आवाज़ करने लगा। चुरंजी केले खरीदने चला गया।

"ओए मुंडेयो ! पैसे से खूब ऐश करो !"

"जिन्दगी सिर्फ एक बार मिलती है !" घुग्घी ने कहा।

"नहीं, इन्सान अमर भी हो सकता है !" लालू ने कहा।

"कैसे ?" घुग्घी ने लापरवाही से पूछा।

"उधर देखो," लालू ने कहा। एक नीम-हकीम बड़ी बेशर्मी से एक्टर की तरह मटक-मटककर ऊंची आवाज़ में चिल्ला रहा था :

"दोस्तो ! इतनी शानदार और चमत्कारी दवा सात दुनियाओं में कहीं नहीं मिलेगी। यह पहाड़ों और नदियों की ताकत का सत है। हिमालय की कन्दराओं में रहने वाले ऋषियों से जादू के मंत्र सीखकर एक मुनि ने लोहे का सत निकाला है। इसे पीकर बूढ़ा आदमी एक दिन में जवान हो सकता है और कमज़ोर आदमी ताकतवर बन सकता है। अगर आपको इस दवा के असर का सबूत चाहिए तो देखो बड़े-बड़े महाराजों, जागीरदारों, जजों और बैरिस्टरों के दिए हुए सर्टिफिकेट। यह देखो यूरोप के बादशाहों के खत। उन्होंने यह दवाई मंगवाई है। तो फिर खरीदिए। एक शीशी की कीमत दो रुपये, आधी शीशी की कीमत डेढ़ रुपया। यह सुनहरी मौका है !"

"मुझे दो बोतलें चाहिएं।" एक आदमी चिल्लाया।

लेकिन नीम-हकीम जिज्ञासा जागृत करने में माहिर था।

"ज़रा ठहरो भी मेरे दोस्त ! मैं उन लोगों को दवा के गुण बता दूं जिनका दिमाग तुम्हारी तरह तेज़ नहीं है।"

इस मज़ाक पर भीड़ हंस पड़ी। नीम-हकीम ने अपना भाषण जारी रखा।

"दोस्तो, असल बात यह है कि हमारे ज़माने में नामर्दगी की जो बीमारी फैल रही है, वह सिर्फ इसी दवा से ठीक हो सकती है। इससे नामर्द एक दिन में मर्द बन सकता है। कमज़ोर आदमी शेर की तरह ताकतवर हो जाता है। इस दवा से दुनिया की सारी दौलत, सारी ताकत···"

"मुझे भी आधी बोतल चाहिए," एक किसान ने कहा जो अभी तक भीड़ में मुंह बाए खड़ा था।

"दो बोतलें और आधी बोतल—लो, दो आर्डर आ गए। लेकिन ठहरो, मेरे

दोस्तो, लगता है कि अभी भी कुछ लोगों ने हमारी सदी के इस करिश्मे के बारे में नहीं सुना। मैं नहीं चाहता कि जब मैं यहां से चला जाऊं तो किसीके दिल में अफसोस हो।"

उसने बेशर्मी से भीड़ को देखा और उंगली उठाकर खामोश रहने का इशारा किया। फिर कुछ देर रुककर बोला, "आजकल तो अपनी बीवी की अदालत में पेश होने से पहले ही जवानों का दीवाला निकल जाता है। हम नामर्दों की कौम बनते जाते हैं। पुराने ज़माने में जब हम अपने पवित्र ऋषि-मुनियों के नुस्खों का इस्तेमाल करते थे तो लोग अपनी जिस्मानी ताकत को जितनी देर चाहते थे···"

"शेख साहब, मुझे दो बोतलें चाहिए। मैंने लाहौर में आपसे एक बोतल खरीदी थी। उसका नतीजा मेरी उम्मीद से भी ज़्यादा शानदार निकला। न सिर्फ मैं बल्कि मेरा सारा खानदान···"

"यह आदमी चार सौ बीस है।" लालसिंह ने लोगों से कहा।

सब लालसिंह का मुंह ताकने लगे। लोगों में फुसफुसाहट शुरू हो गई। एकाध ने उसे गाली दी। नीम-हकीम का जादू जैसे टूट गया।

"अरे इस छोकरे की परवाह मत करो!" नीम-हकीम ने फिर श्रोताओं का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया और जैसे किसी रहस्य का उद्घाटन करता हुआ बोला, "आजकल के छोकरे किसीकी इज़्ज़त नहीं करते। महान संत शमुस तबरीज़, जिनके सामने शेर और बकरी एक ही घाट पानी पीते थे, कहा करते थे, 'अगर नेक सलाह चाहते हो तो बुज़ुर्गों के पास जाओ।'"

"छोड़ो इन बातों को। मुझे एक बोतल दवाई दो।" पहले देहाती ने कहा। वह अपनी जिज्ञासा पर अब संयम नहीं रख पा रहा था।

नीम-हकीम ने कहा, "नहीं मेरे भाई, जो पहले आएगा उसीको पहले दवाई मिलेगी। पहला नम्बर शेख साहब का है। आपने दो बोतलें मांगी हैं न?"

"हां।" एक तगड़े आदमी ने, जिसने रेशमी पगड़ी, लम्बी कमीज़ और ढीला-ढाला पाजामा पहन रखा था, जवाब दिया। उसके बदन से पसीना चू रहा था। वह हथेली पर दवाई की रकम लेकर आगे बढ़ा। नीम-हकीम ने उसे दो बोतलें दे दीं, लेकिन इस तरह मुंह बनाया, जैसे कोई खज़ाना उसके हाथों से निकला जा रहा हो।

"यह सब मिली भगत है।" लालू बड़बड़ाया, लेकिन किसीने उसकी तरफ

ध्यान नहीं दिया।

"मुझे एक बोतल की बजाय दो बोतलें चाहिए।" पहले किसान ने अपनी तहमद के सिरे से बंधी हुई गांठ को खोलते हुए कहा। लेकिन किसीने सफाई से गांठ काट ली थी। गांठ में उसकी बचाई हुई रकम थी। किसान ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला पर वह सिर्फ यही कह सका, "लुट गया!"

"दोस्तो! जेबकतरों और चोरों से बचकर रहो! इस बदलते ज़माने में बदमाश छोकरों से सावधान रहो!..." नीम-हकीम ने श्रोताओं को सलाह दी और अर्थपूर्ण दृष्टि से लालसिंह को देखा।

"चलो चलें," भीड़ में खड़े लालू ने कहा, "वरना हमीं लोगों पर शक होगा..."

लेकिन किसीने उसकी बात का जवाब न दिया क्योंकि घुग्घी और चुरंजी दोनों में से कोई वहां नहीं था। उसने भीड़ की तरफ मुखातिब होकर आवाज़ दी, "ओए घुग्घी! चुरंजी ओए!" लेकिन कोई जवाब नहीं आया। लालू ने सोचा कि शायद वे दूसरे खेमे में चले गए थे, जो बीस गज़ दूर था।

"राजपूतों के बेटो, पुराने योद्धाओं और शेरनियों की कोख से पैदा हुए सिखों के लिए लड़ाई करने और दुश्मन को तबाह करने से बड़ा कोई आनन्द नहीं।" अगले खेमे में लालू को यह आवाज़ सुनाई दी। वह भी भीड़ में शामिल होकर पंजों के बल खड़ा हो गया और गर्दन उठाकर नये नीम-हकीम को देखने लगा।

एक लंबा-तगड़ा खालसा, जिसकी शक्ल शेर से मिलती थी, खाकी रंग का फौजी वर्दी पहने खड़ा था। उसकी शानदार दाढ़ी एक अदृश्य रेशमी जाली से ढंकी थी। अमीर और प्रतिष्ठित सिख अपनी दाढ़ियों पर ऐसी जालियां लगाया करते थे।

"मैंने बहुत-सी लड़ाइयों में हिस्सा लिया है। मेरी वर्दी पर लगे तमगे इसका सबूत है। ये तमगे मेहरबान सरकार ने दिए हैं। मैं चित्राल, बर्मा और चीन में लड़ चुका हूं। अंग्रेज़ अफसर भी मेरी इज़्ज़त करते थे और मुझसे स्नेह करते थे। ये अंग्रेज़ लोग गरीबों के दोस्त हैं, पैदायशी योद्धा हैं। जंग में ये अपने निश्चय पर डटे रहते हैं। ये हमारी तरह ही शेर हैं। देखने में भले ही छोटे-छोटे नज़र आते हों। हम योद्धाओं की संतान हैं। हमें अंग्रेज़ों के लिए लड़ना चाहिए।"

"क्या तुम्हारी फौज फिर चीन जाएगी?" एक देहाती ने पूछा।

"फौजी साथियो !" हवलदार ज़ोर से बोला, "इंगलिस्तान के पादशाह और हिन्दुस्तान के शहनशाह ज्यॉर्ज पंचम के राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता। उनकी फौज के हर सिपाही को समुद्र पार विदेशों में जाने का फख्र हासिल है, जहां भी उसका फर्ज उसे ले जाए। तुम सोचो शाहनशाह की फौज में भर्ती होने में कितने फायदे हैं। चाहे तुम्हें विदेश जाने का मौका न मिले। वर्दी मिलती है। ग्यारह रुपये माहवार तनख्वाह। सफर करने के मौके। ज़रा सोचो कि तुम्हें जो खेल सिखाए जाते हैं उनमें कितना लुत्फ आता है। अगर फौज में भर्ती होकर तुम्हें जन्नत की नेमतें न मिलें तो मेरा नाम लहनासिंह नहीं। सबसे पहले पैसे को लो। हर आदमी के दिल में पैसे की कद्र है। यकीन करो सिंहनिओं के बेटो—गुरु ग्रंथ साहब की सौगन्ध खाकर कहता हूं···"

'ये बातें सच नहीं हो सकतीं,' लालू श्रोताओं को देखकर बड़बड़ाया। उसने फिर घुग्घी और चुरंजी की तलाश शुरू कर दी। उन्हें कहीं न देखकर वह एक-दूसरे जमघट में चला गया। बांसुरी की आवाज़ सुनकर उसने अनुमान लगा लिया कि कोई मदारी अपना खेल दिखाकर जनता का मनोरंजन कर रहा था।

उसने लापरवाही से अपने आसपास देखा। वह थक गया था और चिड़चिड़ा हो रहा था। जब लालू भीड़ में घुसने लगा तो अचानक बांसुरी बन्द हो गई।

"अपने पूर्वजों से मुझे जो अलौकिक शक्ति मिली है, उसके ज़ोर से टोकरी के नीचे बैठा लड़का खरगोश बन जाएगा। हर बार जादू का नया मन्त्र पढ़ना पड़ता है जो बड़ा ही मुश्किल काम है। मेरी मेहनत बेकार नहीं जानी चाहिए। भीड़ में कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं जो मुझे एक पाई भी नहीं देंगे और अगर मेरा खेल कामयाब न हुआ तो यहां से खिसक जाएंगे। लेकिन मैं जानता हूं कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ज्यादा ईमानदार हैं। मुझे किसीकी सहृदयता पर शको-शुब्ह नहीं, लेकिन अपने पेट की खातिर और इस नन्हें बच्चे के पेट की खातिर मेरी बात पर जिन्हें विश्वास हो, वे मेहरबानी करके अपने पैसे यहां फेंक दें। और मैं सबसे पहले यह कह दूं कि जो कंजूस हो वह यहां से खिसक जाए।"

लालू ने कई बार लड़कों को खरगोश बनते देखा था। बाकी लोग इस डर से खड़े रहे कि उन्हें कंजूस न कहा जाए, लेकिन लालू वहां से खिसक आया।

वह जानता था कि घुग्घी और चुरंजी कभी भी खो नहीं सकते। शायद वे झूलों की तरफ चले गए थे।

कुछ क्षणों के लिए एकान्त पाकर उसे अच्छा लगा। वह बिना किसी प्रयोजन के मेले में घूमना चाहता था। और माया ने उसकी आत्मा में जो तुमुल संगीत पैदा किया था, उसपर गौर करना चाहता था।

वह भीड़ में से गुज़रता हुआ आगे बढ़ रहा था, जहां मर्द गप्पें हांक रहे थे और औरतें हाथ नचा-नचाकर शोर मचा रही थीं। बच्चे गोबर, रद्दी कागज़ और जूठी पत्तलों के ढेरों के पास, जहां जानवरों और आदमियों ने पेशाब किया था, आंख-मिचौनी खेल रहे थे। वहां बहुत-सी तेज़ गन्धें उठकर आसमान तक पहुंच रही थीं।

इस वातावरण में लालू को एक विचित्र सुख की गुदगुदी महसूस हुई। सुबह की थानेदार और हलवाई वाली घटना के बावजूद, उन धोखेबाज़ों के बावजूद जो चिल्ला-चिल्लाकर, झूठ बोलकर किसानों को लूट रहे थे, हर चीज़ में एक खुशी थी। मीठी ज़बान वाले इन शहरियों की दुष्टता में भी एक खास किस्म का आकर्षण था।

ये किसान इतनी जल्दी धोखे में क्यों आ जाते हैं? लालू को उस बेवकूफ पर गुस्सा आया जो संजीवनी खरीदने के लिए इतना बेचैन हो रहा था। क्या वह यह नहीं देख सकता था कि जिस आदमी ने दो बोतलें खरीदी थीं वह दवाफरोश का अपना आदमी था? लेकिन दवाफरोश ने देहातियों की आंखों में भाषण की जो धूल झोंकी थी, उसे याद करके लालू मन ही मन मुस्कराया। एक वाक्य पर तो उसकी हंसी भी फूट निकली। उसे सारे नज़ारे पर हंसी आ रही थी।

उस बेवकूफ किसान की तस्वीर उसकी आंखों के सामने आ गई थी—किसान के मज़बूत, खुरदरे हाथ, जिनकी काली नसें सूजी हुई थीं, चेहरे पर गड्ढे पड़े थे मानो किसी अन्दरूनी बीमारी ने उसकी ज़िन्दगी को निचोड़कर उसे बदसूरत बना दिया हो।

किसान की शक्ल उसे परेशान कर रही थी, इस अप्रिय स्मृति से छुटकारा पाने के लिए वह खेमों के पास से गुज़रता हुआ मैदान की तरफ चला गया जहां गाएं-भैंसे जुगाली कर रही थीं, ग्वालिनें कण्डे थाप रही थीं और किसान मवेशियों का मोलतोल कर रहे थे। लालू चलता-चलता ग्रांड ट्रंक रोड के दूसरे सिरे पर पहुंच गया।

लेकिन किसान की शक्ल अभी भी उसके मन में बसी थी। यह कितना भोला और बेबस था।

अचानक उसे सिक्कों की खनखनाहट सुनाई दी। एक आदमी ने चांदी के रुपये बजाकर देखे और उन्हें एक सफेद थैली में रख लिया। पैसा, पैसा···लालू की गांठ में ज़्यादा पैसे नहीं थे, उसने मुंह दूसरी तरफ फेर लिया। पीढ़ियों से उसका परिवार अनाज देकर ज़रूरत की चीज़ें हासिल करता आया था, इसलिए वह पैसे को अभिशाप समझता था। इस सहज वृत्ति पर लालू काबू नहीं पा सका था। पैसों की कमी और घर की हालत की वजह से पैसे के खिलाफ यह भावना और भी अधिक शक्तिशाली हो गई थी। वह जल्दी से उस बाज़ार में से निकलना चाहता था, जहां पैसे के पीर बसते थे, जहां ज़रूरतमन्दी और नेकनीयती बेमानी चीज़ें थीं।

धूप तेज़ हो रही थी, आसमान झुलस रहा था और धरती पर सिंदूरी रंग की धूल छा गई थी। लालू ने कमीज़ के छोर से पसीना पोंछा। मेले से उठते हुए कोलाहल में वह अपने को क्षुद्र और हल्का महसूस कर रहा था।

गोबर, पसीने और पेशाब की सड़ांध-भरी बदबू में से मसालों की तेज़ सुगन्ध उठी, लालू को अहसास हुआ कि वह भूखा है।

लालू उस ढाबे की तरफ चल दिया जहां से मसालों की सुगन्ध आ रही थी। यह एक मुसलमानी ढाबा था, लेकिन वहां तक पहुंचकर लालू लौटना नहीं चाहता था।

उसने सर झुकाकर चोरों की तरह इधर-उधर देखा और कहा, "खाना लाओ।"

मुसलमान तन्दूरवाले ने उसे प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा, क्योंकि लालू सिख था। हिन्दुओं की तरह सिखों के लिए भी मुसलमान का पकाया हुआ गोश्त खाना पाप समझा जाता था। फिर वह मिट्टी की तश्तरी में सालन डालने लगा।

पास ही एक हिन्दू व्यापारी की दूकान थी। वह लालू को देखकर ज़ोर से चिल्लाया, "सरदार जी, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुम मुसलमान के यहां खाना खा रहे हो ? देखता हूं तुम्हारे बारह बज गए हैं। सर पर बालों का इतना बोझ हो तो अक्ल कैसे काम करे !"

लालसिंह ने कहा, "ओए, जा, जा, अपना काम कर।" धार्मिक पाबन्दी को तोड़ने से उसके अन्दर साहस की अतिरंजित भावना जागृत हो उठी थी।

लेकिन उसमें इतनी हिम्मत न थी कि वहीं बैठकर खाना खाता। उसने दुकानदार को पैसे देकर कहा कि वह रोटियों को किसी कागज़ में लपेट दे। फिर

वह उधर चला गया, जहां बाजीगर आग निगल रहे थे और पहलवान लोहे की ज़ंजीरें तोड़कर दिखा रहे थे। घड़ियों की लाटरियां बिक रही थीं। जलती हुई लकड़ियों के ढेरों के सामने बदन पर राख पोतकर नंग-धड़ग साधू बैठे थे। कुछ सिद्ध लोग कीलों पर लेटे, टकटकी बांधकर सूरज की तरफ देख रहे थे और कुछ योगासन कर रहे थे। फिर किसानों और भिखमंगों की कतारों से गुज़रता हुआ वह उसी कुएं पर पहुंचा जहां सुबह बैलगाड़ी आकर खड़ी हुई थी। वहां बैठकर उसने पेट भरकर करारी सिकी हुई रोटियों के साथ गोश्त खाया। फिर वह बरगद के पेड़ की जड़ों के पास आराम से लेट गया। रात की थकान, गर्मी और पेट-पूजा के फलस्वरूप न चाहते हुए भी उसकी आंख लग गई।

१०

घुग्घी ने लालू के नथुनों को एक तिनके से गुदगुदाया और चुरंजी ने उसके अधखुले मुंह में धूल डाल दी। गुलाम को साहूकार के बेटे की तलाश में भेजा गया था। वह चद्दर ओढ़कर हौवा बना बैठा था।

लालू नींद में हिल-डुल रहा था, फिर वह सिर हिलाकर उठ बैठा। थूकते और खांसते हुए उसने लड़कों को गालियां दीं। वे हंसते हुए दूर भाग गए। मन ही मन वे लालू से डर रहे थे।

घुग्घी ने दूर से कहा, "तुमने आज सुबह मुझसे यही छेड़खानी की थी। मैंने उसका बदला लिया है।"

लालू ने एक जम्हाई ली और एक उबासी के बाद उसके खून की रवानी तेज़ हो गई। वह हंस पड़ा।

"ओए सूअरो! तुम कहां भाग गए थे?" उसने पूछा।

"पुत्तर, हम मेला देखने आए हैं, सोने नहीं।" घुग्घी ने कहा।

"तुम लोगों ने खाना खाया?" लालू ने पूछा।

"और नहीं तो क्या। हमने एक ढाबे में गोश्त और रोटी खाई। फिर आठ-आठ आने की कुल्फियां, आठ-आठ आने की मिठाई और दो-दो सोडे की बोतलें पीं।

मैंने एक बांसुरी भी खरीदी है ।" चुरंजी ने कहा ।

"तुम्हारे पास पैसे कहां से आए यार ? तुम तो कह रहे थे कि तुम दोनों के पास सिर्फ एक रुपया है ! क्या यह झूठ था !"

"हा-हा, हू-हू, ही-ही !" घुग्घी हंसा ।

"देख, वह हौआ पैसे लेकर आया है !" चुरंजी ने चादर में लिपटी आकृति की तरफ इशारा किया।

लालू ने उस आकृति को अपने नज़दीक सटकर बैठे देखा था । लेकिन उसका ख्याल था कि उसके साथी मज़ाक कर रहे थे। चादर संदिग्ध ढंग से हिल रही थी। लालू को पहले तो हिचकिचाहट हुई, फिर उसने चादर हटा दी, भीतर से जुलाहे का लड़का निकल आया। उसकी दबी हंसी फूट निकली। सब ठहाका मारकर हंस पड़े ।

"देखा, मेरी स्कीम कामयाब हो गई !" चुरंजी ने जोश से कहा।

"ज़रा घर पहुंचकर देखना । तुम्हारी इतनी पिटाई होगी, जितनी ज़िन्दगी में कभी नहीं हुई।···इसकी खास वजह यह है कि तुम्हारे बाप को तुम्हारे खर्च के अलावा मेरा किराया भी देना पड़ा है।"

"कल की फिक्र मत करो। चलो शहर चलकर मन्दिर की रोशनियां और आतिशबाज़ी देखेंगे। मेला तो देख लिया।" घुग्घी ने कहा।

"इतनी जल्दबाज़ी मत दिखाओ।" गुलाम ने खीज का अभिनय करके कहा। "मेरा क्या होगा ? अगर मैं मेला देखना चाहूं तो ?" वह उम्र में घुग्घी से बड़ा था, इसलिए बड़प्पन के अहसास के अलावा उसे छोटे लड़कों पर रौब जमाने में मज़ा आता था।

"लेकिन भाई साहब, तुमने मेला तो जी भरकर देख ही लिया है," घुग्घी ने गुलाम को खुश करने के लिए कहा। आम तौर पर वह घुग्घी से गुस्ताखी से पेश आता था। "लौटते वक्त ऐश कर लेना।"

"चलो चलें," लालू ने अपने कपड़ों की सलवटें ठीक कीं और चलने की तैयारी करने लगा।

सबने एक दूकान से पान खरीदे। एक मद्रासी कलफ लगी टोपी पहने पानों पर चूना-कत्था लगा रहा था और सुपारी, लौंग इलायची वगैरह मसाले डाल रहा था। गुलाम के आने की खुशी में ये पान खरीदे गए थे। छैलों की तरह पान

चबाते हुए चारों लड़के आगे बढ़े।

अपने अस्त होने की बात सोचकर तीसरे पहर का सूरज गुस्से से जल रहा था। मेले में तमाशबीनों की भीड़ की लहरें हटकर दूकानों पर जमा हो गई थीं। 'खनखन' और 'खड़खड़' करती हुई बम्बूकाट और तांगे सड़क के एक कोने पर इकट्ठे हो गए। दूकानदार पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाने लगे। भिखमंगे और मुफलिस चीखने-चिल्लाने लगे। दवाफरोश, जादूगरों और मदारियों के गले चिल्ला-चिल्लाकर बैठ गए थे।

लड़के ग्रांड ट्रंक रोड पर इधर-उधर ताक-झांक करते हुए जा रहे थे। यह जानते हुए भी कि देर से पहुंचने पर वे मन्दिर में नहीं घुस पाएंगे, वे कहीं-कहीं रुकने पर मजबूर हो जाते थे। मेले से हटने को उनका मन नहीं कर रहा था, क्योंकि वहां हज़ारों लोगों का कोलाहल था, हिनहिनाते हुए घोड़ों और रंभाते हुए पशुओं का संगीत था, जो एक विशाल चलचित्र की तरह रग-बिरंगा था।

जब वे मेले के मैदान से बाहर निकल आए तो घुड़दौड़ के मैदान से ऊंचा शोर सुनाई दिया। मेले की आखिरी झलक पाने के लिए वे एक बार फिर मैदान में चले गए।

लालू ने घुग्घी को उठाया और गुलाम ने चुरंजी को ताकि वे अमीर किसानों और शहरियों के पीछे से उठकर नज़ारा देख सकें।

दो फर्लांग लम्बे सपाट मैदान पर अरबी टट्टुओं की दौड़ खत्म हो रही थी। घुड़सवार जीतने के बिन्दु के पास पहुंचकर पागलों की तरह टट्टुओं पर चाबुकें बरसा रहे थे। लड़कों की जिज्ञासु आंखों के सामने भीड़ की दीवार आ गई, इसलिए वे फिर सड़क पर वापस लौट आए, जहां उन्हें एक ऐसा शानदार नज़ारा दिखाई दिया, जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे। वहां ऊंटों की दौड़ शुरू हो रही थी। ऊंटों ने दौड़ने से इन्कार कर दिया था। सिर्फ नकेलों के ज़रिये ही सवार ऊंटों पर काबू पा सकते थे। चारों लड़के कूड़े के एक ढेर पर चढ़ गए और उन्होंने देखा कि पांचों में से एक भी ऊंट टस से मस नहीं हो रहे थे। जब सवारों ने उनकी नकेलें खींचीं तो ऊंटों ने गर्दनें झुकाकर चारों तरफ बेतहाशा भागना शुरू कर दिया। लोग भाग खड़े हुए और हंगामा मच गया। एक ऊंट अभी भी अपनी जगह पर खड़ा था और जब उसे आगे बढ़ने के लिए मजबूर किया गया तो वह चिड़चिड़े बच्चे की तरह ज़मीन पर लेट गया और धूल में नाक रगड़ने लगा।

"जब घुग्घी खेल में हार जाता है तो उसकी भी यही हालत होती है।" गुलाम ने कहा।

लेकिन गुलाम की बात अभी अधूरी ही थी कि ऊंट उठ खड़ा हुआ और वह मंडी में दुलकी चाल से जीत के निशान तक जा पहुंचा।

"अब तुम यह तो नहीं कह सकते कि वह गुलाम है,' घुग्घी ने खाई पर से छलांग लगाकर कहा। उसकी हंसी से आकाश गूंज रहा था।

बाड़े से पचास गज़ दूर बंबूकाट वाले आवाज़ें लगा रहे थे। "अनाज मंडी की सवारी! कोई मंदिर जाने वाला है? रेलवे स्टेशन! अनाज मंडी! हाथी दरवाज़े की सवारी!" विजेता-भाव से भागता हुआ घुग्घी अपने बाप की बांहों में गिरते-गिरते बचा।

ताज्जुब की बात यह थी कि झंडू ने अपने बेटे के साथ इस बार अच्छा सलूक किया। ज़ाहिर था कि मेले की ज़िन्दादिली का असर उसपर भी हुआ था। उसे अच्छी आमदनी हुई थी और उसने 'शर्बत' भी पिया था (वह शराब को इसी नाम से पुकारता था) इसलिए आज उसकी रग-रग से दरियादिली टपक रही थी। उसने खुद ही लड़कों से कहा कि वे जहां जाना चाहेंगे, वह उन्हें वहां पहुंचा देगा।

रास्ते में कोई दिलचस्प बात नहीं हुई, क्योंकि लड़के जानते थे कि उनकी सारी खुशी खत्म होने वाली थी। मेले के मज़े लूटने के बाद किसान भी खामोश और उदास दिखाई दे रहे थे। फटे पैबन्द लगे कपड़े पहने खानाबदोशों की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी, आवारागर्द, भूखे कुत्तों की बेबस आवाज़ों की तरह।

शहर के बाहर, जहां गड्ढों में बरसात का पानी और कूड़ा-कर्कट भरा था, लाल ईटों से बनी शराब की दूकान के पास नशे में धुत्त कुछ किसान बेसुरी आवाज़ों में गीत गाते हुए आगे बढ़ रहे थे। कुछ किसान कीचड़ में लथपथ पड़े थे। एक का सर गन्दी नाली में था।

झंडू इक्के को रंडियों के मुहल्ले से निकालकर ले गया, जहां पैसे वाले किसान सफेद खद्दर के कपड़े पहनकर, हाथ में सोटे लिए धीरे-धीरे चल रहे थे और सस्ती रंडियों की कतारों को देखकर आंखें मटका रहे थे। रंडियां भड़कीले रंगीन कपड़े पहने थीं, उनके चिकनाहट-भरे चेहरे पाउडर और सुर्खी से पुते हुए थे और वे पान चबा रही थीं। उनमें से कुछ तो पान की पीक की फुहारें अपने प्रशंसकों पर फेंक रही थीं, क्योंकि वे इसमें माहिर थीं।

इस भीड़ में बांसमंडी और लक्कड़ बाज़ार से आगे पहुंचना इक्के के लिए नामुमकिन हो गया, इसलिए लड़कों ने झंडू से कहा कि वह उन्हें वहीं उतार दे। लेकिन पुराने बाज़ार के सिरे पर जब सामने बहुत-सी भीड़ आ गई, तब कहीं जाकर झंडू ने रुकने का नाम लिया। इक्का खड़ा करके उसने लालू के हाथ में एक रुपया देकर कहा, "तुम सब इसकी मिठाई खरीद लेना," लड़कों को उतारकर वह बोला, "अगर वापस गांव जाना हो तो कल दोपहर हाथी दरवाज़े के बाहर इक्कों के अड्डे पर पहुंच जाना।"

गुलाम ने बताया कि अमरसिंह उन्हें सौ गज़ दूर मंदिर की सीढ़ियों पर मिलेगा। गुलाम उसे बोर्डिंग हाउस में मिला था जहां वह अपने दोस्तों की खोज-ख़बर लेने गया था। भीड़ की रेल-पेल को लांघकर वे मंदिर की तरफ बढ़ रहे थे। अचानक वे बीच में फंस गए और अलग-अलग हो गए। चुरंजी भीड़ की एक लहर के साथ मंदिर की सीढ़ियों पर जा पहुंचा। फिर एक दरवाज़ा खुला और कुछ लोग उसमें जा घुसे।

लालू, गुलाम और घुग्घी भी मौका पाकर चुरंजी के पास सीढ़ियों पर पहुंच गए और उसे साथ लेकर डाकखाने की बगल वाले एक मकान में जा घुसे। गर्मी और पसीने से उनका दम घुट रहा था। वे भीड़ में गिरते-गिरते एक चौड़े ज़ीने पर जा पहुंचे। इस धकापेल में आखिर उनका देहातीपन काम आया और वे एक सपाट छत पर चढ़ गए।

छत पर से मंदिर के अहाते का शानदार नज़ारा दिखाई दे रहा था। सिर्फ एक वटवृक्ष रास्ते में रुकावट डाल रहा था। अंधेरे आसमान के तले एक तालाब के बीचों-बीच मंदिर के आलों में हज़ारों मट्टी के दिए जल रहे थे। मंदिर से पहाड़ी तक पहुंचने के लिए एक पुल बना हुआ था। दियों की रोशनी जनसमूह के चेहरों और सफेद कपड़ों को जगमगा रही थी। लोग अहाते के चारों तरफ, फुटपाथों पर, तालाब के किनारों पर बैठे थे। तालाब में दियों की रोशनी इस तरह चमक रही थी जैसे पानी में आग लग गई हो।

डाकघर की छत पर बैठने के लिए अच्छी जगह तलाश करते-करते घुग्घी की नज़र अमरसिंह पर पड़ी, जिसने पोस्ट मास्टर के लड़के की मेहरबानी से अपने दोस्तों के लिए छज्जे पर बैठने की जगह घेर रखी थी। पोस्ट मास्टर का लड़का अमरसिंह की जमात में पढ़ता था।

सब जने बड़े उत्साह से अमरसिंह से गले मिले। वह बहुत सालों से गांव नहीं गया था। लेकिन मन्दिर का दृश्य इस मुलाकात से भी ज़्यादा उत्साह देने वाला था। खुशकिस्मती से आरती खत्म हो रही थी। मन्दिर का घण्टा बजा और मन्दिर के छज्जों से, पहाड़ी से, तालाब के उत्तरी कोने पर बनी पवित्र लाट से आतिशबाज़ियां छोड़ी गई।

अंधेरे की गहरी कंदराओं से फुलझड़ियां बनाने वाले कारीगर मुट्ठियों में सफेद मसाला भर-भरकर आसमान में फेंक रहे थे, जो टूटते सितारों की शक्ल ले रहा था। पिछले एक बरस से वे लोग इस त्यौहार के लिए तैयारियां कर रहे थे।

फिर कारीगरों ने फुलझड़ियां जलाईं और हवाइयां छोड़ीं।

कुछ गुब्बारे और कंदील भी छोड़े गए। लोग उन्हें मन्त्र-मुग्ध होकर देखने लगे। गुब्बारे शहर की छतों से भी दूर जा पहुंचे थे।

आतिशबाज़ी के फूलों को देखकर विशाल जन-समूह ईश्वर की लीला का गुण-गान करने लगा। धार्मिक नारे बुलन्द किए गए और खुशी की किलकारियां सुनाई दीं।

जिज्ञासा-भरी खामोशी में जब भी कोई आतिशबाज़ी छूटती और आग के गोलों से चिंगारियों के फूल नीचे गिरते तो सारे लड़के उसी तरह चीखते थे जिस तरह किसी चमत्कार को देखकर आदि मानव खुशी से चीखता होगा।

अमरसिंह ने उन्हें दावत दी थी। लड़के हवा में बांहें हिला-हिलाकर खुशी से उछल रहे थे।

११

अगर मन में गुनाह न हो तो घर दूर से ही दिखाई देने लगता है।

जब घुग्घी के बाप ने गांव में लौटकर सराय के पास इक्का रोका तो लालू के हर कदम के साथ उसकी आत्मा में गुनाह की परछाई बढ़ती गई।

"सब अपना-अपना मामला संभालो।" इस यात्रा में चुरंजी और गुलाम दो शरीर एक प्राण थे। वे दोनों एक साथ साहूकार के घर गए, ताकि वे चुरंजी की

मां को हाथ-पैर जोड़कर इस बात पर राज़ी कर लें कि जब साहूकार घर आए तो मां चुरंजी का पक्ष ले। घुग्घी को कोई खतरा नहीं था, क्योंकि उस बदमाश के बाप ने उम्मीद से ज़्यादा सहृदयता दिखाई थी। लालू वकील साहब की कोठी के साथ-साथ साये में चलने लगा, ताकि कोई यह न देख ले कि वह शहर से बाल कटवा कर आया है। अगर उसके घर पहुंचने से पहले ही यह अफवाह फैल गई और भांडा फूट गया तो बड़ी शामत आएगी।

अभी तक उसे डर नहीं लगा था। लड़कों के साथ वह बड़ी खुशी से खा-पी रहा था और गन्ने चूस रहा था। 'किंग ज्यार्ज पंचम हेयरकटिंग और शेविंग सैलून' से बाल कटवाने के बाद उसे जो अजब-सा अहसास हुआ था, वह कभी का दूर हो चुका था। उसे लागा कि जैसे हमेशा से ही उसके बाल छोटे थे।

लेकिन अब अपने दुःसाहस के परिणामों की कल्पना से उसे अपनी गर्दन पर ठंडक महसूस हुई हालांकि उसने पगड़ी को कसकर उस जगह पर बांधा था जहां हज्जाम ने उस्तरा लगाया था।

उसने सोचा कि इसमें तो नुकसान है। उसे गर्दन पर सर्दी लग सकती है। मेले में खूब खर्च करने के बाद उसके पास साबुन खरीदने के लिए पैसे नहीं बचे थे, उसे लगा कि उसकी गर्दन पर हजामत के बाल चुभ रही हैं। ओवरऑल पहनाकर हज्जाम ने कमीज़ के भीतर जो रुई रखी थी उसके बावजूद बाल उसे चुभ रहे थे। तौलिए से रगड़ने के बाद भी सारे बाल नहीं साफ हो पाए थे। हर बार वह कानों के पीछे हाथ ले जाकर थोड़े-से बाल झाड़ देता था।

उसने मन ही मन कहा, "यह तो होना ही था। मेरे बाल जो लंबे और घने थे।"

उसे याद आया कि सुबह हजामत करवाते वक्त उसे कैसा लगा था। जब हज्जाम की कैंची उसके बालों की जड़ों तक जा पहुंची थी तो उसका पहला उत्साह ठंडा पड़ गया था। उसके झाड़ू जैसे सख्त और घने बालों को काटने के लिए हज्जाम को कई तरीके इस्तेमाल करने पड़े थे।

बाल कटवाते वक्त उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई भारी जुर्म कर रहा हो। एक सिख होकर वह अपने केशों पर कैंची चलवा रहा था। खुशकिस्मती से दूकान पर उस वक्त और ग्राहक मौजूद नहीं थे।

लेकिन बाल कटवाने के बाद जैसे उसका सर हल्का हो गया था। वह फैशनेबल

लोगों की तरह उंगलियों से अपने बाल सहला रहा था। उसने सोचा कि वह पगड़ी से छुट्टी पा लेगा और नंगे सर, बालों को तेल लगाकर पीछे की तरफ काढ़ा करेगा।

'जल्द ही मुझे कटे बालों की आदत पड़ जाएगी।' उसने सोचा और अचानक हैरत से उसकी सांस रुक गई।

बाज़ार से फ़ज़लू हाथ में हुक्का लिए उसकी तरफ आ रहा था। लालू ने सोचा कि हर कीमत पर फ़ज़लू से बचना चाहिए, वरना खबर फैल जाएगी।

लालू गली पार करके मोचियों की गली में घुस गया। मुर्गियां उसे देखकर कुड़कुड़ाती हुई नालियों की गन्दगी की तरफ भाग गईं। वह एक गड्ढे में कूद पड़ा। सामने भंगियों की झोंपड़ियां थीं। वे लोग गांव से अलग रहते थे और एक गंदे बदबूदार तालाब में से पानी भरते थे। उनके मवेशी भी उसी पानी में नहाते थे। ऊंची जातों के लोग अपने बच्चों को बताया करते थे कि वह तालाब नर्क का हिस्सा है और उस तालाब में से एक खुफिया सुरंग नर्क की तरफ जाती है।

सूरज भूरे लाल बादलों और कुओं के आसपास उगे दरख्तों के पत्तों से ऊपर जा पहुंचा था। गन्दी नाली के पानी में सूरज की लालिमा चमक रही थी। लालू अपनी कमीज़ के छोर से नाक ढांपकर पाखाने के ढेरों के पास जाकर निकला। आलसी दूकानदार हाजत-फरागत के लिए खेतों न में जाकर वहीं बैठ जाते थे। मुसलमान तेलियों और कुंजड़ों के घरों का चक्कर काटकर वह जुलाहों की गली में जा पहुंचा। उसका खयाल था कि वह हरनामसिंह के घर के नज़दीक छोटे रास्ते से अपने घर पहुंच जाएगा।

बचपन में वह अक्सर इस रास्ते से गुज़रता था। उसे याद आया कि किस तरह वह भंगी के लड़के भूपा के साथ छिप-छिपकर मछली मारने के लिए जाया करता था। बाद में फादर एनेण्डेल के असर में आकर भूपा ईसाई बन गया था और शेरकोट के हस्पताल में उसे मरहमपट्टी करने का काम मिल गया था। बचपन में उसे वह बदबू इतनी परेशान नहीं करती थी। कहीं वह भी अपने बड़े-बूढ़ों की तरह नकचढ़ा तो नहीं बन गया था!

दो ग्वालिनें सर पर गोबर के उपलों से भरी टोकरियां उठाए उसकी तरफ आ रही थीं।—वे कौन थीं? मौसी उत्तमकौर?...नहीं!

उसने घबराकर इधर-उधर देखा और फिर हवा के झोंके की तरह तहमद

फरफराता हुआ अपने घर की तरफ चल पड़ा। अब उसका घर सिर्फ बीस फुट दूर रह गया था।

'आखिर मैं घबरा क्यों रहा हूं ?' उसने अपने-आपसे पूछा। उसने अपने चेहरे पर लापरवाही की मुद्रा लाने की कोशिश की।

लेकिन दहलीज़ पार करते हुए आने वाली अप्रियता की कल्पना और भय से उसका मन आशंकित हो उठा। उसके मन के किसी कोने में अभी भी अफसोस था। ड्योढ़ी के बासी अंधेरे में उसे लगा जैसे हवा पतली हो गई थी।

क्षण-भर के लिए रुककर उसने अपनी पगड़ी को टटोला, ताकि उसकी चाल फौरन ही नाकामयाब न हो जाए। उसका सर चकराने लगा और वह रोशनी के टुकड़े में गिरते-गिरते बचा।

'यह मेरी बेवकूफी है।' वह सोचने लगा कि अगर घुग्घी को भी साथ ले आता तो अच्छा रहता। पराए लड़के के सामने शायद उसे गालियां न मिलतीं।

उसे देखकर मां ने कहा, "आ पुत्तरां! मेरा पुत्तर बड़े शुभ मौके पर पहुंचा है। तुझे बधाई हो पुत्तर, आ जा।"

लालू को बधाई की बात से संकोच हुआ।

'कहीं मेरे लिए कोई रिश्ता तो नहीं आया ?' उसने सोचा।

"आ पुत्तर, आज बड़ी खुशी का दिन है।" उसकी मां रसोई में लाल रंग की रेशम से कढ़ी हुई फुलकारी ओढ़े बैठी थी। उसके सामने मिठाई, नारियल, बादामों और किशमिशों से भरी टोकरी रखी थी। वह बोली, "आ पुत्तर, थोड़ी-सी मिठाई चख ले।"

"आ बच्चे, आकर राजा रामजीदास के सामने मत्था टेक," लालू के बाप ने उसे आवाज़ दी। वह माला फेरकर 'वाह गुरु, वाह गुरु' का जप कर रहा था। उसके पास शेरकोट का नाई बैठा था, जिसने सफ़ेद रंग का कोट पहन रखा था और उसकी तराशी हुई दाढ़ी उसकी सम्पन्नता की सूचक थी। बूढ़ा रामजी की तारीफ करने के लिए उसे राजा कह रहा था—नाई जात के लोगों के लिए यही आदरसूचक शब्द इस्तेमाल किया जाता था।

"आ लालू पुत्तर!" रामजी ने बेतकल्लुफी से कहा। इसी बेतकल्लुफी की वजह से सिख भी सगाइयां करवाने के लिए उसे बुलाते थे, हालांकि सिखों के लिए

नाइयों का कोई महत्त्व नहीं था।

लालू को डर था कि उसका हुलिया देखकर उसके मां-बाप को सदमा पहुंचेगा। उसे घबराहट हो रही थी। उसने सोचा कि शायद शगन की चीज़ें उसके लिए नहीं ग्राईं। ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन उसकी मां ने उसे बधाई जो दी थी।

पहले पानी नज़र ग्राता है फिर कीचड़, लगता है कि एक मुसीबत के बाद दूसरी मुसीबत ग्रा गई थी। उसने तय किया कि चाहे जो भी हो वह शादी के लिए राज़ी नहीं होगा, भले ही उसकी मां ने शगन कबूल कर लिया हो। वह मर जाएगा लेकिन शादी नहीं करेगा।

रामजीदास के पास ही लालू का बड़ा भाई दयालसिंह साफ-सुथरे कपड़े पहन-कर बैठा था। इससे लालू को कुछ तसल्ली हुई, हालांकि ग्रभी भी उसके उत्तेजित मन के कोने में कहीं भय कांप रहा था। वह मुंह लटकाकर ग्रपनी मां के पास चला गया। वह चादर के एक छोर में कुछ फल लाया था। लालू के संकोच को नाई ताड़ गया। उसने कहा, "ग्रा पुत्तर, शरमा नहीं। यह शगन तो तेरे भाई के लिए है। इसके बाद तेरी बारी ग्राएगी। जल्द ही मैं लगन लेकर ग्राऊंगा। शेरकोट के कुछ लोगों ने तुम्हें देखा था, जब तुम स्कूल में पढ़ते थे। वे इस बात का इन्तज़ार कर रहे हैं कि उनकी लड़कियां सयानी हो जाएं। बिरादरी की लड़कियों को इससे ग्रच्छा खानदान ग्रौर कौन-सा मिल सकता है? तुम भाइयों के चेहरे तो सूरज की तरह दमकते हैं।" ग्रौर इस ग्रौपचारिक चापलूसी के बाद उसने समर्थन पाने के लिए निहालसिंह ग्रौर गुजरी की तरफ देखा। दरग्रसल उसे यह रिश्ता तय करवाने के एवज़ में भारी रकम मिलने वाली थी।

गुजरी गद्गद होकर बोली, "मेरे सोहणे लाल के लिए कोई नन्ही-सी दुल्हन ग्रा जाए तो मुझे बड़ी खुशी होगी। चलो दयालसिंह की चिन्ता तो खत्म हुई। लेकिन ग्रपने लाल की शादी किए बगैर मैं चैन से नहीं मर सकती।"

"तू दूसरे लड़कों की फिक्र कर। मेरी फिक्र रहने दे।" लालू ने नाई के पास ग्राकर ग्राशीर्वाद लेते हुए कहा।

बूढ़े निहालसिंह ने बीवी से कहा, "शर्मसिंह की मां, लालू का मुंह भी मीठा करा। ला शगन की मिठाई।"

"पहले राजा रामजीदास की खातिर होनी चाहिए।" मां ने उन्हें कुछ फल ग्रौर

एक मट्ठी दे दी।

"लड़के का मुंह बाद में मीठा कराना।" शर्मसिंह ने नाज के कोठे से निकलते हुए कहा।

"मां, मेरा मुंह तो मीठा है। मेरे बड़े भाई को मिठास की ज़रूरत है। कम से कम उसकी कड़वी ज़बान इस शुभ मौके पर तो मीठी हो जाएगी।" लालू ने ताना मारा।

शर्मसिंह ताने से तिलमिलाकर लालू को घूरने लगा।

शर्मसिंह ने देखा कि लालू की पगड़ी गर्दन पर नीची बंधी हुई थी। उसने पूछा, "तेरे सर को क्या हुआ ?"

"उसने क्या किया है ?" नाई ने मुस्कराकर पूछा। वह सुलह-सफाई कराने में भी माहिर था।

"आज सुबह, मैंने 'किंग ज्यॉर्ज पंचम हेयर कटिंग सैलून' में जाकर सिख मज़हब के बोझ से छुटकारा पा लिया।" लालू ने शान से कहा। भाई के साथ हुए झगड़े से उसे तैश आ गया था।

फिर उसने कमीज़ की जेब से सेंट की एक शीशी निकालकर नाई से पूछा, "ज़रा बताओ, तुम्हारी बिरादरी के एक भाई ने मुझे चार आने में तेल की जो शीशी दी है वह किसी काम की है या नहीं ?"

"ओए, बढ़-बढ़कर बातें न बना ! ज़रा पगड़ी खोल तो हम भी तेरी करतूत देखें ?" शर्मसिंह ने आगे बढ़कर धमकी-भरे इशारे से कहा।

"हां, हां, खोल इसकी पगड़ी," निहालसिंह ज़ोर से गरजा। वह भी गुस्से और घबराहट में लालू के पास आ गया।

"हाय, हाय ! रब्ब तुझपर मेहर करे ! कहीं सचमुच तूने ऐसा काम तो नहीं कर डाला !" गुजरी दहलीज़ पर खड़े होकर बोली।

"हां मां, मैंने केश कटवा दिए हैं।" लालू ने कहा। दरअसल उसे सबसे ज़्यादा परेशानी हो रही थी लेकिन उसने अपने बाप और भाई की धमकी का बड़ी दिलेरी से सामना किया और अपनी पगड़ी खोल दी। कोठरी में दहशत-भरी खामोशी छा गई।

निहालसिंह ने आगे बढ़कर लालू के मुंह पर ज़ोर से एक तमाचा मारा। बूढ़े शेर की तरह वह अपने बेटे पर झपटा और उसने लड़के की गर्दन में अपने नाखून

गड़ा दिए। शर्मसिंह ने दांत पीसकर उसे मां की गाली दी और उसके सर और गर्दन पर मुक्के बरसाने लगा।

"न कर जजमान, न कर," रामजीदास ने बीच-बचाव करते हुए कहा।

"वे पुत्तर, तूने क्या कर डाला! आज तो बड़ा शुभ दिन था!" गुज़री ज़ोर से रोने लगी और बांहें फैलाकर पलंग की तरफ आई।

"वाह गुरु! वाह गुरु!" कहता हुआ दयालसिंह उन्हें समझाने आया। इस घटना ने उसकी सहृदयता और खामोशी पर भी आघात पहुंचाया था। उसने कहा, "लालसिंह छोटा है इसलिए उसने गलती की है लेकिन वाह गुरु उसे फिर रास्ते पर ले आएंगे। वाह गुरु का नाम ले।"

लालू घर वालों के इस व्यवहार से हक्का-बक्का रह गया, हालांकि वह जानता था कि ऐसा होगा। उसके मन का एक हिस्सा संघर्ष करने के लिए व्याकुल हो उठा। लेकिन बचपन से ही उसे बुज़ुर्गों की इज्ज़त और आज्ञापालन का सबक मिला था, इसलिए इस मौके पर उसे जैसे लकवा मार गया, हालांकि भीतर ही भीतर उसके मन में गुस्से और आत्म-करुणा की आग सुलग रही थी।

निहालसिंह ने दयालसिंह के हाथ एक झटके से परे हटा दिए और नाई की चांदी की मूठ वाली छड़ी उठाकर लालू पर झपटा। "कुत्ती दा पुत्तर!" उसने गाली दी और लालू की गर्दन, पीठ, टांगों और पसलियों पर तड़ातड़ छड़ी मारने लगा।

"तूने जाकर मेरा और मेरे खानदान का नाम धूल में मिला दिया! पुरखों का मुंह काला कर दिया! लोगो, देखो, कितनी अंधेरगर्दी है! मेरा लड़का होकर तूने केश कटवा दिए!"

शर्मसिंह ने बदला लेने के लिए लालू को एक ज़ोर की धौल जमाते हुए कहा, "मैं तो पहले ही कहता था कि यह बदमाश बिगड़ गया है। तुम्हीं लोगों ने लाड़-प्यार से इसका दिमाग खराब किया है। अब अपनी करनी का नतीजा भुगतो!"

"हाय, हाय! मुझे क्या पता था! मेरा पुत्तर मेरा लाल! मेरा सोहणा लाल! जब केश थे तो कितना प्यारा लगता था। अपनी शक्ल बिगाड़ ली। मुझे क्या पता था?" गुजरी विलाप करने लगी। केसरी ने उसे तसल्ली देने की कोशिश की, "ओह! सत्यानाश हो गया! हम बर्बाद हो गए! अब बिरादरी में मुंह नहीं दिखा सकेंगे।"

"मां धीरज रखो!" दयालसिंह ने समझाया। उत्तेजना से उसका चेहरा

लाल हो उठा था, लेकिन इस आकस्मिक घटना ने उसका दिमाग खाली कर दिया था और वह हर आदमी से प्यार से पेश आ रहा था।

हरनामसिंह की बीवी अजीतकौर ओसारे के पिछवाड़े बनी कोठरी से आ गई और बोली, "क्या बात है ? क्या बात है ?"

"कोई बात नहीं। कोई बात नहीं। लड़के ने अपने केश कटा दिए हैं।" नाई ने बताया।

"केश कटा दिए हैं ? फिट्टे मूंह ! सिक्खों के लिए तो एक केश भी कटवाना शर्म से डूब मरने की बात है।" अजीतकौर चिल्लाई।

उसकी चिल्लाहट सुनकर लालू के मन में आया कि वह चीखकर अपना विद्रोह प्रकट करे और हमले का जवाब दे, लेकिन जब उसने अपने बाप की क्रुद्ध सांसों की आवाज़ सुनी और दयालसिंह जब बूढ़े को खींचकर दूसरी तरफ ले गया तो लालसिंह की इच्छा-शक्ति शिथिल हो गई। उसने शर्मसिंह की तरफ अंगारों जैसी आंखों से देखा। रामजी ने शर्मसिंह को कसकर पकड़ रखा था। लालू ने सोचा, काश उसकी आग भड़क उठती और वह इन लोगों को तबाह कर सकता।

लेकिन इस तीव्र काण्ड के बाद सब लोगों पर एक अजब ढंग की खामोशी छा गई। लालू को तो होश ही नहीं था। लेकिन आहत आत्मसम्मान के कारण उसे यकीन था कि उसने जो किया है, ठीक किया है। उसने अपने अंतरात्मा की आवाज़ सुनी है। उसने सिसकते हुए सोचा कि ज़रूर जीत उसीकी होगी और लोग उसकी तारीफ करेंगे। लेकिन यहां उसकी हार हुई थी।

उसकी मां पागलों की तरह रो रही थी और वह रोना लालू की आत्मा पर चोट पहुंचा रहा था। गुजरी कह रही थी, "वे मेरे पुत्तरा ! वे मेरे पुत्तरा ! तूने क्या किया ?" लालू को लगा कि उसे अपनी मां से सख्त नफरत है। फिर क्षण-भर के लिए उसका गुस्सा ठंडा पड़ गया और उसने सोचा कि वह मां को तसल्ली देगा, लेकिन गुस्से से उसका दिमाग भन्ना गया था और वह परस्पर-विरोधी भावनाओं के भंवर में फंस गया था।

नाई ने कहा, "मां, परेशान न हो। मैं तुझे यकीन दिलाता हूं कि इस बात से रिश्ता नहीं टूटेगा। तुम्हारे समधी भी मोने हैं।[1] तुम बुरा न मानो तो यह भी बता दूं, कि अगर सरदार दयालसिंह के भी केश और दाढ़ी न होते तो उन्हें ज़्यादा खुशी

१. जिनके सर पर केश न हों।

होती। इसीलिए तो उन्होंने सगाई करने में इतनी देरी की। वे सोच रहे थे कि वे तुम्हारे बेटे से रिश्ता करें या किसी मोने से। उन्हें यह यकीन हो गया कि दयालसिंह से अच्छा दामाद नहीं मिल सकता और अब मेली की लड़की की सगाई दूनीचन्द के लड़के से हो रही है। लेकिन आजकल की लड़कियां नहीं चाहतीं कि उनके पति दाढ़ी रखें। शायद लालसिंह इस बात को जानता है। हैं न मेरे पुत्तर!" नाई ने तनाव को दूर करने के लिए मज़ाक किया।

"तुम हमारी बेइज़्ज़ती कर रहे हो। केश कटवाना पांच कक्कों[1] के मज़हब के लिए बड़ी बेइज़्ज़ती है।" अजीतकौर ने कहा।

"तुम हंस रहे हो राजा रामजीदास," शर्मसिंह ने अपने गुस्से को काबू में रखते हुए कहा। उसे डर था कि कहीं नाई नाराज न हो जाए। लेकिन उसने तय कर लिया था कि वह नाई को लालू का पक्ष नहीं लेने देगा, न लंबे केशों के बारे में कोई अशोभनीय बात ही करने देगा।

"इस कुत्ती के पुत्तर ने मेरे बुढ़ापे में ज़हर घोल दिया," निहालसिंह दुःखी होकर बोला। वह फिर लालू पर झपटना चाहता था लेकिन उसने इस बार संयम दिखाया। उसके झुर्रियों से भरे चेहरे पर गुस्से से त्योरियां पड़ गईं। उसे अहसास हुआ कि नाई उसके बेटे का रिश्ता लेकर आया है, ऐसे बेटे का जिसकी उम्र बड़ी हो गई।

रसोई में लौटकर गुजरी ने केसरी से कहा, "जा राजे को यह खाना दे आ," इस मुसीबत के बावजूद गुजरी नहीं चाहती थी कि अतिथि-सत्कार में कोई फर्क आए।

लालू मां की मदद के लिए उठा। उसका दिल टूट गया था। उसने सोचा कि अगर इस वक्त वह हलीमी और आज्ञाकारिता दिखाएगा तो हो सकता है कि बाद में घर वालों का दिल पिघल जाएगा।

"खबरदार जो हमारे खाने को हाथ लगाया! तू गंदा छूत वाला कुत्ता है! सूअर!" शर्मसिंह बोला।

"भाई, अगर तुम लोगों की जगह मैं होता तो इन लड़कों की तरफ ज़्यादा ध्यान न देता।" नाई ने कहा। अपने मेजमानों की नाराज़गी देखकर वह फिर दास्यभाव से उनके रस्म-रिवाजों की तारीफ करने लगा।

वह जानता था कि उस दिन वह शादी का पैगाम लेकर आया था इसलिए

१. केश, कृपाण, कच्छा, कंघा और कड़ा।

उसकी हैसियत बड़ी थी। लेकिन वह नीची जात का आदमी था, इसलिए उसे ऊंची जात के लोगों के रस्म-रिवाजों की नुक्ताचीनी करने का कोई अधिकार नहीं था। उसे अहसास हुआ कि वातावरण का तनाव बढ़ रहा है, इसलिए उसे ज़्यादा पैसे नहीं मिलेंगे। जो मिला है, उससे ही संतोष करना पड़ेगा। उसने कहा, "अब मैं चलता हूं। इन चीज़ों को साथ ले जाऊंगा।"

आंगन में एक पेड़ से एक पीला पत्ता गिरा, जिससे लालू की जड़ता टूट गई। मारपीट और गाली-गलौज से पैदा हुई शर्म अभी भी उसके दिल में बाकी थी। उसने नाई से कहा, "अच्छा राजा रामजीदास, मैं जाता हूं। खेतों में जाकर काम करूंगा।"

"पहले कुछ खा-पी ले।" उसकी मां ने आंसुओं-भरी आंखों से कहा।

लालू ने गौर से मां की तरफ देखा। उस वक्त की खामाशी में पश्चात्ताप के सिवा कोई भावना नहीं पैदा हो सकती थी। फिर वह सिर झुकाकर मां के पास गया।

"चलो, मैं एक मिठाई का टुकड़ा खा लूंगा।" मां की दबी सिसकियों को सुनकर वह बोला, "मां, रो मत।"

गुजरी ने विवश ढंग से सिर हिलाया। "रो मत भैण," अजीतकौर ने भी गुजरी को समझाया। लेकिन इसी वक्त हफीज़ मिरासी ढोलक बजाता हुआ दयालसिंह की सगाई की बधाई देने आया।

लालू ने अपने को सबसे अलग और कटा हुआ पाया। सचाई के अहसास से उसका गला रुंध रहा था और वह हफीज़ के शोरगुल और दूसरों के गुस्से के सामने अपने को बेबस महसूस कर रहा था। उसने एक कुदाल उठाई, और क्षण-भर की हिचकिचाहट के बाद ओसारे की तरफ चल पड़ा। बाहर भी शोरगुल था। वह वहीं रुक गया।

"कम से कम अपने सर पर पगड़ी तो कसकर बांध ले," शर्मसिंह ने उसे बहन की गाली देते हुए कहा। "दयालसिंह की शादी से पहले हमारा मुंह न काला करना।"

"अच्छा तो तुम उसके असली रूप पर पर्दा डालना चाहते हो?" ज़मींदार के लंबे-तगड़े बेटे हरदित्तसिंह ने कहा, जिसकी बड़ी-बड़ी आंखें बाहर की तरफ निकली रहती थीं। घर के बाहर भीड़ जमा थी। हरदित्तसिंह आंगन में आकर लालू की तरफ बढ़ा और सबके देखते-देखते ही उसने तेल मिली तवे की कालिख

लालू के मुंह पर मल दी।

"हाय ! हाय !" गुजरी छातियां पीटने लगी।

"वे तेरा बेड़ा गर्क हो। तेरी इतनी मजाल !" अजीतकौर चिल्लाई।

निहालसिंह और शर्मसिंह ने डांटा, "ओए ! ओए !"

लेकिन इसी वक्त गुरुद्वारे का ग्रंथी, जिसकी मूंछें ऊदबिलाव जैसी थीं, एक गधा ले आया और ऊंची आवाज़ में बोला, "देखो लोगो ! इस बदमाश ने हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया है। मैं जानता था, यह क्यों गुरु नानक के जन्मदिन के जलसे में नहीं आ रहा था। मुझे मालूम था। आओ इसको मज़ा चखाएं ताकि गांव के सारे शोहदों को सबक मिल जाए।"

लालू फौरन उनकी मंशा ताड़ गया। वे लोग अफवाह सुनकर जमा हुए थे और सरे आम उसे गधे पर बैठाकर मुंह काला करके गांव में घुमाना चाहते थे। वह ऐसा नहीं होने देगा।

लालू के चेहरे पर कालिख लग चुकी थी। उसके सर पर खून सवार हो गया था लेकिन भीतर ही भीतर कोई चीज़ उसे रोक रही थी और वह अपने शरीर में हरकत पैदा करने की कोशिश कर रहा था।

ज़मींदार के लड़के ने उसे कसकर पकड़ लिया।

"इसे पकड़ो ! पकड़ो, सूअर को ! बदमाश ! हमारा धर्म नष्ट कर दिया !" इस शोरगुल, मां के रोने-धोने और उसके भाइयों की चीख-पुकार से उसके कान भन्ना रहे थे।

दो तगड़े किसानों, भगवंतसिंह और गुरमुखसिंह ने उसकी बांहें कसकर बांध दीं। लालू ने टांगें चलाईं और पूरी ताकत से ज़दींदार के बेटे को अपनी पीठ से नीचे उतारना चाहा लेकिन ज़मींदार के बेटे ने निहालू, शर्मसिंह और रामजी को धकेलकर एक तरफ कर दिया और लालू को उठाकर गधे पर बिठा दिया।

"आओ, ज़रा इस हरामज़ादे को पकड़ो !" वह चिल्लाया।

भगवंतसिंह और गुरमुखसिंह ने, जो पंथ के कट्टर अनुयायी थे और ग्रंथी भा अर्जनसिंह के दोस्त थे, आकर लालू को बांहों में जकड़ लिया।

हरदित्त ने गधे को लात लगाई और खून की प्यासी पागल भीड़, जिसमें औरतें और बच्चे भी शामिल थे, चीखती-चिल्लाती हुई आगे बढ़ी।

गुजरी अपने बेटे की मदद के लिए आगे आई, "मेरा पुत्तर ! मेरा पुत्तर !

इन लोगों पर मौत पड़े ! इनका सत्यानाश हो ! मेरे लाल के साथ ऐसा सलूक किया ! खसमनूंखाने । हाये मेरा पुत्तर !"

हरनामसिंह की घरवाली भीड़ में आकर बोली, "वाह ! हमारे लड़के के साथ ऐसा सलूक किया जाए ! कहां हैं हमारे सरदार जी ! वे आकर कुछ करें ! वे ! ..." वह हरनामसिंह को तलाश करने निकली ।

"ओए, उसे छोड़ दो । उसे छोड़ दो । भाई जी ! उसे छोड़ दो । हमारे साथ ऐसा सलूक ! उससे गलती हो गई है, लेकिन हम हर्जाना भरेंगे । यह तो ज़ुल्म है । यह भी कोई तरीका है ।" निहालू, शर्मसिंह और दयालसिंह ने ग्रंथी को डांटा-फटकारा और मिन्नतें कीं ।

जब गधा दहलीज़ पार करके गली में पहुंचा तो लोग ठहाका मारकर हंस पड़े, "हाय मैं मर जावां ।"

"ओए, ज़रा काले मुंह वाले को देखो ! काले मुंह वाले को ! देखो !" बच्चे चिल्लाए ।

"ज़रा देखो इस लुच्चे को ! खसमनूंखाने को ! इसने धर्म के साथ-साथ शर्मोहया भी घोलकर पी ली थी । जब हम गली से गुज़रती थीं तो यह हमें देखकर आंख मारता था और जब हम तालाब के किनारे कपड़े उतारकर धुलाई करती थीं तो यह हमारी तरफ घूर-घूरकर देखता था । इसका सर आसमान पर चढ़ गया है !" औरतें चिल्लाईं ।

"मारो ! मारो साले को ! बदमाश कहीं का !" अर्जनसिंह ने गुस्से से दांत पीसे और लालू को मारने के लिए हाथ उठाया । "इसके दिल में धर्म के लिए कोई आदर नहीं था । यह तो मठ के महन्त साहब की भी बेइज्ज़ती किया करता था । इसका दिमाग खराब हो गया है ।"

परिवार के लोगों की मारपीट के सदमे से लालू में मुकाबला करने की ताकत खत्म हो गई थी । गुस्से के बावजूद उसमें भीड़ का विरोध करने का साहस नहीं था । क्षण-भर के लिए बुज़ुर्गों की इज्ज़त और लोकलाज की सहज भावनाओं ने उसे शर्म और आत्मग्लानि के बंधन में जकड़ लिया ।

लेकिन जब गधा बाज़ार के पास पहुंचा तो उसने सोचा कि अगर दूकानदारों ने उसे देख लिया तो वह फिर कभी उन्हें मुंह नहीं दिखा सकेगा । यह डर उसके रोम-रोम में बिजली की तरह कौंध गया ।

उसने पागल की तरह ज़ोर लगाकर गुरमुखसिंह की पकड़ से अपनी बांह छुड़ा ली। जब भीड़ उसके पीछे भागी तो उसने ज़मींदार के बेटे के मुंह पर ज़ोर से घूसा मारा और अपने आसपास खड़े लोगों को अंधाधुंध पीटने लगा।

लेकिन ग्रंथी और हरदित्त ने उसे फिर कसकर पकड़ लिया।

लालू ने एक बार फिर ज़ोर के झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया लेकिन वह औंधा होकर नाली में जा गिरा। गधा भयभीत होकर आगे चला गया था। लालू ने खड़े होकर मुक्केबाज़ी शुरू की। भीड़ घबराकर भाग खड़ी हुई।

क्षण-भर के लिए वह दीवार की ओर मुंह करके खड़ा रहा। चारों तरफ कोलाहल था और घरों की दहलीज़ों पर खड़ी औरतें चिल्ला रही थीं। फिर वह गली के कुएं को लांघकर गुरुद्वारे की छत पर जा पहुंचा और वहां से कूदकर अपने दुश्मनों की पकड़ से दूर रिसालदार फतहसिंह के कच्चे मकान में जा पहुंचा।

"इसने हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया! गुरुद्वारे को अपवित्र कर दिया! पकड़ो इस चोर को, बदमाश को!"

भीड़ और भी ज़्यादा ऊंची आवाज़ में चिल्ला रही थी। इसी वक्त एक पत्थर आकर उसके टखने पर लगा। लेकिन भीड़ की चिल्ल-पों को अनसुना करके वह लंगूर की तरह कच्ची, कमज़ोर दीवारों पर दौड़ने लगा।

एक बार वह धूप में सूखते हुए उपलों के ढेर पर गिर पड़ा। पीछे से उसे 'चोर! चोर!' की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। लेकिन वह ज़ालिमों की पहुंच से दूर निकल गया था। वह जानवरों की तरह रेंगकर कुंजड़ों के मकानों के पीछे खाद के ढेर से गुज़रता हुआ खेतों में जा पहुंचा।

उसने एक गहरी सांस ली, लेकिन अभी भी उसे होश नहीं आया था। उसका सारा शरीर कांप रहा था।

वह अपने पिता के खेतों की तरफ बढ़ा और आवेश से गर्म शरीर पर उसे हवा के मन्द झोंकों का पुलकित कर देने वाला स्पर्श महसूस हुआ। आसमान में घने बादल छाए थे। लालू ने सोचा शायद उसे घर लौट जाना चाहिए।

लेकिन उसकी चाल तेज़ हो गई। लगता था कोई सहज भावना उसे गांव से दूर जाने की प्रेरणा दे रही थी। फिर भी वह हर कदम के बाद पीछे मुड़कर देख लेता था कि कहीं अभी भी लोग उसका पीछा तो नहीं कर रहे।

'आखिर वे क्या करेंगे?' उसने सवाल किया और क्षण-भर के लिए ठिठक

गया, लेकिन उसकी टांगे लड़खड़ा रही थीं। उसे डर था कि वह वहीं न गिर पड़े। वह आगे चल पड़ा।

फज़लू की क्यारियों के पास की ज़मीन जलते हुए तिनकों की तरह चमक रही थी। उसकी आंखों में आत्म-करुणा के आंसू उमड़ आए।

'हाय मेरी मां! यह क्या हो गया! ये सब बातें मेरे साथ क्यों हुईं!' वह दर्द से कराहने लगा।

'मैं इस ज़मीन पर पैदा हुआ था। जब मेरी मां खेतो में काम करती थी··· ये खेत मेरे बापू के हैं···काश मैं पैदा न हुआ होता या दूर किसी शहर में, किसी और जगह पैदा हुआ होता!' अंधेरे में फैली हुई ज़मीन को देखकर वह बोला।

'अगर ऐसा ही सलूक मेरी किस्मत में लिखा था तो अच्छा होता कि मैं यहां न पैदा हुआ होता···गालियां···चीखें, अपमान···ओह! उनकी जुर्रत कैसे हुई··· मेरे मुंह पर कालिख पोती···सब लोगों ने मेरी बेइज़्ज़ती की, मेरे सगे मां-बाप ने भी···वे मुझसे लाड़ करते थे···मेरे भाइयों ने भी···वह बदमाश हरदित्त-सिंह!···मेरी मां जो रात-भर जागती रहती थी···ओह! मेरी इज़्ज़त हमेशा के लिए खत्म हो गई···मैंने मार खाई, शरीर ज़ख्मी हो गया···अब मैं क्या कर सकता हूं!'

उसने अपना माथा ठोका और अपनी मानसिक पीड़ा को दूर करने के लिए अपनी गर्दन इधर-उधर हिलाने लगा।

जुते हुए खेतों में एक अजब क़िस्म की धुंध जमा हो रही थी। धरती और आकाश के दृश्य पर जैसे कोई पर्दा डाल रहा था। पहाड़ियां और ढलानें, जहां जानवर चारा करते थे, आंखों से ओझल हो गई थीं। लालू लड़खड़ाते कदमों से अंधे की तरह रास्ता टटोल रहा था। वह अपने को एक कैदी, एक लाश की तरह हमेशा के लिए मिटा हुआ महसूस कर रहा था।

जल्द ही घने बादल नीचे आ गए और बारिश शुरू हो गई। अनिष्टकारी तीरों की तरह मेंह की तेज़ बूंदें गिरने लगीं। लालू को लगा कि वह और सारी धरती उस बारिश में गर्क हो जाएंगे। तेज़ हवा में वह खेतों की मेड़ों पर फिसलता हुआ चला जा रहा था। बारिश उसपर जैसे कोड़े बरसा रही थी और उसकी हड्डियां तक भीग गई थीं। उसने सोचा, क्या ऊपर वाला भी उससे नाराज़ है, क्योंकि उसने केश कटवा दिए हैं? क्या ईश्वर उससे बदला ले रहा है?

१२

लालू हल के पीछे-पीछे चलता हुआ बैलों को हांक रहा था। बीच-बीच में वह सीटी बजाकर, पूंछ उमेंठकर और जीभ तालू से लगाकर 'ट्ठ ! ट्ठ !' करता जा रहा था। ठिब्बा और रोंडू भी जानते थे कि उनका मालिक मेहरबान है। इसलिए वे सधे कदमों से चल रहे थे। लेकिन बीच-बीच में अपना काम भूलकर अड़ जाते थे। उनकी आंखों पर चमड़े की पट्टियां बंधी थीं ताकि वे यह न देख सकें कि कितना खेत जोतना बाकी है। लेकिन वे सहर्ष मेहनत करने के लिए तैयार थे, क्योंकि उन्हें इस बात का अहसास था कि उनकी पीठ थपथपाने वाला मालिक उन्हें अच्छी तरह खिलाता-पिलाता है।

सचमुच लालू बैलों के साथ सख्ती नहीं करता था। बचपन में वह बैलों की पूंछें उमेंठता था, उन्हें गालियां देता था और पैने से पीटता था क्योंकि तब वह शरारती था और बड़े-बूढ़ों की नकल करना चाहता था। जब से उसे मवेशियों को चारा डालने, पानी पिलाने और नहलाने की ज़िम्मेदारी मिली थी, उसका नटखटपन जाता रहा था।

लालू के स्पर्श से बैल खुशी से कांपने लगते थे। जब वह सानी करने लगता था तो वे अपनी लम्बी जीभों से उसकी बांहें चाटते थे और अपनी बड़ी बिल्लौरी आंखों से पूछते थे, 'भाई, तुम क्या सोच रहे हो ?'

लालू सोचने लगा, क्या मवेशियों को पता है कि लालू और उसके सबसे बड़े भाई के स्वभाव में क्या फर्क है ? वे ज़रूर जानते होंगे क्योंकि ओसारे में जब शर्म-सिंह गोबर बटोरने के लिए मवेशियों को आगे धकेलता था तो वे टस से मस नहीं होते थे। वे अपने पनीले नथुने स्नेह और सरलतापूर्वक दयालसिंह और लालू के शरीरों से रगड़ते थे।

निहालू का मवेशियों से कोई वास्ता नहीं था। कभी-कभी वह उन्हें रहंट में जोतता था। कभी ज़ोर से पीटता था और कभी प्यार-भरे शब्दों से सहलाता था।

बचपन में लालू हमेशा अपने पिता की नकल किया करता था। वह कल्पना करता था कि वह पेड़ की एक टहनी लिए आराम से बैठा है और बैल खामोशी से चक्कर काट रहे हैं। वह उन्हें पीटता है और कहता है, 'तेज़ चलो ! मर जाओ ! मैं तुम्हारी खाल के जूते पहनूं ! पशुओ ! चूहड़े के पुत्तरो !'

बैलों की पिछली टांगें गोबर से सनी थीं, जिनपर ढेरों मक्खियां भिनभिना रही थीं। लालू कभी उन्हें पैने से टोक मारता था और कभी प्यार से पुचकारता था। एक बार बैल के अड़ने पर उसने ज़ोर से पैने की आर चुभो दी। ठिब्बे की पीठ से खून की धार बह निकली और गोबर में मिल गई जिससे और ज़्यादा मक्खियां जमा हो गईं।

लालू को उबकाई आ गई और वह भयभीत होकर वहां से भाग आया।

'मेरा यह इरादा नहीं था,' वह भुनभुनाया।

लम्बे डग भरते हुए उसने अपने पैर पट्टी में धंसा दिए और शून्य दृष्टि से बैलों को देखने लगा। फिर अचानक एक याद उसके दिल में ताज़ा हो उठी, जिससे बचने के लिए उसने अपना सर एक तरफ झुका लिया और बुज़ुर्गों के अन्दाज़ में बैलों को पुचकारने लगा, "आओ मेरे पुत्तरो ! आओ मेरे हीरो !"

लेकिन ठिब्बे की खून से सनी टांगों की तस्वीर अभी भी उसके मन में ताज़ा थी। उसके ज़ख्मों पर खून जम गया था और वहां मक्खियां जमा हो गई थीं, हालांकि ठिब्बा मक्खियों को भगाने के लिए अपनी पूंछ हिला रहा था और रोंडू ठिब्बे का जिस्म चाटने की कोशिश कर रहा था।

लालू ने सर हिलाकर दूसरी तरफ देखा। यह तस्वीर उसके मन से गायब हो गई। उसकी नज़रें नीले आकाश की पारदर्शी हवा में फैले गहरे मटमैले रंग के जुते हुए खेतों में खो गई थीं। पीली धूप में पतझड़ के मौसम की स्फूर्तिदायी गरिमा गायब हो गई थी और उसकी त्वचा में, जहां ज़िन्दगी के रोमांच की मंद सनसनी हो रही थी, मौसम का ठंडा स्पर्श महसूस हो रहा था।

लालू ने सोचा कि कितनी अजब बात है कि उसके बैल इतने सुशील और आज्ञाकारी हैं। हर बार जब वह उन्हें छड़ी मारना चाहता था तो वे उसका इरादा भांपकर अपनी चाल तेज़ कर देते थे। साफ जाहिर था कि मार खा-खाकर वे आज्ञाकारी बन गए थे और अपने मालिकों की छोटी से छोटी इच्छा पूरी करने को तैयार थे। लेकिन लालू को भी तो पीट-पीटकर आज्ञाकारी बना दिया गया था। इसीलिए······

हां, बचपन में ही घरवालों ने उसकी इच्छा-शक्ति को तोड़ना शुरू किया था। जब भी वह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कोई काम करता था तो उसके पिता उसे गाली देते थे या मुंह पर थप्पड़ मारते थे। फिर स्कूल के मास्टरों ने छड़ियों से पीट-पीट-

कर उसकी संघर्ष-भावना को खत्म कर दिया था। बचपन से ही मां ने उसे बड़ों की इज़्ज़त करना सिखाया था इसलिए वह उनके अत्याचारों के बदले में चूं तक नहीं कर सकता था। इसीलिए उस दिन···

वह यह सोचकर पसीना-पसीना हो गया कि उसने चुपचाप उस दिन थप्पड़ और मुक्कों की मार सह ली थी। अगर उसमें यह दब्बूपन न होता तो वह गांव वालों के सामने कभी सर न झुकाता। वह हरदित्त की खोपड़ी तोड़ देता जिसने उसके मुंह पर कालिख मली थी। जिन लोगों ने उसे गधे पर बैठाया था, वह उनकी हड्डी-पसली चूर करके रख देता।

बैलों ने चाल धीमी कर दी। लालू ने उन्हें लापरवाही से आगे धकेला और जीभ तालू से लगाकर 'क्टे-क्टे' की आवाज़ की।

सूरज सामने की पहाड़ियों की तरफ जा रहा था जहां नंगे पेड़ मकड़ी के जाले की तरह दिखाई दे रहे थे। गीली जुती हुई धरती, सब्ज़ियों की क्यारियों, खामोश तालाबों, और खारों के पार जहां कहीं हरियाली थी। लालू ने हल की फाल को ज़मीन में गहरा डाल दिया और खामोशी से बैलों के पीछे-पीछे इस तरह चलने लगा जैसे वह कोई पराया हो और अपनी आत्मा में झांककर देख रहा हो।

मन में छाई उस बात को भूलने के लिए उसने ठंडी हवा में बार-बार लम्बी सांस ली। धरती के गिर्द एक तनावपूर्ण खामोशी छाई थी। दूर क्षितिज के पास गुलाबी रंग की धूल की मालाकार रेखा दिखाई दे रही थी, जहां नन्दपुर से आगे रेल जाती थी। गांव के भूरे घरों के ऊपर धुएं के लच्छे बन गए थे, जिसमें मर्दों की आवाज़ें और जुगाली करते हुए, सूखी चरागाहों में सुस्त चाल से चलते हुए मवेशी खो गए थे। उस खामोशी में किसी कबूतर की गुटर-गूं भी नहीं सुनाई देती थी। सिर्फ कभी-कभी ज़मीन के साथ-साथ उड़ता हुआ कोई कौआ कांव-कांव कर उठता था। ऐसा लगता था कि जाड़े में हर चीज़ जम रही थी। यहां तक कि लालू के मन की व्यथा भी एक दूरागत कोई भावनाशून्य चीज़ मालूम हो रही थी।

वसन्त में फसलें लहलहाती थीं और हवा के झोंकों के साथ-साथ घास में सर-सराहट होती थी। हरियाली की सुगन्ध-भरी सांसों में और पानी से उठती ठंडक में लालू चारपाई पर लेटकर उन फसलों की कल्पना किया करता था जो बड़ा होकर वह खुद बोएगा और काटेगा। कभी-कभी वह पक्षियों के घोंसलों की तलाश में

मीलों दूर चला जाता था या खरगोशों और हिरनों के पीछे भागता था। मां को परेशान करने के लिए कभी-कभी वह जान-बूझकर अपने चेहरे को उदास बना लेता था।

बाद में उसकी ज़िन्दगी कुछ हद तक सुखी हो गई थी, क्योंकि ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जा रहा था, वह अपने में लीन होना सीख गया था। स्कूल और शहर में उसने बहुत-सी नई चीज़ें देखी थीं। तब उसका ख्याल था कि वह ज़िन्दगी की हर चीज़ से वाकिफ है, क्योंकि वह हर काम के फायदे और नुकसान का अन्दाज़ लगा सकता था। लोग स्पर्धा-भरी आवाज़ में कहते, "अरे लालू तो इतना चालाक हो गया है कि हम सबको बेच आए!"

लेकिन बड़े-बूढ़ों की डांट-फटकार से उसे बहुत तकलीफ पहुंचती थी। वे हमेशा उसपर हुक्म चलाते रहते थे। "बोलने की कीमत एक रुपया होती है तो चुप्पी की उससे दुगुनी। उम्र के साथ-साथ तुम्हें अक्ल आएगी।" वे हमेशा यही घिसे-पिटे उपदेश देते, जिससे लालू कभी दो टूक बात न कर सके।

और अब तो उनका व्यवहार पहले से भी बुरा हो गया था।

'हाय रब्बा! काश मैं यहां से भागकर कहीं चला जाता!' लालू बुदबुदाया लेकिन वह जानता था कि वह भागकर कहीं नहीं जा सकता। उसकी जेब में पैसे ही नहीं थे। और अगर उसने यह सोचकर कि वह सही काम कर रहा है, अपने केश कटवा दिए थे तो भला वह डरपोक कैसे हो सकता था!

उसने हल की फाल से नज़र उठाई और नंगी पहाड़ियों की तरफ देखा। नीले आसमान में बादल रुई के गालों की तरह उड़ते दिखाई दे रहे थे। चरागाह की ढलान पर कुछ जानवरों को देखकर उसे याद आया कि घुग्घी भी वहीं होगा, क्योंकि हाल ही में उसे ढोर चराने का काम मिला था। गांव के नज़दीक के खेतों में रब्बी की फसल के लिए ज़मीन जोती जा रही थी, इसलिए घुग्घी दूर वाले खेतों में ढोर चराया करता था।

'लेकिन मैं उससे अपने दिल की बात नहीं कह सकता। वह इन बातों को नहीं समझता।'

लालू ने गेहूं और सरसों के खेतों की ओर देखा और सोचने लगा कि यह हरियाली जल्द ही पीले, सुनहरी और फिर पक्के गंदुमी रंग में बदल जाएगी। आसपास कोई आदमी दिखाई नहीं दे रहा था।

खेत के कोने पर पहुंचकर उसने ठिब्बा और रोंडू को ज़ोर से धक्का दिया। वह अपने-आपको कामकाज में भुला देना चाहता था लेकिन वही पुरानी बातें उसके मन में उमड़ने लगीं और उसके मन में सारी दुनिया के लिए नफरत पैदा हो गई।

'ये सब जने डरपोक हैं! इनकी मनहूस ज़िन्दगियों ने इन्हें सुखाकर खाक बना डाला है। न इनमें कोई ज़िन्दादिली बाकी है, न उम्मीद है और न ताकत। ये बदसूरत लोग हरवक्त हांफते और खांसते रहते हैं। इनके मुंह से थूक निकलती रहती है और ये दढ़ियल चाहते हैं कि सब लोग उन्हींकी तरह बदसूरत बन जाएं। सबके सब पाखण्डी हैं। ऊपर से नेक बनते हैं, लेकिन भीतर से खोटे हैं। ये झुर्रीदार चेहरों वाले सूअर, जिन्होंने मुझे गालियां दीं और मेरी बेइज़्ज़ती की! और उन बेशर्म औरतों ने मुझे कितनी गंदी गालियां दी थीं!'

उसके दिल पर कितनी चोट पहुंची थी! क्या कभी वह इस अपमान की यातना से निकल सकेगा?

रात के गहरे अंधेरे में वह अपने अनर्गल विचारों पर काबू पाने के लिए बार-बार बन्द मुट्ठी से माथा ठोंकता था, ताकि भीतर का वह दर्द बाहर निकल सके जो ढोल की तरह उसके अन्दर बजता रहता था। लेकिन दर्द के नाखून उसके विचारों की बखिया उधेड़ देते थे और सैकड़ों विचार एकसाथ बाहर निकल पड़ते थे। केश कटवाने से पहले वह सपने में देखा करता था कि चिपचिपाते हुए सांप उसके शरीर पर रेंग रहे हैं। लम्बे बालों से उसे कुछ इसी किस्म की अनुभूति होती थी। वह अपने को एक सौ सिरों वाले भयंकर समुद्री राक्षस के रूप में देखता था, या एक पागल, कोढ़ी और जुंओं से भरे आदमी के रूप में। उस चिथड़े पहने आदमी या कुतिया की तरह जिसे गांव वाले गंदी से गंदी गालियां देते थे और पत्थरों से मारते थे। वह अपने भीतर या पहाड़ी पर बसे पराये कच्चे घरों में शरण लेने की कोशिश किया करता था।

और उसने एक दुःस्वप्न देखा कि भीड़ गलियों में उसका पीछा कर रही है और वह बांह उठाकर पत्थरों की वर्षा से बचने की कोशिश कर रहा है। क्षण-भर के लिए उसकी चीखें सुनकर लोग भयभीत हो गए हैं और उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसे बख्श दिया गया है।

लेकिन भीड़ दुगने पागलपन से उसके गिर्द इकट्ठी हो गई। तब उसे लगा कि

सारा वातावरण उसके दुश्मनों से भर गया है और दुश्मन टिड्डी-दल की तरह उसकी तरफ बढ़े आ रहे हैं और वह लहलहाती फसलों के बीच खड़ा है।

आत गयी और खून की प्यासी भीड़ से बचने के लिए वह धरती पर मज़बूत पैर जमाकर खड़ा है और उसका शरीर तूफान में किसी पेड़ की तरह कांप रहा है।

लेकिन टिड्डी-दल आगे बढ़ आया। लालू ने अपने शरीर को और खेतों को आग लगा दी। सैकड़ों दुश्मन जल गए और बाकी घबराकर भाग खड़े हुए। कुछ देर तक वह अकेला भटकता रहा। फिर अचानक घुग्घी, चुरजी गोपाल और शेखू आ गए। उन्होंने उसे कंधों पर उठाकर नहर में फेंक दिया ताकि उसके सर से उठती हुई लपटें बुझ जाएं। और वह हंसता हुआ नहर से बाहर निकला और एक विचित्र सुवास के घेरे में वह एक लड़की की आलोकित तस्वीर की तरफ बढ़ा। लड़की ने टसर की पोशाक पहन रखी थी और उसके सर पर गुलाबी रंग का रूमाल बंधा था। शेरकोट की अंग्रेज़ मेमों के पास जो भी विलास-सामग्री थी वह उस लड़की के पास भी थी। वह धूल से भरी सड़क पर तेज़ धूप में जा रही थी। उसने अपनी जूतियां सर पर रख ली थीं और उसके गंदुमी चेहरे पर पसीना आ गया था। उसके नथुने बार-बार फूल उठते थे और वह नहर के पुल को पार करने से डर रही थी। लालू बिजलीघर के पास बैठा बीड़ी पी रहा था। लड़की को देखकर अचानक वह हंस पड़ा और उसने लड़की को दिलासा दिया। उसने लड़की से कहा कि वह उसे साहब की मोटरसाइकल के पीछे बैठाकर नहर के पार पहुंचा देगा क्योंकि उसको मोटरसाइकल चलाना आता था।

लड़की ने बच्चों की तरह होंठ बिचकाकर मुंह परे फेर लिया और वह गुस्से से बोली, "बदमाश, जाकर अपनी मां को छेड़, बहन को छेड़। मुझे क्यों तंग करता है?"

लालू ने अपने को अपमानित महसूस किया। वह सन्न रह गया और रो-रोकर अपने से कहने लगा कि उसका इरादा लड़की को तंग करने का नहीं था। उसे लगा कि अब हमेशा के लिए वह बदनाम हो गया है और समाज में उसकी कोई जगह नहीं है। अब उसके सामने इसके सिवा कोई चारा नहीं कि वह अपना ज़ख्मी दिल उस लड़की के सामने रख दे और मिन्नत-चिरौरी करके लड़की के दिल को पिघलाए, अगर वह फिर भी न पिघली तो वह उसे मारेगा, उसके शरीर को रौंद डालेगा और तबाह कर देगा।

लालू ने पैर से खेत की मिट्टी को उलटा-पलटा और देखने लगा कि वह कितनी ज़मीन जोत चुका है, लेकिन उसकी दृष्टि भीतर जमी थी और वह दिल के अंधेरे में अपने सपनों की गहराई की थाह लेने की कोशिश कर रहा था।

उसने फिर मुंह से आवाज़ निकालकर बैलों को हांका। उसका सिर गहरी सोच से झुका था और उसका दिल बेचैनी से फटा जा रहा था।

उसे लगा कि मानसिक यातना ने उसे बुज़ुर्ग बना दिया है और उसके भीतर एक विशालता आ गई है।

उसे अपने बुज़ुर्गों की कमज़ोरियों और सीमाओं को समझना चाहिए और इस घटना को सही रूप में देखना चाहिए। वह अब सब लोगों पर यहां तक कि अपने ऊपर भी हंस सकता था क्योंकि उसे अपनी सचाई में यकीन हो गया था।

'ज़िन्दगी क्या चीज़ है ? इसका अर्थ क्या है ?' उसने अपने-आपसे पूछा। जब उसने सर हिलाया तो हवा के झोंके उसके कटे केशों में से सरसराते हुए गुज़र गए। अगर इन्सान को मरना ही है तो वह क्यों न आनन्द लूटे, वरना ज़िन्दगी का मकसद ही क्या है ? ज़िन्दगी कोई खेल नहीं है। इन्सान को काम भी करना पड़ता है।

'लेकिन मुझे तो काम पसन्द है। मेरे लिए काम करना बाएं हाथ का खेल है। अगर घरवाले मुझे ज़्यादा प्यार करने लगें और मुझे भी प्यार करने दें तो मैं जल्द ही उनके कर्ज़े उतार सकता हूं और उन्हें कष्टों से छुटकारा दिला सकता हूं। मैं ज़मींदार के परिवार की अक्ल भी ठिकाने लगा सकता हूं। मां के यार··· अगर चाहूं तो महन्त की गन्दी ज़िन्दगी का भी पर्दाफाश कर सकता हूं···"

किशोरावस्था के अदम्य उत्साह से उसकी आत्मा आन्दोलित हो उठी और उसे लगा कि उसने अपनी लड़ाइयां जीत ली थीं।

लेकिन इन बातों से क्या फायदा ? इस मनहूस विचार ने उसे आहत कर दिया। घरवाले तो उससे नफरत करते हैं। अगर मैं बिना गालियां और मार खाए अपने केश तक नहीं कटवा सकता तो भला वे काम कैसे कर सकता हूं जो घरवालों के अंधविश्वासों के खिलाफ हैं ?

उसने मायूसी से सर हिलाया और उसे अहसास हुआ कि उसके उत्साह की चिंगारियां फिलहाल बुझने लगी थीं।

और वह अपनी घबराहट का बोझ लिए, खेतों की निस्तब्धता में आगे बढ़ता

गया, जहां हवा ताज़ी जुती मिट्टी के कारण ठंडी होती जा रही थी और पारदर्शी धूप आसमान की परतों में से लरज़ती हुई घास की पत्तियों में आहें भर रही थी।

१३

"आ पुत्तर लालसिंहा ! अपने बापू और भाई के साथ साहूकार की दुकान पर जा," कुछ दिन बाद गुज़री ने लालू से कहा। वह आंगन में जानवरों के लिए सानी तैयार कर रहा था। फिर गुजरी ने आशंकित नेत्रों से लालू की तरफ देखा। शायद उसे डर था कि कहीं लालू इन्कार न कर दे। जब से लालू घरवालों के प्रति उदासीन हो गया था, गुजरी के मन को गहरी चोट पहुंची थी। अपनी आवाज़ में इस व्यथा को प्रकट करते हुए उसने कहा, "ये लोग तुम्हारे भाई की शादी के लिए कर्ज़ लेने के लिए जा रहे हैं। और लगान···" गुजरी अचानक खामोश हो गई। उसे डर लगा कि शायद कर्ज़ के ज़िक्र से लालू नाराज़ हो जाएगा। वह मुस्कराकर बोली, "तुम चुरंजी के दोस्त हो। अगर तुम जाओगे तो शायद वह चमूना हमारी कुछ मदद करे।" सब लोगों की तरह गुजरी भी साहूकार का नाम बिगाड़कर बोली।

"अच्छा मां," लालू ने चेहरे का तनाव कम करके जवाब दिया। घर में रहते वक्त उसके माथे की त्यौरियां चढ़ी रहती थीं, "बापू और शर्मसिंह किधर हैं?"

लालू ने आंगन की तरफ देखा। फिर अपनी शर्म से झुकी आंखों को उठाकर मां की तरफ देखा, "जब बैल मरते हैं तो अकाल पड़ता है और पिस्सुओं की बन आती है।" उसने मज़ाक किया।

"पुत्तर, आखिर तुम दोनों के लिए मुझे लड़कियां तलाश करनी हैं। जितनी जल्दी तुम दोनों की शादी हो जाए उतना ही अच्छा हो।"

लालू ने अपने मन की हठीली कटुता को छोड़कर कहा, "अच्छा मां, जैसी तेरी मर्ज़ी।" 'अब घरवालों से सुलह करने का वक्त आ गया है,' उसने सोचा। दुनिया से अलग भी अछूत की तरह कोई नहीं रह सकता। वह दूसरों के खिलाफ

अपने को सीपी में बंद तो रख सकता था लेकिन लोगों के संपर्क में आने के लिए उसकी सम्पूर्ण आत्मा छटपटाती थी।

'अकेला कोयला ठीक से नहीं जलता और अकेले यात्री को सड़क भी लम्बी मालूम होती है।' लालू ने मन ही मन यह कहावत दुहराई। वह बिना मन में मैल लिए घर में रहना चाहता था हालांकि घर वालों ने उसे तकलीफें दी थीं और उसकी बेइज़्ज़ती की थी।

"अच्छा मां, भैंसों को सानी दे देना, मैं जाने की तैयारी करता हूं।" उसने कहा।

"अच्छा बच्चे," गुजरी ने हंडिया में उबलते पालक के साग में थोड़ा-सा मक्की का आटा डाला और कड़छी चलाकर प्यार से बोली, "आज तो मैं अपने सोहने पुत्तर को ढेर-सा मक्खन दूंगी। मेरा पुत्तर पीला पड़ गया है और सूखकर आधा रह गया है।"

"मां, मक्की की रोटी भी बनेगी?" लालू ने बच्चों की तरह मचलकर पूछा। यह सोचकर कि उसका अहंकार और चिड़चिड़ापन दूर हो गया है, उसे हंसी आ गई और उसने अपनी हड्डियों और आत्मा में एक नई शक्ति महसूस की। उसके बचपन की ज़िन्दादिली फिर लौट आई, जब वह खुशी से उछल-कूद मचाता था, सख्त मशक्कत करता था और एक बार उसने लड़कों को अपनी ताकत दिखाने के लिए एक छायादार नीम के दरख्त को कुल्हाड़ी से काट फेंका था। बिना शर्म और झिझक के फिर बाहर निकलने में उसे एक नये किस्म की ताज़गी महसूस हुई।

"पता नहीं केसरो बीमारी कहां गई," गुजरी ने कहा, "मैंने उसे चढ़ावा देकर मठ में भेजा था, आधा दिन बीत गया है, वह अभी तक नहीं लौटी। वह यहां होती तो रसोई में बैठ जाती और मैं जानवरों की देखभाल कर लेती।" गुजरी अपने विचारों में तल्लीन, शून्य में देख रही थी।

लालू ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे हमेशा महसूस होता था कि उसकी मां के दिल में केसरी के लिए एक शैतानी-भरी नफरत है। लेकिन वह अपनी भाभी का पक्ष लेकर मां के दिल को दुखाना नहीं चाहता था। मां के कठोर अनुशासन और पति के कड़े स्वभाव के बावजूद केसरी की खुशदिली लालू को पसन्द थी, लेकिन आजकल केसरी के बारे में जो अफवाहें सुनने में आई थीं वे लालू को कतई पसन्द नहीं थीं। उसने सुना था कि वह तालाब के किनारे नंगी बैठकर कपड़े धोती है। सर पर जाली का एक बारीक दुपट्टा ओढ़ती है जिसमें से उसके सारे

अंग झलकते हैं और अनजान लोगों की तरफ देखकर मुस्कराती भी है। मां केसरी के बारे में जो बातें कहती है अगर वे सच्ची हुईं तो लालू के दोस्त क्या कहेंगे ? मां बड़ी सयानी, नेक और स्नेहशील औरत है। अक्सर लालू ने उसे केसरी के पास बैठे सिलाई करते या चर्खा कातते हुए देखा था। अब केसरी ने चर्खा चलाना सीख लिया था। मां केसरी को सिर्फ उसी वक्त डांटती थी जब वह आलसी हो जाती थी या अपनी शहर वाली आदतें दिखाने लगती थी। लालू की मां का दिल बड़ा था। अपनी फौलादी इच्छा-शक्ति के बावजूद उसने अपने को घरवालों के मुताबिक ढाला था। दिन-रात, अपने फायदे की बात सोचे बगैर उसने दूसरों की सेवा में अपनी इच्छाशक्ति को लगा दिया था। मां को न कपड़ों की, न किसी किस्म की विलास-सामग्री की ही ज़रूरत थी। वह घर के दूसरे लोगों के लिए यह सामान जुटाकर ही सन्तुष्ट हो जाती थी।

या लालू मां का पक्षपात करता था ? लेकिन मां उसे प्यार भी तो करती थी। मां में गज़ब के गुण थे। वह सीधी-सादी अनपढ़ होते हुए भी बड़ी सयानी थी। कभी-कभी उसका दृष्टिकोण संकुचित हो जाता था। लेकिन उसका दिल बड़ी जल्दी पिघल भी जाता था। वह चाहे बेवकूफ, बूढ़ी, ज़िद्दी, नर्मदिल, कठोर हृदय, स्वप्नशील जो भी थी—वह लालू की मां थी, दुनिया में सबसे अच्छी मां थी जो लालू को चोट पहुंचाती थी, और पुचकारती थी; जो लालू को चाहती थी और जिसे लालू दिलोजान से चाहता था।

अब लालू को उसने कितने अच्छे तरीके से, सिर्फ प्यार का एक शब्द कहकर पुचकारा था ! लालू को भी यह बात बुरी नहीं लगी थी। घर वालों में केसरी के सिवा, जो कभी-कभी लालू के साथ हंसी-मज़ाक करती थी, कोई भी मेहरबान नहीं था। लेकिन अगर केसरी लालू से ज़्यादा लाड़ करती थी तो उसका पति उसे गालियां देता था। सिर्फ लालू की मां लालू के दुख से दुखी हुई थी—और वह तूफानी बारिश जो लालू के अपमान पर रोई थी; वह हवा जिसने बियाबान में लालू को सान्त्वना दी थी; वह धरती जिसपर उसने कई दिनों से लगातार मशक्कत की थी।

लालू ने सानी-भरे हाथों को नांद के किनारों से पोंछकर साफ किया। इसी वक्त कोठे में से उसके बापू और शर्मसिंह बाहर निकलकर आए।

"तो पुत्तर जा।" मां ने आवाज़ दी।

"अच्छा।"

लेकिन पास रखी बाल्टी में हाथ धोते वक्त, बड़ों को सामने देखकर उसका गुस्सा और तनाव फिर लौट आया। क्योंकि उन लोगों ने अभी सुलह का कोई इशारा नहीं किया था, उसे लगा कि 'कर्ज़ मांगना मुसीबत मोल लेना है।' वह अपनी मां को वचन दे चुका था कि वह बापू के साथ साहूकार के यहां जाएगा, लेकिन वह इस मामले में हिस्सा नहीं लेना चाहता था। वे लोग ज़रूर कुछ ज़मीन या गहने साहूकार के यहां बतौर सूद गिरवी रखेंगे। 'एक आदमी के काम का हर्जाना सबको भरना पड़ता है।' वह बड़बड़ाया।

लेकिन अब कहने-सुनने का कोई फायदा नहीं। वे लोग चिढ़ जाएंगे। कहेंगे, 'एक बार तो तुम खानदान की इज़्ज़त मिटा चुके हो।' इसलिए उनका कहना मानना ही ठीक होगा।

बापू ने उसे एक कागज़ दिया, "ज़रा यह चिट्ठी देख। यह लगान का नोटिस है न ?" बूढ़ा वाह गुरु का नाम ले रहा था और सर्दी से दांत किटकिटा रहा था। कागज़ पर लिखे शब्दों का अर्थ जानने के लिए वह झुककर खड़ा था। लालू को वह बड़ा ही दयनीय मालूम हुआ।

लालू ने तहमद से हाथ पोंछकर छपा हुआ खुरदरा फार्म ले लिया, जिसपर उसके बाप का नाम, ज़मीन का ब्यौरा और लगान की रकम लिखी थी। लालू ने उर्दू के हरफों के पीछे छिपे समूचे अर्थ को समझने के लिए आंखें फाड़-फाड़कर कागज़ को देखा। बाप की इज़्ज़त से उसका दिल धड़कने लगा। साल में परिवार की एक तिहाई आमदनी सरकार को बतौर लगान दी जाती थी।

लालू ने फार्म लौटाते हुए कहा, "यह नोटिस ही है।" उसने खामोश आंगन में देखा जहां न भैंसें रंभा रही थीं, न जीतू की आवाज़ सुनाई दे रही थी और न नाज के भंडारे में चिड़ियां ही चहचहा रही थीं—वातावरण के तनाव को दूर करने वाली एक भी चीज़ नहीं थी।

"अगर लगान अदा करने के लिए काफी कर्ज़ मिल गया तो दयालसिंह अपनी शादी के लिए ईशरी के घरवाले से रुपये ले सकता है," शर्मसिंह ने मां से कहा। "मैंने उसे कहा है कि पांच सौ रुपये से कम रकम लेकर न आए। अगर मुसीबत में हमारी बहन मदद नहीं कर सकती तो वह क्यों बिरादरी के सामने शान बघारती फिरती है कि हम उसके खसम के पैसे पर गुज़ारा करते हैं ?"

"दामाद से पैसे मांगना बेइज़्ज़ती की बात है," गुजरी नम्म करे। पता नहीं देता है ले लो, उसे तंग मत करो। साहूकार के यहां जाकर हम अ५ करवा रहे हैं। इतना कर्ज़ा ले लो जिससे लगान और शादी का खर्च निकर खाया मैं अपने बचे-खुचे गहने गिरवी रखने के लिए दे दूंगी, लेकिन शादी इतनी धूी धाम से होनी चाहिए कि बिरादरी में नाम हो और मेरे लालू के लिए भी अच्छा रिश्ता मिल सके। अपनी चीज लेना गुनाह नहीं दूसरे के हिस्से की चीज़ देना बुरा होता है।"

"तो फिर चलकर लगान और शादी दोनों का इन्तज़ाम कर लेते हैं।" लालू ने कहा। संजीदगी के साथ-साथ उसकी आवाज़ में व्यंग्य का भी पुट था।

"ठहर, ठहर, वे पुत्तर ! मैं कुएं पर जाकर सर पर पानी का घड़ा लेकर तुम्हें मिलूंगी ताकि जाने से पहले अच्छा शगुन हो जावे।"

"जितनी ताकत होती है परमात्मा उतना ही बोझ डालता है।" लालू ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया और दरवाज़े की तरफ चला गया।

"ठहर, ठहर, मेरे पुत्तर !" गुजरी ने अधीर स्वर में आवाज़ दी।

लेकिन खुशकिस्मती से केसरी पीतल के लोटे में गंगाजल लेकर आ रही थी। मठ में भक्तों को गंगाजल बांटा गया था।

"अच्छा जाओ।" गुजरी ने कहा।

लालू ड्योढ़ी के पास खड़ा होकर अपने बापू और शर्मसिंह का इन्तज़ार करने लगा। जब वे घर से निकले तो उसने देखा कि गुजरी होंठ हिलाकर प्रार्थना कर रही थी। लालू को हंसी आ गई। वह चुपचाप अपने बड़ों के पीछे चल पड़ा।

१४

आकाश के पश्चिमी छोर पर सूर्यास्त की लालियां संसार के प्रकाश को मध्यम कर रही थी। सर्दी में ठिठुरे गांव के मकान उन बेबस औरतों की तरह दिखाई दे रहे थे जिनके गहने छीन लिए गए हों।

बड़ी-बड़ी दाढ़ियों वाले थके-हारे किसान सर्द हवा से बचते हुए परमात्मा क

नाम जपते हुए गांव की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से गुज़र रहे थे या बाजार की गुफाओं जैसी दूकानों पर कंबल ओढ़े बैठे थे। वे फुसफुसाकर भारी गले से बातचीत कर रहे थे। सिर्फ दूकानदार फुर्ती से लक्ष्मी के स्वागत के लिए लालटेनें और ढिबरियां जलाकर दूकानों की दहलीज़ों पर रख रहे थे।

"आ बाबा निहालू, आ बाबा," सेठ चमनलाल ने कहा जो दूध जैसा सफेद शाल ओढ़कर बैठा था। "आ शर्मसिंहा, मैंने खुशखबरी सुनी है, तुझे बधाई हो।" उसने मेहमानों को बैठाने के लिए अपना शाल और भी कसकर लपेट लिया। दर-असल वह शाल को गंदा होने से बचाना चाहता था।

लालू जानता था कि साहूकार ने जानबूझकर उसके प्रति लापरवाही दिखाई है लेकिन उसने परिस्थिति से समझौता कर लिया और अपने बाप और भाई के पीछे दूकान की सीढ़ियों पर बैठ गया।

बूढ़ा निहालू और शर्मसिंह खामोशी से ऊपर चबूतरे पर बैठ गए। उन्हें साहूकार से कितनी कठिन सौदेबाज़ी करनी पड़ेगी इसकी कल्पना से वे भयभीत हो रहे थे।

"आ लालसिंहा, बच्चे, आ जा," सेठ ने निहालू और शर्मसिंह के संयतभाव को ताड़ लिया और सोचा कि शायद उसने लालू के प्रति बेरुखी दिखाई है इसी-लिए वे दोनों नाराज़ हो गए हैं। उसने लालू से कहा, "सत सिरी अकाल।"

लालू ने जवाब में हाथ जोड़ दिए और चबूतरे के कोने में बैठ गया और साहूकार की तिल्ले वाली जूतियों की तरफ देखने लगा। आम तौर पर साहूकार उसे गालियां देता था क्योंकि उसका खयाल था कि लालू उसके बेटे को बिगाड़ता है। लेकिन इस वक्त उसने 'सत सिरी अकाल' कहा था।

"ओए चुरंजी! तू किधर है?" चमूने ने आवाज़ दी। वह जानता था कि चुरंजी वहां नहीं है। "ओए, जाकर बाबा निहालू और अपने भाइयों के लिए मिठाई और शर्बत ला!" फिर अपने चर्बी से भरे हाथ को हिलाकर उसने मेहमानों से पूछा, "आप लोग शर्बत पीओगे या दूध?"

"तकलीफ न करो भाई!" बूढ़े ने कहा। उसकी आंखें खुशी से चमक रही थीं।

"रोज़ हम आपका ही दिया तो खाते हैं।" शर्मसिंह ने औपचारिक विनय के साथ कहा।

"नहीं, नहीं। चुरंजी की मां की बनाई हुई पिन्नियां खाओ। चुरंजी अभी घर

से जाकर ले आएगा। यह बदमाश कभी तो अपने बुजुर्गों का काम करे। पता नहीं कहां मटरगश्ती कर रहा है। ये छोकरे···"

"नहीं, नहीं, चुरंजी को रहने दो। खेतों से लौटकर हम लोगों ने खाना खाया था। तुम जानते हो कि खूब पाला पड़ रहा है और मेरी रीढ़ की हड्डी दुखने लगी है। तुम्हारी मौसी वाहगुरु की कृपा से मेरे लिए कांगड़े की चाय बनाई थी।"

"कांगड़े का भूचाल बड़ा ज़बरदस्त था। है न बाबा?" सेठ ने बात शुरू की।

काम-काज की बात चलाने के लिए उपयुक्त वातावरण पैदा करने की खातिर सेठ तरह-तरह की बातें बनाकर उन्हें शिष्टाचार और सौहार्द के अदृश्य चंगुल में फांसा करता था। सीधे-सादे मूर्ख किसान उसके पीछे दिन को दिन और रात को रात कहते थे। यह तरीका बड़ा ही सूक्ष्म था क्योंकि इससे दोनों पक्षों में कटुता पैदा होने की गुंजायश ही नहीं रहती थी। उसने मन ही मन समझ लिया था कि उसे इसी गांव में रहना है जहां पंजाब के सबसे कर्मठ और ज़ालिम किसान बसते हैं, जो नहर के पानी की छोटी-सी धार पर झगड़ा कर बैठते हैं और अपने विरोधी का सर काट सकते हैं। इसलिए अपनी सहज मक्कारी से उसने हंसी-हंसी में किसानों को लूटने की कला में निपुणता प्राप्त कर ली थी।

"हां, मुझे वह भूचाल अभी तक याद है। वाहगुरु हमारे पापों को क्षमा करे। बंगाल में जब फिरंगियों ने कोई झगड़ा शुरू किया था, तभी यह भूचाल आया था। कलियुग में यह सबसे बड़ी चेतावनी थी।"

"बापू, यह तो बहुत पुरानी बात है।" लालसिंह ने इस अनर्गल प्रसंग को रफा-दफा करते हुए कहा। वह चाहता था कि कठिन सौदे की वास्तविकता से मुंह न मोड़ा जाए।

"तू तो तब बच्चा था।" निहालू ने बेटे की चेतावनी को अनसुना कर दिया।

निहालू पुरानी बातों के टूटे सूत्रों को जोड़ने में लग गया। तभी साहूकार ने पूछा:

"शादी कब हो रही है?"

वह समझ गया था कि व्यर्थ की बातचीत से बूढ़े और उसके बेटे के बीच का तनाव बढ़ जाएगा और बातचीत लुढ़कती-लुढ़कती बहुत दूर जा पहुंचेगी। वह भांप

गया था कि निहालू दोनों बेटों को किसलिए साथ लेकर आया था। लेकिन वह फौरन पैसे की चर्चा नहीं करना चाहता था।

निहालू खांसा और दूकान के बाहर थूकते हुए बोला, "हम यह शादी जल्द से जल्द करना चाहते हैं। लड़की वाले भी परेशान हैं। क्योंकि लड़की सयानी होती जा रही है और उन लोगों की ज़िम्मेदारी बढ़ गई है। मेरी ज़िन्दगी का क्या ठिकाना ? ज्योतिषी ने अभी शादी का मुहूर्त नहीं निकाला। हमने उसे कहा है कि वैसाख में नई फसल के बाद का कोई मुहूर्त निकाले। तैयारी तो अभी से शुरू कर देंगे और सर्दी खत्म होते ही औरतें छत पर ढोलकी लेकर गाना-बजाना शुरू कर देंगी। लेकिन हम तो आए थे···"

बूढ़ा वाक्य पूरा न कर सका। उसने सर ऊपर उठाया और उसके ओंठों पर एक घबराहट-भरी मुस्कराहट छा गई। रुपये-पैसे और सौदेबाज़ी के मामले उसके बस के नहीं थे।

"हम लोग तुमसे मदद मांगने आए हैं।" शर्मसिंह ने साहस बटोरकर कहा।

"मैं तुम्हारी खिदमत के लिए तैयार हूं। तुम्हारा हुक्म मेरे सर-माथे पर," सेठ ने बूढ़े की हिचकिचाहट और पराजय के क्षण की शून्यता को बनावटी सहृदयता से भरते हुए कहा। फिर उसने शिष्टाचार का जाल बिछाना शुरू किया।

"मैं रेशमी कपड़े, तिल्ला और किमखाब खरीदने में तुम्हारी मदद कर सकता हूं। चाहे यहां से खरीद लो, चाहे मानाबाद से। शहर के कई अच्छे दर्ज़ी मेरे वाकिफ हैं। गांव का दर्ज़ी मिर्ज़ा तो पुरानी मशीन पर मोटा-झोटा काम ही कर सकता है। मैं दर्ज़ियों को यहां बुला सकता हूं या शर्मसिंह मेरे साथ शहर जा सकता है।

"चुरंजी की मां भी मिठाइयां और गहने बनवाने में गुजरी मौसी की मदद कर सकती है। वैसे तो मौसी गुजरी भी सारा काम संभाल लेंगी। आखिर उन्होंने तीन लड़कियों और एक लड़के की शादी की है। केसरी को शहर की लड़कियों के रहन-सहन का पता ही होगा लेकिन चुरंगी की मां लाहौर की गलियों में पली है। उसे शहरी रस्म-रिवाजों और नये फैशनों का पता है।

"हमारा भी खयाल है कि आजकल लड़कों की शादियां जल्दी हो जानी चाहिए, वरना वे बदमाश और आवारा हो जाते हैं, और अपने खानदान के नाम पर धब्बा लगाते हैं। हम भी चुरंजी की शादी जल्दी ही कर डालेंगे। तुम्हें

पता है कि उसकी मंगनी लाला मूलचन्द गुप्ता की पोती से हुई है। लालाजी मानाबाद की कपड़ा मंडी के मालिक हैं। झटपट दयालसिंह की शादी कर डालो, क्योंकि तुम्हें चुरंजी की बारात में जाना होगा।"

"आपने हम लोगों पर जो मेहरबानियां की हैं उनका बदला हम कभी नहीं चुका सकेंगे," निहालू ने शिष्टाचार का जवाब शिष्टाचार से दिया। लालसिंह भी बुदबुदाया, 'कभी नहीं।' निहालू ने कहा, "मैंने लालू की मां से कहा है कि वह चुरंजी की मां की सलाह से ही सारा काम करे। कभी-कभी मेरी लड़कियां भी आ जाया करेंगी, लेकिन मैं शादी के सिलसिले में तुम्हारे पास नहीं आया था ...क्या कहूं मुझे तो कहते हुए शर्म आती है..."

शर्मसिंह ने बीच में रोककर कहा, "सेठ चमनलालजी, इस साल पैसों की कमी हो गई है। आप जानते हैं कि अनाज के दाम गिरते जा रहे हैं। पिछले साल दीमकों और सूखे ने फसल चौपट कर दी थी।"

"यह तो मुश्किल बात है," सेठ ने एक चीकट तकिये का सहारा लेकर एक नया शोशा छोड़ दिया। फिर उसने सर झुकाकर अपनी नाभि पर इकट्ठी हुई पसीने की बूंदों को देखा और अपनी धोती की सिलवटें ठीक कीं। "जहां तक मुझे पता है, फसल इस साल इतनी बुरी नहीं थी, हालांकि मुझे ज़्यादा दाम नहीं देने पड़े। बहुत-से कर्ज़दारों से मुझे अनाज मिल गया था। हो सकता है, तुम्हारी बात सच हो।

"लेकिन आजकल तो कर्ज़ का सूद वसूल करना भी मुश्किल हो गया है। मूल की तो बात छोड़ो। 'जब आटा खतम हो जाता है तो घुन भी भाग जाते हैं।' मैं जानता हूं, किसान परेशानी में हैं, लेकिन मेरी परेशानी भी तो देखो। मैंने अपनी सारी रकम कर्ज़ दे दी है—बदले में कुछ टूटी-फूटी झोंपड़ियों के सिवा गिरवी रखने के लिए लोगों के पास कुछ नहीं है।

"सरकार ने एक नया कानून पास कर दिया है कि साहूकार कुर्की भी नहीं करवा सकता। हम लोग किसानों की ज़मीन भी नहीं ले सकते।

फिर उसने फुसफुसाकर कहा, "कैसी अन्धेरगर्दी है। हरबंससिंह जैसा झोली-चुक्क[१] लगान न मिलने पर चाहे जिस किसान की ज़मीन कुर्क करवा ले या औने-पौने में खरीद सकता है, लेकिन मैं बनिया हूं इसलिए मुझे यह हक नहीं, मुझे

१. सरकार का खैरख्वाह

कमर कसकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है। मैं भी दिखा दूंगा ! कैसा ज़ुल्म है ! पुराने वक्त में मैं भी ज़मीन कुर्क करवा सकता था। लेकिन अब तो कोई भरोसा नहीं। चांदी के ज़ेवरों की कोई कीमत नहीं और गहनों की शक्ल में सिर्फ घटिया सोना मिलता है, क्योंकि भोलानाथ सुनार उसमें खोट मिला देता है, वह तो गिद्ध की आंखों में भी धूल झोंक दे।

"तुम्हें पता ही है कि मेरी जमा-पूंजी इस दुकान में लगी हुई है। मामूली छींट, मसाले, नून, तेल के लिए भी पैसे चाहिए।"

साहूकार के चिकने-चुपड़े चेहरे और बेहूदी बातों से लालू का गुस्सा बढ़ गया। इस आदमी ने सरदार बहादुर हरबंससिंह को गद्दार और झोलीचुक्क कहा था लेकिन यह मोटा गैंडा भला कब शराफत का पुतला है !

सोने में खोट की बात सुनकर निहालू को गुस्सा आ गया, "भाई चमनलाल, खबरदार जो मुझसे कहा कि मैंने अभी तक सोने के जो गहने तुम्हारे पास रखे हैं, उनमें खोट है। सिक्ख राज में इससे ज़्यादा सुच्चा सोना कहीं नहीं मिल सकता था। चालीस मनकों वाला हार और दो लड़ियों वाला अशर्फी का हार महाराजा रणजीतसिंह का है। यह मेरी बदकिस्मती थी कि मैंने उन गहनों को घर से बाहर निकाला—ये मेरे बापू के दिए हुए गहने थे। वे महाराजा के नौकर थे। लेकिन मैं जानता हूं, मेरे गहने तुम्हारे पास सुरक्षित हैं। मैं बाकायदा तुम्हें सूद अदा करता रहा हूं। अपने बहीखाते में देख लो। मैं चाहता हूं कि यह कर्ज़ चुकाकर मेरे बेटे खानदान के गहने छुड़वा लें। इस बार मैं गहने नहीं लाया क्योंकि शादी में बचे-खुचे गहने काम आएंगे। दयालसिंह की सेहराबन्दी के लिए तुम हमारे गहने लौटा देना। ज़रा गांव में हमारे दुश्मन और शहर के रिश्तेदार भी तो देखें। वरना वे कहेंगे कि निहालू के पास कुछ नहीं है और लालू की शादी नहीं होगी। मैं तुम्हारी दिक्कतों को समझता हूं—जब मैं मंडी गया था तो मैंने रुई, मक्का और बाजरा नहीं बेचा। जब तक गेहूं नहीं पकता हमें बाजरे पर ही गुज़ारा करना पड़ेगा। लेकिन अगर तुम चाहो तो बाजरा ले सकते हो।"

फिर इस खतरनाक प्रस्ताव के अहसास से उसमें आत्म-करुणा की बाढ़ आ गई।

स्वाभिमान के कारण उसने तय किया था कि वह कुछ देकर ही कर्ज़ लेगा।

"लेकिन हमें लगान और फुटकर खर्च के लिए दो सौ रुपये दे दो।" शर्मसिंह

ने कहा।

"यह तो मुश्किल बात है।" सेठ ने अपने गोल-मटोल चेहरे को सिकोड़ लिया और अपनी गद्दी पर सरककर उसने एक और पटाखा छोड़ा, "तुम कहते हो कि अनाज के दाम गिर रहे हैं, तब तो बाजरे और मक्का को बेचकर मेरे हाथ कुछ भी नहीं आएगा।"

शर्मसिंह ने कहा, "यह तो कुछ दिनों की बात है। दयालसिंह ईसरी के घरवाले के पास पेशावर गया है। अगर वह पांच सौ रुपये ले आया तो अगली फसल के बाद हम यह रकम लौटा देंगे।"

बूढ़े ने कहा, "फसल बेचने की ज़रूरत नहीं है।" निहालू थोड़ी-सी रकम के लिए अपनी प्यार से बोई और काटी फसल खोने के लिए तैयार नहीं था। "मैंने तो ईमानदारी की खातिर यह प्रस्ताव रखा था। वैसे हम मामूली सूद पर भी दो सौ रुपये तुमसे मांग सकते थे। यह फसल मुझे बहुत प्यारी है। कहावत है, गन्ना और सरसों तो पेरने के बाद ही काम आते हैं, लेकिन अनाज किसी वक्त भी पिस सकता है।"

"मैं तुम्हें क्या जवाब दूं," साहूकार ने मासूमियत का अभिनय करते हुए कहा। उसके चेहरे पर शैतानी-भरी मुस्कराहट थी, "अगर मैं किसीके गन्ने के खेत में पैर रखूंगा तो मुझे सांप डस लेगा। ना भाई, मुझे डर लगता है और शर्म आती है। मेरी स्थिति बड़ी नाज़ुक है। लोगों का लिहाज़ करना पड़ता है, अगर न करूं तो बदनामी होती है। लोग मुझे कंजूस, भंगी और कीड़ा कहते हैं। फिर भी मुझे अपने पैसों से हाथ धोने पड़ते हैं। अभी उस दिन तन्नामन्ना गांव का बसाखासिंह मुझसे बीज के लिए पचास रुपये ले गया। सौ रुपये उसने पहले लिए थे। उसपर पचास रुपये का सूद चढ़ गया था और बीस रुपये ऊपर से। उसको पूरे दो सौ बीस रुपये देने थे। जानते हो उसने क्या किया? कहा कि उसके पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। वह बीस रुपये का बूढ़ा बैल और पचास रुपये की घोड़ी देकर मुझे टरकाना चाहता था। अब मैं उसपर केस चलाऊंगा और उसकी कुर्की करवाऊंगा।"

निहालू बोला, "हम किसान रुपयों-पैसों की बातें नहीं सोचा करते। इसलिए तुम्हें उस आदमी पर सख्ती नहीं करनी चाहिए। उससे कहो कुछ और चीजें तुम्हें दे दे। हम तो भैंसों, बैलों, गायों, ज़मीन और फसलों की गिनती ही जानते हैं।

बेचारा हम सब लोगों की तरह मुसीबतज़दा होगा। अगर कोई चमत्कार न हुआ तो मैं परेशानी से मर जाऊंगा। मेरे मुकदमे का फैसला नहीं हुआ। अब यह शादी भी धूमधाम से होनी चाहिए, क्योंकि हमारे खानदान की इज़्ज़त का सवाल है। दयालसिंह बूढ़ा होता जा रहा है। मैं अपने से पूछता हूं, 'तुझे आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से?' इसलिए मेहरबानी करके हमारी मदद करो।"

शर्मसिंह ने दो टूक बात की, "शाह जी, हमें जल्दी से लगान की रकम इकट्ठी करनी है, वरना हम आपके पास न आते।"

"मैं तुम्हारा नौकर हूं," सेठ ने आक्रामक विनयशीलता से कहा, "लेकिन यह बड़े जोखिम का काम है।"

"कौन-सी जोखिम है चाचा जी?" लालू ने कटु स्वर में पूछा। वह साहूकार की झूठी हमदर्दी और आश्वासनों से चिढ़ गया था।

"जिस ताले की बहुत-सी चाबियां हों उससे डर लगता है।" सेठ ने कहा, "जोखिम तो है ही। तुम्हारे बापू ने अभी कहा था कि अनाज के दाम गिर रहे हैं। इसीलिए तुम लोगों ने अनाज नहीं बेचा।"

"हम नहीं चाहते कि तुम अनाज खरीदो।" लालू ने झट से जवाब दिया।

"तो फिर मुझे क्या भरोसा है कि मेरी रकम वापस मिलेगी? तू तो बड़ा सयाना है। तूने कभी अपनी किताबों में पढ़ा है कि बिना किसी ज़मानत के कर्ज़ दिया जाता है?"

"तुम सूद जो ले रहे हो।" लालू ने टिप्पणी की।

"रुपये पीछे एक पाई," सेठ ने इस तरह मुंह खोला जैसे वह लालू के शरीर में दांत गड़ा देगा, "क्या इसीको ज़मानत कहते हैं?"

लालू ने गुस्से से कहा, "यह अट्ठारह सही तीन बटा चार फीसदी हुआ। इतना क्या कम है?"

"मैं यहां कारोबार करता हूं। खैरात नहीं बांटता।" साहूकार ने जवाब दिया। सद्भावना का सारा वातावरण खत्म हो गया।

"तुम खैरात बांटोगे, यह तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता। कमीने आदमी से क्या उम्मीद हो सकती है? सिर्फ बेवकूफ ही ऐसी उम्मीद कर सकते हैं।" लालू ने दबी ज़बान में कहा।

लड़के की फटकार सुनकर सेठ गुस्से से आग-बबूला हो गया, "जा-जा आराम से बैठ। उल्टा चोर कोतवाल को डांटे ! अभी से तेरे पंख निकलने लगे ! तू भूल गया कि अभी कुछ दिन पहले तेरी बदमाशियों की सज़ा देने के लिए मुंह काला करके तुझे गधे पर चढ़ाया गया था ? मुझे हिसाब-किताब सिखाने की ज़रूरत नहीं। अपनी पूंजी को मैं पानी में तो नहीं फेंक सकता। अगर तेरे बापू को क़र्ज़ की ज़रूरत है तो उसे बाकायदा ज़मानत और सूद देना पड़ेगा। तुम्हारे खानदान ने न तो गहनों की ज़मानत पर सूद दिया है न उन्हें छुड़वाया है। मुझे क्या पता कि तुम लोग कभी उन्हें छुड़वा भी सकोगे या नहीं। यह बात है। समझे ?"

"तो किसका कंबल खो गया है ? गहने तुम्हारे पास ही तो हैं ?" लालू फुस-फुसाया।

"ओए, जा, जा, लालसिंहा, हमें काम करने दे। जा तुझे बात करने की तमीज़ नहीं है।" शर्मसिंह ने वहशत-भरी आवाज़ में कहा।

"मैं तुमसे कोई बात नहीं करना चाहता। अभी मैंने सोचा था कि तुम्हें रुपया कर्ज़ पर दे दूं, लेकिन जो लोग अपने बच्चों पर काबू नहीं रख सकते, उनसे मेरा कोई वास्ता नहीं। कुत्ता आखिर बिना छड़ी के मानता है ?" साहूकार ने कहा।

"ओए लालसिंहा, चला जा।" शर्मसिंह बोला।

"लड़के की बातों पर ध्यान न दो। वाहे गुरु की सौगन्ध। कर्ज़ लेने वालों की मती मारी जाती है। आओ भाई, सुलह-सफाई से यह मामला निपटा डालें।" निहालू ने कहा। वह लालू की तरफ देखकर बोला, "जा पुत्तर, तू यहां से चला जा। यह बड़े-बूढ़ों का मामला है।"

लालू वहां से चला गया। यह सोचकर कि उसकी ज़बान बेलगाम हो गई थी, शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया।

लालू के पीठ मोड़ते ही साहूकार ने कहा, "मेरी बात पल्ले बांध लो, यह लड़का तुम्हारे खानदान का नाम धूल में मिला रहा है। धर्म-कर्म तो रहा नहीं। यह सिगरेट फूंकता है, मुसलमानों के साथ बैठकर खाता है, रंडियों के कोठों पर जाता है और मेरे बेटे को भी इस गन्दगी में घसीटता है। अगर मैं इसका बाप होता तो इसकी चमड़ी उधेड़ देता और इसकी अक्ल ठिकाने लगा देता..."

"नाराज़ न हो चाचा," शर्मसिंह ने मिन्नत की, "इस मां के यार ने तो हमें

तंग कर रखा है। तुम ठीक कहते हो। जब यह मेले से लौटा था तो बापू ने इसकी खूब मरम्मत की थी। लेकिन इतने बड़े ज़िद्दी लड़के को सीधा करना भी मुश्किल है। अच्छा तो उठाओ अपना बस्ता और दस्तावेज़ तैयार करो।"

"ना बाबा, कर्ज़ देना झगड़ा मोल लेना है।" साहूकार ने चेहरा सिकोड़ते हुए कहा।

क्षण-भर के लिए एक तनाव-भरी खामोशी छा गई। अंधेरे में साथ वाली दुकानों से किसानों की बातचीत साफ सुनाई देने लगी थी। फिर साहूकार ने एक और पटाखा छोड़ा जिससे स्थिति और भी नाज़ुक हो गई।

"रहने भी दो भाई। तुम एक बूढ़े को इस तरह धक्के देकर नहीं निकाल सकते।" निहालू ने मिन्नत की।

"अच्छा, तुम्हारी और शर्मसिंह की खातिर इस बार मैं तुम्हें कर्ज़ दे दूंगा। लेकिन मुझे ज़मानत में अनाज मिलना चाहिए। मेरे खयाल में वह अनाज दस रुपये से ज़्यादा का नहीं होगा।"

यह कहकर साहूकार ने अपना बही-खाता उठाया और एक सफेद कागज़ पर निहालू और शर्मसिंह से अंगूठे लगवा लिए। फिर सामने रखी तिज़ोरी में से रुपये निकालकर दे दिए।

"खानापूरी मैं बाद में कर लूंगा।" साहूकार ने कहा। किसानों ने कृतज्ञभाव से उसकी इस मेहरबानी को कबूल किया।

१५

"बटुए की क्या ज़रूरत है, अगर पास में चार रुपये हों और खर्च पांच रुपयों का हो?" लालू ने सफेद धागों से बने बटुए की तरफ देखकर कहा। वह पटवारी को लगान देने के लिए जा रहा था। मानाबाद तहसील के पटवारी ने सराय में आकर अपना अस्थायी दफ्तर खोला था। निहालू और शर्मसिंह ने लालू को लगान अदा करने के लिए भेजा था। उनका खयाल था कि लालू हिसाब-किताब की जांच कर सकता है। लालू कर्ज़ लेने के खिलाफ था लेकिन वह पटवारी के यहां जाने के

लिए तैयार हो गया था।

सराय के आंगन में एक आदमी घास और सरकंडों को काट रहा था। सड़क पर एक मरियल गाय खड़ी थी, जिसकी सांस में से धुआं निकल रहा था। चिड़ियों का एक झुण्ड कोठे के बाहर फुदक रहा था। यह सोचकर कि हर साल ज़ालिम पटवारी लगान वसूल करता जाता है और उसके घरवाले कर्ज़ में डूबते जाते हैं, लालू के दिल में गहरी उदासी छा गई। अब तो जानवरों को भी घास और झाड़ियां काट-काटकर खिलानी पड़ेंगी—उधर सेठ चमनलाल, ज़मींदार और सरकार के कोठों में अनाज के अम्बार लगते जाते हैं। कितनी चालाकी और नफासत से किसानों को लूटा जाता है! और किसान कितनी जल्दी उनके चंगुल में फंसते हैं—बेवकूफ, गरीब, ज़ाहिल, अन्धे किसान—उनकी तबाही की वजह कर्ज़ ही है।

लालू ने मन ही मन किसानों को कोसा। वे क्यों कर्ज़ लेते हैं। उसने शादियों और मातम के उन निरर्थक रिवाजों को कोसा जिनकी वजह से किसान कर्ज़ लेता है। उसे यकीन था कि अगर उसका परिवार किसी तरह से अपनी ज़मीन और गहने छुड़ा ले तो वे बची-खुची दस एकड़ ज़मीन से अपनी हालत सुधार सकेंगे, भले ही अनाज के दाम गिर रहे हैं।

लेकिन कोसने से क्या फायदा, लालू ने सोचा। वह एक दुबले-पतले भंगी के बच्चे के नज़दीक से गुज़रा जिसका पेट हंडिया की तरह फूला था और जो धूल में लोटता हुआ मिट्टी खा रहा था। उसकी मरियल बहन सराय के सामने बिखरी लीद को झाड़ू से बुहार रही थी।

लालू पुरानी बारादरी के टूटे-फूटे हॉल में दाखिल हुआ। कुछ भिखारी लकड़ियां और कोयले जलाकर आग ताप रहे थे। धुएं से लालू का दम घुटा जा रहा था। घोड़ों और गधों के पेशाब और कुत्तों की लेंडियों ने मिलकर एक असह्य बदबू पैदा कर दी थी जिससे लालू को उल्टी आ रही थी। लालू ने ग्लानिपूर्वक कमीज़ के छोर से अपनी नाक ढांप ली। इतिहास की पुस्तकों में उसने मुगल बादशाहों के महलों के जो विवरण पढ़े थे, वे सब फीके पड़ गए। यह इमारत ऊंचे स्तम्भों वाली हवेलियों की सड़ांद-भरी लाश थी, जो कभी पुराने बादशाहों ने बनवाई थी। किसी ज़माने में यह ज़रूर एक शानदार इमारत रही होगी। शाही कारिन्दे वहां लगान वसूल करने आते होंगे और मुसाफिर ठहरते होंगे,

लेकिन अब कुछ टूटी-फूटी खोलियों और अस्तबलों के सिवा कुछ नहीं बचा था। झंडू, 'कुतियों वाली माई,' और चिथड़े पहने हुए खानाबदोशों का आश्रय-स्थान था, जिनके पेट में भूख की ज्वाला सुलगती थी और आंखों में उम्मीद थी। उसका सिर्फ एक हिस्सा सही-सलामत था, जहां पुलिस-चौकी थी। अफसरों ने उसे कोठा बना लिया था।

"हरामज़ादे! लुच्चे! मोहताज! जब तूने मेरे लिए जगह रखी थी तो पांचवीं सवारी क्यों बैठाई? मेरी बेइज़्ज़ती क्यों की सूअर?" पटवारी लाला पदमचन्द किसीको गाली दे रहा था। वह अपने भारी-भरकम शरीर को मसनद पर टिकाकर चांदी की नली वाले हुक्के को गुड़गुड़ा रहा था। साहूकार ने अफसरों की खातिरदारी के लिए खास तौर पर यह हुक्का रख छोड़ा था।

लालसिंह तेज़ कदमों से बदबूदार जोहड़ों को पार करता हुआ पटवारी के इर्द-गिर्द खड़े लोगों में शामिल हो गया।

"ओए कुत्ते दे पुत्तर! तूने सरकारी हाकिम की बेइज़्ज़ती की!" पटवारी हुक्के की नली हाथ में लेकर घुग्घी के बाप की तरफ इशारा कर रहा था जो लालवर्दी वाले चपरासी के पीछे एक तख्त के पाये के पास दुबका खड़ा था।

झंडू ने हाथ जोड़कर कहा, "सरकार, मैं सच कहता हूं, उस लड़के की मां ने अगली सीट के लिए एक दिन पहले से पेशगी रकम दे दी थी। मैंने सोचा कि लड़का जनाब के पास बैठ जाएगा। मैं तो पैडल पर ही बैठता हूं।"

"झूठा, मां का यार!" पटवारी चिल्लाया।

"तूने यह बात कल क्यों नहीं बताई?"

"हज़ूर! माई-बाप! कल आपका मिजाज़ गर्म था। आप किसीकी बात नहीं सुन रहे थे!" झंडू के स्वर में व्यंग्य था।

"सुअर दा पुत्तर! मेरा मिजाज़ गर्म था? मुझे तो तेरी हुक्म-उदूली पर गुस्सा आ रहा था। तुझे इतना खयाल नहीं कि दिन-भर इन कीड़ों से माथापच्ची करने के बाद क्या मेरी ख्वाहिश नहीं होती कि आराम से घर पहुंचूं?"

"गरीबपरवर, आप तो इस वक्त भी गुस्सा दिखा रहे हैं। कल तो हज़ूर और भी ज़्यादा गालियां दे रहे थे। मेरी तो सुनवाई ही नहीं हुई।"

इसपर सब किसान खिलखिलाकर हंस पड़े।

"चुप रहो!" पटवारी का चेहरा गुस्से से मुक्के की तरह तन गया था। "यह

कोई हंसी-मज़ाक की बात नहीं। मैं सरकारी अफसर हूं और इस कुत्ते दे पुत्तर ने मुझे अगली सीट पर बैठाने से इन्कार कर दिया। इतना ही नहीं, इसने इक्के पर ज़्यादा सवारियां चढ़ा लीं जो कानून के खिलाफ है। मैं भी इसे सबक सिखाऊंगा। इसे अपनी ताकत का घमंड है। दस नंबरिया ! सारी तहसील को तेरी करतूतों का पता है। क्या हाल है उस रंडी का जो तेरी रखैल है और जिसकी खातिर तू मुसलमान बना था ?"

"अब की बार इसे माफ कर दीजिए। रोज़-रोज़ तो बेचारे को शहर की सवारियां नहीं मिलतीं ! आखिर इसे भी तो ज़िन्दा रहना है। सरकारी हुक्म सबसे पहले लेकिन···" किसानों ने बीच-बचाव की कोशिश की।

"यह तो मुझे सड़क पर छोड़ गया था और उस छोकरे को नीचे उतारने का नाम नहीं लेता था। मुझे एक छकड़े में बैठकर आना पड़ा। मैं तो शहर में ही इसकी रपट लिखवाने वाला था, लेकिन मुझे इसपर तरस आ गया। मैंने सोचा मेरी घर वाली मेरा इन्तज़ार कर रही होगी। मेरा खयाल था कि इसे अपनी करतूतों पर अफसोस होगा और यह माफी मांग लेगा। लेकिन इसने मुझे देखते ही कहा, 'गर्क हो जाए कंजूस लोग।' तब तक मैंने पीठ भी नहीं मोड़ी थी।"

"ओए, पटवारी साहब से माफी मांग ! जा, जाकर हाथ जोड़।" एक किसान ने झंडू से कहा।

लेकिन अब झंडू गूंगे की तरह चुप बैठा था। पटवारी की बातों का उसपर कोई असर नहीं हुआ था। वातावरण में एक तनाव-भरी खामोशी छा गई थी। लालू को उम्मीद थी कि झंडू अपने दिल की बात साफ-साफ कह देगा और अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा, क्योंकि झंडू रौब में आने वाला आदमी नहीं था। लालू को याद आया कि एक बार ज़मींदार के बेटे ने झंडू को चाबुक से पीटा था, जब झंडू हरबंससिंह की ज़मीन पर मुज़ारा बनकर रहता था। झंडू ने भी उसकी अच्छी मरम्मत की थी और उसे कचहरी में पेश होना पड़ा था। जब से वह रंडी बब्बन जान के साथ रहने लगा था और उसने इस्लाम कबूल कर लिया था, सारे गांव वालों ने उसका बहिष्कार कर दिया था। धीरे-धीरे झंडू की आत्मा का विद्रोह ठंडा पड़ गया था। पुरानी पेचिश की वजह से उसकी सेहत भी तबाह हो गई थी और उसकी शारीरिक शक्ति क्षीण पड़ गई थी। किसी ज़माने में वह सारे इलाके में अपने कसरती बदन के लिए मशहूर था। पहले अगर कोई उसकी बेइज़्ज़ती करता था

तो वह शेर की तरह गुर्राता था। अब मामूली चूं-चूं करके रह जाता था।

पटवारी ने भीड़ की तरफ देखकर कहा, "देखा लोगो, माफी मांगना तो दूर रहा, यह कुत्ता मुझे जवाब तक नहीं दे रहा…" अचानक इक्के वाले के चट्टान जैसे तगड़े शरीर को देखकर उसे अपने मरियलपन और नामर्दगी का अहसास हुआ।

उसने दोनों हाथ कमर पर रखकर कहा, "ओए नप्पू ! ज़रा इस हरामज़ादे की हड्डी-पसली एक कर दे। सूअर !" पटवारी दांत किटकिटा रहा था।

कांस्टेबल नप्पूसिंह ने कहा, "ओए, बेवकूफ, सरकार से माफी मांग ले।"

पहलेवाले किसान ने भी झंडू को समझाया, "हां यार, पटवारी साहब से माफी मांग ले। उनका गुस्सा ठंडा हो जाएगा। लगान देकर हम लोग घर चले जाएंगे। दोपहर होने को है और हमें अभी बहुत-सा काम करना है।"

"लेकिन मेरा कसूर क्या है ?" झंडू ने शान्त स्वर में पूछा। उसकी आंखों में लाल डोरे उतर आए थे और उसके भरकम चेहरे पर निश्चय की छाप थी।

"तेरा कसूर क्या है ?" पटवारी ने पूछा और उसने अपने काले अंग्रेज़ी बूटों से झंडू पहलवान को एक ठोकर लगाई। पटवारी ने चूड़ीदार पाजामा पहन रखा था।

किसान चिल्लाए, "सरकार ! सरकार ! अपना गुस्सा ठंडा कीजिए !"

"ओए ! माफी मांग ले।" नप्पू ने आग्रह किया।

"ओए शेरा ! अखाड़े में डट जा !" लालू ने आगे बढ़कर कहा।

लेकिन इस सुझाव का भी झंडू पर कोई असर न पड़ा। उसने पटवारी की टांग को एक तरफ हटाते हुए कहा, "जा, जा, आराम से बैठ, वरना मैं इतने ज़ोर से पीटूंगा कि तेरे होश ठिकाने लग जाएंगे।"

"देखो वे लोगो ! इसकी गुस्ताखी देखो ! इसे ज़रा भी शर्म-हया नहीं। मेरी टांगों में मोच आ गई है !" पटवारी ने कहा और वह चारपाई पर बैठकर अपना टखना सहलाने लगा। "देखो लोगो ! कचहरी में तुम्हें गवाही देनी पड़ेगी कि इस आदमी ने सरकारी अफसर को मारा-पीटा है।"

लालसिंह ने अपने गुस्से पर काबू पाते हुए कहा, "ओए बाबू जी, छोड़ो भी, लगान वसूल करो ! अपना काम करो वरना तुम्हारी शामत आएगी।"

पटवारी ने हाथ उठाकर लालू से पूछा, "तू कौन है सूअर का बच्चा मुझे सलाह देने वाला !"

झंडू उठा और उसने दाएं हाथ से पटवारी की गर्दन पकड़कर कहा, "अगर तूने इस लड़के को हाथ लगाया तो मैं तुझे कच्चा चबा जाऊंगा। इसने तेरा कुछ नहीं बिगाड़ा। रही कल की बात, तो मैं न तेरा झोलीचुक्क हूं न सरकार का। तुझे मैं अपने इक्के में बैठाकर दस मील मुफ्त ले गया था, क्योंकि उस वक्त वहां कोई सवारी नहीं थी। मुझे तरस आ गया था कि तुझे पैदल चलना पड़ेगा। कल जब तूने मुझे गालियां दीं और अगली सीट पर जाकर बैठ गया, तब भी मैंने कुछ नहीं कहा। जब किसीने अगली सीट का किराया पेशगी चुका दिया हो तो मैं तुझे मुफ्त कैसे बैठा लूं? आखिर मुझे भी तो अपना और उस घोड़ी का पेट भरना है। अब चुपचाप बैठ जा। मैं किराए के लिए तुझपर या सरकार पर मुकदमा तो नहीं चलाऊंगा। उस पैसे से अपने बीवी-बच्चों के लिए मिठाई खरीद लेना, मनहूस कहीं के! लेकिन यह रौब मुझे मत दिखा!"

"अगर तूने किसी और सवारी से पेशगी किराया न वसूल किया होता तो मैं तुझे ज़रूर किराया देता···" भंडा फूट जाने से पटवारी को शर्म महसूस हो रही थी,हालांकि रिश्वतखोरी की आदत के कारण वह उम्मीद करता था कि चूंकि वह अंग्रेज़ी सरकार का पटवारी है, इसलिए इक्के में मुफ्त चढ़ना उसका हक है।

"अच्छा तो ला किराया निकाल। तू अगली सीट पर बैठा था।" झंडू ने हथेली पसारकर संजीदा स्वर में कहा।

"लेकिन वह लड़का भी तो आगे बैठा था।" पटवारी ने अपनी झेंप मिटाने के लिए कहा।

"तुम सरकारी अफसर एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो। चाहे फौजी हो, पुलसिया हो या अदालत का नौकर हो। तुम चाहते हो कि तुम्हारी वर्दी या कोट-पतलून देखते ही लोग तुम्हें फोकट में सारी चीज़ें दे दें और तुम गरीबों पर धौंस जमाओ··· देख लेना एक दिन ऐसा भी आएगा मेरे दोस्त, जब तुम अपनी असली हैसियत पर पहुंच जाओगे। इसलिए जल्दी से लगान वसूल कर लो, क्योंकि हश्र का दिन नज़दीक है।"

पटवारी ने कहा, "जिन डाकुओं ने शेरकोट के तहसीलदार को लूटा था, यह भी उसी गिरोह का आदमी है और इसकी इतनी जुर्रत कि मुझसे ज़बान लड़ाए! मैं थाने में इसकी रिपोर्ट लिखाऊंगा।"

"हां, हां, जहां मर्ज़ी हो मेरी रिपोर्ट कर दे।" झंडू ने पीछे मुड़कर कहा और

अखाड़े से बाहर निकल गया। "चाहे मुहम्मददीन थानेदार के यहाँ मेरी रपट लिखवा दे, चाहे टुंडीलाट के यहां। मुझसे वे लोग जितना फायदा उठा रहे हैं, उससे ज़्यादा नहीं उठा सकते। ज़्यादा से ज़्यादा मुझे जेल भिजवा देंगे। मुझे जेल का डर नहीं है, मैं कई बार वहां हो आया हूं···"

"यह दस नंबरिया बदमाश है!" पटवारी गुस्से से लाल-पीला हो गया। "नप्पू, ज़रा इसपर नज़र रखना। तुम सब लोग इस बात के गवाह हो कि इस सूअर के बच्चे ने आज क्या किया है। मैं इसे ऐसा सबक सिखाऊंगा कि ज़िन्दगी-भर याद रखेगा।" पटवारी ने अपने कपड़ों की सलवटें ठीक कर इस प्रारंभिक मुठभेड़ के बाद अपने ओहदे का रौब कायम रखने के लिए कहा।

"हरामज़ादो, लाओ लगान की रकमें!"

लालू ने अस्तबल के पास झंडू के भीमकाय शरीर को देखा जहां उसकी घोड़ी सूखी घास खा रही थी। पास ही एक बछेड़ा चर रहा था।

झंडू की बातें अभी भी उसे याद थीं और उसने रुपयों की थैली हाथ में लेकर पटवारी की तरफ देखा। अभी उसकी बारी नहीं थी। जब सरकार उसपर मेहरबानी करेंगे तब जाकर उसकी बारी आएगी।···उसे आज की घटना के परिणाम की कल्पना से डर लग रहा था लेकिन न जाने क्यों उसके आत्मविश्वास को भीतर ही भीतर बल मिला था।

१६

लालू को डर था कि कहीं पटवारी उसकी और झंडू की शिकायत तहसीलदार या ज़मींदार से न कर दे। लगान चुकाने के कुछ दिन बाद जब पता चला कि ज़िले के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर हरकुलिज़ लौंग गांव में तशरीफ लाने वाले हैं तो उसका डर और भी बढ़ गया। लालू ने सोचा, 'ज़रूर साहब बहादुर खुद इस मामले की जांच करने आए हैं।'

डिप्टी कमिश्नर साहब बहादुर एक अजनबी आदमी था। उसके तौर-तरीके और जीवन की समस्याओं और मानाबाद ज़िले के गांवों के प्रति उसका दृष्टिकोण

लालू की बिरादरी के दृष्टिकोण से बिल्कुल अलग था।

डिप्टी कमिश्नर अभी हिन्दुस्तान में नया-नया आया था, लेकिन लोग कहते थे कि वह हिन्दुस्तान में ही पैदा हुआ था। उसका बाप सर जॉन लौंग बिहार और उड़ीसा का गवर्नर था और मां फैनी लौंग किसी मोटे पादरी की बेटी थी। मानाबाद में लालू ने यह भी सुना था कि डिप्टी कमिश्नर का नाम हरकुलिज़ इसलिए रखा गया था, क्योंकि बचपन में वह खूब तन्दुरुस्त था और पैदा होने के वक्त उसका वज़न दस पौंड था। लेकिन लगातार बीमार रहने के कारण उसका वज़न कम हो गया था और कद छोटा रह गया था। इसलिए अब वह सूखा और मरियल दिखाई देता था।

लेकिन ईसाइयों के यहां बच्चे का नाम बदला नहीं जा सकता। बचपन में मां-बाप प्यार से उसे जंबो कहते थे। उसके नाना उसे हेनरी और हेवलॉक कहते थे। नाना सन् सत्तावन के गदर में लड़े थे। इन नामों में अब सिर्फ हरकुलिज़ नाम बच रहा था।

शेरकोट में लालू के स्कूल में एक अफवाह सुनने में आती थी कि शिमला के बिशप कॉटन स्कूल में जब हरकुलिज़ साहब पढ़ते थे तो उनके सहपाठी उनके नाम का मज़ाक उड़ाते थे। जब कभी जान, बिल या पीटर नाम का लड़का उन्हें मारता-पीटता था तो वे मास्टरों से शिकायत करते। एक दिन वे बैडमिंटन के कोर्ट में बैठे कुढ़ रहे थे तो खेलों के मास्टर ने उन्हें लैक्चर दिया और कहा कि हरकुलिज़ को अपना नाम सार्थक करके दिखाना चाहिए। उस दिन से साहब में जोश आ गया और उन्होंने जुब्बल के नौजवान राजा को और एक स्वर्गीय कमांडर इनचीफ के पोते को खड्ड में धकेल दिया। मरियल छाती वाले और साढ़े पांच फुट के बौने के लिए यह एक दुःसाहसपूर्ण कारनामा था। इसके बाद हरकुलिज़ लौंग ने कभी भी मात नहीं खाई। वे इंसाफ के पाबन्द थे और गरीब-परवर थे। 'अफलातून' नाम से उन्होंने अनपढ़ ग्रामीणवासियों के सुधार के लिए ढेरों ग्रन्थ लिखे थे, जिनमें विद्वत्ता से भरी कहावतें थीं। किसानों की हालत में सुधार करने के लिए लौंग साहब ने कई बार सरकारी हुक्मों को भी नहीं माना।

इसलिए सरकार उनसे खफा थी और उनके विचारों को खतरनाक समझती थी। गवर्नर भी उनपर शक करते थे। लेकिन साहब को अपनी ताकत पर भरोसा था, जिसके बल से वे पहाड़ों को भी हिला सकते थे। साहब ने किसानों

की मदद के लिए एक नई स्कीम तैयार की थी, लेकिन यह स्कीम अभी कागज़ी ही थी क्योंकि साहब सरकारी कानून-कायदों की ज़ंजीर से बंधे थे। सुनने में आया था कि साहब दूसरे अफसरों की आंखों का कांटा बन गए थे। क्योंकि उन्हें रुकावटों की परवाह नहीं थी। हर पढ़े-लिखे अंग्रेज़ में यह साहस होता है।

कहा जाता था कि साहब सरकार की लगान-नीति के विरोधी थे। वे इस बात को सरासर बेइन्साफी समझते थे कि हर साल किसान की एक तिहाई फसल लगान में चली जाए। लेकिन यह जानते हुए कि सरकार अपनी फौज का खर्च भी लगान से निकालती है, साहब ने किसानों की तकलीफें दूर करने के लिए कई नई तरकीबें सोची थीं, ताकि वे सरकार की मर्ज़ी का विरोध किए बगैर अपनी आत्मा की पुकार के पीछे चल सकें।

वे बड़े पैमाने पर गांव के नौजवानों को बॉय स्काउट आन्दोलन में भर्ती कर रहे थे, ताकि भावी पीढ़ियां तन्दुरुस्त, मज़बूत, अक्लमन्द और संगठित बन सकें। स्कूल में लालू ने स्काउटों की एक रैली में हिस्सा लिया था, जिसका मुआइना लौंग साहब ने किया था। लालू खुश था कि जब यह आन्दोलन गांव में आएगा तो लड़कों को अंग्रेज़ी कमीज़ें, निकरें और बूट पहनने का मौका मिल जाएगा। लौंग साहब के दूसरे विचारों से लालू कम परिचित था।

यह भी सुनने में आया था कि साहब ने कई दिनों तक वेरका में रह-कर किसानों के रहन-सहन का अध्ययन किया था और उनकी खोपड़ियों को नापा था। पता नहीं यह बात कहां तक सच थी।

गांव वाले लौंग साहब को अभी तक नहीं समझ पाए थे। साहब घंटों तक लोगों से बातें करते रहते थे, उनके घरों में जाते थे और लोगों से पगड़ियां उतारने को कहते थे, हालांकि पगड़ी जैसी पवित्र चीज़ को उतारने में किसान बेइज़्ज़ती महसूस करते थे। अचानक साहब बच्चों के खेल में शामिल हो जाते थे। वे हर वक्त खाकी कमीज़ और खाकी निकर पहने रहते थे। सर पर चटाई का टोप पहनते थे। टांगें नंगी रहती थीं और पैरों में हिन्दुस्तानी ढंग की सैंडल होती थीं। पहले वाले डिप्टी कमिश्नर मोटूकारों में आते थे, ज़मींदार, तहसीलदार और गांव के कुछ बुज़ुर्गों से बातचीत करके धूल उड़ाते हुए चले जाते थे। उनके लाल चेहरों को देखकर लोग डर से कांपते रह जाते थे।

मिसेज़ हरकुलिज़ लौंग भी अजब किस्म की भूतनी थी, उसके बाल लंबे थे,

कद छोटा था और वह किसानों की तस्वीरें बनाया करती थी। उसे देखकर लोग हैरानी से दांतोंतले उंगलियां दबा लेते थे। वे स्नेह और प्रशंसा-भरी नज़रों से मेम साहब को देखते थे।

लालू ने सुना था कि डिप्टी कमिश्नर और उनकी मेम साहब उसके खेत की ओर आ रहे हैं। रहंट की शहतीर पर बैठकर ठिब्बा और रोंडू को हांकते हुए लालू सोच रहा था कि कहीं पटवारी ने झंडू के साथ हुई लड़ाई की बात तो साहब तक नहीं पहुंचा दी थी। साहब फज़लू की सब्ज़ी की क्यारियों के पास पहुंच गए थे और तालाब की हरी बदबूदार काई का मुआइना कर रहे थे।

अभी तक न लालू ने साहब को देखा था, न साहब ने लालू को देखा था। लालू ने अपने चचेरे भाई हरनामसिंह के बेटे जीतू को आवाज़ लगाई तो उसे साहब की आकृति की झलक दिखाई दी। साहब को भी रहंट की शहतीरी पर बैठे लालू की झलक दिखाई थी। इसी वक्त एक हंगामा उठ खड़ा हुआ।

लालू की भैंस सुच्ची चरागाह में जाने लिए चरवाहे का इन्तज़ार कर रही थी। मिस्टर हरकुलिज़ लौंग के कदमों की आहट सुनकर उसने सोचा कि चरवाहा आ रहा है। सुच्ची दलदल के पास खड़ी एक मेंढक से खेल रही। जब उसने सर उठाकर देखा तो उसे भैंसों के झुंड की बजाय एक अकेला आदमी नज़र आया, जिसने एक अजब ढंग का चटाई का हैट पहन रखा था। सुच्ची खड़ी होकर प्रश्न-सूचक दृष्टि से इस अजूबे को देखने लगी।

क्षण-भर के लिए डर के मारे वह जड़ हो गई। फिर उसके नथुने फड़के और उसे इन्सान के शरीर की गन्ध आई। थूथनी उठाकर उसने स्नेहपूर्वक अभिवादन किया ताकि वह जवाब से जान सके कि आगंतुक मित्र है या शत्रु।

उसकी चमकदार बिल्लौरी आंखों को देखकर मिस्टर हरकुलिज़ लौंग घबरा गए। वे संवेदनशील और शर्मीले आदमी थे। जब हिन्दुस्तानी लोग उनकी तरफ घूमते थे तो उन्हें परेशानी महसूस होती थी। हिन्दुस्तानियों के मवेशियों का तो क्या ही कहना। ग्रामीण जीवन के ज्ञान के बावजूद वे भारत की गाय-भैंसों की भाषा से अनभिज्ञ थे।

उन्हें लगा कि भैंस नाराज़ हो गई है। वे घबराकर इधर-उधर देखने लगे। उन्होंने कई बार अपनी बीवी के सामने डींग हांकी थी कि वे मवेशियों के माहिर हैं इसलिए वे दुम दबाकर भाग भी नहीं सकते थे। लेकिन लापरवाही से भी इस

स्थिति का मुकाबला नहीं किया जा सकता था। सुच्ची ने पूंछ हिलाकर अपनी सद्भावना प्रदर्शित की और आधे रास्ते चलकर उस विचित्र व्यक्ति से मिलने आई। लेकिन मिस्टर लौंग सहृदयता प्रकट किए बगैर ही पीछे हट गए। वे उस बात को भूल गए, जिसे वह अक्सर भूल जाते थे कि हमेशा एक अंग्रेज को रौबदाब से पेश आना चाहिए।

उनकी टांगें कांपने लगीं, चेहरे की रंगत फीकी पड़ गई। वे अपना हाथ हिलाकर 'शू-शू' की आवाज़ें करने लगे, मानो सुच्ची कोई कुत्ता या परिन्दा हो जिसे हाथ हिलाकर भगा दिया जा सकता हो।

लेकिन हिन्दुस्तानी भैंस हिन्दू जाति की तरह पालतू, डरपोक, सहिष्णु और अतिथि-सरत्कारी नहीं होती, जिसकी इच्छा-शक्ति को अभावों ने कमज़ोर बना दिया है फिर भी जो किसी विचित्र आग के चमत्कार से हज़ारों सालों से ज़िन्दा रहती आई है। मिस्टर लौंग की 'शू-शू' के बावजूद सुच्ची मैत्री प्रकट करने के लिए खड़ी रही। वह यह जानने के लिए बेताब थी कि यह आखिर कौन है जो इन्सानों और जानवरों के मामूली उसूलों को भी नहीं समझता। चारों तरफ देखने के बाद सुच्ची ने थूथनी उठाई और नटखट अदा से सर हिलाकर रंभाने लगी।

मिस्टर हरकुलिज़ लौंग ने भैंस की इन्तज़ार करना मुनासिब न समझा। उन्हें सिर्फ अपनी तरफ बढ़ते हुए अन्नी भैंस के मुड़े हुए सींग दिखाई दिए। वे कल्पना कर रहे थे कि भैंस ने उन्हें उठाकर हवा में फेंक दिया है। उनका गला सूख गया, दिल की धड़कन जैसे रुक गई और वे जड़वत् जहां थे खड़े रहे। उनका डर बढ़ता गया, आंखों के आगे अंधेरा छा गया और वह शैतानी भैंस किसी काली चट्टान या पर्वत की तरह बड़े आकार की होती गई, जिसे किसीकी आस्था टस से मस नहीं कर सकती थी, यहां तक कि हरकुलिज़ लौंग की आस्था भी नहीं।

सुच्ची ने फिर सर हिलाकर अभिवादन किया, पूंछ हिलाई, स्नेहपूर्वक रंभाई और मुंह खोलकर आगे बढ़ी।

मिस्टर लौंग ने भैंस को हटाने के लिए हाथ ऊपर उठा लिए। वे सर से पैर तक पसीने में तर हो गए थे। वे कमर झुकाए, कंधे सिकोड़े ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे कोई केंकड़ा अपने बिल में घुसने की कोशिश कर रहा हो।

फिर उन्होंने अपनी मर्दानगी का दिखावा कायम रखने के लिए अपना सर

हिलाया लेकिन अभी भी स्थिति खतरनाक थी। हार और निराशा से उनका चेहरा पीला पड़ गया था, चश्मे के भीतर उनकी आंखें सिकुड़ रही थीं और वे बचाव के लिए किसी सुरक्षित स्थान को ढूंढ़ने लगे। उन्हें न चोट लगनी चाहिए न मरना चाहिए। आज तो उनकी जान बख्शी जानी चाहिए, क्योंकि आज ही तो उन्होंने अपना भाषण देने के लिए गांव में दरबार बुलाया था।

लेकिन ज़मीन सपाट थी और तालाब के दाएं किनारे वाले पेड़ के सिवा बचाव का और कोई रास्ता नहीं था। बिना सोचे-विचारे मिस्टर लौंग पेड़ की तरफ भागने लगे।

सुच्ची के मन में इस अजनबी के प्रति आकर्षण उमड़ आया। उसे लगा कि अजनबी के साथ दोस्ती करने का आखिरी मौका भी हाथ से निकलता जा रहा है। वह पिछली टांगों पर उछलती-कूदती, पूंछ हिलाती उन्मत्त चाल से मिस्टर लौंग के पीछे भागी। वह भैंसों की भाषा में सद्भावना का संदेश ज़ोर-ज़ोर से रंभाकर देने लगी। मिस्टर हरकुलिज़ लौंग पेड़ों पर चढ़ने की कला में पारंगत नहीं थे। लेकिन इस मुसीबत का कोई न कोई हल तो उन्हें निकालना ही था। सो वे तालाब के किनारे वाले कीकर पर चढ़ गए। उनके नंगे घुटनों और सर में हल्की खराशें आ गईं।

सुच्ची अपने दमित स्नेह और उत्साह को लेकर पेड़ के पास पहुंची लेकिन अब मिस्टर लौंग से संपर्क स्थापित करना कठिन था, क्योंकि वे ऊपर चढ़ गए थे। सुच्ची निराश और कातर भाव से सर उठाकर उन्हें देखने लगी। "नॉटी ! नॉटी !" मिस्टर लौंग ने दाएं हाथ की उंगली उठाकर कहा। उनकी टांगें सुन्न हो गई थीं।

सुच्ची उनकी बात न समझ सकी और सर तिरछा करके जिज्ञासा-भरी दृष्टि से उन्हें ताकने लगी।

मिस्टर लौंग ने अपनी ज़बान तालू से लगाकर 'क्ट्-क्ट्' की आवाज़ की।

क्षण-भर के लिए सुच्ची खड़ी रही, फिर यह देखकर कि अजनबी उसके स्नेह-भरे अभिवादन को ठुकरा रहा है वह अधीर हो उठी। उसके मुंह में झाग आ गए। वह ज़ोर से पैर पटकने लगी और हरकुलिज़ लौंग को ज़मीन पर गिराने के लिए उसने पेड़ पर धावा बोल दिया।

लेकिन मिस्टर लौंग किसी कीमत पर पेड़ से उतरने के लिए तैयार नहीं थे।

वे कसकर पेड़ से लिपट गए, हालांकि उनका शरीर अकड़ गया था। उन्हें शरीर पर सुच्ची की क्रोध-भरी सांसों का स्पर्श महसूस हो रहा था। वे बड़ी कठिनाई से किसी तरह लटके हुए थे।

सुच्ची ने फिर आक्रोश और आहत स्वाभिमान की दृष्टि से ऊपर देखा और कुछ कदम पीछे हटकर खड़ी हो गई। उसका खयाल था कि अजनबी थककर अपने-आप ही नीचे उतर आएगा या नीचे गिर पड़ेगा।

लालू सुच्ची और साहब के बीच की इस घटना को देख रहा था। शुरू-शुरू में तो उसे कौतूहल हुआ जो बाद में उत्तेजना में बदल गया था। लेकिन अब हालत खतरनाक हो गई थी। सुच्ची की आंखें खौफनाक हो रही थीं। एक बार किसी शिकारी के कुत्ते को देखकर वह इसी तरह भड़क उठी थी। उधर साहब की हालत भी खस्ता थी। वे कीकर के पेड़ की लचकीली टहनी पर लटके थे। लालू भागकर साहब को बचा लेता लेकिन वह चाहता था कि जीतू आकर रहंट पर उसकी जगह बैठ जाए।

उसने आवाज़ दी, "ओए जीतू! ओए जीतू! जाकर सुच्ची को वहां से हटा।" जीतू ने खेत से गाजरें चुराई थीं जिन्हें वह पानी से धो रहा था।

पांच बरस का जीतू तेज़ी से भागता हुआ साहब के पास पहुंचा। उसके लिए भी साहब की नवीनता का आकर्षण उतना ही प्रबल था जितना कि सुच्ची के लिए। वह कभी साहब को देखता था कभी सुच्ची को। फिर उसने मुस्कराकर आधी कुतरी गाजर सुच्ची की नाक पर मारी और अपनी पतली आवाज़ में गाली दी, "मर जा! मैं तेरी खाल के जूते पहनूं! साली चलती है या तेरे सर पर छड़ी मारूं?"

सुच्ची ने मानो सज़ा कबूल करने के लिए थूथनी झुका दी और पेड़ की तरफ से मुंह फेरकर खड़ी हो गई।

जीतू ने उसे झुकने का हुक्म दिया। फिर वह सुच्ची की पीठ पर बैठकर उसकी जांघों पर मुक्के और एड़ियां मारने लगा और उसे हांककर कुएं के पास बने ओसारे में ले गया।

मिस्टर हरकुलिज़ लौंग पेड़ से उतर आए और कसूरवार नज़रों से आसपास देखने लगे। उन्होंने तिरछी आंखों से किसान लड़के की तरफ देखा। वे सोच रहे थे कि इस अपमानजनक हालत में उन्हें वह लड़का न देखता तो अच्छा होता। वे

इस पसोपेश में थे कि वे जाकर लड़के का धन्यवाद करें या न करें कि इतने में जीतू को रहट पर बैठाकर लालू भागा आया।

"गुड मॉर्निंग सर। भैंस आपको नुकसान नहीं पहुंचाना चाहती थी। वह हमारी पालतू भैंस है और बड़ी सुशील है।"

"अरे तुम तो अंग्रेज़ी बोल रहे हो?" साहब ने अपनी झेंप मिटाने के लिए प्रसंग बदला। उनका चेहरा लाल हो उठा था।

"मैं शेरकोट के चर्च मिशन स्कूल में आठवीं जमात तक पढ़ा हूं। तीन साल पहले मैंने एक स्काउट रैली में हिस्सा लिया था जिसका आप मुआइना करने आए थे।"

"ओह! तो तुम ब्वॉय स्काउट भी हो!" मिस्टर लौंग ने हार्दिक स्वर में कहा। "अच्छा तो दोपहर के वक्त दरबार में आना।"

"ज़रूर आऊंगा, जनाब।" लालू ने जवाब दिया।

"गुड, वेरी गुड," मिस्टर लौंग ने घबराहट-भरी मुस्कराहट के साथ कहा और लापरवाही से 'गुड मॉर्निंग' कहकर चले गए। वे सोच रहे थे, अच्छा हुआ कि उनकी बीवी मौजूद नहीं थी, वरना वह डर जाती। और अगर वह देखती···उन्हें याद आया कि एक बार उन्होंने बीवी के सामने डींग हांकी थी कि तेलियां गांव में उन्होंने किस तरह एक पागल सांड मारा था जबकि हकीकत यह थी कि वे गायों के एक झुंड को देखकर भाग खड़े हुए थे। उन्होंने यह बात मजाक में कही थी, लेकिन उनकी सीधी-सादी बीवी ने उनपर यकीन भी कर लिया था। इस बार वे डींग नहीं हांक सकते थे, क्योंकि उस नन्हे लड़के की याद से डींग उनके गले में ही अटक जाएगी। फिर कुएं पर बैठे लड़के ने तो अपनी आंखों से सारी घटना देखी थी। अब अपनी इज़्ज़त बचाने का एक ही रास्ता है, उस लड़के से दोस्ती कर लेनी चाहिए। सारा मामला रफा-दफा हो जाएगा। उन्हें अपने सीधेपन का खयाल आया तो उन्होंने कंधे सिकोड़ लिए, फिर अपनी अंतरात्मा का बोझ हलका करने के लिए वे सोचने लगे कि यह उनकी खुशकिस्मती थी कि उन्हें वह लड़का दिखाई दे गया। ऐसे लड़के को ही गांव के ब्वॉय स्काउटों का नेता होना चाहिए। वे दरबार में कहेंगे कि वह लड़का आदर्श स्काउट है। इस तरह की बातें सोचते हुए वे धीरे-धीरे वहां से चले गए।

लालू ने साहब की पीछे की तरफ सरकती आकृति को देखा। उसकी ज़िन्दगी

में आज एक ऐतिहासिक घटना घटी थी। अब उसे पादरी के अलावा किसी दूसरे साहब से मिलने का मौका मिला था। वह पादरी साहब, अपनी कृपालुता के बावजूद सब धर्मोपदेशकों की तरह ही नीरस थे। लौंग साहब असली साहब थे। लालू ने सुना था कि वे गांवों के सुधार में भी दिलचस्पी रखते थे। कुएं की तरफ जाते हुए वह बेचैनी से दरबार की प्रतीक्षा कर रहा था।

१७

लंच के बाद मिस्टर लौंग थोड़ी देर आराम करके फिर तरोताज़ा हो गए। सुबह की अप्रिय घटना से पैदा हुई खिन्नता कुछ दूर हो गई थी और वे ग्रामीण जीवन की रिसर्च के नोट्स तैयार करने लगे। वे मुंह में पाइप डाले काम करने में तल्लीन थे। जाड़े से उनके खून की रवानी और ज़्यादा बढ़ गई थी। अपने कैम्प बैड के गुदगुदे कंबल की गर्मी पाकर मिसेज़ लौंग को झपकी आ गई थी, वे छोलदारी में एक शीशे के सामने खड़ी अपनी हुलिया संवार रही थीं कि अचानक सरदार बहादुर हरबंससिंह लौंग साहब और मेम साहब को अपने साथ दरबार में ले जाने के लिए आ गए।

अर्दली ने कहा कि इतनी ज़ल्दी साहब के आराम में खलल डालना ठीक नहीं। लेकिन सरदार साहब रौबदार व्यक्तित्व के आदमी थे, दफ्तर की छोलदारी के पास वे काले रंग के कोट के ऊपर किमखाब का ढीला चोगा पहनेखड़े थे, जिसके ऊपर कैसरे-हिन्द का सोने का तमगा और दूसरे सम्मानसूचक तमगे चमक रहे थे। फलालैन के सफेद चूड़ीदार पाजामे में उनकी मुद्गर जैसी टांगों की बनावट नज़र आ रही थी। भाग-दौड़ की वजह से उन्हें पसीना आ गया था। उनके सर पर धूप की हैल्मैट जैसी पगड़ी बंधी थी और इस खास मौके के लिए उन्होंने दाढ़ी धोई थी। अर्दली उनकी वेशभूषा से इतना प्रभावित हो गया कि अपनी आदत के मुताबिक उसे बख्शीश मांगने की हिम्मत भी न हुई और वह भीतर साहब को सरदार के आने की सूचना देने चला गया।

सरदार बहादुर का खयाल था कि पिछले डिप्टी कमिश्नरों की तरह लौंग साहब भी बाकायदा सूटेड-बूटेड होंगे। वे प्रसन्नता से पुलकित हो रहे थे। अपनी

सज-धज में उन्होंने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। उधर हरकुलिज़ लौंग खाकी कमीज़, खाकी निकर और सोला हैट लगाकर सरदार बहादुर से मिलने आए। सर्दी से बचने के लिए उन्होंने काश्मीरी ट्वीड की नॉरफोक जैकेट पहन ली थी। मिसेज़ लौंग खुरदरे कपड़े की पोशाक पहने थी जिसपर एक ढीलाढाला टेडी बीयर कोट था।

ज़मींदार पहले तो भौंचक्का रह गया फिर उसने सम्मानित मेहमानों का अभिवादन किया और इतने पुरजोश ढंग से दोनों से हाथ मिलाए कि मिसेज़ लौंग की कलाई चटखते-चटखते बची। डिप्टी कमिश्नर ने भड़कीले शामियाने की तरफ इशारा किया। सौ गज़ दूर से सफेद चादरों में लिपटी आकृतियां नज़र आ रही थीं।

शामियाने तक पहुंचते-पहुंचते लौंग साहब सरदार बहादुर की पुरतकल्लुफ और अनर्गल चापलूसी से भरी बातचीत से परेशान हो गए। क्षण-भर के लिए लौंग-दंपति ने मुस्कराकर एक-दूसरे की तरफ देखा। नीले आकाश के सरोवर में से ताज़ी हवा के झोंके मैदान की सफेद धूल को छितरा रहे थे। हवा में पंजाब के कड़ाके जाड़े का स्पर्श था। दुनिया में सबसे ज़्यादा शानदार जाड़ा पंजाब का होता है। ज़मींदार के कसीदों को सुनकर लौंग-दंपति के चेहरे शर्म से लाल हो गए। वे कर्तव्य निभाने के लिए सारी बातें सुनते जा रहे थे। उनकी नज़रें शामियाने के बाहर चिपके घिसे हुए इश्तहारों पर गई जिनपर 'स्वागतम्' लिखा था।

क्षण-भर के लिए चौधरी अब्दुल्ला के बैंड की आवाज़ से शोर-शराबा शान्त हो गया। शादियों, सगाइयों और बच्चों के जन्म पर चौधरी अब्दुल्ला का बैंड मानाबाद की गलियों में अंग्रेज़ी धुनें बजाया करता था। बैंड वालों की पोशाकों पर तिल्ले से कढ़ाई की गई थी। वे ज़ोर-ज़ोर से 'आउल्ड लैंग साइन' (Auld Lang Syne) की धुन बजा रहे थे।

जब गहरे बादामी रंग के चेहरे वाले बूढ़े, नौजवान, मोटे और दुबले लोग विलक्षण और घबराहटपूर्ण तरीके से चीख-चिल्ला रहे थे, तो सनकी डिप्टी कमिश्नर ने अपने चेहरे पर कृतज्ञ भाव लाने की कोशिश की। शामियाने में सिख सन्तों की विशालाकार तस्वीरों के साथ-साथ भड़कीले फ्रेमों में महारानी विक्टोरिया तथा बादशाह एडवर्ड सप्तम की तस्वीरें भी बांसों पर कीलों से ठोंकी गई थीं या झंडियों की तरह रस्सियों पर चिपकाई गई थीं। इनके अलावा सरदार बहादुर हरबंससिंह और स्थानीय सम्पन्न व्यक्तियों की भी तस्वीरें लटक रही थीं,

जिन्हें देखकर लौंग साहब ने ज़रा-सी नाक-भौं सिकोड़ी। गांव वालों के सामूहिक प्रयत्नों से यह कला-संग्रह इकट्ठा हो सका था। क्षण-भर के लिए उनके मन में हास्यास्पदता और कर्तव्यपरायणता के बीच संघर्ष चला। लेकिन कर्तव्यपरायणता की जीत निश्चित थी। वे अपनी पत्नी के साथ सरदार बहादुर के पीछे-पीछे लोगों के सलामों का जवाब देते हुए मंच पर पहुंचे, जहां गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे थे। लौंग-दम्पति आकर कुर्सियों पर बैठ गए और उन्होंने अपने को अंग्रेज़ी सरकार तथा सरदार बहादुर हरबंससिंह के बनाए प्रोग्राम के हवाले कर दिया। सरदार बहादुर बड़े होशियार और मनमाने आदमी थे।

कुछ देर के लिए कार्रवाई रुकी रही और लौंग-दम्पति चुपचाप बैठे रहे। ज़मींदार इधर-उधर घूमकर तैयारियां करने लगा। किसान खांस रहे थे और आपस में बातें कर रहे थे और इधर-उधर थूक रहे थे।

इसी वक्त बनिया चमनलाल अपने बेटे चुरंजी को भीड़ में से घसीटकर मंच पर ले आया। उसने लौंग साहब के जूतों की धूलि अपने सिर पर लगाई और सलाम करके कहा, "हुज़ूर माई-बाप! मैं हूं आपका गुलाम सेठ चमनलाल, बैंकर एण्ड जनरल मर्चेण्ट ऑफ नन्दपुर! और यह है मेरा बेटा, चुरंजीलाल···ओए, साहब को सलाम कर!" चुरंजी ने मखमल की पोशाक और अंगूठियां पहन रखी थीं।

"अच्चा हाए?" मिस्टर लौंग ने मुस्कराकर पूछा और साहूकार और उसके बेटे को बाईं तरफ रखी खाली कुर्सियों पर बैठने का संकेत किया।

"ओए, देखा, साहब हमारी बोली बोलता है!" घुग्घी ने लालू से कहा। शामियाने के एक बांस के पास भीड़ में लालू और घुग्घी साथ-साथ खड़े थे।

इसी वक्त फट-फट की आवाज़ सुनाई दी। सबकी नज़रें भारी-भरकम शरीर के एक साहब पर केन्द्रित हो गईं, जिसके बटनहोल में एक फूल लगा था। उसके पीछे-पीछे सफेद चोगे में शेरकोट के मिशन स्कूल के पादरी अनन्डेल थे।

"यही साहब हमारे नये बिजलीघर के इंचार्ज होंगे।" श्रोताओं में घुसर-फुसर हुई।

"ओए ज़रा साहब की मूंछें देखो!" अचानक किसीने कहा। लोग ज़ोर से हंस पड़े। साहब ने मोम लगाकर मूंछों को नुकीला बनाया था।

लालू ने घुग्घी को बताया, "ये हैं हेनरी हीथ साहब, जो बाड़ीवाल की नहर

परारथना करता हूं कि आप इस गांव के मोअज्जिज़ और मामूली लोगों का हारदिक धन्यवाद सवीकार करें···

" इस गांव के अगुआ लोग हमेशा से ही सरकार के वफादार रहे हैं और हम जनाब के सामने तहेदिल से अपनी खुशी का इज़हार करते हैं। "

यह कहकर ज़मींदार ने अपनी तोंद पर हाथ रखा और चापलूसी-भरे ढंग से मिस्टर लौंग की तरफ देखा। लौंग साहब फूलों से सजी कुर्सी पर बेचैनी से ऐंठ रहे थे।

"यह बड़ा शुभ मौका है क्योंकि आज के दरबार में नन्दपुर मठ के महन्त नन्दगीर साहब के चरणों की धूलि पड़ी है···"

भगवे कपड़ों वाला महन्त अपना नाम सुनकर मुस्करा उठा। मिस्टर लौंग ने तिरछी नज़र से महन्त के धूल से भरे पैरों को देखा। ज़मींदार ने महन्त और उसके पूर्वजों का गौरवशाली इतिहास बताया तो महन्त पसीने से तर हो गया।

अचानक मिस्टर लौंग की नीरसता भंग हो गई जब महन्त ने आगे बढ़कर गेंदे के फूलों का हार उनके गले में डाल दिया और कुछ बड़बड़ाकर आशीर्वाद दिया। लौंग साहब बेचैनी से छटपटा उठे। जब महन्त जाकर अपनी जगह पर बैठ गया तो लौंग साहब ने हार उतारकर अपनी पत्नी के गले में डाल निया—इसपर सब लोग हंस पड़े और खुशी से चिल्ला उठे। सरदार बहादुर की अंग्रेज़ी मिश्रित गिटपिट उनकी समझ में नहीं आ रही थी। इस छोटी-सी घटना ने वातावरण की नीरसता भंग कर दी।

लेकिन ज़मींदार ने इस विघ्न पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की और लौंग साहब की तरफ इस तरह देखा जैसे उन्होंने अपनी पत्नी के गले में हार डालकर बहादुरी का काम किया हो।

ज़मींदार गरजती आवाज़ में बोला, "ओनरेरी कैप्टन रिसालदार मेजर, सरदार फतहसिंह भी यहां मौजूद हैं।···" फिर पूरे पांच मिनट तक ज़मींदार ने उनके पुरखों के वैभव का बखान किया।

फिर वह घटिया शैली पर आ गया—"सरदार फतहसिंह के यहां ईश्वर की कृपा से एक बालिग बेटा है। सरदार अमरसिंह इस वक्त गवरनमिंट हाई स्कूल, मानाबाद में नवीं कलास का विद्यार्थी है। हमें उम्मीद है कि वह भी अपने आला खानदान की शानदार परम्पराओं को आगे बढ़ाएगा और हमेशा के लिए दिलो-

जान से सरकार का वफादार रहेगा।"

इसपर रिसालदार मेजर फतहसिंह ने, जो एक बूढ़ा और मरियल आदमी था, उठकर अपने फौजी बूटों को ज़ोर से मंच पर पटककर लौंग साहब को सलाम किया। उसका बायां हाथ तलवार की मूंठ पर था।

"वाह, वाह शेरा!" भीड़ चिल्लाई।

ज़मींदार की लच्छेदार भाषावली और भीड़ के शोर-शराबे से मिस्टर लौंग का सर चकरा गया। डींग हांकने और श्रोताओं पर अपना रौब डालने के लिए ही बूढ़ा ज़मींदार बढ़-बढ़कर जोश से बातें कर रहा था।

मिस्टर लौंग ने सोचा, ये हिन्दुस्तानी बच्चों की तरह सम्मान और पदवियों के भूखे हैं। बछियों की तरह सीधे-सादे किसानों की तरह उनको भी ज़मींदार का हास्यास्पद भाषण सुनना पड़ रहा है। बाहर धूप खिली है। ओस की गन्ध मिटती जा रही है। धरती पर बेहद खूबसूरत लालिमा छा रही है। उनकी पत्नी के बनाए चित्रों में भी इतनी काव्यपूर्ण लालिमा नहीं दिखाई देती। जल्द ही दोपहर ढल जाएगी और लाल ऑरकिड के फूलों, मोतिया रंग के और लाल रंग के फलों और हरे रंग के चमत्कारपूर्ण पौधों में घूमने का मौका निकल जाएगा।

लौंग साहब सोच रहे थे कि अगर वे केम्ब्रिज में अध्यापक बन जाते, पाठ्य-पुस्तकें लिखते या किसी अजायबघर के क्यूरेटर हो जाते तो कितना अच्छा होता, या शायद...

ज़मींदार ने अपने पसीने से तर हाथों से कागज़ों की फाइल थामते हुए कहा, "सेठ चमनलाल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मैम्बर हैं और 'चमनलाल चुरंजीलाल' की अनाज और बजाज़ी की फर्म के मालिक हैं..."

सेठ ने खिले चेहरे से सर झुकाया, हालांकि बर्फ के तोदे की तरह लुढ़कता हुआ लच्छेदार भाषण उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अचानक उसकी नज़र घुग्घी और लालू की तरफ गई जो चुरंजी को देखकर नाक से उंगली लगाकर कुछ इशारा कर रहे थे। उसके माथे पर त्योरियां पड़ गईं और उसने अपने आवारा लड़के को कुहनी मारकर मौके की संजीदगी के प्रति सचेत किया।

ज़मींदार का भाषण ज़ारी था—"इस खानदान के लोगों को सबसे पहले यह सबक सिखाया जाता है कि सरकार का वफादार रहना चाहिए। लाला चमनलाल कौम और पबलिक की भलाई के लिए चलाए गए हर आन्दोलन में आगे बढ़कर

हिस्सा लेते हैं। इनकी बड़ी पहुंच है और आला सोसाइटी में ये उठते-बैठते हैं। उन्नीस सौ ग्यारह में जब प्लेग फैली तो इन्होंने सरकारी अफसरों की बहुत मदद की थी। इनके पास बहुत-से सारटीफिकेट हैं, मशहूर डाकू दुल्लासिंह को भी इन्होंने ही पकड़वाया था। इन्होंने गांव के उत्तर में तालाब के किनारे अपने मरहूम पिता की याद में एक मन्दिर बनवाया है, जिसके लिए कमिश्नर साहब बहादुर ने उन्हें सनद बख्शी है।…"

वक्त से पहले ही सेठ चमनलाल हाथ जोड़कर खड़े हो गए और उन्होंने सरदार बहादुर के भाषण को बीच में काट दिया। भीड़ में से कोई ज़ोर से चिल्लाया, "देखना साहब को सलाम करते वक्त कहीं पैर न फिसल जाए।"

मिस्टर लौंग का चेहरा लाल हो गया। वे बेचैनी से कभी टांग पर टांग रखते, कभी इधर-उधर देखते। अपनी नाराज़गी और बेचैनी उन्होंने इतने साफ ढंग से प्रकट की कि सरदार बहादुर भी भांप गए।

फाइल का पन्ना पलटते हुए ज़मींदार ने कहा, "गांव के कई दूसरे मुअज्जिज़ शख्स भी हैं जिनका ज़िक्र मैं सिरीमान के सामने करना चाहूंगा। लेकिन ज़िले के बहुत-से गांव आपके सम्मान में ऐसे दरबार कर चुके हैं। हम जानते हैं कि आपके पवित्तर दिल में सब लोगों की भलाई के विचार हैं…मैं सिर्फ इस वक्त लाला बालमुकन्द, वकील हाई कोर्ट, लाहौर; लाला हुकमचन्द, हैड मास्टर, नन्दपुर प्राइमरी स्कूल; लाला भगतराम ठेकेदार और अपने उत्तराधिकारी सुपुत्तर पटियाला के रईसे आज़म सरदार हरदित्तसिंह का खास तौर पर ज़िक्र करना चाहूंगा।"

"जनाब में इतनी क़ाबलियत है कि जब तक आप यहां तशरीफ नहीं लाए, हम समझते रहे कि हम अभागों के ग्रह खराब हैं। मुझ नाचीज़ का फर्ज़ है कि मैं नन्दपुर गांव के निवासियों की तरफ से आपको धन्यवाद दूं, क्योंकि आप यहां के धूल-भरे और कंटीले रास्तों पर पैदल चलकर हमें दर्शन देने के लिए आए हैं। आपकी तन्दरुस्ती सलामत रहे, जनाब।"

मिस्टर लौंग अपनी कुर्सी पर बैठे मानसिक तनाव को कम करने के लिए टांगें हिला रहे थे।

हरबंससिंह के लच्छेदार भाषण का उनपर कोई असर नहीं हुआ था। वे जानते थे कि अपने सामंती पूर्वजों की तरह, जो अपनी निरंकुश सत्ता को बनाए रखने के लिए आतंक और सन्देह के साथ-साथ ज़हर में शहद भी घोला करते थे,

ऐसे विचार मोटी खाल के संवेदनशून्य प्राणी के दिमाग में ही जन्म ले सकते हैं।

लौंग साहब के एक साथी ने, जो बीस बरस तक यू०पी० और पंजाब में सैटलमेंट अफसर रह चुका था, बताया था कि ज़मींदार वर्ग को उतनी सुविधाएं नहीं मिलीं जितनी कि मिलनी चाहिए थीं। उसने भारत सरकार को सलाह दी थी कि जल्द से जल्द इस वर्ग को अपने वैधानिक जाल में उलझा लेना चाहिए। उसका खयाल था कि इस वर्ग को शासन का अनुभव है। निरंकुश और संकीर्ण विचारों के बावजूद उन्हें अपनी भाषा और साहित्य का ज्ञान है। वे लोग वफादार और शिष्ट हैं।

"लेकिन उनकी चाल-ढाल बेहूदी है," लौंग ने टिप्पणी की थी। इस वक्त भी उनके दिमाग में यह सवाल उठ रहा था कि ज़मींदार वर्ग को किसानों की दुर्दशा और उनके दैनिक जीवन के कटु यथार्थ का ज्ञान है या नहीं।

लौंग ने तिरछी नज़रों से पादरी अनन्डेल और इंजीनियर की तरफ देखा। वे जानना चाहते थे कि उनके दोनों अंग्रेज़ साथियों पर बोरियत-भरे इस भाषण की क्या प्रतिक्रिया हो रही है। कैप्टन हीथ का चर्बीदार चेहरा भावशून्य था और वह वक्त काटने के लिए उंगलियां चटखा रहा था। लेकिन फादर अनन्डेल ध्यान से भाषण सुन रहे थे। लौंग साहब भी शर्मिन्दा होकर संजीदगी से सुनने लगे...

सरदार बहादुर कह रहे थे, "जनाब, इस गांव में किसी भी हाकिम की इतनी इज़्ज़त नहीं हुई जितनी कि आपकी। जनाब ने अफसर होकर भी पंजाबी सीखने की तकलीफ गवारा की है, यह हम लोगों पर आपकी मेहरबानी है और हमारे दिलों में आपके लिए असीम कृतज्ञता है। हम आपको अपने पवित्तर परिवार का एक मेम्बर समझते हैं, जिसकी नींव सिख गुरुओं ने डाली थी...

"जनाब, मुझे यह कहने की इजाज़त दीजिए कि बिरटिश सामराज में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं, यह कहावत सच्ची साबित हो गई है क्योंकि आपने यहां आकर हमारी नाचीज़ ज़िन्दगी में दिलचस्पी ली है।

"अगर गांव में आपको किसी किस्म की असुविधा हुई हो तो मेहरबानी करके हमें माफ कर दें। जनाब जानते ही हैं कि ये किसान कितने जाहिल और सीधे-सादे हैं। वे आपके नाचीज़ गुला..."

सरदार बहादुर ने अभी पूरी बात खत्म नहीं की थी कि मिस्टर लौंग उठकर खड़े हो गए और ब्वॉय-स्काउटों के सैल्यूट की मुद्रा में उन्होंने ज़मींदार का भाषण

बन्द करवा दिया। भाषण में अभी एक सफा बाकी था और 'इसके अलावा', 'जनाबे आली', 'आपके दास', जैसे अनगिनत बोरियत-भरे स्तुतिवादी शब्दों की भरमार थी।

"मैं बड़ा शुक्रगुज़ार हूं," लौंग साहब ने झिझक-भरे स्वर में पंजाबी भाषा के कठिन लहजे को पकड़ने के लिए अपना मुंह ऐंठते हुए कहा। लोग ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे और तालियां पीटने लगे, "ओए लेहनासिंहा देख, ओए झण्डासिंहा देख, साहब हमारी ज़बान में बात कर रहा है!" लोग आपस में फुसफुसाने लगे।

"सरदार बहादुर के प्रशंसा-भरे शब्दों के लिए मैं कृतज्ञ हूं। वक्त थोड़ा है। मैं जल्दी-जल्दी बात करूंगा। मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बातें कहनी हैं।"

"वाह, वाह, कैसी अच्छी पंजाबी बोलता है!" एक किसान ने अपने दोस्त को कुहनी मारकर कहा। "मैं सदके जावां!" दूसरे ने कहा, "चमत्कार है भई चमत्कार!" तीसरा बोला।

"सरदार साहब, आप इस गांव के मुखिया हैं। मेरे बुज़ुर्ग और नौजवान दोस्तो! आप बुरा न मनाएं, मैंने आपके गांव के बहुत सारे हिस्से देखे हैं। मेरा खयाल है कि यहां रहना सेहत के लिए खतरनाक है। इसलिए आप लोग साल में छः महीने बीमार रहते हैं और आपकी औरतें बच्चे जनते ही मर जाती हैं। बच्चे या तो मरे हुए पैदा होते हैं या उनके सारे शरीर पर फोड़े-फुंसियां निकल आती हैं।...मैंने गिनकर देखा है, गांव में कूड़े के चौदह घूरे हैं, तीन गन्दे तालाब हैं, आपकी गलियों का सारा गन्दा पानी वहीं जाकर गिरता है। आपके कच्चे मकान, जिनमें बहुत बड़े परिवार रहते हैं, गिरने वाले हैं। आपके कुएं नालियों के नज़दीक हैं और बरसात में आपकी तंग गलियों की सारी गन्दगी उनमें जाती होगी। गांव के बाहर कोई ऐसी खुली हवादार जगह नहीं जहां आपके बच्चे खेल सकें। आपके गांव में सिर्फ जानवर रह सकते हैं। चूंकि आप लोग भी इसी गन्दगी में रहते हैं इसलिए आप जानवर हैं, इंसान नहीं।"

इस आलोचना पर भीड़ में खुसर-फुसर शुरू हो गई। लोगों की नज़रें आपस में टकराईं और बहुत-से लोग डर से सहम गए।

लालू ने साहब की बात सुनकर शर्म से सर नीचा कर लिया क्योंकि साहब की बात में सचाई थी। वह खुद चाहता था कि वह गांव की सड़ांध खत्म करके नये सिरे से गांव को बसाए। साहब उसके गांव पर लानत भेज रहे थे। लाल के मन

के किसी कोने में विरोध की चिंगारियां भी सुलग रही थीं, फिर भी उसे अफसोस था कि उसका बापू और बड़ा भाई दरबार में नहीं आए थे। साहब की बातें सुनकर वे लालू से ज़रूर सुलह करते, क्योंकि साहब ने लालू की बातों की हिमायत की थी। महंत के चरणों में बैठा दयालसिंह शायद घर जाकर ये बातें बताए, लेकिन दयालसिंह को न तो दुनियादार समझा जाता था और न ही ऐसे मामलों में उसकी सलाह ही ली जाती थी।

"सिर्फ एक बात को देखकर मुझे उम्मीद होती है कि आपकी ज़िन्दगी बेहतर बन सकती है..."

यहां लौंग साहब अपनी बात का असर देखने के लिए नाटकीय ढंग से रुक गए।

श्रोतागण मुंह बाए उस कृपालु शब्द के लिए लालायित थे जिससे उनके गांव की इज़्ज़त बच सकती थी।

"और वह है आपके गांव के नौजवान। गांव का भविष्य इन्हीं नौजवानों के हाथों में है, सफेद दाढ़ी वाले बूढ़ों के हाथों में नहीं। मुझे उम्मीद है कि बूढ़े लोग बुरा नहीं मनाएंगे।"

यह सुनकर घुग्घी हंस पड़ा। उसकी देखादेखी दूसरे बच्चे भी हंस पड़े। सरदार बहादुर हरबंससिंह ने बेचैनी और चिड़चिड़े ढंग से अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा। मास्टर हुक्मसिंह ने जब देखा कि उन्हीं लड़कों की तारीफ हो रही है जिन्हें वे डंडे से सीधा करते हैं तो उन्हें डर लगा कि कहीं उनका रौब-दाब कम न हो जाए। उनके माथे पर त्योरियां पड़ गईं और वे इधर-उधर देखने लगे।

"मेरे दोस्तो, यह हंसने की बात नहीं है, क्योंकि मैं गांव की किस्मत की बागडोर आपके हाथों में सौंपना चाहता हूं, आपको इसके काबिल बनना पड़ेगा।

"मैं चाहता हूं कि वह नौजवान..." लौंग साहब ने लालू की तरफ इशारा किया।

सब श्रोताओं की नज़रें उसी तरफ मुड़ गईं।

"लालसिंह" घुग्घी ने ऊंची आवाज़ में बताया और अपने दोस्त को आगे धकेला।

"हां, मैं चाहता हूं कि सरदार लालसिंह और बीस बरस से कम उम्र वाले सभी नौजवान आगे आएं और स्काउटों के नियमों की कसम खाएं।"

"ओए, जा लालू, ओए जा !" हरनामसिंह ने गर्व-भरे स्वर में कहा।

"ओए जा भी," कुछ किसानों ने इसरार किया। साहब द्वारा दिए गए इस सम्मान से लालू पुलकित हो उठा। गांव का सुधार करने के उसके सभी अदृश्य सपनों की पुष्टि हो रही थी। वह किसानों के सरों पर से फांदता हुआ आगे बढ़ा। उसके पीछे घुग्घी, गुलाम, शेखू और गोपाल थे। भीड़ में कोई तारीफ कर रहा था, कोई आश्चर्य प्रकट कर रहा था और कोई मज़ाक उड़ा रहा था।

मिस्टर लौंग ने यह देखने के लिए कि सारे लड़के आ रहे हैं या नहीं, आसपास नज़र दौड़ाई। चुरंजी अपने बाप के साथ मंच पर भड़कीले कपड़े पहने बैठा था। साहब उनका कान पकड़कर दरबार के बीचोंबीच ले आए। शामियाना तालियों की गड़गड़ाहट और हंसी के कहकहों से गूंज उठा।

"पांच बरस से ऊपर और बीस बरस से कम उम्र के सारे लड़के आगे आएं !" फिर मास्टर हुकमचन्द की तरफ मुड़कर मिस्टर लौंग ने कहा, "मास्टर साहेब, अपने शागिर्दों को बुलाइए !"

"ओए मुंडेयो ! आओ !" मास्टर हुकमचन्द ज़ोर से चिल्लाए। उनकी आंखों में गुस्सा आ रहा था और चेहरे पर एक फीकी मुस्कराहट थी।

भीड़ में भगदड़ मच गई। कुछ लड़के हिचकिचाने लगे, कुछ खुशी से उछलते-कूदते मच के सामने आ खड़े हुए। कुछ की आंखों से भय टपक रहा था।

मिस्टर लौंग ने मंच से नीचे उतरकर कहा, "नीचे आइए मास्टर साहब, और मेरी मदद कीजिए।" लौंग साहब ने लड़कों को सात-सात की कतार में खड़ा किया और सबसे आगे खड़े होकर बोले, "मास्टर साहब और सारे लड़के मेरे पीछे-पीछे बोलो—'मैं ईमान की कसम खाकर कहता हूं कि मैं पूरी कोशिश करूंगा...' "

हुकमचंद को अपनी संकीर्णता से बाहर निकलकर नये उसूलों को दुहराना पड़ गया था। ऐसा लगता था जैसे किसी कौए को कोयल का गीत गाने के लिए कहा जाए। कुछ लड़कों ने स्काउटों की प्रतिज्ञा दुहराई, कुछ को पता ही न चला कि साहब क्या कह रहे थे। वे अस्पष्ट ढंग से बड़बड़ाने लगे या खामोश रहे।

इसके बाद मिस्टर लौंग ने जेब से एक कागज़ निकाला और कहा, "अब स्काउटों के उसूल दुहराओ।"

"अब स्काउटों के उसूल दुहराओ !" कुछ लड़कों ने तोते की तरह यह वाक्य भी दुहरा दिया ! भीड़ से दबी हंसी की आवाज़ें सुनाई दीं।

मिस्टर लौंग ने अपनी उंगली ऊपर उठाकर कहा, "स्काउट के ईमान पर भरोसा रखना चाहिए।"

लड़कों को जोश आ गया, वे मुस्कराए और गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगे।

"धीरे बोलो," मिस्टर लौंग ने ताकीद की। "स्काऊट हमेशा बादशाह, अपने मुल्क, अपने अफसर, मां-बाप और मालिकों का वफादार रहता है..."

अपनी ज़ोरदार आवाज़ सुनकर लड़कों पर उन्माद छा गया था और उन्होंने नौ के नौ उसूल ऊंची आवाज़ में दुहराए। समझ की कमी उत्साह ने पूरी कर दी थी।

श्रोता मुंह बाए इस दृश्य को देख रहे थे और सोच रहे थे कि इस जादू-भरी रस्म के पीछे आखिर क्या राज़ हो सकता है जिसमें उनके बेटों को तो शामिल किया गया है, लेकिन उन्हें नहीं।

मिस्टर लौंग ने लालू को कतार से बाहर निकालकर कहा, "लालसिंह, तुम स्काउटों की टुकड़ी के लीडर हो और इन्हें सिखाओगे कि ब्वॉय स्काउटों के क्या कर्तव्य होते हैं।"

लालू को अहसास हुआ कि ज़मींदार उसे घूर-घूरकर देख रहा है। न चाहते हुए भी वह ज़मींदार को घूरने लगा।

मिस्टर लौंग ने स्काउटों की टुकड़ी को इस तरह देखा जैसे कोई कारीगर अपनी बनाई वस्तु को देखता है। वे सिर्फ यह दिखाना चाहते थे कि उन्हें किसानों की भलाई में दिलचस्पी है, साथ ही किसानों का दिल बहल गया, इसके सिवा उनका कोई उद्देश्य न था।

"मिसेज़ लौंग गांव वालों की खातिरदारी से बहुत खुश हुई हैं। उन्होंने कहा है कि मैं आपको बता दूं कि हमारी तरफ से आप सब लोगों को चार-चार आने बतौर तोहफे के दिए जाएंगे और सरदार बहादुर आपको मिठाई देंगे। स्काउट लड़के मिठाई बांटेंगे और इस बात का सबूत देंगे कि भविष्य की यह फौज काम करने में कितनी निपुण है।"

इसपर लाला बालमुकन्द ने उठकर मिस्टर और मिसेज़ लौंग के सम्मान में 'थ्री चीयर्ज़' का नारा बुलन्द किया। फादर अनन्डेल और हीथ साहब के लिए भी 'थ्री चीयर्ज़'। पादरी ने हाथ उठाकर मना कर दिया, लेकिन इंजीनियर ने

यंत्रवत् बाकी लोगों के साथ अपनी आवाज़ बुलन्द की।

हलवाई मिठाई के टोकरे ले आया। स्काउट उन्हें बांटने के लिए व्याकुल हो रहे थे।

सरदार बहादुर के पीछे-पीछे लौंग-दम्पति, फादर अनन्डेल, हेनरी हीथ साहब, महन्त, वकील, ठेकेदार, बनिया, स्कूल मास्टर और गांव के चन्द दूसरे लोग जो प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सूची में आते थे, शामियाने के पीछे चले गए जहां चाय का इन्तज़ाम किया गया था।

"चलिए यह अच्छा हुआ।" ज़मींदार ने घबराहट-भरी आवाज़ में साहब से कहा, "ये लुच्चे-बदमाश डिसिप्लिन सीख जाएंगे। जिस नौजवान को आपने बुलाया था उसके खानदान वालों ने सरकार से गद्दारी की है।"

चौधरी अब्दुल्ला के बैंड ने 'गॉड सेव दि किंग' की धुन ज़ोर से बजानी शुरू की।

अपनी राष्ट्रीय धुन सुनकर मिस्टर लौंग जहां थे वहीं खड़े हो गए।

१८

जब स्काउटों की दीक्षा की उत्तेजना खत्म हो गई और रोज़मर्रा का नीरस जीवन शुरू हुआ तो गांव वालों के दिल में भी नये डिप्टी कमिश्नर के लिए पैदा हुई जिज्ञासा खत्म हो गई।

सरदार बहादुर हरबंससिंह को तो शुरू से ही यह बात पसन्द नहीं आई थी कि डिप्टी कमिश्नर के संरक्षण में गांव के लड़के संगठित हों, क्योंकि सरदार बहादुर चाहते थे कि वे ही सरकार के साथ सम्पर्क का एक मात्र माध्यम बने रहें। उनकी प्रतिष्ठा को ठेस लग सकती थी। उन्हें यह बात भी पसन्द नहीं थी कि जिस खानदान के साथ पूर्वजों के समय से उनकी अदावत चली आ रही थी, उसी खानदान का लड़का लालसिंह गांव की ज़िन्दगी में इतनी प्रमुखता प्राप्त कर ले।

गांव के बड़े-बूढ़ों को भी छोकरों की यह संगठित शरारत पसन्द नहीं आई। स्काउटों के उसूल उनकी नज़रों में शरारत की पुड़िया थे। छोकरों की बदमाशी से

लोग वैसे ही तंग आ गए थे। उधर साहबज़ादों ने खाकी कमीजों, निकरों, स्कार्फों और सीटियों जैसी विलायती चीज़ों की मांग कर दी थी।

मास्टर हुकमसिंह भी चिंतित थे कि कहीं उनका रौब-दाब खत्म न हो जाए। वे हमेशा अंग्रेज़ों की आदतों का मज़ाक उड़ाया करते थे, "ज़रा इन गंदे अंग्रेजों को देखो, जेब से रूमाल निकालते हैं, उसीसे नाक साफ करते हैं, उसीमें थूकते हैं और कीटाणुओं से भरे चिथड़ों को फिर जेब में ठूंस लेते हैं।" अगर कोई लड़का स्कूल में अंग्रेज़ी ढंग की पोशाक पहनकर आता था तो मास्टर जी उसकी पिटाई करते थे। उन्होंने लड़कों को ताकीद कर दी थी कि वे 'उस बदमाश' लालू के नेतृत्व में और घुग्घी, गुलाम, चुरंजी, शेखू और गोपाल जैसे शोहदों की संगत में कवायद करने की बजाय स्कूल की पढ़ाई के बाद कबड्डी खेला करें।

नौजवानों के ढुलमुलपन से दकियानूसी पक्ष को फायदा पहुंचा। लड़के खेल की नवीनता और वर्दियों की चमक-दमक से आकर्षित होकर स्काउट बने थे। कुछ बार कवायद करने के बाद ही उनका जोश हल्का हो गया, हालांकि वे हमलावर दस्तों में शामिल होकर झूठ-मूठ की लड़ाइयां भी लड़ते थे, जो कि ब्वॉय स्काउट की ट्रेनिंग का ज़रूरी हिस्सा था।

लालू जानता था कि अगर उसने ज़रूरत से ज़्यादा गंभीरता और मुस्तैदी दिखाई तो लोग उसका मज़ाक उड़ाएंगे। वह अक्सर लड़कों को बाहर की दुनिया की खबरें सुनाया करता था और स्काउट आंदोलन को जारी रखने के लिए उसने लड़कों को कुश्ती का अखाड़ा खोलने के लिए प्रोत्साहन दिया। वह चाहता था कि जब तक यह स्कीम सफल न हो, इसकी खबर बुज़ुर्गों को नहीं लगनी चाहिए, वरना उनके शिकवे-शिकायतें फिर शुरू हो जाएंगी।

उधर दयालसिंह भी ईशरी के घरवाले से तीन सौ रुपये लेकर नौशेरा से लौट आया था। हिन्दू पुरोहित बालकृष्ण ने बैसाख का मुहूर्त निकाला था। शादी की तैयारी ज़ोर-शोर से होने लगी थी। पहले वे सर्दी बीत जाने तक रुक गए थे। लेकिन अब गुजरी और केसरी गांव के सारे घरों में गुड़ बांटती फिर रही थीं। गांववालों का मुंह मीठा कराने के बाद उन्होंने बिरादरी की औरतों को गाने के लिए बुलाया। शादी से एक या दो महीने पहले ही औरतें ढोलकी लेकर गीत गाना शुरू कर देती हैं और गाने-बजाने का कार्यक्रम शादी के बाद भी कई हफ्तों तक चलता रहता है।

बिरादरी के जिन लोगों ने न्योता नहीं माना, उन्हें समझाने-बुझाने में नीति से काम लिया गया, खास तौर पर सरदार बहादुर हरबंससिंह के परिवार को।

झूठी प्रतिष्ठा के कारण कृतघ्न बिरादरी वालों और कुत्तों की तरह लालची साधु-सन्तों को खिलाने-पिलाने में पानी की तरह रुपया बहाया जा रहा था। लालू इस बात से चिढ़ गया था, ऐसी फज़ूलखर्ची उसे नापसन्द थी। उसे मालूम था कि उसके घर वाले इन नये कर्ज़ों को कभी नहीं चुका सकेंगे और गिरवी रखी हुई ज़मीनें ज़ब्त हो जाएंगी।

डिप्टी कमिश्नर के आने से पहले उसे जो एकाकीपन महसूस हुआ था वह और अधिक गहरा हो गया।

जब भी वह खेतों से लौटता था, तो उसे अपनी मां पड़ौस की औरतों से घिरी हुई दिखाई देती थी। औरतें रस्म-रिवाजों की, और शहर के लोगों को कैसे रेशमी कपड़े और ज़ेवर पसन्द हैं इस बात की चर्चा करती रहती थीं। लालू ऐसे मौकों पर शर्म से सर झुकाकर जानवरों के लिए चारा काटने लगता था। झाड़ू लगाने लगता था या भैंसों को नहलाने लग जाता था। वह हमेशा खेतों में टहलने के लिए अकेला ही जाता था।

खुली हवा में आकर कभी-कभी वह सोचता, वह कितना बुद्धू है जो दुनिया को बदलना चाहता है। उसके घरवाले दकियानूसी खयालों के हैं, इसलिए दूसरों की सलाह का मज़ाक उड़ाते हैं। लालू को अपनी ज़िन्दगी शुरू से लेकर आखिर तक बेपानी नज़र आती थी। वह और उसके घरवाले तबाही के रास्ते पर लुढ़कते जा रहे थे। गांव की खस्ता हालत और तबाही की बात सोचकर वह चिन्तित हो उठा था। वह उनके लिए क्या कर सकता था ? किस ढंग से...

लेकिन इसी वक्त उसे याद आया कि उन लोगों ने उसके साथ कितना बुरा सलूक किया था। उनके अत्याचारों की बात सोचकर उसका मन ग्लानि से भर गया। उसके सामने अपने बापू और दयालसिंह की शक्लें आ गईं जो आसन पर बैठे प्रार्थना करते थे और सर झुकाकर माला जपते थे। उनके होंठों के कंपन से लगता था कि उन्हें मौत से डर लग रहा है और वे मानव-जाति के समस्त दुःख-दर्दों का इलाज करना चाहते हैं। ऐसे वक्त में वे निकृष्ट, घृणित और हारे हुए प्राणी मालूम होते थे। वे न सोचना चाहते थे, न महसूस करना चाहते थे, बल्कि अपनी सारी मुसीबतें और खुशियों को कर्मों का फल या ईश्वर की मर्ज़ी समझते

थे। उनके लिए ईश्वर का अस्तित्व गुरुओं में था।

'अगर ईश्वर है और वह उन लोगों को सचमुच सज़ा दे सकता है जो प्रार्थना नहीं करते और धर्म के विरुद्ध आचरण करते हैं तो ज़रा ईश्वर मुझपर इसी वक्त कहर बरपा करके देखें,' लालू के मन में अचानक आक्रोश भर जाता। 'कहां है ईश्वर ! वह आकर मुझे खत्म कर दे तो जानूं !'

फिर लालू इन्तज़ार करता कि शायद ईश्वर उसे सज़ा देगा लेकिन उसके मन के किसी कोने में डर छिपा रहता और वह पथराई आंखों से गेहूं की बालों को लापरवाही से देखता हुआ आगे बढ़ने लगता।

जाड़ों के बन्द दरवाज़े वसन्त के लिए खुल गए थे। धरती के हरे लहंगों पर धूप बहुत देर तक खेलने लगी थी, वारिसशाह के 'हीर-रांझा' के प्रेमी की तरह। लोग कहते थे कि वारिसशाह शेरकोट के पास ही कहीं रहते थे।

लालू सोचने लगा, 'क्या रांझा सचमुच का आदमी था ? क्या हीर सचमुच की ग्वालिन थी ?'

उसने दूर तक फैले खेतों में हंसते हुए सूरज को आंखें मारते देखा। नदी की रूपहली धार से ऊपर पहाड़ियों और हरी चरागाहों में से गुलाबी किरणें फूट रही थीं। सामने जुते हुए खेतों की काली मिट्टी चमक रही थी, जिसमें घास की कोपलें फूट आई थीं। दूर किसी रहंट की आवाज़ नये छत्तों में मधुमक्खियों के संगीत-सी सुनाई दे रही थी। लालू के अन्दर एक विचित्र कोमल अनुभूति पैदा हुई जिससे उसकी आंखों में आंसू उमड़ आए और नज़रें नीचे झुक गईं।

उसने हीर की शक्ल की कल्पना की, हीर गोरे रंग की थी और अपनी मनमोहक मुस्कान को माथे की त्योरियों में छिपाने की कोशिश करती थी। जिसकी छातियां पहाड़ों की चोटियों की तरह उभरी थीं। सर पर कई मटके एक साथ उठाने की वजह से, जिसका शरीर सांचे में ढला मालूम होता था, जिसके होंठ बीच से चौड़े थे। फूले हुए लहंगे में छिपी जांघों में जीवन का स्पंदन था। वह रांझे के प्यार में बेकरार थी और उसने अपने प्यार को छिपाया नहीं था।

हवा के झोंकों की मन्द सरसराहट में अभी भी जाड़े की याद बाकी थी, हालांकि धरती की गहराइयों में से तरह-तरह की सुगन्धें उठ रही थीं, फूल खिल रहे थे, घास की कोंपलें फूट रही थीं और प्यार किसी प्रेमिका के अभाव में आकांक्षा बनकर रह गया था।

ऐसे मौकों पर उसके भीतर संकीर्णता के दुर्ग में खलबली मच जाती थी। अपने को या किसी और को चोट पहुंचाने की, मानव-जाति को तहस-नहस करने की, सब बुजुर्गों की दाढ़ियों में या औरतों के बालों में राख झोंकने की एक विचित्र इच्छा उसके मन में पैदा होती थी। वह समाज के सभी पवित्र नियमों, अन्ध-विश्वासों को, अपनी सारी भावनाओं को जड़ से उखाड़कर, धूल में मटिया-मेट करना चाहता था, हर चीज़ को बर्बाद करना चाहता था, हर जगह को, हर आदमी को। लेकिन क्रोध और दमित आकांक्षाओं, प्यार और नफरत के तूफान खाइयों और पहाड़ियों के पास पहुंचकर थम गए, जहां कौए कांव-कांव कर रहे थे, चिड़ियां चहचहा रही थीं और तोते कैंची की तरह ज़बान चला रहे थे।

सिर्फ उसके सर में हल्की-हल्की सुरसुरी मच रही थी और वह पक्षी की तरह उड़कर किसी ऐसी जगह जाना चाहता था, जहां उसका कोई परिचित आदमी न हो, जहां वह मनमानी कर सके, जहां कोई···

लेकिन लालू को 'उड़ने के लिए पंख चाहिए या पैसा' कहावत याद आई। ये दोनों चीज़ें उसके लिए दुर्लभ थीं। वह झाड़ियों और नागफनी में खिले रंगीन जंगली फूलों को देख रहा था। खेतों में से धूलभरी पगडण्डियां चरागाहों, नदी के दलदल-भरे किनारों और पहाड़ियों की ढलानों की तरफ जाती थीं।

वह जितनी दूर पहुंचता जाता था, उतना ही वह अपने खयालों की दुनिया में डूबता जा रहा था। ताज़ी हवा के झोंकों ने उसके खून में एक उन्माद-सा भर दिया था और वह खुशी से किलकारियां मारता उछलता-कूदता आसमान की गोद में फैले हुए मैदानों को देखने के लिए उत्सुक था। ऊंची आवाज़ में गाते-गाते अचानक उसके मन में आता कि वह दुनिया में कोई नाटकीय काम करे और अपना लोहा मनवाए। लेकिन नदी के किनारे जहां चीड़, बरगद, बबूल की टहनियां आपस में गुंथ गई थीं और पेड़ों के तनों और टहनियों में लताओं का जाल फैला था, वहां कुकुरमुत्तों की भीनी-भीनी गन्ध आ रही थी। इस सघन जंगल में सूरज की किरणें भी दाखिल नहीं होती थीं। रेंगते हुए कीड़ों-मकोड़ों, पानी में गिरे पत्तों की सील-भरी बू में मौत का सा कसैलापन था। लालू के दिमाग की उत्तेजना काफूर हो गई। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की साधारण चीज़ों को देखकर उसका आत्मविस्मृति का भाव खत्म हो गया। उसे याद आया कि मां ने उसे किसी काम से कहीं भेजा था। उधर उसे भूख भी लगी थी जिसने

उसे घर से बांध रखा था। वह उलटकर घर की तरफ चल पड़ा।

लाल आसमान में उड़ते हुए सारसों, कबूतरों और बत्तखों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, हवा में गीली धरती की सुगंध फैली थी। सूरज धरती पर अपनी तिरछी किरणों से सुनहरी धूल बिछा रहा था, जिसमें खिलती कलियों की चटखन का संगीत था। जब लालू गांव में लौटा तो उसके होंठों पर प्यार के एक गीत की पहली पंक्ति थी जो सर्द आह की तरह उद्दीप्त थी, जिसमें निराशा के ज्वर का ताप था और भविष्य की उम्मीदें थीं।

गांव के जाने-पहचाने वातावरण में आकर उसका उन्माद दूर हो गया। उसने सोचा, वह घर जाकर खाना खाएगा और जानवरों के बाड़े में छत पर बिस्तर बिछाकर पड़ौसी की औरतों के टप्पे और ढोलकी के गीतों के स्वर सुनेगा, जिनका संगीत सुनने वाले के दिलो-दिमाग में छाया रहता था। रात के वक्त औरतें ओसारे की छत पर जमा होकर गाती-बजाती थीं।

लेटे-लेटे उसे नींद आ गई। खुशी के स्वरों ने उसे लपेट लिया। नज़दीक होते हुए भी वे स्वर दूर थे।

एक रात उसे लगा कि उसने फिर माया को देखा है। माया की आवाज़ में आज भी शरारत थी। माया का चेहरा भी उसे दिखाई दे रहा था। वह जानता था कि माया रोज़ रात को अपनी मां के साथ गाने के लिए आती है क्योंकि दोनों परिवारों में सुलह हो गई थी। माया की याद ने उसके दिल के गिर्द घेरा डाल रखा था और उसके खून में हलचल पैदा कर दी थी। उसपर एक उन्माद-सा छा गया; सारा शरीर पसीने से तर हो गया।

वह सोचने लगा, हाय, उसने माया को अपनी गोद में उठाकर बैलगाड़ी से उतारा था। मेले से बाल कटवाकर लौटने के बाद जब माया के भाई ने लालू की पिटाई की थी, और गांव के लोग उसे बदमाश समझने लगे थे तब माया उसकी तरफ देखकर मुस्कराई थी।

लालू का सर चकराने लगा और माथा तप गया। उसके पेट और कमर में एक गुदगुदी-सी मची। माया की सांसें किसी छोटे मासूम बच्चे की तरह थीं। लालू को माया की आंखों की चमक याद आई। उसने कितनी गुस्ताखी से घुग्घी का मज़ाक उड़ाया था! उसके कानों में माया की पतली दानेदार आवाज़ गूंज रही थी। मां की डांट की वजह से वह धीरे बोल रही थी, लेकिन उस आवाज़ में

साहस था। जब लालू उसे बैलगाड़ी से नीचे उतार रहा था तो उसकी छातियां लालू के सीने से छू गई थीं और लालू का दिल ज़ोर से धड़क उठा था!

लेकिन गांव में जब वह उसके पास से गुज़रती थी, तो कभी बात क्यों नहीं करती थी? लालू को लगा कि माया बड़ी ज़ालिम और बेरहम है। अपने बिस्तर पर करवट लेते हुए उसका दिल एक अदृश्य पीड़ा से कसमसा उठा और स्नायु तन गए। उसे लगा कि वह अभी चीख पड़ेगा और माया के सामने जाकर मिन्नत करेगा कि वह ज़रा आकर देखे कि वह उसके लिए कितना तड़प रहा है।

फिर वह लेटकर ठंडी हवा में सांस लेने लगा। वह सोचने लगा कि आखिर वह कौन-सी तरकीब से किस बहाने से मज़ाक ही मज़ाक में उस गरमाई-भरे संसार में कदम रख सकता है जो उससे कुछ गज दूर था।

उसे कोई तरकीब नहीं सूझ रही थी। वह घबराहट महसूस कर रहा था, उसे मालूम था कि चूंकि वह बदनाम है, इसलिए उसे देखते ही किसानों की पत्नियां घूंघट काढ़ लेंगी और उसे अपना-सा मुंह लेकर वापस आना पड़ेगा। खैर किसी सूरत में भी वह माया से नहीं मिल सकेगा, क्योंकि वह अपनी मां के साथ औरतों की भीड़ में ढोलकी के पास बैठी होगी।

वह करवटें बदलता रहा। उत्तेजना से उसका सर दुखने लगा था। वह ईश्वर से नींद की भीख मांगने लगा, उसी ईश्वर से जिससे उसने मुंह मोड़ लिया था।

दिन-भर की थकान से उसकी देह चूर हो रही थी। उसकी आंख कुछ-कुछ लगी ही थी कि उसने सपना देखा वह किसी बाग की तरफ बढ़ रहा है। वहां दो हट्टे-कट्टे संतरी इस तरह खोखियाकर उसकी तरफ झपटे, जैसे अमीर आदमियों के दरवाज़ों के बाहर पहरा देने वाले कुत्ते झपटते हैं। बैल जैसे मुंहों वाले जिन्न और भूत हाथ में कुल्हाड़ियां लेकर उसपर टूट पड़े ताकि वह सौ कलशों वाले सुनहरी मन्दिर में दाखिल न हो सके, जो फव्वारों के पार था, जिसके आसपास संगमरमर के बारजे थे और सघन कुंज थे जिनमें रंग-बिरंगे फूल खिले थे।

१९

अगली पूर्णमासी के दिन दयालसिंह की शादी थी। बूढ़ा दर्ज़ी मिर्ज़ा और मानाबाद से आए तिल्ले और गोटे के कारीगर 'वरी'[1] तैयार कर रहे थे। गांव के हलवाई बादड़ी ने निहालू के आंगन में भट्ठी बनाई थी और वह बिरादरी में बांटने के लिए मैदे की मिठाइयां तैयार कर रहा था। काली कढ़ाइयों में घी खौल रहा था और काला कुत्ता कालू डयोढ़ी के पास लेटा था।

घर के काम में हाथ बंटाने के लिए लालू जल्द ही खेत से लौट आया था। दर्ज़ियों के पास बैठना भी ज़रूरी था ताकि वे कीमती तिल्ला न चुरा लें। लालू के बापू की निगाहें तेज़ नहीं थीं और वह दर्ज़ियों के पास बैठे-बैठे ऊंघने लगता था। बादड़ी पर भी निगाह रखना ज़रूरी था ताकि वह घी का एकाध पीपा न गायब कर दे। गुजरी ने मट्ठा बिलो-बिलोकर बड़ी मेहनत से घी जमा किया था।

शुरू-शुरू में तो लालू को दर्ज़ी की चतुर उंगलियों को देखने में बड़ा मज़ा आता था, जो पीले, गुलाबी और बैंगनी रेशम, टसर और मखमल के कपड़ों पर सुनहली और रुपहली तिल्ले के खूबसूरत नमूने बनाती थीं, लेकिन बाद में लालू इस निठल्लेपन से उकता गया, जो ज़बरदस्ती उसपर लादा गया था। और हलवाई की कड़ाहियों के गिर्द उठती आग की लपटों की गर्मी से उसका दम घुटा जा रहा था।

बैसाख में वैसे भी खेतों में काम बढ़ गया था और लालू को खुली हवा में रहना ज़्यादा पसन्द था।

वसन्त का वैभव चारों ओर छाया था। हाजत-फरागत के लिए प्रभात की खामोशी में उठकर कुहरे की चादर में लिपटे खेतों में जब लालू जाता था तो सुबह का वह दृश्य उसे बेहद सुहावना लगता था। रहंट के पानी में नहाकर मज़ा आ जाता था, चांद और तारों की मंद रोशनी में वह अपने शरीर को टटोलता था। हल्के नीले रंग के आसमान में लाली छाने लगती थी, जिसके साथ ही संसार की गोंद से चिपकी आंखें खुल जाती थीं। जब लालू वापस लौटता था तो उसे जुलाहों के मुहल्ले के मुर्गों की बागें सुनाई देती थीं। रात-भर नरक का सफर तय करके सूरज अपनी पूरी ताकत से फिर निकलता था। इतना प्रकाशपुंज किसी देवता या

१. दुल्हन के कपड़ों को पंजाब में 'वरी' कहते हैं।

सन्त के आसपास भी नहीं दिखाई देता था। वसन्त का सूरज जाड़ों के सूरज की तरह मरियल नहीं था, न उसमें गर्मियों की प्रचण्डता ही थी, बल्कि एक कोमलता थी। हरी घासों और खिलते हुए फूलों के पराग से सुवासित हवा की सुरभि श्वास में भर जाती थी, खेतों की क्यारियां कालीन में बुनी लकीरों की तरह दिखाई देती थीं। ऊपर साफ बिल्लौरी आसमान चमक रहा था, जिसमें पक्षी गा रहे थे और नाच रहे थे।

गांव के नीरस लोगों में भी सद्भावना छा गई थी। किसान एक-दूसरे को और रंभाती हुई गाय-भैंसों को पुकार रहे थे।

शादी की वजह से घर में धूमधाम का उन्मुक्त वातावरण छाया था। दिन-भर लोग आते-जाते रहते थे। गीतों और कहकहों की आवाज़ें हवा में गूंजती रहती थीं। औरतें गुजरी की मदद के लिए आती थीं, क्योंकि गुजरी को इन दिनों बहुत काम था। कुछ हद तक लालू के मन में भी अपने रिश्तेदारों के लिए स्नेह उमड़ आया और खोई हुई सामंजस्य की भावना फिर लौट आई।

लालू दिन-भर व्यस्त रहता था—आटा गूंधता था, ओसारे में और मवेशियों के बाड़े में झाड़ू लगाता था, लकड़ी काटकर लाता था। कभी बादड़ी या दर्ज़ी किसी काम से उसे बाज़ार भेजते थे या उसे कुएं पर रहंट चलाने के लिए जाना पड़ता था, फिर वह जल्द ही सारे काम-काज की देखभाल करने के लिए घर लौट आता था। उसे बहुत-सी ज़िम्मेदारियां सौंपी गई थीं, क्योंकि जो उसे देखता था—किसी न किसी काम से दौड़ा देता था। शादी की तारीख भी बहुत नज़दीक आ गई थी।

कभी-कभी लालू की हड्डियां थकान से दुखने लगतीं और दोपहर को नींद से उसकी आंखें मुंदने लगतीं। बचपन से ही उसे दोपहर को सोने की आदत नहीं थी, तेज़ गर्मी के दिनों में भी नहीं—लेकिन अब उसे दोपहर की नींद में एक नई किस्म का मज़ा आने लगा। सारी सुबह लगातार काम करने के बाद दोपहर की निस्तब्ध हवा में छाए नींद-भरे संगीत की छूत उसे भी लग जाती और बैठे-बैठे उसकी आंखें नींद से भारी हो जातीं या ड्योढ़ी की चारपाई पर लेटकर वह सो जाता।

एक दिन वह इसी तरह आराम कर रहा था। इसी वक्त एक ऐसी घटना घटी जिसने उसकी ज़िन्दगी का रुख मोड़ दिया।

ठंडक-भरी नींद में से उसे एक सम्मिलित स्वर सुनाई दिया, "लालू की मां, क्या हम ड्योढ़ी में बैठकर ढोलकी बजा लें?"

लालू जानता था कि उसकी मां घर में नहीं थी। वह कुम्हारों के यहां रसद रखने के लिए कुछ मटके खरीदने गई थी। केसरी महन्त के लिए चढ़ावा लेकर मठ में गई थी, क्योंकि महन्त जी ने कहा था कि इसी तरह शायद केसरी की गोद भर जाए। लालू मुश्किल से उठकर खड़ा हुआ।

यह देखकर उसकी हैरानी का पारावार न रहा कि दरवाज़े के बाहर बिरादरी की तीन लड़कियों के साथ माया भी खड़ी थी। जब दोनों की निगाहें आपस में मिलीं तो माया ने आंखें नीची कर लीं। माया को देखकर लालू का चेहरा पीला पड़ गया। वह कितनी मासूम, कोमल और खूबसूरत दीख रही थी! धूप में पकी अनाज की बाली की तरह उसका रंग दमक रहा था। उसके हाथों ने, होंठों ने, छातियों ने, नाक ने, बालों ने, ऊंची आवाज़ों और शर्मीली अदाओं ने दुश्मन की फौज की तरह लालू के दिल को घेर लिया। वह पागलों की तरह खामोश खड़ा रहा, उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे—क्या कहे।

कुछ देर बाद उसने उदासीनता का उपक्रम करते हुए कहा, "मां घर नहीं है।" वह मुस्करा पड़ा, उसे डर था कि कहीं माया वापस न चली जाए।

उसने कहा, "लेकिन तुम ढोलकी ले सकती हो, अगर वादा करो कि उसे तोड़ोगी नहीं।" लालू ने हलवाई की तरफ देखा जो पसीने में लथपथ चिपचिपे गोले की तरह कड़ाही के पास बैठा था और मट्ठियां तल रहा था।

"किधर है ढोलकी?" एक लड़की ने पूछा।

"कोठे में एक कीली पर लटकी है। अगर वहां तुम्हारा हाथ न पहुंच सके तो मैं जाकर उतार दूंगा।" लालू ने उत्तर दिया।

"हमारा हाथ नहीं पहुंचेगा, नहीं पहुंचेगा।" एक लड़की ने शोर मचाया।

"रहने भी दे बेवकूफ! हम ढोलकी उतार देंगे। अगर यह हमारे साथ नहीं आना चाहता तो क्यों उसे तकलीफ देना चाहती हो? मैं जाकर ढोलकी ले आती हूं।" कहकर माया कोठे की तरफ भागी।

इस झिड़की से लालू के कलेजे में तीर-सा चुभ गया और वह माया के पीछे-पीछे भागने लगा। बाकी लड़कियां भी पीछे हो लीं।

"ओए, यह क्या हुड़दंग मचा रखा है?" दर्ज़ियों ने रेशमी कपड़ों को अपनी तरफ खींच लिया। बाबा निहालू डर से कांप उठा। उसकी नींद अचानक खुल गई और वह चिल्लाया, "क्या है? चोर! डाकू!"

माया नहीं जानती थी कि ढोलकी कहां लटकी है। वह क्षण-भर के लिए ठिठक गई। लालू दीवार की तरफ लपका। इसी वक्त माया की नज़र भी ढोलकी पर पड़ गई और वह भी उधर झपटी, लेकिन लालू का कद लम्बा था। उसने ढोलकी उठा ली और शरारत-भरे अन्दाज़ में उसे ऊपर हवा में घुमाने लगा।

बाकी लड़कियां भी आ गईं और ढोलकी के लिए छीना-झपटी शुरू हो गई। लड़कियां कहकहे लगाने लगीं। लडकियों ने ढोलकी लेने के लिए बांहें ऊपर फैलाईं। लालू विजेता की तरह ढोलकी को उठाए खड़ा था। वह जानता था कि लड़कियों के खेल में शामिल होकर उसने लड़कियों की प्रशंसा प्राप्त की है। उन स्पर्शों की पुलकायमान अनुभूति को उसने जी भरकर महसूस किया। उनके चमकीले बालों और लालू के चेहरे के बीच थोड़ा-सा ही फासला रह गया था। फिर इस किशोर-सुलभ अभिनय के हर्षोन्माद से उसका चेहरा लाल हो उठा। उसने ढोलकी उन्हें थमा दी और उनके पीछे-पीछे ड्योढ़ी में लौट आया। बूढ़ा और दर्ज़ी इस दृश्य को देखकर हाय-तौबा मचाने लगे।

"वीरा, वीरा, हमें ढोलकी बजाने के लिए कुंजी दे।" लड़कियों ने फिर उसे घेर लिया।

"चाबी तो मेरे पास नहीं है, लेकिन आंगन में जहां पौहे बांधे जाते हैं, वहां कंकरियों के बीच एक पत्थर रखा है। मैं कल उन कंकरियों से शतरंज खेल रहा था।" लालू ने कहा।

"ओह, आओ ढोलकी बजाने की जगह हम बंटे खेलें। वीर लालसिंह भी हमारे साथ खेलेगा।" माया बच्चों की तरह मचलकर बोली, उसने लालू की तरफ देखकर पूछा, "वीर, बंटे खेलेगा ?"

"मैं तुझे आसानी से हरा सकता हूं।"

"तो फिर आओ," माया ने शरारत-भरी मुस्कान से कहा, "पहले तुझे बारी देंगे क्योंकि यह लड़कियों का खेल है। हम नहीं चाहते कि तुम घाटे में रहो।"

लालू ने कांच की गोलियां हाथ में लेकर हवा में उछालीं और उन्हें हथेली की उल्टी तरफ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन सिर्फ दो गोलियां हाथ में आईं। एक गोली ज़मीन पर रखकर उसने दूसरी गोली को उछाला और बाकी गोलियों को एक साथ उठाने की कोशिश की। लेकिन सिर्फ दो कंचे ही उसके हाथ में आए। तीसरी बार वह सारे कंचे हार गया और उसकी बारी खत्म हो गई।

"बारी खत्म, हार गया, हार गया।" लड़कियां चिल्लाईं।

लालू ने आंगन में भागने की कोशिश की, लेकिन लड़कियों ने उसे घेर लिया और कसकर पकड़ लिया। वे उसकी कमीज़ को खींच रही थीं। अपनी दुर्गति होते देखकर लालू का बचपना उमड़ पड़ा और जब माया ने कंचे हवा में उछाले तो लालू ने झपट्टा मारकर सारे कंचे उठा लिए।

"धोखेबाज़! धोखेबाज़! लालू वीर धोखेबाज़ है।" लड़कियां चिल्लाईं। माया बड़े प्यारे ढंग से उससे लिपटकर उसे पीटने लगी, नाखूनों से कुरेदने लगी और उसकी कमर गुदगुदाने लगी। लालू हंसता हुआ उससे पिंड छुड़ाने के लिए ज़ोर से हिलने लगा।

जब यह उपद्रव अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया तो ड्योढ़ी में सरदार बहादुर ने दाखिल होकर कहा, "माया, नी माया, मरजानी, इधर आ, बेशर्म, तू यहां क्या कर रही है? अरे लुच्चे, तुझे मेरी बेटी के साथ छेड़खानी करते हुए शर्म नहीं आती? बच्चू, मैं भी तुझे ऐसा सबक सिखाऊंगा जो तू ज़िन्दगी-भर याद रखेगा।"

क्रुद्ध ज़मींदार अपनी बेटी को घसीटकर अपने साथ ले गया।

२०

"बाबा निहालू! बाबा निहालू! उठो पुलसिया आया है।" हरनामसिंह के छोटे बेटे जीतू ने बूढ़े को झकझोरकर कहा। दोपहर के वक्त बूढ़ा गहरी नींद सो रहा था। दर्ज़ी 'वरी' बना चुके थे और अब निहालू को सतर्क रहने की ज़रूरत नहीं रही थी।

"वीर शर्मसिंह, वीर दयालू! वीर लालू!" छोटा बच्चा आंगन में आकर चिल्लाया।

"क्या बात है? क्यों इतना शोर मचा रहे हो?" बादड़ी हलवाई ने पूछा। धूप से बचने के लिए उसने बोरी को तान कर शामियाना-सा खड़ा कर लिया था। वह वहीं बैठा मिठाइयां बना रहा था।

लेकिन घर के भीतर से और कोई नहीं बोला। शर्मसिंह खरीदारी के लिए

शहर गया था। दयालसिंह खेतों में था। गुजरी और केसरी बिरादरी के लोगों में मिठाई बांटने और 'न्योंद्रे' के लिए बुलावा देने गई थीं, इस मौके पर तमाम रिश्तेदार दूल्हे के बाप को शगन डालते हैं। लालू टोके से चारा काट रहा था। अस्पष्ट-सी आवाज़ें उसके कानों में पड़ रही थीं।

"बाबा निहालू ! बाबा निहालू !" लड़का हलवाई की बात का जवाब दिए बगैर फिर बूढ़े को पुकारने लगा।

बूढ़ा अचानक चौंककर उठ बैठा। उसकी आंखें लाल थीं और वह 'वाह गुरु वाह गुरु' जप रहा था।

"नप्पूसिंह पुलसिया आया है।" लड़के ने निहालू की प्रश्नसूचक दृष्टि के जवाब में कहा।

"ओए आराम से बैठ पुत्तर। तेरी आंखों में नींद नहीं है ?" बूढ़े की नींद अभी पूरी तरह से नहीं खुली थी, उसका खयाल था कि शायद लड़का दोपहर की गर्मी में अकेला महसूस कर रहा था क्योंकि बाकी लोग या तो काम में लगे थे या सो रहे थे।

"पुलसिया।" बच्चे ने दरवाज़े की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"लड़का ठीक कह रहा है," बाहर से कोई बोला। निहालू ने पहचाना, वह आवाज़ नप्पूसिंह की थी, "तुम उठते क्यों नहीं हो ? अपने चोर बेटे लालू को यहां लाओ। उसके नाम का सम्मन है।"

बूढ़े निहालू ने आंखें झपकाईं। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उठकर उसने अपने गले में लिपटी माला उतारी और चारपाई से उतरकर दरवाज़े की तरफ गया।

"ओए जल्दी कर, लड़के को ला। मैं तेरा नौकर तो नहीं कि धूप में खड़ा रहूं," नप्पूसिंह ने अधीर स्वर में कहा। "बाहर निकल, लड़के को चुपचाप मेरे हवाले कर दे। ज़मींदार और तहसीलदार भी आने वाले हैं।"

"क्या बात है पुत्तर ?" निहालू ने सिपाही के पास आकर पूछा।

"लालू कहां है मनहूस बुड्ढे ?" नप्पूसिंह की आवाज़ में रौब के साथ-साथ हमदर्दी भी थी। "जल्दी से उसे यहां बुला। मैं उसके लिए हथकड़ियां लाया हूं।"

"लेकिन बता तो सही, मामला क्या है ? पुत्तर, समझा तो सही !" बूढ़े ने शिष्ट और स्नेहपूर्ण स्वर में पूछा।

"ग्रोए लालू किधर है ?" सिपाही ज़ोर से चिल्लाया, ग्रास-पड़ौस तक के मकानों में खलबली मच गई।

ग्रांगन में मिठाइयां बनाता हुग्रा हलवाई, छोटे-मोटे कामों में मदद करने वाली नौकरानी ग्रौर छोटे-छोटे बच्चे जो ईंधन के ढेर के पीछे जीतू के साथ ग्रांख-मिचौनी खेल रहे थे, भागकर ड्योढ़ी में जमा हो गए।

"लालू ने क्या जुर्म किया है जो तुम यहां ग्राए हो ?" बूढ़ा क्रोध से गरजा। "उसने क्या किया है ?" बूढ़े की नज़रें ग्रांगन में खड़ी भीड़ में ग्रपने बेटे को तलाश करने लगीं।

"ग्रभी तुझे बताता हूं कि उसने क्या किया है। उसे बुला तो सही।" सिपाही ने नर्म ग्रावाज़ में जवाब दिया। उसे निहालू के गुस्से से डर लग रहा था। निहालू ग्रपने तेज़ मिजाज़ के लिए मशहूर था।

इसी वक्त लालू लोगों को परे हटाता हुग्रा ड्योढ़ी में ग्रा गया।

"ग्रोए नप्पू, इस बदमाश को पकड़कर हथकड़ी लगा दे," ज़मींदार की ग्रावाज़ सुनाई दी जो गली के कोने में ग्राकर खड़ा हो गया था।

"हथकड़ियां ? किसलिए ?" लालू ने गुस्से से पूछा। फिर गली में खड़े लोगों को देखकर उसने पूछा, "हथकड़ियों की क्या बात हो रही है ?"

"पकड़ लो इसे।" ज़मींदार ने हुक्म दिया। उसके सिर पर पगड़ी थी लेकिन बदन पर सिर्फ एक जांघिया था ग्रौर पैरों में खड़ाऊं थीं।

"हथकड़ी लगा के दिखा तो सही ?" लालू ने ग्रपना स्वर संयत बनाने की कोशिश की। उसकी इच्छा-शक्ति जड़ हो गई थी ग्रौर पुलिस के डर से उसकी टांगें कांप रही थीं।

"ग्रोए नप्पूसिंहा, मैं कहता हूं, इस बदमाश के हाथों में हथकड़ी डाल दे !" सरदार बहादुर ने चिढ़कर कहा। उनकी ग्रावाज़ दाढ़ी के जंगल में से ग्रस्पष्ट-सी सुनाई दे रही थी।

"लेकिन उसने क्या किया है ?" निहालू ने गुस्से से कांपती ग्रावाज़ में पूछा। "ग्राखिर उसका क्या जुर्म है जो तुम इस तरह घोड़े पर सवार होकर ग्राए हो ?"

घबराहट से लालू के स्नायु तन गए थे ग्रौर उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह जानना चाहता था कि इस धमकी का ग्राखिर क्या कारण हो सकता है, लेकिन गुस्से की वजह से उसकी सोचने की ताकत गायब हो गई थी। वह पसीने

से तर हो गया था, और अपने को असहाय महसूस कर रहा था।

"इसने क्या किया है?" बूढ़ा निहालू ज़ोर से गरजा। गुस्से से उसकी टांगें कांप रही थीं। "लोगो, वाहगुरु का नाम लो। कितना अंधेर है! कैसा ज़ुल्म हो रहा है!"

"इस कम्बख्त ने हमारे खेत में से चारे की तीन गठरियां चुराई हैं।" ज़मींदार ने कहा। उसके स्वर में अहंकार और क्षुद्रतापूर्ण संतोष में संघर्ष चल रहा था। "मैंने पहले भी सुना था कि यह चोरी करता है। आज दोपहर सोने की बजाय मैं पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। देखा तो यह दुष्ट घास काट रहा था। मेरे दो मुज़ारों ने इसे चारा घर पहुंचाते देखा। वह चारा तुम्हारे घर में रखा है। नप्पूसिंह इसे तहसील थाने की हवालात में ले जाएगा। जब वक्त आएगा तो अदालत में मैं यह जुर्म साबित कर दूंगा। ओए नप्पू, इसे गिरफ्तार कर। यह मेरा हुक्म है!" सरदार बहादुर की आवाज़ इस वक्त ठंडी थी।

"ओए, तूने इनकी घास चुराई थी?" निहालसिंह ने गुस्से से लाल-पीला होकर बेटे की तरफ देखा। इस दोषारोपण से बूढ़ा अपने को बेहद अपमानित महसूस कर रहा था।

"चुराई है।" ज़मींदार ने कहा।

"यह झूठ है। सात बार जांच-पड़ताल करके भरोसा करना बापू। मैं अभी चारा काट रहा था। दयालसिंह रोज़ कुएं के पास कट्ठा रख जाता है। मेरा खयाल था कि उसने ज़मींदार के किसी नौकर से चारा खरीदा है। ज़मींदार के खेत से मैंने चारा काटा हो—इतना गन्दा झूठ मैंने कभी नहीं सुना।" लालू ने तनकर जवाब दिया।

"क्या आज तक कभी चोर ने भी चोरी कबूल की है?" सरदार बहादुर लोगों को प्रभावित करने के लिए व्यंग्यपूर्ण हंसी हंसे। उनकी तोंद सुराही की तरह हिलने लगी। उन्हें लालू के मुंह से यह सुनकर खुशी हुई कि यह चारा उन्हीं-के खेतों से आया था।

"मैं साफ-साफ कह रहा हूं कि मैं चोर नहीं हूं। अगर मुझे फिर चोर कहा तो मैं तुम्हारा सर फोड़ दूंगा।" लालू गुस्से से चिल्लाया।

"मैंने खुद तुम्हें चोरी करते देखा है। इसलिए गाली-गलौज का और मुकरने का कोई फायदा नहीं। भलमानसी से हथकड़ियां पहन लो और यहां से चले जाओ। कौन सच बोल रहा है, कौन झूठ, इसका फैसला कचहरी में होगा।"

यह कहकर ज़मींदार हाथ हिला-हिलाकर लोगों के सामने अपनी मासूमियत साबित करने की कोशिश करने लगा।

"डरपोक, लुच्चे, बदमाश, शिकारी कुत्ते !" ज़मींदार के पाखण्ड से क्रुद्ध होकर लालू ने अपनी बांह उठाई और ज़मींदार की तरफ बढ़ा।

"हाय, हाय, नी, हाय, हाय ! ज़रा देखो इसकी करतूतें !" ज़मींदार की पत्नी चीख-पुकार मचाती हुई आई। "उलटा चोर कोतवाल को डांटे, वे लोगो, ज़रा देखो तो सही। तुम सब मेरे गवाह हो। ज़रा इसकी करतूतें तो देखो। पहले तो इस लुच्चे ने मेरी बेटी को पकड़कर उसे खराब करने की कोशिश की। फिर हमारे खेतों में चोरी की। अब ज़रा इसकी गुस्ताखी देखो, यह हमारे सरदार बहादुर पर हाथ उठा रहा है। न जाने कैसा बुरा दिन निकला है जो हमारी इज़्ज़त पर हमले हो रहे हैं। अगर मेरा लड़का यहां होता तो इस डाकू को हाथ उठाने का मज़ा चखा देता। इसे अपनी हैसियत का भी खयाल न रहा, जो हमारे सरदार साहब से इस तरह बात कर रहा है !" सरदारनी ने अपने तेल से चुपड़े सर को दुपट्टे से ढक लिया।

लालू अपने बाप की तरफ मुड़कर बोला, "यह साज़िश है, चोरी की मनगढंत कहानी बनाई गई है क्योंकि माया मेरे साथ ड्योढ़ी में खेल रही थी। मैं गुरु नानक की और सारे गुरुओं की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं निर्दोष हूं ! मैंने कोई बुरा काम नहीं किया।"

ज़मींदार की पत्नी ने आगे आकर कहा, "जा वे जा, लुच्चे, जब हम मेले में जा रहे थे तो मैंने अपनी आंखों से देखा था। तुम चारे की गाड़ी के ऊपर बैठकर मेरी बेटी को खराब करने की कोशिश कर रहे थे। बदमाश कहीं के, तू गांव के शोहदों के साथ शहर में मुंह काला करने गया था। तेरी काली करतूतों का सबको पता चल गया है। यह शरम की बात है कि तेरे जैसा बदमाश इस गांव में रहे।"

सरदारनी अपना चेहरा ढांपकर ज़ोर-ज़ोर से हांफने लगी।

"जब तक यह खसमनूंखाना यहां है, किसकी बेटी की इज़्ज़त बची रह सकती है ? किसका बेटा इसकी बुरी संगत से बच सकता है ?"

फिर दुर्भावना और क्रोध से वह अपना मुंह सिकोड़कर बोली, "क्या लोग नहीं जानते कि तू अपने केश कटवाकर आया था ? क्या लोग तेरी नस-नस को नहीं पहचानते ?"

ज़मींदार ने हुक्म दिया, "ओए नप्पू, इसे पकड़कर हथकड़ी लगा दे। ज़्यादा बातें करने की ज़रूरत नहीं।" लालू जवाब में तनकर खड़ा हो गया। उसकी खामोशी बहुत ही रहस्यमय और अर्थपूर्ण थी।

निहालू ने मुक्का तानकर कहा, "ज़रा इसे छूकर तो दिखाओ! तेरे जैसा धोखेबाज़ दिन के वक्त सीधे-साधे लोगों को तंग करता है और रात को मुंह काला करता है। जो खेतों में से खीरे चुराकर ले जाते हैं उनकी गर्दन कोई नहीं मरोड़ता। मेरे बेटे सच्चे हैं और बेटे तो क्या, मेरी गाय-भैंसें भी तेरे खेतों में कदम न रखें। तूने गरीबों की ज़मीनें हड़पी हैं। तुझे गलतफहमी हो गई है। हमारी भी दुनिया में इज़्ज़त है। लोग हमारे नाम पर लानत नहीं भेजते। धोखेबाज़ ज़ालिम, तेरा खयाल है कि तू कचहरी के भीतर और कचहरी से बाहर मेरे परिवार को तबाह कर देगा! तूने ज़बरदस्ती मेरी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया है और अब तू मेरे बेटे को जेल भिजवाना चाहता है। लेकिन तू भूल गया है कि तेरा वास्ता तगड़े किसानों से पड़ा है मरियल लोगों से नहीं। ज़रा लालू को छूकर तो दिखा!"

"जो आदमी दूसरों के झगड़ों में दखल देता है उसकी शामत आती है। तू इस मामले में न पड़," सरदार बहादुर ने कहा। निहालू के तने हुए मुक्के को देखकर वे घबरा उठे थे। वे कभी एक पैर का सहारा लेते थे तो कभी दूसरे का। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। अपने दुश्मनों को देखकर उन्होंने नज़रें दूसरी तरफ फेर लीं और भीड़ में खड़े उन लोगों को देखा जो फुसफुसा रहे थे, एक-दूसरे को कुहनियां मार रहे थे और झगड़े का हर शब्द सुनने के लिए बेचैन थे। ज़मींदार ने कठोर दृष्टि से सिपाही की तरफ देखा।

नप्पूसिंह ने निहालू से जैसे माफी मांगते हुए कहा, "बड़े अफसोस की बात है, लेकिन मैं क्या कर सकता हूं?" वह लालू की तरफ बढ़ा।

"खबरदार जो उसे हाथ लगाया!" निहालू ने अपनी बांह से लालू को बचाने की कोशिश की।

नप्पू रुक गया। वह बड़ा शरीफ सिपाही था। उसका स्वभाव उसकी कर्तव्य-परायणता में अक्सर बाधा डालता था। अब फिर उसके दिल में कर्तव्यपरायणता और हमदर्दी के बीच संघर्ष हो रहा था।

"नप्पू, उसे गिरफ्तार कर ले! क्यों झिझक रहा है? सम्मन तेरे पास हैं। एक-दो बार तो गलतियां नज़रअंदाज़ भी की जाती हैं लेकिन तीसरी बार…"

नप्पू अभी भी हिचकिचा रहा था कि ज़मींदार लोगों की भीड़ को चीरता हुआ गैंडे की तरह आगे बढा। दोनों पक्षों के इरादों की टकराहट को देखकर डर से लोगों के चेहरे पीले पड़ गए।

"आ वीर आ।" नप्पू ने आगे बढ़कर लालू का कंधा थपथपाया।

"मेरे बदन को मत छू। और इन्सान की तरह बात कर।" लालू ने चीते की तरह उछलकर कहा।

लालू का चेहरा प्रतिशोध की भावना से दमक रहा था और वह ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहा था।

ज़मींदार ने आखिरी बार हुक्म दिया, "पकड़ भी !" वह दांत भींच रहा था।

लालू ने चेतावनी-भरी आवाज़ में कहा, "अगर तूने मुझे छूआ तो सूअर ! देख लेना !"

निहालू ने अपनी बांह आगे बढ़ाई और आंख झपकाकर कहा, "पुत्तर, होशि-यार रहना !" डर और स्नेह से उसका चेहरा शिथिल हो गया।

"बापू, मुझे ऐसे ही रहने दो," लालू के स्वर में नई किस्म की शालीनता और स्वाभिमान था। इस भद्दे हमले का सामना करने की शक्ति उसमें आ गई थी। "इन लोगों ने गांव में मेरे और माया के संबंध में झूठी अफवाहें फैलाई हैं। मैं जानता हूं, यह बूढ़ा लोमड़ कौन-सी साज़िशें कर रहा है। मैं चारा कुएं के पास से उठाकर लाया था। अगर दयालसिंह ने चारा नहीं खरीदा तो ज़रूर हमारे दुश्मनों ने वहां रख दिया होगा और अब ये मेरी गिरफ्तारी के लिए सम्मन लेकर आए हैं। मैं हवालात नहीं जाऊंगा। सम्मन की ऐसी-तैसी ! ये लोग इतने कमीने-पन पर उतर आए हैं—और चाहते हैं कि लोग इनके झूठ और फरेब पर यकीन कर लें।"

गुस्से से लालू का गला भर्रा गया और उसे कमज़ोरी का अहसास हुआ।

"इसे इस बात की नाराज़गी है कि साहब ने मुझे स्काउटों का लीडर बना दिया है।" उसकी आवाज़ और भी भर्रा गई। "पराई ज़मीनें हथियाने वाले इस लुच्चे को डर है कि कहीं हमारा रसूख न बढ़ जाए···"

"ओए तू अपने को बड़ा चालाक समझता है न !" ज़मींदार की नफरत-भरी आवाज़ सुनाई दी। "चोरी, यारी और आग छिपाए नहीं छिपती, तेरी गुस्ताखी

की हद हो गई है। चोर तो तू है ही, साथ में लुच्चा और बदमाश भी है। तुझे बुज़ुर्गों का रत्ती-भर लिहाज़ नहीं। तूने मुझे गालियां दी हैं, मेरी बेइज़्ज़ती की है। चोरी के साथ-साथ मैं तुझपर मानहानि का भी दावा करूंगा। चल हमारे साथ।"

कर्कश आवाज़ के साथ उसका सारा शरीर हिलने लगा। लालू ने पीछे हट-कर अपने दुश्मन को सर से पैर तक देखा। वह बुज़ुर्गपन और धार्मिकता के मुखौटे के पीछे छिपे बदकार और नफरत के रूप का सही अन्दाज़ लगाने की कोशिश कर रहा था। उसकी नज़रें देखकर ज़मींदार ने गुस्से से अपना मुक्का तान लिया।

ज़मींदार के पसीने से तर, मनहूस और क्रोध से विकृत चेहरे को देखकर क्षण-भर के लिए लालू का मन वितृष्णा से भर गया। उसे लगा कि इस गर्मा-गर्मी का उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। उसे ये सारी बातें कमीनी, घृणित और मनहूस मालूम होने लगीं। उसके होंठों पर घबराहट-भरी मुस्कराहट छा गई और वह असमंजस-भरी आंखों से ज़मींदार की तरफ देखने लगा।

ज़मींदार ने इसे गुस्ताखी समझा और वह पागलों की तरह आगे बढ़ा।

लालू भयभीत होकर पीछे हट गया।

"गंदा कुत्ता कहीं का, घर लौट जा।" कहकर लालू ज़मींदार के सांड़ जैसे हमले के जवाब में पीछे हट गया।

लेकिन हरबंससिंह का ऐय्याश शरीर इतनी मेहनत का आदी नहीं था। फिर उसने खड़ाऊं पहन रखे थे। जब वह लालू की तरफ बढ़ रहा था तो उसका पैर फिसल गया, क्षण-भर के लिए वह लड़खड़ाया और गंदे पानी की नाली में गिर पड़ा—आसपास खड़े लोगों पर कीचड़ के छींटे उछलकर गिरे।

भीड़ भय से चीख पड़ी। कुछ औरतें पतली आवाज़ों में विलाप करने लगीं और देवताओं और संतों को पुकारने लगीं।

लालू ने क्षण-भर के लिए नाली में लथपथ ज़मींदार को देखा। जब नप्पू घबराकर ज़मींदार को उठाने के लिए झुका तो लालू को बेहद घबराहट महसूस हुई। वह वहां से भाग गया।

"ओए पुत्तर! किधर जा रहा है? मत जा! सारा मामला ठीक हो जाएगा!" निहालू ने आवाज़ दी।

"ओए क्या बात है ? क्या बात है ?" हरनामसिंह ने पूछा। वह खेतों से लौटकर गली में से आ रहा था। उसने हाथ बढ़ाकर लालू को रोकने की कोशिश की।

"कोई बात नहीं," लालू ने थोड़ी देर के लिए अपनी चाल धीमी कर दी, "तुम्हारे तवेले की सारी मुसीबतों की जड़ वह शिकारी कुत्ता है! मैं इस मनहूस गांव में नहीं रहूंगा। मैं..."

लेकिन उसकी आवाज़ रुंध गई थी। वह इससे आगे कुछ न कह सका। निराश भाव से बांहें ऊपर उठाकर वह आगे चला गया। फिर कुछ देर ठिठक गया और गली में भागने लगा।

"ओए, आकर मेरी बात सुन! ओए आ जा! ओए रुक जा!" उसका बाप पीछे से मिन्नतें कर रहा था।

हरनामसिंह ने सोचा था कि घर में किसीसे झगड़कर लालू का दिमाग भन्ना गया होगा, खेतों में टहलने के बाद उसका दिमाग ठीक हो जाएगा और वह लौटकर सुलह कर लेगा। इसीलिए उसने लालू को रोकने की या वापस लाने की कोशिश नहीं की।

२१

लालू ज़मींदार, सिपाही और गांव की पकड़ से सात मील दूर निकल आया था और मानाबाद की तरफ जा रहा था। इस वक्त तक भी वह उस अज्ञात भय से छुटकारा नहीं पा सका था जिसने उसके दिल को जकड़ लिया था। रह-रहकर वह खामोश हो जाता था और निराशा से उसका सर नीचे झुक जाता था।

उसने अपने उस चेहरे के भावों में भी नाटकीयता लाने की कोशिश की थी, जो उसकी तरफ देख रहा था। उसने मुट्ठी बांधकर किस्मत को, ज़िन्दगी को और अपने मां-बाप को कोसा। उसके भीतर गुस्से की लहरें ठाठें मार रही थीं और वह वसन्त के मौसम की दोपहर में भाग निकला था, जो धीरे-धीरे गर्मी की शक्ल ले रही थी।

फिर दर्द की ये टीसें थम गईं और लालू ने अपना रूप पहचाना—बियाबान धरती की धूल-भरी सड़क पर अकेला चलता हुआ दयनीय प्राणी, जिसकी सारी भावनाएं गायब हो गई थीं। सिर्फ उसे रह-रहकर मतली आ रही थी, जिससे उसकी आंतें हिल उठी थीं और हलक सूख गया था। फिर उसने जीभ को तालू पर ले जाकर 'ट्चा' की आवाज़ निकाली।

कहीं-कहीं जब उसे हवा के झोंके के साथ किसी तलैया की या पेड़ों के झुर-मुट की ठंडक महसूस होने लगती थी या झाड़ियों की सरसराहट होती थी तो वह ठंडी सांस लेकर सोचता था, 'लगता है मैं दुःख उठाने और उदास रहने के लिए ही इस दुनिया में पैदा हुआ था।' उसकी पिंडलियां कमज़ोरी से दुख रही थीं और उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई थी।

'मैंने उस कुत्ते पर हाथ क्यों नहीं उठाया?' मन ही मन उसने वह दृश्य दुहराया, जब हरबंससिंह धमकी देता हुआ उसके बापू की तरफ बढ़ा था और उसने बापू से पीछे हट जाने को कहा था। 'मैंने क्यों नहीं उसे गाली दी? क्यों उसे सबक नहीं सिखाया? मैंने क्यों नहीं साबित किया कि वह मेरे खिलाफ झूठे इल्ज़ाम लगा रहा है? क्यों नहीं?...'

वह अपने-आपसे प्रतिवाद कर रहा था और धूप में उसका चेहरा झुलस गया था और पसीने से तर हो गया था।

फिर उसका गुस्सा पिघल गया और वह भौंचक्का-सा आगे बढ़ने लगा। उसके दिल में न नफरत थी, न खुशी, न ही कोई दर्द था।

साहबों, अमीर व्यापारियों, वकीलों और ज़मींदारों के बंगलों के अहातों में फलों के दरख्त लगे थे, उधर से गुज़रता हुआ वह शहर के नज़दीक पहुंच गया। उसके दिल का गुबार कुछ शान्त हो गया था।

एक साफ-सुथरे टेनिस कोर्ट में कुछ प्रतिष्ठित लोग खेल शुरू करने वाले थे। उसका दिल स्पर्धा से जलने लगा। उसने सोचा कि उस जैसा गंवार इस सभ्य दुनिया के लिए हमेशा बेगाना बना रहेगा।

आगे जाकर जब उसने रेलवे के सिगनलमैन को लकड़ी का फाटक बंद करते देखा, क्योंकि एक ट्रेन उधर से गुज़रने वाली थी, तो लालू को वहीं रुक जाना पड़ा। उसने अपने को अपमानित महसूस किया।

फाटक खुलने पर जब सिगनलमैन को छोड़कर वह आगे बढ़ गया तो उसे

अपने चिड़चिड़ेपन और अधीरता पर गुस्सा आया। 'मैं थक गया हूं।' वह बड़बड़ाया।

शहर का फाटक अब करीब था। राजा रामसरनदास की शानदार पुरानी हवेली के सामने मोचियों का बाज़ार था, जहां टूटी-फूटी खोलियों में लोग रहते थे। हवेली में अब एक सराय थी और कुश्ती का अखाड़ा था। उसने अपनी इच्छा-शक्ति को मज़बूत बनाया और तेज़ कदमों से उस हिस्से को भी पार कर गया।

उसने सोचा कि वह फाटक के भीतर पहुंचकर जो भी ढाबा दिखाई देगा, वहीं रुककर कुछ खाएगा, क्योंकि उसे अपनी थकान का अहसास हो गया था। लेकिन उसके भीतर अब एक अजब किस्म की घबराहट महसूस हो रही थी। शहर के सभी नज़ारे और भीड़-भाड़ और शोरगुल उसे बुरा लग रहा था। दाढ़ियों वाले, मुंडे चेहरे वाले, पगड़ियों वाले, नंगे सरों वाले, टोपियों वाले, कुल्लों वाले, लम्बे, नाटे मोटे-दुबले आदमी, हलवाइयों की दूकानें, चिथड़ों की दूकानें, जूतों की दूकानें, नाइयों की दूकानें सब बेमानी लग रही थीं। तांगों के अड्डे पर हिनहिनाते घोड़े, सड़कों पर 'हेंचू हेंचू' करते हुए गधे, खड़खड़ करते हुए तांगे, फिटन गाड़ियां और इक्के पागलों की तरह भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे।

लालू एक कुएं के नज़दीक से गुज़रा जहां माथे पर तिलक लगाए एक ब्राह्मण पीतल के लोटे से प्यासे लोगों को पानी पिला रहा था। लोग हथेलियों से ओक लगाकर पानी पी रहे थे। उसने अपना माथा पोंछा और पानी के उस हौज़ की तरफ देखने लगा, जिसमें से जानवर पानी पी रहे थे और जहां की हवा शीतल थी। लालू की कनपटी की नसें फड़क रही थीं और गर्दन भनभना रही थी।

"ओए पेंडू[1], अब तेरी बारी है।" ब्राह्मण ने लालू को खोया-खोया देखकर आवाज़ दी।

लालू ने चुपचाप यह अपमान सह लिया और ओक बढ़ाकर पानी पीने लगा। उसने इस डर से आंख उठाकर ब्राह्मण की तरफ नहीं देखा कि कहीं उसकी नफरत फिर न जाग पड़े। ब्राह्मण ने छूत के डर से लोटा ऊपर उठा रखा था। लालू ने पहले हाथ धोए फिर पेट-भर पानी पीकर तृप्ति की डकार ली।

और अब पहली बार उसे अहसास हुआ कि दुनिया में कोई ऐसी जगह नहीं है जहां वह शरण ले सकता हो।

१ पेंडू—ग्रामीण

उसने तहमद के छोर से बंधी गांठ को टटोला। खुशकिस्मती से सुबह बाज़ार जाते वक्त वह गांठ में एक रुपया बांधकर ले गया था। कम से कम खाना तो वह खा ही सकता है। लेकिन एक रुपया कितनी देर चलेगा? वह स्कूल के होस्टल में अमरसिंह के कमरे में जाकर रह सकता है लेकिन पुलिस ज़रूर उसका पीछा कर रही होगी और वे लोग सबसे पहले अमर के कमरे की तलाशी लेंगे।

वह असमंजस में खड़ा अपने इर्द-गिर्द के दुश्मनी से भरे वातावरण को देख रहा था। उसे कहीं आश्रय नहीं मिल सकता था। उसकी जेब में पैसे नहीं थे, इसलिए दुनिया की रंगत एकदम बदल गई थी। उसकी आंखों के सामने विचित्र, अजनबी आकृतियां घूम रही थीं, जो एक-दूसरे के लिए भी अजनबी थीं।

"आओ बहादुरो! समुन्दरों के पार के खूबसूरत मुल्कों की सैर करो! आओ बहादुर लड़को! शेरनियों के जायो! आकर बादशाह सलामत की फौज में भर्ती हो जाओ!" हवलदार लहनासिंह मोटी, खरखरी आवाज़ में चिल्ला रहा था।

यह भी अजब शकुन था। लेकिन लालू अन्धविश्वासी नहीं था। कुछ महीने पहले उसने मेले में इस व्यक्ति को भाषण देते देखा था और उसका मज़ाक उड़ाया था। अब वह उसके दुख-दर्द को क्योंकर सुनेगा?

'फौज—अगर मैं फौज में सिपाही भर्ती हो जाऊंगा तो मेरी हैसियत सरकारी नौकर की हो जाएगी। फिर पुलिस मुझे हाथ नहीं लगा सकती।' अचानक इस विचार ने उसे प्रफुल्लित कर दिया। 'और फौज में मुझे जो तनख्वाह मिलेगी उससे मैं घर वालों का कर्ज़ा उतार सकूंगा।'

क्षण-भर के लिए उसने इस प्रस्ताव के बारे में सोचा। उसके दिल में उम्मीद तो पहले से ही पनप रही थी, वह अपने को पक्षी की तरह आज़ाद महसूस कर रहा था। अब उसे अकेलेपन और आश्रयहीनता से मुक्ति मिल जाएगी। लेकिन वह फिर इस मामले पर गौर करना चाहता था। नहीं, उसे फौज में नहीं जाना चाहिए। उसके दिमाग में एक सन्देह कौंध गया।

हवलदार लहनासिंह हाथ में नापने का गज़ लेकर एक मंच पर खड़ा था, आस-पास लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। लालू की इच्छा हुई कि वह सर पर पैर रखकर वहां से भाग निकले।

कुछ देर पहले वह भीड़ में जाकर अपना नाम रंगरूटों में लिखवाना चाहता था। फिर उसे डर लगा कि कहीं पुलिस उसका पीछा न कर रही हो और सुरक्षित

स्थान पर पहुंचने से पहले ही उसे गिरफ्तार न कर ले। जब तक उसका नाम बाकायदा फौज में नहीं लिखा जाता, उसके सर पर खतरा मंडराता रहेगा। जो भी हो, हवलदार के पास वह अपेक्षाकृत सुरक्षित रहेगा क्योंकि हो सकता है कि हवलदार को नये रंगरूट मिलने में दिक्कत हो रही हो और वह उसको पुलिस के हवाले न करे। लेकिन उसे जल्दबाज़ी नहीं दिखानी चाहिए, वरना भंडा फूट जाएगा। हवलदार अभी भी पूरी ताकत से चिल्ला रहा था। लालू के दिल में धुकुर-पुकुर मची थी। उसके चेहरे की रंगत फीकी पड़ गई थी और वह चोरों की तरह इधर-उधर ताक रहा था और चेहरे पर लापरवाही की मुद्रा लाने की कोशिश कर रहा था।

"हिज़ मेजेस्टी, किंग एम्परर हिन्दुस्तानी फौज के कर्नैल हैं। कभी-कभी वे साफा भी बांधते हैं, ताकि लोग देख सकें कि वे भी हमीं लोगों में से एक हैं। उन्नीस सौ ग्यारह के दिल्ली दरबार में मुझे शहंशाह से हाथ मिलाने का फखर हासिल हुआ था। मैं सच कहता हूं कि उस नज़ारे से बढ़कर शानदार नज़ारा कोई नहीं जब चुने हुए जवान, जमादार, सूबेदार, लफटैन, कप्तान, मेजर, कर्नैल, जरनैल और महाराजा अपने रुतबे के मुताबिक खड़े होते हैं और सबसे आखिर में जंगी लाट और बादशाह खुद खड़े होते हैं। फिर सब नारा लगाते हैं, 'हुर्रा!' शान्ति के ज़माने में भी तुम्हें हर महीने ग्यारह रुपये नकद बचते हैं। राशन, खाकी वर्दियां, सफेद वर्दी और सारे ऐश मुफ्त में। जंग में तमगे मिलते हैं, तनख्वाहें बढ़ जाती हैं, ओवरसीज़ भत्ता मिलता है, जो घर वालों को मिलता रहता है और आप शान से नये-नये मुल्कों की सैर करते हैं। तुम जैसे गंवार और निकम्मे लुच्चों को और क्या चाहिए? इससे ज़्यादा सिंहनियों के जायों को क्या चाहिए कि तुम गुरुओं और शहीदों का नाम लेकर बाज़ों की तरह दुश्मन पर टूट पड़ो और उनका सफाया कर दो?"

क्षण-भर के लिए हवलदार ने सर ऊपर उठाकर आसमान की तरफ देखा और गहरी सांस ली। लालू इसी वक्त दायरे में घुस जाना चाहता था लेकिन हवलदार का धुआंधार भाषण फिर शुरू हो गया।

"अंग्रेज़ी सरकार ने तुम्हें नहरें दी हैं। अंग्रेज साहबों ने रेलें और सड़कें बनाई हैं; सरकार चाहती है, तुम्हें अच्छी तनख्वाह दी जाए और तुम अपने बहादुर पूर्वजों की परम्पराओं को कायम रख सको। तो फिर आओ योद्धाओं के सुपुत्रो!

राजपूतो, बहादुर सिक्ख शेरो, गुरुओं की औलाद, आओ, आकर अंग्रेज़ साहबों के साथ मिलकर अपने शहंशाह और मुल्क के लिए लड़ो। चलो चलकर काले समुन्दरों के पार के मुल्कों की सैर करो, जहां खूबसूरत मेमनियां और हूरियां हैं। आकर अपनी बहादुरी दिखाओ, शाही वर्दी पहनो, सिगरेट पियो, मुफ्त में रम पियो, अंग्रेज़ी मिठाइयां और चॉकलेट खाओ! आकर चलती-फिरती तस्वीरें देखो, समुद्री जहाज़ों में सैर करो जो चलते-फिरते शहर हैं; आकर तमगे जीतो, जागीरें जीतो और बेशुमार दौलत जीतो।"

हवलदार फिर सांस लेने के लिए रुका। अभी उसने अपना भाषण फिर से जारी नहीं किया था कि लालू उछलकर दायरे के भीतर आ गया। उसे अब बाकी लोगों की मौजूदगी का अहसास नहीं रहा। उसका सारा ध्यान अपने उद्देश्य पर केन्द्रित था। लगता था कि वह पहाड़ी की ढलान पर से उतरकर नीले रंग के पानी वाले किसी ऐसे सरोवर की तरफ बढ़ रहा है जिसमें वह हमेशा के लिए अपने को डुबो देगा।

"शाबाश! शाबाश!" हवलदार ने कहा, "तूने इस शहर की नाक रख ली। तूने अपनी मां की कोख को धन्य कर दिया। तू अपने बाप की औलाद है! वाह! कैसा तगड़ा जवान है।" यह कहकर वह मंच पर से नीचे उतर आया। शर्म से लालू का चेहरा सुर्ख हो गया था। "शाबाश लड़के, तू हिन्दुस्तान के सभी शूरवीरों से ज़्यादा बहादुर है। अच्छा!"

वह लालू की मिसाल देकर एक और लम्बा-चौड़ा भाषण देना चाहता था। लालू ने कहा, "अच्छा मैं तो ठीक हूं, देखो एक और लड़का भर्ती होने आया है।"

"वाह! वाह!" हवलदार ने कहा और वह नये रंगरूट की नापाजोखी में लग गया। "वाह, वाह!"

अब तो सिलसिला शुरू हो गया, देखादेखी, एक-एक करके चार-पांच आदमी दायरे में आ गए।

२२

हवलदार सिंहनियों की औलाद को मानाबाद से इकट्ठा करके सीधा ही रेजीमेंट में ले जाता था। उसने नये रंगरूटों को बताया कि वह उन्हें शाम को करांची मेल से ६८वीं राइफल्ज़ में भर्ती करवाने के लिए फिरोज़पुर छावनी ले जाएगा। उनका डॉक्टरी मुआइना करवाने के बाद परसों वह सिंहनियों के और बेटों को भर्ती करने के लिए मानाबाद लौट आएगा। वह सात सिंह-शावकों को अपने साथ मानाबाद स्टेशन ले गया। सड़क के एक ढाबे पर उसने उन्हें खूब खिलाया-पिलाया। उनके लिए टिकटें खरीदीं और पुलिस के एक सिपाही की मदद से ट्रेन के आने से कुछ मिनट पहले ही उन्हें प्लेटफार्म पर पहुंचा दिया।

तीन किस्म की सब्ज़ियां, गोश्त, चावल और चपातियां खाने के बाद लड़के खुशी से चहक रहे थे। उनमें अभी से एक नई किस्म का आत्मविश्वास पैदा हो गया था और वे तीसरे दर्जे के वेटिंग रूम में जानवरों की तरह ठुंसे मुसाफिरों की दुर्दशा पर हमदर्दी जतला रहे थे। किसान होने की वजह से इतना ऐश उन्हें कभी नसीब नहीं हुआ था। वे बेचैनी से शाही बारकों के रसोईघरों की मुफ्त दावतों और वर्दियों का इन्तज़ार कर रहे थे।

हवलदार ने जिस खुले दिल से उन्हें खिलाया-पिलाया था उसे देखकर उन्हें यकीन हो गया कि छावनी में पहुंचते ही उसके सारे वादे पूरे हो जाएंगे।

सिर्फ लालू उदास और खामोश नज़र आ रहा था। आज की घटनाओं की परेशानी ने उसे थका दिया था। वह सामान रखने वाले तख्ते पर जाकर लेट गया था। तीसरे दर्जे के ठसाठस भरे डिब्बे में हवलदार ने सरकार के नाम पर यह जगह अपने सिंह-शावकों के लिए सुरक्षित करवा ली थी। लालू के कानों में रेल का संगीत गूंज रहा था और उसका दिल पुलिस के डर से कांप रहा था।

डिब्बे में बोरियों, ट्रंकों, गठरियों और मुसाफिरों के शरीरों से आती हुई गन्ध से लालू का दम घुट रहा था। वह तख्ते के ऊपर अचेत-सा लेटा था और कभी-कभी खिड़की पर झुककर ताज़ी हवा में सांस लेने की कोशिश कर रहा था। मानाबाद स्टेशन से निकलकर जब रेल रात के अंधेरे में बढ़ती गई तो डिब्बे की हवा में भी ठंडक आ गई। तन्द्रा में लालू को रह-रहकर गोबर से सने फर्श और कटा हुआ ताज़ा चारा दिखाई दे रहा था, जिसने उसकी ज़िन्दगी तबाह कर दी

थी। फिर उसे ज़मींदार का सफेद दागों वाला गुस्से से लाल चेहरा और अपने बाप का उदास चेहरा दिखाई दिया।

मां, हरनामसिंह, शर्मसिंह, केसरी और दयालसिंह के चेहरे भी स्मृति के धागों से बंधे हुए चले आए। दूरी, तेज़ स्पन्दन और रेल की क्रुद्ध चाल के हिंडोले में झूलकर वे चेहरे विकृत हो गए थे। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और चेहरा आवेश से धधक रहा था। वह अपने विचारों की दुनिया में डूबा था।

अपने अतीत की घटना के तानों-बानों को जोड़कर वह नये सिरे से देख रहा था। उसके मन में ताज़े दर्द उठ रहे थे, विशेषकर वह घटना उसे बिलकुल नहीं भूली थी जब गधे पर बैठाकर उसका जलूस निकाला गया था। इस घटना की याद से उसने मुट्ठियां भींच लीं और उसका चेहरा सिकुड़ गया। उसकी तन्द्रा थका देने वाली परेशानी बन गई। क्षण-भर के लिए माया उसके विचारों में आई और उसने उस कमज़ोरी की परछाईं देखी जो उसने माया के साथ कंचे खेलते वक्त महसूस की थी। उसने अपनी खुशी से उन्मत्त और मुक्त आंखों से माया को देखा, यही नज़र तो उसकी तबाही का कारण बनी थी। उसी वक्त उसे अहसास हुआ था कि माया ने उसे जो अनुभूति दी है वह उसकी ज़िन्दगी में दोबारा फिर कभी नहीं आएगी।

उसने पक्का फैसला कर लिया कि जिस-जिस आदमी ने उसे नुकसान पहुंचाया है और जिनकी वजह से वह घर से निकला है वह उन्हें जान से खत्म कर देगा—लेकिन कभी भी माफ नहीं करेगा।

उसकी नसों में खून खौलने लगा और उसके जलते हुए होंठ भयंकर अवसाद से सख्त हो गए। मन ही मन वह चिल्लाया, 'मारो, मारो! तुमने उन्हें वहीं क्यों नहीं मार डाला—मुक्के लगाओ—मारो, मारो!—जो नतीजा निकलता, देख लेते...'

और फिर उस क्षण की याद उसकी नसों को भेदती चली गई जब माया से उसकी पहली मुलाकात हुई थी। वह सर से लेकर पैर तक कांप उठा था और उसके शरीर से चिनगारियां फूटने लगी थीं। वह रेंगकर माया के पास पहुंचना चाहता था, शून्य में बांहें फैलाकर उसे छू लेना चाहता था—जैसे माया सचमुच वहां खड़ी हो। वह माया को अपने कलेजे से लगाना चाहता था। नींद में जब उसका हाथ अपने मुंह से छू गया तो उसे लगा कि वह माया के गालों को चूम

रहा है। उसका गला रुंध गया और दबी हुई एक सर्द आह उसके होंठों से वारिसशाह की हीर की एक पंक्ति बनकर फूट निकली, 'हीरे नी हीरे, तेरे इश्क ने कीता मैनूं ख्वार—हीरे नी हीरे...'

इस पंक्ति में छिपी सचाई उसके भीतर धंस गई, उसे बाहर की दुनिया से डर लग रहा था। भविष्य की कल्पना से उसे फिर पुलिस का ख्याल आ गया। किसी अज्ञात आशंका से उसका दिल धड़क उठा। उसे लगा कि ज़रूर उसके दुश्मन या तो रेल में होंगे, या रास्ते के किसी स्टेशन पर उसकी राह देख रहे होंगे, नहीं तो फिरोज़पुर छावनी में तो ज़रूर मिलेंगे। लेकिन उसने हिल-डुलकर अपनी बेचैनी दूर करने की कोशिश की।

उसने आंखें ज़ोर से भींच लीं और सोने के लिए फाटक में घसती काल्पनिक गायों की गिनती करने लगा। उसकी आंखों पर नींद की काली रात छा गई। वह खूब गहरी नींद सोया। जब गाड़ी किसी स्टेशन पर रुकती तो वह करवट लेता।

सुबह के करीब खेतों की हवा सर्द हो गई और वह सर्दी से ठिठुरने लगा। उसके बदन पर सिर्फ खद्दर का कुर्ता और तहमद थी। वह सामान के तख्ते पर दुबककर बैठ गया।

उसका एक साथी रंगरूट एक गीत गा रहा था। हट्टे-कट्टे किसान, जो एक-दूसरे से और शहरी बाबुओं से सटे बैठे थे, हवलदार के बारे में तरह-तरह के धृष्टतापूर्ण मज़ाक कर रहे थे। डिब्बे में बोरियों, संदूकों और गठरियों के अंबार लगे थे। हवलदार एक पूरी सीट घेरकर सो रहा था। लालू की नींद की खुमारी कुछ कम हुई।

क्षण-भर के लिए उसने सामने की खिड़कियों से बाहर देखा। मीलों तक पकी फसलों के खेत थे, कहीं-कहीं सघन वृक्षों के झुरमुट प्रभात के झुटपुटे में अपनी झलक दिखाकर गायब हो जाते थे। गाड़ी की तूफानी चाल उसे अच्छी लग रही थी।

हुक्का गुड़गुड़ाते हुए एक मुसलमान ने कहा, "क्या यह रेल उसके बाप की है जो वह न टांगें सरकाता है न किसी आदमी को बैठने के लिए जगह देता है?"

"ओए, इतनी ऊंची आवाज़ में न बोल! वह सुन लेगा। वह फौजी सिपाही है।" एक शहरी बाबू बोला।

"हौलदार है हौलदार।" एक सिख किसान ने उसकी बात को दुरुस्त किया।

"हौलदार होगा अपने घर, रात-भर मेरा बच्चा रोता रहा है, मैंने बच्चे को गोद में लेकर मुर्गी की तरह रात काटी है।" एक औरत ने शिकायत की।

"वह सरकारी नौकर है। उसे कुछ न कहो। वह अपने रेवड़ के साथ अगले स्टेशन पर उतर जाएगा। कसूर का स्टेशन तो निकल चुका है।" शहरी बाबू ने बताया।

"खसमनूंखाने!" औरत ने गुस्से से कहा और मुंह दूसरी तरफ फेर लिया।

"मां, ला बच्चे को मैं उठा लूं।" लालू ने कहा।

औरत हैरान रह गई, क्योंकि उसे मालूम था कि लालू भी उसी दल में था, जिसने मुसाफिरों की सीटों पर ज़बर्दस्ती कब्ज़ा कर लिया था। वह आंखें फाड़-फाड़कर लालू को देखने लगी और बोली, "पुत्तर, रहने दे, कोई बात नहीं।"

हुक्के वाले मुसलमान ने पूछा, "तुम भी इस वहशी के साथ जा रहे हो न?"

"हां, गहने खोकर आदमी चोरों की बिरादरी में जा मिलता है। मैं भी भूख से मजबूर होकर फौज में भर्ती हो गया हूं।" लालू ने जवाब दिया।

"वीर, यह तेरे कर्मों का फल है।" सिख किसान ने कहा।

डिब्बे में बैठे सब लोग हंस पड़े।

"लेकिन यह चोर तो बड़ा ढीठ है।" औरत ने हवलदार की तरफ इशारा किया।

"इतनी ऊंची आवाज़ में न बोलो, वह सुन लेगा।" शहरी बाबू ने चेतावनी दी।

"यह खसमनूंखाना बहरा है।" औरत ने जवाब दिया।

"वह बहरा नहीं है। अगर जग गया तो तुम्हारी और तुम्हारे बच्चे की खैर नहीं।" शहरी बाबू ने कहा।

"जो जान-बूझकर मकर साध रहा हो उससे बढ़कर बहरा कौन होगा?" औरत ने मज़ाक किया।

फिर डिब्बा हंसी से गूंज उठा।

सिख किसान ने कहा, "ला बच्चे को मेरी गोद में दे।"

"अच्छा इसे पकड़।" औरत ने गठरी की तरह कपड़ों में लिपटा हुआ बच्चा किसान की गोद में दे दिया और एक थैले में से सामान निकालने लगी।

"आजा मेरे शेरा, आजा मेरे पुत्तर! आजा मेरे हीरे, मेरे लाल!" सिख बच्चे को गोद में लेकर पुचकारने लगा।

"ले खा।" औरत ने शहरी बाबू को मिसरी का टुकड़ा दिया। उसने एक टुकड़ा लालू की तरफ भी बढ़ाया। "जब बच्चे की पहली दंतुली फूटी थी तो उसकी नानी ने यह मिसरी दी थी। बस इसकी लम्बी उम्र हो।"

शहरी बाबू ने मिसरी का टुकड़ा ले लिया लेकिन लालू ने संकोच से कहा, "रहने दे मां, खेचल[1] क्यों करती है।"

"अरे ले ले यह सारा टुकड़ा," औरत ने कहा और हवलदार के मुंह में मिसरी का टुकड़ा ठूंसती हुई बोली, "अरे पहाड़, तूने मुझे कुचल डाला है, ले तू भी खा!" लहनासिंह थूकता, आंखें मलता और चिल्लाता हुआ उठ बैठा।

"ओए, मैं तो तेरे लहसुन की बदबू से भरे मुंह को मीठा कर रही थी!" औरत चिल्लाई।

इसपर हंसी के फव्वारे छूटने लगे और डिब्बे के सब लोग खुशी से पुलकित हो उठे।

हवलदार ने रौबीले अन्दाज़ में कहा, "ओए देखो, गाड़ी सतलज नदी को पार कर रही है। सब लड़के तैयार हो जाएं—अभ्यास से ही आदमी ड्यूटी की साइंस-परफेक्शन सीखता है।" फिर वह सोए हुए रंगरूटों को झकझोरने लगा।

"शुक्र है, यह मनहूस सफर खत्म होने वाला है।" औरत बोली।

डिब्बे के लोग औरत की हर हरकत पर मुस्करा रहे थे, लेकिन हवलदार इतना बेशर्म था कि उसने इस व्यंग्य पर ध्यान ही नहीं दिया।

लालू को लगा कि सफर के आखिरी दौर में लोगों ने उसके साथ जो नेक बर्ताव किया है, उसके बाद वह सारी दुनिया के गुनाहों को माफ कर सकता है। फिरोज़पुर शहर से जब गाड़ी छावनी के लिए चली तो उन खुशमिज़ाज लोगों से विदा लेते वक्त लालू भावुक हो उठा। वह बार-बार सोच रहा था, 'अभ्यास से ही आदमी ड्यूटी की साइंस-परफेक्शन सीखता है!' लोगों से हार्दिक विदा लेने के बाद वह बाकी रंगरूटों के साथ हवलदार के पीछे-पीछे चल पड़ा।

अड्डे पर पहुंचकर जब वे तांगे का इन्तज़ार करने लगे तो नीले रंग के फूलों को देखकर उसे नंदपुर जाने वाली सड़क की याद हो आई। लाल रंग की पहाड़ी

१. तकलीफ

के नीचे खेतों में उगे पीले फूलों को देखकर उसे गांव की चरागाहों की याद आई, जहां जानवर चरने जाते थे। स्टेशन के पास हलवाई की दूकान पर दो कौए 'कांव-कांव' कर रहे थे। लालू को अपने बापू के कुएं के पास खड़े पेड़ पर बैठे कौओं के झुंड की याद आ गई। यहां भी वही चमकदार सूरज था जो हर रोज़ सुबह नंदपुर के नीले आसमान में उगता था। आज का सूरज नया और चौंका देने वाला था, हवा में दूसरी ही किस्म की गंध थी, लेकिन बिलकुल ऐसा ही सूरज गांव में निकलता था, सुबह की रोशनी और परछाइयां भी बिल्कुल वैसी ही थीं, वही जंगली पौधे, वही घास की सुगन्ध, धरती की सुवास और चारों तरफ फैली खूबसूरती !

नहीं, इस दृश्य में एक अजनबीपन भी था। घोड़ों की लीद की बदबू आ रही थी। पक्की सड़क के किनारे बैरकों की कतारें थीं, और लाल रंग की लंबी बारकों के पास नारंगी रंग के बंगले थे। बारकों के बाहर फौजी वर्दी में एक अंग्रेज़ सिपाही हाथ में राइफल लिए पहरा दे रहा था।

लालू उस गोरे को देखकर आकर्षित हुआ। उसके मन में खुशी के उन्माद के साथ-साथ घबराहट और जिज्ञासा भी जाग उठी थी।

२३

हमेशा लबालब भरा प्याला छलक जाता है या टूट जाता है, इन्सान की उम्मीदें भी मटियामेट हो जाती हैं। जब भी वह स्वर्ग की कल्पना करने लगता है तो उसके सामने कोई न कोई खाई आ जाती है।

रंगरूटों को ६८वीं राइफल्ज़ के दफ्तर के बाहर खड़ा रहना पड़ा, क्योंकि कम्पनी के क्लर्क बाबू खुशीराम को अभी नये रंगरूटों का मुआइना करने की फ़ुर्सत नहीं थी। वे नीली पीली-चिक के भीतर बैठे थे। हवलदार तीन बार भीतर हो आया था, उसने दफ्तर के अर्दली से भी क्लर्क को कहलवाया था कि वह नये योद्धाओं, सिंह-शावकों को लेकर आया है।

लालू को फिर डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि उसके भर्ती होने से पहले ही पुलिस आकर उसे पकड़ ले। कल से यह डर उसे सता रहा था।

छावनी की इस दुनिया की मुस्तैदी को देखकर उसकी जिज्ञासा जाग उठी थी। फौजी वर्दियां पहने, कंधों पर बंदूकें रखे सिपाही मैदान में अफसरों के हुक्म पर कवायद कर रहे थे। रहस्यमय दफ्तरों में से, जहां साहब लोग बैठे थे, फाइलें आ-जा रही थीं। उसके मन के एक कोने में उम्मीद जग रही थी कि शायद सारा मामला ठीक हो जाएगा। कभी दफ्तर के बरामदे की नींद-भरी छांह में, कभी कड़कती धूप में, लालू आंखें फाड़-फाड़कर जैसे कुछ टटोल रहा था।

आखिरकार एक मरियल-सा आदमी दफ्तर से बाहर निकला। उसकी भौंहें और मूंछें घनी थीं और गाल पिचके हुए थे। उसने खाकी रंग का घिसा हुआ कोट और सफेद पाजामा पहन रखा था। उसके कानों में एक कलम खुंसी हुई थी और हवलदार को देखकर उसने बनावटी आत्मीयता जतलाई।

"सत सिरी अकाल, हवलदार! इस बार किसे लाए हो? इन लड़कों को!" फिर रंगरूटों को देखकर उसने अंग्रेज़ी मिश्रित पंजाबी में कहा, "कसम रब्ब दी, सरदार उल्लूसिंह, ये तो निरे बच्चे हैं! लगता है अभी इनके होंठों से मां का दूध भी नहीं सूखा!" फिर कुछ देर खामोश रहकर उसने रौबीली आवाज़ में कहा, "सरकार का पैसा बर्बाद करने की क्या ज़रूरत है? जब तुम जानते हो कि इन छोकरों को रिजेक्ट कर दिया जाएगा तो इन्हें यहां लाने से क्या फायदा?"

"छोड़ो भी बाबू खुशीराम!" लहनासिंह ने घबराकर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा। वह नहीं चाहता था कि बाबू के सलूक को देखकर इन नये छोकरों के मन पर बुरा असर पड़े जिन्हें वह इतने रौब से अपने साथ लाया था। इसलिए उसने बेतकल्लुफी के अन्दाज़ में कहा, "छोड़ो इस बात को। यार तुम्हारी मूंछें भी राजपूतों की तरह लम्बी हैं लेकिन तुम कौन-से सूरमा हो, दुश्मन को देखते ही तुम डर के मारे बेहोश हो जाओगे। तुम अपनी कलम सम्भालो! बस तुम्हें कान में क़लम खोंसना आता है। तुम क्या जानो सिपाही बनने के लिए कैसा आदमी चाहिए। कहीं डाक्टर साहब से गिटपिट-गिटपिट करके मेरा बिज़नेस न तबाह कर देना।"

"अच्छा, अच्छा!" बाबू हवलदार के मज़ाक पर हंसा।

"तो सुन मेरी बात, खुश्कीराम।" लहनासिंह ने क्लर्क का नाम बिगाड़कर कहा। फिर वह स्नेहपूर्वक खुशीराम की बांह पकड़कर एक तरफ ले गया और उसने खुशीराम की हथेली पर अपना हाथ रख दिया।

"मेरा नाम खुश्कीराम नहीं है।" बाबू ने कहा।

"अरे मैं तो मज़ाक कर रहा था। आकर मेरी बात सुन।"

"भाई, मैं न ऊधो के लेने में हूं न माधो के देने में। लेकिन मेरे हिस्से की पूरी रकम तुम नहीं दे रहे।" बाबू ने बात छिपाने की कोशिश किए बगैर ऊंची आवाज़ में कहा, "फौजी नौकरी के लिए इन लड़कों को 'फिट' करवाना आसान काम नहीं है। आजकल डिवीज़नल हैडक्वार्टर्ज़ की सख्त हिदायत है और शिमले से ऑर्डर···"

"ओए बाबू खुशीराम, छोड़ इस तरह की बातों को, तू भी जानता है कि अच्छे रंगरूट पाना कितना मुश्किल काम है।" उसने लालू की तरफ इशारा करके कहा, "देख यह लड़का हीरा है, हीरा। ऐसा आदमी कहां मिलेगा? और जानता है, इसका नाम लालसिंह है। यह सच्चा लाल है।"

"खैर, मैं इन बातों को नहीं जानता," बाबू ने खुश्क अंदाज़ में कहा, "मुझे यह पता है कि पिछली बार तुम जिन रंगरूटों को लाए थे, कर्नल साहब उनसे खुश नहीं हुए थे, और ये छोकरे तो भूख से मरियल नज़र आ रहे हैं।"

"अच्छा, अच्छा, इनकी जांच तो हो लेने दो।" फिर हवलदार फुसफुसाया "तुम मेरी हथेली पर जो रकम रखते हो, वह अपने पास ही रख लेना। जाट का दिल मज़बूत होता है, एक बार आगे बढ़कर वह पीछे नहीं हटता। कहो अब खुश हो?"

"नहीं—यह बात अच्छी नहीं—लो डाक्टर साहब आ रहे हैं।" बाबू ने 'अटेन्शन' खड़े होकर डॉक्टर को फौजी सैल्यूट मारा, ढीलमढाल सिविलियन कपड़ों के साथ फौजी सैल्यूट का मेल नहीं बैठ रहा था।

बाबू ने लापरवाही से सैल्यूट करके कहा, "सलाम साहेब," क्योंकि डॉक्टर पुरी थे हिन्दुस्तानी, बेशक उन्होंने रॉयल आर्मी मैडिकल कोर की वर्दी पहन रखी थी। वर्दी पर कैप्टन के ओहदे के सूचक तीन स्टार भी थे, और उन्होंने अफसरी अंदाज़ में अपनी बी० एस० ए० साइकल अर्दली को थमाई थी। फौज में विरले हिन्दुस्तानी ही अफसर बन सकते थे, लेकिन सिपाहियों की नज़रों में लंबे, तगड़े रौबीले व्यक्तित्व वाले अंग्रेज़ अफसरों के सामने नाटे कद, दोहरे बदन और सांवले रंग का यह आदमी हास्यास्पद मालूम होता था। इसके अलावा डॉक्टर पुरी में हीनभावना भी थी जो अक्सर हिन्दुस्तानी अफसरों में आडम्बर और नकचिढ़ेपन

का रूप ले लेती है।

"इन छोकरों से कहो कि अपने कपड़े उतारें।" डॉक्टर ने पंजाबी में हवलदार से कहा। वह कमर पर हाथ रखकर कठोर दृष्टि से रंगरूटों पर एक सरसरी निगाह फेंक रहा था।

रंगरूटों ने बिना किसी संकोच के अपनी कमीज़ें उतारनी शुरू कर दीं। सबसे पहले लालू ने अपने कपड़े उतारे। वह क्षण नज़दीक आता जा रहा था, जब वह गिरफ्तारी के डर से बच जाएगा। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। कुछ रंगरूट अपनी तहमदें संभाले प्रश्नसूचक दृष्टि से हवलदार को देख रहे थे, जैसे पूछना चाहते हों, 'क्या तहमद भी उतारनी होगी ?' लेकिन हवलदार कैप्टन पुरी और बाबू खुशीराम के साथ घुसर-फुसर कर रहा था। उनकी बातों में खलल डालने की जुर्रत किसीमें नहीं थी।

अब लालू मन ही मन क्षुब्ध हो रहा था, क्योंकि वह समझ गया था कि वह सारी घुसर-फुसर इस बेशर्मी-भरी बात को लेकर हो रही है कि रंगरूटों के जिस्मों को सरकार के हाथ बेचकर जो आमदनी हो, उसमें से कितना हिस्सा किसे मिले।

बरामदे के बाहर, दफ्तर और बारकों के बीच गहरे मटमैले रंग की मिट्टी धूप में जल रही थी। मिट्टी की उत्तप्त गंध में चिड़ियों के सिवा सब प्राणी नींद में बेहोश हो गए थे। चिड़ियां चहकती हुई कंकरी में से दाने तलाश कर रह थीं। कबूतर गुटर-गूं कर रहे थे और झींगुर इधर-उधर फुदक रहे थे। लम्बा इन्तज़ार, मानसिक यातना और आतुरता से लालू का दम घुट रहा था। उसकी आंतें भूख से कुलबुलाने लगी थीं—हर क्षण लम्बा और थका देने वाला महसूस हो रहा था।

जब डाक्टर साहब, बाबू और हवलदार में सौदा पट गया तो डाक्टर साहब ने जेब से स्टेथिस्कोप निकाला और गले में लाल रबड़ की नालियों का हार डालकर वे रंगरूटों की तरफ बढ़े। बाबू खुशीराम और हवलदार मायूस ढंग से बड़बड़ाते हुए पीछे-पीछे चले। डाक्टर साहब पहले रंगरूट के पास पहुचे। वह तीखे नक्शों वाला मुसलमान था। उसकी आंखों में कुकरे थे और पैर चपटे थे। इसी वक्त पक्की सड़क पर एक तांगा आकर ज़ोर के झटके के साथ रुक गया।

डाक्टर ने लापरवाही से तांगे की तरफ दृष्टि फेंककर लहनासिंह से कहा, "इस आदमी की आंखें खराब हैं।" वह स्टेथिस्कोप लगाकर पहले रंगरूट की छाती का मुआइना करता रहा।

तांगे से उतरकर पुलिस का एक थानेदार बोला, "इन आदमियों में एक चोर भी है।" हर हिन्दुस्तानी थानेदार की तरह वह भी अकड़कर चल रहा था। उसने पिछली सीट पर बैठे कान्सटेबलों को आवाज़ दी, "धनगोपाल ! दीन मुहम्मद ! हथकड़ियां लाओ !"

"किसे ढूंढ रहे हो ?" लहनासिंह ने थानेदार से पूछा, जिसे वह पहले से जानता था। काली दाढ़ी के भीतर उसका चेहरा पीला पड़ गया।

फरीदखां नाटे कद का मुसलमान राजपूत था। उसकी बेलनाकार गर्दन पर लम्बे बाल मोम लगाकर खड़े किए गए थे। नुकीले कुल्ले पर उसने तुर्रेदार पगड़ी पहन रखी थी। हिन्दुस्तानी पुलिस को अपनी ढीलीढाली वर्दी की वजह से फौजियों के सामने हीनभावना महसूस होती है। फरीदखां ने कोट की ऊपर वाली जेब से कागज़ का टुकड़ा निकालकर कहा, "मानाबाद के थाने से यह तार आया है, जिसमें हमें लालसिंह नाम के शख्स की गिरफ्तारी का हुक्म दिया गया है। उसने चोरी की है और नंदपुर गांव में जब एक पुलिस का सिपाही अपना फर्ज़ अदा करने गया तो उसके रास्ते में अड़चनें डालीं।"

"क्यों रे तू चोर है ?" हवलदार ने लालसिंह को बहन की गाली दी, "क्या इसीलिए तू फौज में भर्ती होने के लिए इतना बेताब था ? मैं तो पहले ही भांप गया था कि दाल में कुछ काला है। तुझे कभी भर्ती नहीं करना चाहिए था।"

लालू हवलदार के बदले हुए चेहरे को देखने लगा और सोचने लगा, 'इस बेशर्म, हृदयहीन सूअर की यह मजाल ! यह एक मिनट में सौ झूठ बोलता है और सीधे-सादे गांव वालों को उल्लू बनाता है।'

फरीदखां ने दांत पीसकर कहा, "इस हरामजादे ने माल भी किसका चुराया? नंदपुर गांव के ज़मींदार रईसे-आज़म सरदार बहादुर हरबंससिंह का।"

बाबू खुशीराम ने लहनासिंह की तरफ मुड़कर कहा, "इस महीने में दो बार पहले भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। हवलदारा, किसी दिन तू ज़रूर जेल जाएगा।"

"मुझे क्या पता था बाबू खुशीराम ?" लहनासिंह ने अपनी बांहें ऊपर फेंक-कर कहा।

"अच्छा, चोर को हथकड़ियां डालकर ले जाओ।" कैप्टन पुरी ने पंजाबी-मिश्रित हिन्दुस्तानी में कहा। वे नौकर-चाकरों से इसी ज़बान में बात करते थे।

थानेदार ने सिपाहियों को हुक्म दिया, "इसके हाथों में हथकड़ियां डाल दो।"

लालू का चेहरा शर्म से पीला पड़ गया था । वह मन ही मन अपनी किस्मत को कोस रहा था । उसने हाथ आगे बढ़ाए।

इसी वक्त रेजीमेण्ट के एडजुटेण्ट कैप्टन रॉबर्ट ओवन एक फाइल हाथ में लेकर बाबू खुशीराम के दफ्तर से निकले। इस दृश्य को देखकर वे भी वहीं पहुंच गए। वे घुंघराले बालों वाले लम्बे आदमी थे। उनकी छोटी-छोटी नीली आंखों में एक कवि की सी संवेदनशीलता थी, और धनुपाकार होंठों पर एक पारदर्शी दयालुता थी, जो उनके चेहरे की कठोर मुद्रा से बिलकुल मेल नहीं खाती थी।

सब लोगों ने, जिनमें कैप्टन पुरी भी थे, 'अटेन्शन' खड़े होकर साहब को सैल्यूट किया। सारे वातावरण में खामोशी छा गई। पुलिस वालों की मुद्राएं कठोर हो गईं और लालू का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसकी टांगें और जांघें सुन्न हो रही थीं। उसने अपनी घबराहट पर काबू पाने की कोशिश की और आंख उठाकर चारों तरफ देखा।

"गुड मॉर्निग कैप्टन पुरी।" एड्जुटेण्ट ने जेब में से चांदी का सिगरेट-केस निकालकर डाक्टर को पेश करते हुए कहा। फिर टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी में हवलदार से कहा, "हलो हवलदार लहनासिंह; क्या अभी भी तुम पक्का सिख हो? तुम सिगरेट तो नहीं पीते, लेकिन झूठ तो बोलते हो···कहो क्या बात है?"

"तौबा हुज़ूर।" हवलदार ने हाथों से कान छूकर कहा, जैसे किसी पाप का प्रायश्चित्त कर रहा हो।

"सर, यह अपने साथ एक चोर को लाया था।" खुशीराम ने अपनी स्थिति बचाते हुए अंग्रेज़ी में साहब को बताया।

ओवन ने लापरवाही से लालू से पंजाबी में पूछा, "खालसाजी, क्या चुराया है?"

गोरे आदमी के सामीप्य से, उसके धुले हुए कपड़ों और तम्बाकू की गंध से, उसकी नीली आंखों और मुस्कान में उमड़ते हुए उल्लास से लालू का रोम-रोम पुलकित हो उठा।

उसने अंग्रेज़ी में जवाब दिया, "सर, मैंने कोई चोरी नहीं की। गांव का ज़मींदार हमारे खानदान का दुश्मन है। उसने मेरे नाम इसलिए वारंट निकलवा दिए, क्योंकि उसने मुझे अपनी बेटी के साथ देखा था।"

अचानक लालू चुप हो गया। उसके भीतर उमड़ते भावावेगों से उसका गला

रुंध गया था।

एक मामूली रंगरूट को अंग्रेज़ी बोलते देखकर ओवन साहब हैरान रह गए। बाकी लोग आंखें फाड़-फाड़कर लालू को देखने लगे, जो अपने मुंह को टेढ़ा-मेढ़ा करके अंग्रेज़ी शब्दों का उच्चारण करते थे।

"ओह, ए लव अफ़ेयर!" ओवन साहब ने कहा।

"सर, यह साज़िश थी। मैं ब्वॉय स्काउट हूं। मानाबाद के डिप्टी कमिश्नर मेरी नेकचलनी की गवाही दे सकते हैं।" लालू ने बताया।

"ओह, तो तुम मिस्टर लौंग को जानते हो?" ओवन 'सिविल एण्ड मिलिटरी गज़ट' में लौंग के सामाजिक पुनर्निर्माण-सम्बन्धी लेख अक्सर पढ़ा करते थे।

ओवन ने थानेदार से कहा, "अच्छा, तुम लालसिंह की गिरफ्तारी का वारंट दफ्तर में छोड़ जाओ। हम इन्क्वायरी करेंगे, डॉक्टर साहब को रंगरूटों का मुआइना करने दो..."

लालसिंह क्षितिज से प्रकट होने वाली आशा की इस आकस्मिक किरण को कलेजे से लगाए खड़ा था। वह ज़रूर फौज में भर्ती होगा, ज़रूर होगा! उसकी जान बच गई है। उसके भी अच्छे दिन आएंगे और एक बार आज़ाद होने पर वह शायद अफसर भी बन सके।

लालसिंह भावावेश से थथलाने लगा, "थैंक्यू सर!"

साहब ने सर झुकाकर लालू की कृतज्ञता ग्रहण की और अपने कुत्ते को साथ लेकर मुस्कराता हुआ अपने दफ्तर की तरफ चला गया।

हवलदार ने हंसकर फरीदखां से कहा, "जा मेरे दोस्त, रोज़ मेरे काम में दखल न दिया कर!"

"हमें तो सरकारी हुक्म की तामील करनी पड़ती है।" फरीदखां ने कहा। उसने धनगोपाल और दीन मुहम्मद को तांगे में चलकर बैठने का इशारा किया...

२४

फौज में नये रंगरूट का नाम दर्ज हुआ। लालसिंह रंगरूट नंबर १२४४४, दूसरा

पल्टन, बी कम्पनी, ६८वीं राइफल्ज़। सरदार बहादुर हरबंससिंह ने जब सुना कि लालसिंह फौज में भर्ती हो गया है तो उसने गिरफ्तारी का वारंट वापस ले लिया। ज़मींदार को डर था कि दीवानी अदालतों में फौजियों की हैसियत ज़्यादा होती है।

मैदान में बनी बारह बारकों में से बी कम्पनी दूसरी इमारत में थी। सब रंगरूटों के साथ-साथ लालसिंह को भी मूंज की बनी एक चारपाई और फौजी कपड़ों का बैग मिला। एक दुबले मरियल क्वार्टर-मास्टर ने इन चीज़ों को रजिस्टर में दर्ज किया।

लालू मन ही मन अपनी किस्मत को और वाहगुरु को धन्यवाद दे रहा था, जिन्होंने उसे कानून के फंदे से छुड़ाया था। सर पर लम्बे बाल न होने की वजह से उसके नाम के आगे 'हिन्दू डोगरा' लिखा गया था। लेकिन दूसरे रंगरूटों की तरह लालू को नई ज़िन्दगी इतनी उल्लासपूर्ण नहीं मालूम हो रही थी।

लहनासिंह के बहुत-से वादे झूठे साबित हो रहे थे—उसने कहा था कि कपड़े और सारा सामान मुफ्त मिलेगा, ग्यारह रुपये नकद मिलेंगे। दाल में कंकर निकलते थे, रोटियों पर भी घी नहीं चुपड़ा जाता था। बारक में एकान्त तो बिल्कुल ही नहीं था। पुराने सिपाही नये रंगरूटों के आने से नाराज़ थे क्योंकि बारक में पहले से ही जगह तंग थी। पुराने सिपाही अपने-आपको नये रंगरूटों से ज़्यादा बड़ा समझते थे।

इस नये विचित्र वातावरण को देखकर कई बार लालू को घबराहट महसूस होती थी। लम्बी बारकों में, दो-दो गज़ के फासले पर सफेद चद्दरों से ढंकी चारपाइयों की कतारें थीं, जिनपर सिपाही बैठते थे, और दीवारों पर लगी अलमारियों में अपने बटन, जूते, पेटियां पॉलिश करके रखते थे। लालू सोचता था, पता नहीं ज़िन्दगी में उसे क्या-क्या देखना पड़ेगा।

जल्द ही उसे नई ज़िन्दगी से वाकफियत हो गई। एक दिन सुबह 'फैटिग ड्यूटी' से लौटकर वह चारपाई पर बैठा दीवार की तरफ देख रहा था, जहां एक छिपकली रेंग रही थी। अचानक बरामदे में भारी-भरकम बूट की आवाज़ें आईं। बहुत-से सिपाही भागे-भागे आए, उनके शरीर पसीने से तर थे, लगता था वे परेड से लौटे थे। उनके कदमों के नीचे धरती कांप रही थी। लालू ने उन्हें अनदेखा करने की कोशिश की, लेकिन वह अपना ध्यान उधर से न हटा सका।

लांस कारपोरल लोकनाथ, जो नाटे कद और दुहरे बदन का आदमी था, मुस्कराता हुआ चपटी नाक वाले एक नंगे लड़के को घसीटकर ला रहा था, "ओए देखो! ओए देखो! यह हरामज़ादा दिखाएगा कि इसका बनिया बाप रात को इसकी मां के साथ कैसी परेड करता है।"

लड़का अपने को छुड़ाने की कोशिश करता हुआ छटपटाने लगा, "हाए, मुझे छोड़ दो! मुझे छोड़ दो! मैं हलवाई की दुकान पर दूध पीने के लिए जा रहा हूं।"

"नहीं, नहीं, तू मेरे साथ आ, मैं तुझे दूध से भी बढ़िया चीज़ दूंगा।" लोकनाथ ने बच्चे को घसीटकर कहा।

"ओए, इधर आ, मेरे पास आ।" दूसरे सिपाही ने अश्लील इशारे के साथ कहा।

"ओए मुझे जाने दो! हाय, मेरे हाथ में चोट लग गई, हाय मां।" बच्चा चीखने लगा।

"ओए हरामज़ादे, शोर न मचा, कोई तुझे खाएगा तो नहीं।" एक और आवाज़ आई।

लेकिन बच्चा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और सिसकता रहा।

"लाओ मुझे दो।" एक सिपाही ने बच्चे को पकड़ते हुए कहा।

"नहीं, नहीं।" बच्चा रोने लगा।

लोकनाथ ने बच्चे को बांहों में उठा लिया, "अरे चिल्ला मत, मां का यार।"

लेकिन बच्चा गुस्से से हवा में टांगें चला रहा था। उसका गुदगुदा शरीर लोकनाथ के हाथों से फिसल गया। लोकनाथ ने उसे उठाकर नीचे पटक दिया और उसके चूतड़ों पर थूककर ज़ोर से एक थप्पड़ मारा। फिर उसने बच्चे को बारक के बचोंबीच खड़ा कर दिया।

इसपर बारक खुशी के ठहाकों से गूंज उठी। बच्चा शर्म से लाल हो गया। वह लोकनाथ को मारने के लिए उसके पीछे भागा।

लोकनाथ खड़ा हो गया। उसने बच्चे को उठा लिया और हंसते-हंसते फिर वही घटना दुहराई। लड़का उसे अपने नन्हे-नन्हे नाखूनों से नोंचने लगा। लोकनाथ ने उसे कुत्ते की तरह धकेल दिया। क्षण-भर के लिए लड़का स्तब्ध भाव से खड़ा

रहा और बचने का उपाय खोजने लगा। सिपाहियों की मज़ाक-भरी हंसी से उसने अपने को अपमानित महसूस किया और वह ज़मीन पर लोटता हुआ रोने-चिल्लाने लगा।

"उठकर भाग जा रोंदू ! शैतान !" एक फौजी चिल्लाया।

लड़का आंखें मलता-मलता बाहर जाने लगा, लेकिन एक चारपाई से टकराकर गिर पड़ा। वह ज़ोर से चिल्लाया और पिंजरे में बंद शेर की तरह गर्राने लगा। फिर घबराहट में वह कभी एक तरफ भागता, कभी दूसरी तरफ। अपनी नग्नता की झेंप मिटाने के लिए वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

"उठ यहां से हरामज़ादे, हम तो मज़ाक कर रहे थे ! तुझे इतनी भी अक्ल नहीं है।" एक सिपाही चिल्लाया।

लेकिन अपनी खौफनाक चीखों की आवाज़ से बच्चे का हिस्टीरिया बढ़ गया था और वह ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था। उसका चेहरा रोने की वजह से बदसूरत दिखाई दे रहा था।

"खुदा के लिए इस सूअर को उठाकर बाहर फेंक दो।" लोकनाथ ने हुक्म दिया।

सूबेदार मेजर के अर्दली बूढ़े किरपू ने पूछा, "तुम लोगों ने क्यों उसे तंग किया था ?" किरपू नेक स्वभाव का आदमी था। वह अभी-अभी बारक में दाखिल हुआ था।

इसपर लांस कारपोरल को गुस्सा आ गया और उसने पूरी ताकत से चिल्लाकर हुक्म दिया, "इसे बाहर फेंक दो, सूअरो, अगर तुमने इसे बाहर न निकाला तो मैं इसे और तुम सब लोगों को खत्म कर डालूंगा।"

किरपू उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया, "बस करो ! बस करो !"

लोकनाथ गुस्से से ज़मीन पर पैर पटककर बोला, "शूं ! तूं कौन है हरामज़ादे, मेरे रास्ते में रुकावट डालने वाला ?"

इसी वक्त लालू अपनी चारपाई से उठा। अपने होंठ सिकोड़कर उसने बच्चे को गोद में उठाया और बाहर ले गया। बच्चा पागलों की तरह टांगें हिला रहा था और लालू को नोच रहा था। सब लोग ज़ोर से हंसने लगे और चिल्ला पड़े।

जब लालू वापस आया तो लोकनाथ ने सख्त आवाज़ में कहा, "ओए तू क्यों उसे उठा ले गया ? तेरा नाम क्या है ? उस हरामज़ादे को तूने यहीं क्यों नहीं

रहने दिया ?"

लालू ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि लोकनाथ चिल्लाया, "तू रंग-रूट है। तेरा काम हुक्म की तामील करना है। अगर तू न सुधरा तो हरामज़ादे मैं कम्पनी कमाण्डर से तेरी शिकायत करूंगा।"

लालू को जैसे लकवा मार गया। वह आंखें फाड़कर कारपोरल के चेहरे की तरफ देखने लगा। उसे डर था कि कहीं उसने जवाब में कुछ कहा तो उसपर फिर आफत आ जाएगी। बड़ी मुश्किल से वह अभी-अभी तो कानून के चंगुल से छूटा था।

"अगर तुम अपनी हैसियत के अन्दर रहो तो कौन तुम्हें तंग कर सकता है।" दुबले बदन के बूढ़े सिपाही धन्नू ने कहा। वह चारपाई पर बैठा चिलम पी रहा था।

२५

सूरज बेरहमी से जल रहा था और सारी दुनिया गर्मी की सफेद चमकदार परतों में लिपटी थी। कहीं-कहीं कोई चिड़िया निस्तब्धता को भंग कर रही थी।

लोकनाथ को धूप या छांह किसीकी परवाह नहीं थी। परेड ग्राउण्ड में आते हुए रंगरूटों को उसने हुक्म दिया—

"आठ बज गए हैं और तुम लोग ढीलमढाल चाल से चल रहे हो! फालिन!" लोकनाथ ने 'फाल-इन' को हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ी में कहा।

"फालिन!" लोकनाथ ने फिर आर्डर दिया। उसने अधिकार जतलाने के लिए अपनी ठुड्डी को दुर्भावनापूर्ण ढंग से आगे किया।

भारी-भरकम बूटों में रंगरूट 'धम-धम' करते हुए आगे बढ़े। उनके सिविलियन पैरों में फौजी बूट ढीले मालूम हो रहे थे। रंगरूटों के चेहरे सुबह की उमस-भरी गर्मी में मुर्झा गए थे।

"जल्दी करो! गधे के बच्चो!" लोकनाथ ने दाईं मुट्ठी भींच ली और एक क़दम आगे बढ़ आया।

रंगरूट डर से कांपने लगे और भागकर कतार में खड़े हो गए।

लोकनाथ ने आगे बढ़कर लालू के गाल पर तमाचा लगाया। लालू को अपने कद के लिहाज से दूसरे नंबर पर खड़ा होना चाहिए था, लेकिन वह कतार के आखीर में जा खड़ा हुआ था। घनी भौंहों वाली आंखों से आग बरसाते हुए लोकनाथ ने उसे बहन की गाली देकर कहा, "उल्लू का पट्ठा! तुझे परेड करने की तमीज़ कब आएगी?"

लालू का चेहरा अंगारे की तरह दमकने लगा। वह जानता था कि लांस-नायक ने क्यों उसे झिड़का था। उसके दिल में क्रोध की आग सुलग रही थी, लेकिन डर ने उसे सुन्न कर दिया था। वह जल्दी से अपनी जगह पर जा खड़ा हुआ। रंगरूट भी अपने-अपने कद के मुताबिक खड़े हो गए।

लोकनाथ ने आर्डर दिया, "स्क्वैड, शन! फोरम फोर!"

कुछ रंगरूट आतंक की वजह से वहीं खड़े रहे। उनकी देखा-देखी बाकी भी ठिठक गए।

"तुम फिर भूल गए? हरामज़ादो!" लोकनाथ दांत पीसकर बोला, "फोरम फोर के आर्डर पर ऑड नम्बर खड़े रहते हैं, ईवन नम्बर वाले पीछे हटकर दाईं तरफ मुड़ जाते हैं। यह बात तुम्हारी खोपड़ियों में अभी तक नहीं धंसी? चलो फोरम फोर करो।"

सारा स्क्वैड पीछे हटकर दाईं तरफ मुड़ गया और आपस में टकरा गया।

"कुत्ते के बच्चे! हाथी! ऊंट! गधे!"

लोकनाथ ने गाली दी और आगे बढ़कर लालू से पूछा, "तुम्हारा नम्बर क्या है?"

"हम लोगों ने नम्बर तो नहीं बोले," लालू ने कहा। लोकनाथ ने लालू को चांटा मारने के लिए हाथ ऊपर उठाया, लेकिन उसे याद आया कि रंगरूटों को नम्बर बोलने के लिए उसने नहीं कहा था।

"अपने नम्बर बोलो!" वह चिल्लाया।

"एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह..." रंगरूटों ने नज़रें सामने करके नम्बर बोले।

"अब फोरम फोर करो!" लोकनाथ ने आर्डर दिया।

धीरे-धीरे करके रंगरूट चार-चार की टुकड़ियों में बंट गए। रंगरूट नम्बर

आठ विषम संख्या वालों के पास रुक जाता था।

"ओए, बड़ा आया बन्दूक का पुत्तर! तेरा नम्बर क्या है?"

"बारह हज़ार चार सौ अड़तालीस," रंगरूट ने जवाब दिया।

"ओए हरामज़ादे, बेशर्म भुलक्कड़ कुत्ते! मैं तेरा रेजीमेंट वाला नम्बर नहीं पूछ रहा। स्क्वैड नम्बर क्या है?"

बहुत हिचकिचाहट के बाद रंगरूट के मुंह से आवाज़ निकली, "आठ!"

कारपोरल ने पिटाई करने के लिए मुट्ठी तान ली और कहा, "मुंह से ऊंची आवाज़ निकाल! क्या तेरी मां मर गई है जो मिनमिन कर रहा है?" और फिर उसने अपना घिसापिटा लैक्चर शुरू कर दिया—

"तुम्हें कितनी बार बताना पड़ेगा कि तुम्हें अपनी पल्टन की इज़्ज़त रखनी है। तुम लोग दो महीनों से सरकार का नमक खा रहे हो इसलिए तुम्हें नमकहलाली करके दिखानी है। तुम लोगों ने परेड की है, लकड़ी की राइफलों के साथ प्रैक्टिस भी की है फिर भी तुम लोग खरदिमाग और आवारा हो। कहीं कर्नैल साहब अचानक आ गए और उन्होंने तुम्हारी ये करतूतें देख लीं तो मेरी शिकायत हो जाएगी। मैं अपने ओहदे से हाथ नहीं धोना चाहता, इसलिए कुत्ते के पुत्तरो, तमीज़ से पेश आओ वरना मैं ज़िन्दा तुम्हारी खाल खिचवा दूंगा। चलो लेफ्ट टर्न!"

लोकनाथ ने रंगरूटों को नया आर्डर देने से पहले सांस लेने का भी वक्त नहीं दिया। मामला और भी ज़्यादा बिगड़ गया जब एक रंगरूट बुदबुदाया, "ओए, देखो, आसमान पर बादल छा गए हैं।"

अचानक 'लेफ्ट टर्न' का आर्डर पाकर और अपने साथियों की बातचीत सुनने के लिए उत्सुक रंगरूटों में कुछ दाईं तरफ मुड़े तो कुछ बाईं तरफ। लोकनाथ गुस्से से लाल-पीला होकर रंगरूटों के पास आया और उसने अंधाधुन्ध उन्हें तमाचे लगाने शुरू किए। "गधों के बच्चो, सूअर के बच्चो! तुम्हें इतनी भी तमीज़ नहीं!"

लालसिंह के नज़दीक खड़े एक रंगरूट ने कहा, "लेकिन हवलदार जी…"

लोकनाथ गुस्से से अंधा हो रहा था। उसने बिना समझे-बूझे लालसिंह के गाल पर तीन चांटे लगा दिए। उसका खयाल था कि लालसिंह ने प्रतिवाद किया था।

"मेरा क्या कसूर है जो आपने मुझे दोबारा चांटा मारा?" लालसिंह ने

अपना गाल सहलाते हुए पूछा। क्षण-भर के लिए कमज़ोरी से वह चकरा गया था और उसकी आंखों के सामने मटमैले रंग की धूल-भरी परेड ग्राउण्ड घूम गई थी जहां मट्टी धूप से सख्त हो गई थी।

"खामोश रहो !" लोकनाथ ने चिल्लाकर कहा और फिर नया आर्डर देने के लिए तैयार हो गया।

अचानक लालसिंह को अपनी हथेली पर खून नज़र आया। "यह क्या आफत आ गई ! ज़रूर मेरी नकसीर फूट गई होगी।" वह बड़बड़ाया।

"तुझमें इतनी जुर्रत कि मुझे गालियां दे !" लोकनाथ ने लालसिंह को तड़ातड़ चांटे लगाते हुए कहा।

"जा बारक में चला जा। सूअर के बच्चे, मेरी आंखों के सामने से दफा हो जा।" लोकनाथ ने आर्डर दिया। वह चारों तरफ यह देखने के लिए नजरें घुमा रहा था कि कहीं कोई अफसर तो नहीं आ रहा।

लालू चुपचाप वहां से चल दिया। उसकी आंसू-भरी आंखें शर्म के मारे ऊपर नहीं उठ रही थीं, न वह मैदान में ड्रिल करते हुए सिपाहियों को ही देख रहा था। उसके कानों में किसी रंगरूट की आवाज़ सुनाई दी, "अब तो सभी लोग तेरी आंखों के सामने से दफा हो जाएंगे, ज़ोर की आंधी आ रही है।"

और फिर मैदान में भगदड़ मच गई।

"जहां हो वहीं खड़े रहो, सूअरो !" लोकनाथ ने गुस्से से ऑर्डर दिया, "और लालसिंह, तू भी खड़ा रह !"

रंगरूट चुपचाप खड़े हो गए। रात की तरह काले रंग के एक धूल-भरे बादल ने आकर सूरज को ढंक लिया और सारा मैदान धूल और रेत की परतों में छिप गया। रंगरूट घबराकर इधर-उधर भागने लगे। पक्षी भी पूरी ताकत से उड़कर आश्रय के लिए स्थान ढूंढ़ने लगे। क्षण-भर में खुले मैदानों से आकर आंधी ने सब लोगों को घेर लिया। ज़ोर से आंधी चलने लगी। पेड़ों के पत्ते, कंटीली झाड़ियां, पौधे और रद्दी कागज़ उल्काओं की तरह मैदान में एक छोर से दूसरे छोर तक गिरने लगे। धूल और रेत के कण शरीर की खाल को बेध रहे थे। महीनों तक धरती इस इन्तज़ार में थी कि बारिश आकर धूप की तपिश को दूर करे। अब आसमान को फाड़कर चीखती और सरसराती हुई आंधी गुस्से में आकर हर चीज़ को जड़ से उखाड़ रही थी और तबाही मचाना चाहती थी। इस तूफान में लालू

के कदम भी उखड़ गए और सैकड़ों लड़खड़ाते हुए पैरों के साथ उसके कदम भी बारकों में आश्रय लेने के लिए बढ़ने लगे थे। लालू ने तूफान के क्रोध में अपने क्रोध की झलक देखने की कोशिश की जैसे ईश्वर का कोप लोकनाथ पर बरस रहा हो।

२६

ज़ोरदार परेडों ने नये रंगरूटों का दम निकाल दिया।

तड़के-तड़के जब ठंडी हवा में उनपर नींद की खुमारी छाई रहती थी, जब दिन-भर की थकावट के बाद उमस-भरी रातों में वे बेचैनी से बिस्तर पर करवटें बदल रहे होते थे, तो इतने में फौजी बिगुल बज जाता था। दो फर्लांग दूर टीन की छतों वाले पाखानों में लालू सुबह उठकर जाता था। रास्ते में एक कुआं था, जहां सौ के करीब फौजी एक-दूसरे को धकेलते हुए नहाने के लिए जमा होते थे। इसी वक्त बिगुल की आवाज़ उन्हें मैदान में जमा होने की चेतावनी देती थी।

कई दिनों के अभ्यास के बाद उन्हें ड्रिल करना आया। उन्हें ट्रेनिंग देने वाले प्रशिक्षकों का स्वभाव लोकनाथ जैसा था। उनकी गालियों, बदतमीज़ियों के सामने चतुर से चतुर आदमी के भी हाथ-पैर फूल जाते थे। नये रंगरूटों का तो कहना ही क्या, पुराने तजुर्बेकार फौजी भी उनके आर्डरों से घबरा जाते थे। जब उन्हें एकाएक बिखर जाने का हुक्म मिलता था तो वे मार्च करते-करते दूसरी पल्टन के फौजियों में जा घुसते थे या दीवार से जाकर टकरा जाते थे, और स्क्वैड में अव्यवस्था फैल जाती थी। जब उन्हें बन्दूक चलाने को कहा जाता था तो वे आंखें फाड़-फाड़कर अपने घुटनों और हाथों को देखने लगते थे, और उनके रहे-सहे होश-हवास भी गायब हो जाते थे।

प्रशिक्षक की तरह हाथ में राइफल पकड़ना शायद इतना मुश्किल काम नहीं है लेकिन घुटनों के बल बैठकर, खड़े होकर या पेट के बल लेटकर सीधे निशाना लगाना, और खून के प्यासे मनमाने प्रशिक्षक के आदेश के अनुसार बन्दूक का घोड़ा दबाना, कारतूस भरना, सही-सही पांच बार फायर करना टेढ़ी खीर थी, हालांकि शूटिंग अभ्यास के लिए की जाती थी, कारतूस, फायरिंग रेंज सब चीजें

बनावटी थीं।

हर बार गलती होने पर गाल पर चांटा खाना पड़ता था, पेट में ठोकर मारी जाती थी, ज़ख्मी घुटने पर फिर से चोट लगाई जाती थी। लालू ने अपनी ज़िन्दगी में इतनी वहशत और खूंख्वारपन कभी नहीं देखा था।

रंगरूटों को बोरियों के बने मसनूई 'डमी सिपाहियों' पर संगीनें चुभोनी पड़ती थीं। इस दृश्य से बढ़कर खूंख्वार दृश्य फौजी जीवन में कोई नहीं था।

प्रशिक्षक गरजकर कहता था, "सब बहादुर जवान दुश्मन से आमने-सामने लड़ना चाहते हैं। इसलिए तुम लोगों को भी पता होना चाहिए कि दुश्मन के शरीर के सबसे कमज़ोर हिस्से पर चोट पहुंचाकर उसे खत्म करना चाहिए, हमेशा दुश्मन के कलेजे, पेट या अंडकोष पर वार करना चाहिए। लेकिन अगर दुश्मन तुमपर पहले वार करे तो उसे राइफल के कुन्दे से गिरा दो, उसे अपने जूतों तले कुचलकर उसके शरीर में संगीन गहरी भोंक दो। हमेशा याद रखो, संगीन गहरी भोंकनी चाहिए ताकि भीतर ही भीतर उसका खून बहता रहे और वह खत्म हो जाए। रेडी···वन, टू, थ्री!"

फौजी ज़ोर से सांस लेकर अपनी पूरी ताकत से मसनूई दुश्मन पर टूट पड़ते। ऐसे मौके पर कमज़ोरी दिखाने पर कड़ी सज़ा मिलती थी। प्रशिक्षक उन्हींके पेट को राइफल के कुंदे से कोंचता था।

सुबह चिलचिलाती धूप में परेड करने के बाद फौजी पसीने में लथपथ होकर बारकों में लौटते थे और कंकर मिली दाल, चपातियों और चावल पर टूट पड़ते थे। चपातियां या तो जली होतीं थीं या अधपकी। इसके बाद वे अपनी पेटियों, बटनों और बूटों को चमकाने में लग जाते थे। खास तौर पर बूटों को, क्योंकि बैल के चमड़े के बने भरकम बूटों में जब तक सरसों का तेल नहीं चुपड़ा जाता था, तब तक वे सख्त रहते थे और उनपर ठीक से पालिश नहीं हो सकती थी। उधर एन० सी० ओ० चाहता था कि फौजी जवानों के बूटों पर पेटेण्ट लैदर जैसी चमक होनी चाहिए। अनपढ़ फौजी रेजीमेंट के स्कूल में जाकर क, ख, ग सीखते थे। सख्त गर्मी में कभी-कभी तेज़ लू आकर उनके शरीर को झुलसा देती थी। अगर वे क्लास में ज़रा भी ऊंघते तो टीचर उन्हें रूलर मारता। उन्हें सैल्यूट करने की भी तालीम दी जाती थी। तीसरे पहर वे फिर परेड की तैयारी में लग जाते थे। शाम की परेड और भी ज़्यादा खतरनाक साबित होती थीं, क्योंकि

थकान या आलस जैसे 'जुर्मों' पर कड़ी सज़ा मिलती थी।

लालू को अहसास हुआ कि उसके गांव में तो चारा चुराना 'जुर्म' समझा जाता था लेकिन फौज में 'जुर्म' शब्द बड़ी सूक्ष्म चीज़ थी। परेड में अगर कोई आंखें मिचमिचाता, या ज़्यादा देर सोने की वजह से किसीकी आंखें सूजी-सूजी नज़र आतीं और बाल ठीक ढंग से न संवरे होते तो फौरन उस फौजी को 'मुजरिम' बना दिया जाता था। सिक्खों के अलावा सब फौजियों के लिए खास ढंग से बाल रखना ज़रूरी था।

जुर्म क्या है, इसका दारोमदार एन० सी० ओ० की मर्ज़ी पर था जिसका दिमाग बारीकियों को पकड़ने में बहुत तेज़ था।

बालों की वजह से लालू पर भी आफत आई।

६८वीं सिक्ख कंपनी के किसी फौजी को पता चल गया कि पहले लालू के लंबे बाल थे। उसने फौज में भर्ती होते वक्त झूठ बोला था और अपने को हिन्दू डोगरा बताया था। जल्द ही यह अफवाह आग की तरह फौजियों में फैल गई।

एक दिन लांसनायक लोकनाथ ने यह अफवाह सुनी। उसने हवलदार लछमनसिंह से शिकायत की। लालू को हुक्म मिला कि वह दोपहर के वक्त कंपनी कमांडर लेफ्टीनेण्ट ऑडले के सामने पेश होने के तैयार हो जाए।

लोकनाथ लालू के साथ इस तरह मार्च कर रहा था जैसे लालू कैदी हो। लालू की घबराहट की इन्तिहा न रही। ऊपर से लोकनाथ उसके सर पर सवार था। जब उसे साहब के सामने पेश किया गया तो वह डर से पत्ते की तरह कांपने लगा। उसे महसूस हुआ कि शायद वह वहीं बेहोश हो जाएगा।

जब लालू धूप से तपे बरामदे में दुबककर बाबुओं और अर्दलियों को आते-जाते देखने लगा तो कंपनी कमांडर की आवाज़ सुनाई पड़ी, "सिपाही लालसिंह को पेश करो, हवलदार साहब।"

हवलदार लछमनसिंह ने आवाज़ दी, "सिपाही लालसिंह और गवाह पेश हों।"

लालू ने उठकर अपनी वर्दी को झाड़ा-पोंछा और मार्च करता हुआ कंपनी-कमांडर के दफ्तर में पहुंचा। उसके पीछे लोकनाथ और वह सिक्ख फौजी था, जिसने लालू के बारे में अफवाह फैलाई थी।

"हाल्ट! राइट टर्न!" हवलदार लछमनसिंह ने ऑर्डर दिया।

लालू ने अपने-आपको आॅंडले साहब के सामने खड़ा पाया।

"सिपाही का जुर्म क्या है ?" आॅंडले ने पूछा। वह पतला-दुबला लंबे कद का अफसर था, जिसकी आदतों से लापरवाही और मसखरापन झलकता था। उसका निचला जबड़ा आगे की तरफ लटक रहा था।

"हजूर, इसकी काण्डक्ट शीट पर जुर्म लिखा है।" लछमनसिंह ने कहा।

साहब अभी कांडक्ट शीट को देख ही रहे थे कि लांसनायक लोकनाथ अटेंशन खड़ा हो गया। उसने मेज़ पर अपनी नज़र गड़ाकर भाव-शून्य अंदाज़ में कहा, "हजूर, सिपाही सुच्चासिंह नंदपुर के पास वेरका गांव का रहने वाला है। उसने रिपोर्ट की है कि सिपाही लालसिंह जात से सिक्ख है। उसने अपने केश कटवा दिए हैं और झूठ बोला है कि वह हिन्दू जाट है और डोगरा है। दरअसल वह जाट सिक्ख है।"

"सिपाही सुच्चासिंह, तुम इस बारे में क्या जानते हो ?" लेफ्टीनेण्ट आॅंडले ने सवाल किया।

"हजूर, मैंने अफवाह सुनी है ..."

"ओह ! इस मुल्क में लोग अफवाहें ही अफवाहें सुनते हैं।" लेफ्टीनेण्ट आॅंडले ने कहा।

इसपर हवलदार लछमनसिंह ने 'अटेंशन' खड़े होकर कहा, "हजूर, सिपाही लालसिंह की फाइल मेज़ पर रखी है। यह सच है कि वह जन्म से सिक्ख है। एडजुटेण्ट साहब को यह बात मालूम थी। लेकिन उन्होंने इसके नाम के आगे 'हिन्दू जाट' इसलिए लिख दिया, क्योंकि सिपाही लालसिंह ने बहुत पहले से अपने केश कटवा दिए थे। यह राजपूत है और इसका गांव पहाड़ी इलाके के नज़दीक है। मानाबाद के डिप्टी कमिश्नर साहब बहादुर ने भी एक खत भेजा है, जिसमें सिपाही लालसिंह का सारा रिकार्ड दर्ज है।"

"अगर एडजुटेण्ट साहब को यह बात मालूम थी तो फिर सिपाही को किस-लिए यहां पेश किया गया है ?"

"हजूर, लांसनायक लोकनाथ की रिपोर्ट पर।" लछमनसिंह ने जवाब दिया।

"इधर देखो लांसनायक लोकनाथ ! मैं तुम्हें मुबारकबाद देता हूं कि तुम अपनी ड्यूटी इतनी मुस्तैदी से निभाते हो, लेकिन तुम आॅफिस टाइम में किसी

न किसी सिपाही की पेशी करवाकर मेरा वक़्त बर्बाद करते हो। सिपाही लालसिंह, अगर तुमने एडजुटेण्ट साहब को अपने मज़हब और ज़ात के बारे में सच न बताया होता तो तुम्हारा जुर्म बहुत संगीन समझा जाता। आइन्दा से तुम्हें बहुत सावधानी बरतनी चाहिए ताकि तुम्हारे एन० सी० ओ० की तुमसे कोई शिकायत न हो और फिर तुम्हारी पेशी न हो। तुम्हें सारे आॅर्डर मानने चाहिए और गर्वीला सैनिक बनना चाहिए, इसमें शर्मिन्दा होने की कोई बात नहीं। समझ गए ?"

"जी हज़ूर," लालसिंह ने कहा। वह कुछ और भी कहना चाहता था लेकिन उसने अपने ऊपर काबू पा लिया।

लेफ्टीनेण्ट आॅडले ने कहा, "तुम्हारी कांडक्ट शीट खराब नहीं होगी। मैंने सिर्फ लिखा है 'एडमोनिश्ड।'"

"राइट टर्न! क्विक मार्च!" हवलदार लछमनसिंह ने आॅर्डर दिया।

तीनों जने मार्च करते हुए कमरे से बाहर चले गए। रास्ते में लांसनायक लोकनाथ ने लालू से कहा, "बच्चू, देखना किसी दिन फिर तेरी शामत आएगी! तुझे भी पता चलेगा कि किस आदमी से पाला पड़ा है। कहीं इस मुगालते में न रहना कि जीत तुम्हारी हुई है।"

२७

लालसिंह के भीतर के खामोश, धैर्यशील किसान ने, धरती मां के बेटे ने, जिसके पूर्वज लंबे-तगड़े थे और यातनाएं सहकर जिनके शरीर कठोर हो गए थे, जिन्होंने सोई हुई धरती की छाती पर हल चलाए थे, पसीना बहाकर अपने पट्ठों में एक नई ताकत महसूस की। उसके पूर्वजों ने अपनी धरती जीतने के लिए जो लंबी लड़ाइयां लड़ी थीं उनकी कहानियां लालसिंह ने सुन रखी थीं—इसलिए उसे फौजियों के साथ कम से कम कुछ फौजियों के साथ अपनापन महसूस होता था।

लालू को कंपनी का चीफ एन० सी० ओ० हवलदार लछमनसिंह बहुत अच्छा लगता था। उसका खूबसूरत चेहरा, नुकीली नाक, जिसमें से वह घोड़े की तरह सांस लेता था, बाज़ की तरह साफ पैनी आंखें—इन सबसे लालू शुरू से ही प्रभावित

हुआ था। इसके अलावा लछमन माना हुआ खिलाड़ी था। पैरेलल बार्ज़, हॉरीजेंटल बार, पटेबाज़ी और हॉकी में उसने नाम कमाया था। रेजीमेण्ट में सब लोग उसकी इज़्ज़त करते थे।

नये रंगरूटों के साथ जब लालू हॉकी की प्रैक्टिस करते वक्त शेरकोट के स्कूल के विद्यार्थियों की तरह गेंद को हॉकी से फेंक रहा था तो खुशकिस्मती से लछमन की नज़र उसपर पड़ी। लछमन ने उसे बुलाकर कहा कि अगले इतवार को वह अपने कलर ले ले और कनॉट रेंजर्स के मुकाबले में मैच खेले।

और इतवार की शाम को लालू अपने असली रूप में आया। लछमनसिंह की मेहरबानी से उसे कम से कम एक बार तो अवसाद की दलदल से निकलकर उत्तेजना और हर्षोन्माद की दुनिया में आने का मौका मिला था।

वह राइट विंग में खेल रहा था। यह देखकर उसकी खुशी और हैरानी की हद न रही कि उसके मुक्तिदाता कैप्टन ओवन भी वहीं खेल रहे थे। दोनों के खेल में इतना तालमेल बैठ गया था कि हाफ टाइम के वक्त साहब ने लालू की पीठ थपथपाई। सब सिपाहियों और दर्शकों की नज़र में लालू की प्रतिष्ठा बढ़ गई। ओवन साहब का प्रोत्साहन पाकर लालू गेंद लेकर आगे बढ़ा और रेंजर्स की 'डी' के पास आकर उसने पैंतालीस डिग्री के कोण से एक ज़ोर का हिट मारा और गोल कर दिया। मेजर पीकॉक सेंटर फारवर्ड की जगह पर खेल रहे थे। लालू को हिट लगाते देखकर वे ज़ोर से चिल्लाए। क्षण-भर के लिए लालू की आंखों में डर और घबराहट छा गई, लेकिन गेंद गोल-कीपर से आगे जा पहुंची थी। एडजुटेण्ट साहब ने कहा, "शाबाश!"

मैच के बाद हवलदार लछमनसिंह ने उसे सोडावाटर पिलाया और कहा कि उसे रेजीमेण्ट की हॉकी टीम में ले लिया जाएगा। लम्बी मेज़ों के सामने खड़े होकर ओवेन साहब दूसरे गोरे अफसरों और मेमों के साथ सोडावाटर पी रहे थे। एडजुटेण्ट ने सबके सामने लालू की तरफ इशारा किया। लालू को एहसास हुआ कि अब वह मशहूर हो गया है।

लालू की इस मशहूरी की वजह से लछमनसिंह और लांसनायक लोकनाथ में खटपट हो गई थी। लांसनायक ने हवलदार को मजबूर किया था कि वह लालू की रिपोर्ट करे—लेकिन लछमनसिंह ने खामोशी और होशियारी से यह मामला निपटा लिया था। लालू को महसूस होने लगा कि रेजीमेण्ट में कम से कम उसका

एक दोस्त तो है।

सूबेदार मेजर का अर्दली किरपू, जिसे बुढ़ापे और सनकीपन की वजह से लोग 'चाचा' कहते थे, लालू की भलाई में बहुत दिलचस्पी लेता था, हालांकि फौजी ज़िन्दगी के लम्बे तजुर्बे ने उसे कटु और आस्थाहीन बना दिया था।

वह अपनी चिपचिपाती आंखों को आधा मूंदकर और होंठों के कोनों पर एक क्लान्त मुस्कराहट लाकर कहता, "जिसकी लाठी उसकी भैंस ! मैं कहता हूं पुत्तर, मेरी बात गांठ बांध ले। जिसके पास लाठी नहीं उसका ज़िन्दगी में कोई हक नहीं। मैंने भी दुनिया देखी है। इसी रेजीमेण्ट के साथ मैं चीन गया था और सरहद पर भी गया था। हर जगह मैंने यही देखा, 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। हांगकांग की छावनी में भी अंग्रेज़ी राज है। वहां साहब लोगों के बंगलों के बाहर बंदूकों का पहरा रहता है। बाज़ारों में जहां अंग्रेज़ों के दफ्तर, किताबों, मिठाइयों और कपड़ों की दुकानें हैं, वहां भी तांबे की तख्तियों पर साहबों के नाम लिखे रहते हैं। हमारे शहरों की दूकानों की तरह वहां की दूकानों के सामने बड़े-बड़े साइन बोर्ड नहीं लटके रहते। वहां सिक्ख अंग्रेज़ी सरकार की वर्दियां पहनते हैं और चीनी लोग गुलामों की तरह रहते हैं।

"सरहदी सूबे में भी लाल मुंहों वाले तंदुरुस्त पठान साहबों के सामने झुकते हैं हालांकि कभी-कभी वह किसी अमीर अफसर को या मेम को पकड़कर ले जाते हैं। मैं तुझे अपने तजुर्बे से बताता हूं पुत्तर, कि आजकल तो आदमी का सिर्फ एक ही फर्ज़ है, वह है हुक्म की तामील करना।

"किसी ज़माने में मेरे और मेरे भाइयों के पास चलीस एकड़ ज़मीन थी जो राजा संसारचन्द ने मेरे पिता को दी थी। बीस साल पहले मेरे पल्टन में भर्ती होने से पहले वह सारी ज़मीन हमारे हाथ से निकल गई थी, क्योंकि कांगड़ा की पहाड़ियों में हमेशा सूखा पड़ा रहता था ; हम लगान नहीं चुका सके, सो सरकार ने हमारी ज़मीनें कुर्क कर लीं।

"नेक राजा संसारचंद के ज़माने में अगर फसल अच्छी नहीं होती थी तो लगान माफ कर दिया जाता था। वह तो राम राज था। लेकिन आज के ज़माने में पुत्तर, बस एक ही बात रह गई है 'हुक्म मानो'। मैं सिपाही हूं, मुझे हुक्म मानना चाहिए ; तुम सिपाही हो, तुम्हें भी सरकार का हुक्म मानना चाहिए। ईश्वर का और सरकार का हुक्म मानो। हमने ऐसे कर्म किए थे कि ईश्वर ने हमें सरकार

का नौकर बनाया है। सिपाही को चीन या सरहद पर जाना पड़ता है, उसे सरकार बर्मा भेजे या सिकन्दराबाद, उसे हुक्म मानना चाहिए। सिपाही का पहला और आखिरी फर्ज़ है हुक्म मानना बशर्ते...''

फिर वह लालू के कानों में कुछ फुसफुसाता था और लालू की पीठ ठोंककर भाग जाता था। ''अगर किसी दिन जंगल में लोकनाथ से तुम्हारी भिड़न्त हो जाए तो उस सूअर को सीधा कर देना; टुंडीलाट की भी परवाह मत करना!''

फिर कभी लालू को अकेला देखकर वह भेद-भरे ढंग से कहता, ''पुत्तर, चाहे मान चाहे न मान, इन्सान का काम अधूरा रहता है, रब्ब का हर काम पूरा होता है। मुझे यकीन है कि इन्सान में रब्ब है, इन्सान रब्ब की तरफ बढ़ने की कोशिश करता है। साधु-संत हमेशा मूरख लोगों को नेक सलाह देते हैं और ऊंची मंज़िल तक ले जाते हैं। मुझे साधु-संतों से बड़ा प्यार है। लेकिन याद रख, मैंने ज़िन्दगी में मक्कार और धोखेबाज़ ही ज़्यादा देखे हैं। असली संत बहुत कम देखे हैं।''

लालू कहता, ''तुम मेरे भाई दयालसिंह से ज़रूर मिलना। वह भी संत है।''

''हला पुत्तर, अगली बार जब मुझे फालो मिलेगी तो तुम मुझे अपने साथ घर ले जाना, मैं संतों का हुक्म मानूंगा, उनके चरण दबाऊंगा। इस कुतिया सरकार का और उसके लोकनाथ जैसे पिल्लों का हुक्म मानने से तो संतों की सेवा करना बेहतर है। तुम पढ़े-लिखे आदमी हो, बाबू हो। तुम सोचते होगे कि मैं पागल हूं, लेकिन बहुत सोच-विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सदा नेक लोगों ने मूरखों की बुराइयों को दूर करने के लिए, उनकी आंखों से अज्ञानता का पर्दा हटाने के लिए तकलीफें झेली हैं। सचाई की खातिर शहीद हुए हैं। वे आजकल के योगियों की तरह नहीं थे जो हाथ-पैर को ताला मारकर भीख मांगते हैं; वे गरीबों को खिलाते थे, हर मामले में उन्हें राय देते थे। तुम चाहे जो कहो, मुझे तो संतों से प्यार है। फौज में 'तलवार की धार दुश्मन को काटती है; सिपाही लड़ता है और सेहरा बंधता है सूबेदार मेजर साहब और कर्नल के सर पर।' यह सब जाल है जाल पुत्तर। किरपू चाचा की बात सुन और उसकी सलाह को मत भूलना।''

''किरपू चाचा, तू भी अजब चिड़िया है,'' लालू कहता। किरपू जवाब देता, ''तेरा चाचा किसीको नुकसान नहीं पहुंचाता। उसे तो साधु-संतों से प्यार है।''

लालू ने एक और दोस्त बनाया। वह था बाबा धन्नू जो किरपू से उम्र में बड़ा था और ज़्यादा निराशावादी था। उसका चेहरा संजीदा था, आंखें बड़ी थीं और माथे पर झुर्रियां थीं। एक दिन जब बाबा धन्नू दस दिन की छुट्टी के बाद लौटा, कई दिन तो उसे ज़िला होशियारपुर में अपने गांव आने-जाने में ही लग गए थे, लालू ने मज़ाक किया, "कहो बाबा धन्नू, तुम्हारे घरवाले कैसे थे, मेरे लिए क्या सौगात लाए हो?" धन्नू खामोश रहा। लालू को लगा कि उसने अपनी बदतमीज़ी से बूढ़े के दिल को ठेस पहुंचाई है। क्योंकि सब किसानों की तरह धन्नू भी घर के मामलों की चर्चा नहीं पसंद करता था।

अचानक धन्नू ने अपना गला साफ करके कहा, "शहरी मक्कार गरीबी का बहाना बनाते हैं पुत्तर, लेकिन मेरे जैसे गांवों में सैकड़ों जानवर और हज़ारों आदमी इसलिए दर्द-तकलीफें सहते हैं ताकि शहर के लोग रेशम पहनें और हलवा-पूरी खाएं। पिछले तीन बरस से हमारे यहां पानी नहीं बरसा। हम लोगों के पास अपनी ज़मीन भी नहीं है, न वहां कोई काम ही देता है। अगर सरकार न होती तो मैं भूखा मर जाता।"

"क्या उनके पास पैसे भी नहीं हैं?" लालू बेवकूफी से पूछ बैठा। बाबा धन्नू फिर अवसाद की दलदल में धंस गया और बोला, "पैसा, पैसा, हम लोगों ने पैसे की शक्ल भी नहीं देखी। इसलिए तो हम लोग पल्टनों में भरती होते हैं। अगर सरकार मेहरबानी न करती तो हम भूखों मर जाते।"

यह कहकर बाबा धन्नू ने थैले में हाथ डाला और सूखे आमपापड़ का टुकड़ा निकालकर कहा, "ले पुत्तर, मैं गांव से तेरे लिए यह सौगात लाया हूं। थोड़ा-थोड़ा खाना, वरना तुझे दस्त लग जाएंगे।"

लालू ने कहा, "इस अमपापड़ का दाम तो मुझसे ले लो।" उसने सोचा कि बूढ़े ने अपने गरीब रिश्तेदारों पर पैसे खर्च किए होंगे और फिर वह लालू के लिए भी सौगात खरीदकर लाया है।

बूढ़े ने खीजकर कहा, "मुझे न सोना चाहिए न चांदी। बस ईश्वर की कृपा चाहिए। ईश्वर का दिया मेरे पास बहुत है, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। अब बुढ़ापे में मुझे धन-दौलत नहीं चाहिए। कभी मेरी घरवाली थी…"

लेकिन वह गहरे दुःख में डूब गया। लालू समझ गया कि बूढ़े की घरवाली

मर गई है और अब उसे सहारा देने वाला कोई नहीं। लालू होशियारी से वहां से खिसक गया ताकि बूढ़े का दिल दुःख से न टूट जाए।

गर्मी की उमस-भरी रातों और थका देने वाले दिनों में लेटे हुए या मार्च करते हुए लालू जब किसी गांव के नज़दीक से गुज़रता तो अपने-आपसे पूछता, 'यहां रहकर मेरी किस्मत में क्या लिखा है?' उसका शरीर लू से झुलस जाता था और इंस्ट्रक्टरों की मार के ज़ख्मों से भरा रहता था। वह सोचता था, 'मेरा क्या होगा? क्या मैं हमेशा फौज में रहूंगा और कभी भी घर नहीं लौट सकूंगा?'

इसी तरह दिन और रातें गुज़रते गए और ये सवाल दुश्मन ताकतों की तरह मुंहबाए उसके सामने खड़े थे, लेकिन उसे अपने सवालों का कोई जवाब न मिल सका। कभी-कभी उसे धुंधली-सी उम्मीद नज़र आती थी कि धीरे-धीरे तरक्की करके शायद वह किसी दिन फौजी अफसर बन जाएगा या कभी रेजीमेण्ट में क्लर्क का ओहदा खाली होगा तो वह अपनी बदली दफ्तर में करवा लेगा। फौजी जवान बाबुओं को हिकारत की नज़रों से देखते थे, इसलिए उसे पहले वाली महत्त्वाकांक्षा बेहतर मालूम होती थी। लेकिन इम्तहान जाड़ों से पहले होते थे और फिरोज़पुर छावनी में गर्मी के मौसम में लिखना-पढ़ना मुश्किल था।

शाम के वक्त जब आसमान का नीलापन और लाली, सुनहरी सूर्योदय के रंग में बदल जाती थी तो लालू निराशापूर्ण सोच-विचार को छोड़कर बारकों के बीच वाली जगह पर टहलने के लिए चला जाता था। खाकी निकरें या अंगोछे पहने कुछ आदमी कच्ची दीवारों वाले रसोईघर के बाहर ईंधन के लिए लकड़ी के कुंदे चीरते हुए दिखाई देते थे। उनके बदन पसीने से लथपथ होते थे। कुछ लोग हमेशा लोटे हाथ में लेकर जाप करते हुए पाखानों की तरफ जाते दिखाई देते थे। कुछ लोग 'क्वार्टर गार्ड' पर ड्यूटी देने के लिए अपनी वर्दियां पहन रहे होते थे या अपनी राइफलों की सफाई करते दिखाई देते थे।

रेजीमेण्ट के बाज़ार में आध सेर गर्म दूध और जलेबियां खाने के बाद लालू बारक में लौट आता था। शुरू-शुरू में उसे ये दृश्य बड़ी उत्तेजना देते थे। लेकिन रोज़ की रुटीन होने के कारण अब उसकी दिलचस्पी भी खत्म हो गई थी। हर चीज़ गर्मी में झुलस रही थी। यहां तक कि चिड़ियां भी, जो एक बरामदे से दूसरे बरामदे में फुदकती रहती थीं, अब या तो वे ठंडी जगहों पर छिपकर बैठती थीं या लाइनों में मरी पड़ी थीं। जहां-जहां काले चींटों ने उनका गोश्त खा लिया था,

वहां-वहां गुलाबी और लाल रंग दिखाई दे रहा था। अंधेरे और थकान की वजह से लालू का मन लिखने-पढ़ने या किसी और काम में नहीं लगता था। बारकों में वैसे भी लैम्प बहुत कम थे। अंधेरे धुएं और कालिख से भरे रसोईघर में खाना खाते ही आखिरी घंटा सुनाई पड़ता था। सारे रसोईघर में सिर्फ एक ही रसोइया था जो दिन-रात धीरे-धीरे जलने वाले ईंधन को गालियां देता हुआ तवे पर रोटियां सेंकता रहता था और सिपाहियों से मिन्नत करता रहता था कि वे दूसरों की चीज़ों को न हथियाएं।

महीने में एक बार लालू रेजीमेंट की वर्दी, खाकी पगड़ी, खाकी कमीज़, नैकर और चमड़े के देसी जूते पहनकर शहर में घूमने जाता था। सब फौजियों की तरह शहरी लोगों में उसकी भी प्रतिष्ठा थी। इस मामूली सुविधा के कारण फौजियों का अपने काम-काज के अलावा शहरियों से कोई संपर्क नहीं था। यह रिश्ता भय के ऊपर आधारित था। फौजी चाहे जिसे पीट सकते थे, अधिकारियों से शिकायत कर सकते थे, दुकानों को लूट सकते थे, फिर भी उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता था।

लालू के पास पैसे भी नहीं थे, क्योंकि वह नियमित रूप से अपनी तनख्वाह का अधिकांश घरवालों को भेज देता था। इसलिए फिरोज़पुर छावनी में सुख की जो चीज़ें मिल सकती थीं, वह उन्हें भी हासिल नहीं कर सकता था—वे चीज़ें थीं रंग-बिरंगे शर्बत, बीमार और बूढ़ी चवन्नी वाली रंडियां जो अपनी गली में पान चबाती हुई आवाजें लगा-लगाकर ग्राहकों को बुलाती थीं।

लालू अपने को अकेला महसूस करने लगा था। गांव की दुनिया, जहां हर जगह गोबर के ढेर, बीटें और टट्टियां बिखरी रहती थीं, गन्दी ज़रूर थीं, लेकिन इस जेल की सी कठोर और नीरस ज़िन्दगी में भी कोई सुख नहीं था, न यहां मुक्ति का कोई रास्ता ही दिखाई देता था। रोज़मर्रा के कामों में भी उसका दिल नंदपुर जाने के लिए छटपटाता रहता था। चांदमारी के समय खुरदरे काले रंग के कंबल पर लेटकर जब वह बन्दूक तानकर दो सौ गज़ की दूरी पर बने डमी निशानों पर फायर करता था तो अचानक उसकी आंखों के सामने उसकी मां की शक्ल आ जाती थी जो आंगन के तन्दूर में रोटियां पका रही होती थी, या उन दर्ज़ियों की धुंधली शक्लें कौंध जाती थीं जो दयालसिंह की दुल्हिन के लिए रेशमी दुपट्टों पर सलमे और गोटे का काम कर रहे थे। और उसका निशाना चूक

जाता था।

उसे यह डर बना रहता था कि कहीं प्रशिक्षक आकर उसकी गर्दन में ठोकर न मारे। फिर भी वह सोचता था कि क्या शादी हो गई होगी? घर के लोग खैरियत से हैं या नहीं, क्या वे उससे खफा होंगे?

उसे फौज में भर्ती हुए पांच महीने हो गए थे। इस बीच घर से कोई चिट्ठी नहीं आई थी। उसने जो पैसे उन्हें भेजे थे, उसकी भी रसीद नहीं मिली थी।

'उन्होंने खत क्यों नहीं लिखा? कहीं वे मुझसे छुटकारा तो नहीं पाना चाहते?' लालू सोचने लगा।

फिर उसने अपने-आपको तसल्ली दी, 'जब मां घर लौटी होगी तो मुझे वहां न देखकर वह रोई होगी।' लालू के दिल में आया कि वह रेजीमेंट छोड़कर भाग जाए और जाकर देखे उसके घर वाले कैसे हैं। लेकिन उसने देखा था कि भगोड़ों को पकड़कर वापस लाया जाता था। उनपर मुकदमा चलाया जाता था और पहरे में कैद रखा जाता था। खाने के लिए उन्हें सिर्फ रोटी और ठंडा पानी दिया जाता था। इसलिए उसमें भागने की हिम्मत न हुई।

एक दिन जब वह सुबह की परेड से यह सोचता हुआ लौट रहा था कि इस वक्त उसकी मां कुएं पर रोटियां और छाछ लेकर जाती थी कि इसी वक्त दफ्तर का एक अर्दली उसे बुलाने आया।

"तुम बी कम्पनी के सिपाही लालसिंह हो?" अर्दली ने पूछा।

"हां, खां साहब।" लालसिंह ने उसकी इज्ज़त करके उसे आसमान पर चढ़ा दिया।

"तुम्हारा बाप गांव में सख्त बीमार है।" अर्दली ने लापरवाही से कहा। "एड्जुटेण्ट साहब के पास तार आया है। जल्दी से तैयार हो जाओ। आफिस में जाकर अपनी कम्पनी के बाबू से रेलवे-पास ले लो। ये कैप्टन साहब के आर्डर हैं।"

लालसिंह के पैरों को जैसे काठ मार गया। वह दफ्तर की तरफ देख रहा था। इस आकस्मिक खबर से उसका दिमाग अवसन्न हो गया था।

"तार किस वक्त आया था?" उसने अपनी घबराहट दूर करने के लिए अर्दली से पूछा।

"मुझे क्या पता? मैं तुम्हारे बाप का नौकर नहीं हूं।" अर्दली ने लालू को हिकारत-भरी नज़र से देखा। वह इस बात से चिढ़ गया था कि उसे एक मामूली

सिपाही के पास संदेशा लेकर आना पड़ा था।

अर्दली के शब्दों को सुनकर लालू के दिल पर गहरी उदासी छा गई। उसे अपने बाप के बाज़ जैसे चेहरे की याद आई, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वह पूरी तरह से उस चेहरे की कल्पना नहीं कर सका और बुत बना वहीं खड़ा रहा। उसे ताज्जुब हुआ कि किस तरह घर से दूर आकर हवा और पानी की तबदीली ने उसे इतना निर्मोही बना दिया था।

लाल ने पालतू ढंग से सैल्यूट मारके कहा, "अच्छा, खान साहब, मैं आपके साथ पास लेने के लिए चलता हूं।" वह अर्दली के पीछे-पीछे चल दिया।

लाल ईंटों की बारकों के ऊपर, और हिन्दुस्तानी अफसरों के साफ-सुथरे अहातों में धूप का साम्राज्य छागा था। लालू की आत्मा में वही थकान-भरी दुर्दमनीय आग जल रही थी जो खेतों में हल चलाते वक्त सुलगा करती थी। एक कौआ फटी आवाज़ में 'कांव-कांव' कर रहा था। उसकी घबराहट बढ़ गई और उसके मन में आया कि वह ज़ोर से चीख पड़े और विलाप करे।

लेकिन धूप और गर्मी उसकी भावुकता का मज़ाक उड़ा रही थी। उसने मुट्ठी भींचकर अपने होंठों को काटा और सर झुकाकर धीमी चाल से आगे बढ़ने लगा।

२८

लालू रेल में सवार होकर फिरोज़पुर से मानाबाद पहुंचा और मानाबाद से हचकोले खाती हुई छोटी लाइन की गाड़ी से नन्दपुर के लिए रवाना हुआ। गांव में पहुंचकर उसे ऐसा लगा जैसे समय शून्य के विस्तारों में खो गया हो। उसे नये चेहरे और नई चीज़ें दिखाई दे रही थीं।

गोधूलि वेला की खामोशी में जब वह सराय की दीवारों के पास पहुंचा, जिनमें से गर्मी की लपटें निकल रही थीं तो उसे अचानक झंडू इक्केवाला दिखाई दिया जो अहाते में चारपाई पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। पास ही घोड़े चारा खा रहे थे और पूंछ हिलाकर मक्खियों को उड़ा रहे थे।

"आ पुत्तर, तू अभी आया है ?" झंडू ने हुक्का एक तरफ हटाकर कहा।

"हां चाचा, रब्ब का शुक्र है कि मैं आ गया। इतनी गर्मी में सफर करना बड़ा मुश्किल काम है। धूप से मेरा सर जल गया है।"

"तू मुझे खबर भेज देता, मैं स्टेशन पर इक्का लेकर पहुंच जाता।" झंडू ने संजीदा स्वर में कहा और वह उठकर लालू के साथ चल पड़ा।

लालू को यह देखकर हैरानी हुई कि झंडू उसकी इतनी इज़्ज़त कर रहा था। लेकिन झंडू तो पहले से लालू से स्नेह करता था। शायद वह लालू की साफ-सुथरी फौजी पोशाक से प्रभावित हुआ था। झंडू सर झुकाकर खामोशी से चल रहा था। दो मुर्गियां पंख फड़फड़ाती हुई उसके रास्ते से निकल गई। वे इतना शोरगुल मचा रही थीं कि जैसे कोई बिल्ली उनका पीछा कर रही हो। झंडू मुर्गियों की तरफ ध्यान दिए बगैर सर झुकाकर चल रहा था।

"गांव का क्या हालचाल है ?" लालू बुरी से बुरी खबर सुनने के लिए तैयार था।

झंडू ने लालू के गले में बांहें डालकर कहा, "पुत्तर, बड़ी मनहूस घटना घटी है। तेरे जाने के बाद, दयालसिंह की शादी नहीं हुई, क्योंकि लडकी वाले शरारती लोगों के बहकावे में आ गए थे। खैर, उसकी तो कोई बात नहीं। लेकिन यह बात शर्मसिंह के दिल में चुभ गई थी। वह हरबंससिंह और हरदित्तसिंह से सख्त नाराज़ था, जिन्होंने तुम्हारे खानदान की जगहंसाई करवाई थी। वह दिन-रात कुढ़ता रहता था। हो सकता था कि वह इस बात को भूल भी जाता लेकिन एक दिन उसने महन्त नंदगीर और हरदित्त को केसरी के साथ जंगल में नदी के किनारे शराब पीते हुए देख लिया। उसके सर पर खून सवार हो गया। वह कुएं के पास जाकर एक गंडासा ले आया और जब ज़मींदार का बेटा हरदित्त जंगल से लौट रहा था तो शर्मसिंह ने उसे कत्ल कर दिया। महन्त साफ-साफ मुकर गया और उसने बयान दिया कि केसरी वहां नहीं थी। सुना है, तुम्हारे बापू ने शर्मसिंह की पैरवी करने के लिए एक वकील तय किया और कुछ जमीन रहन रखी लेकिन पिछले सोमवार को मानाबाद की जेल में शर्मसिंह को फांसी लगी थी। और तुम्हारे बापू ने तभी से खाट पकड़ ली है..."

लालू को जैसे काठ मार गया। उसने कुछ कहने के लिए मुंह खोला लेकिन वह इतना ही कह सका, "कैसी खौफनाक बात है।" उसकी आंखों में आंसू आ

गए। वह पसीने से तर हो गया और पागलों की तरह अपने घर की ओर भागा। उसे यह अहसास था कि आसपास के घरों में गाएं रंभा रही थीं। बाज़ार के शोर-शराबे में, लालटेनों की मध्यम रोशनी में दूकानदार और किसान हुक्के गुड़गुड़ा रहे थे। मिट्टी के शाश्वत कच्चे मकान ज्यों के त्यों थे। लेकिन अब वे पहले से ज़्यादा छोटे दिखाई दे रहे थे।

जब वह अपने घर की दहलीज़ पर पहुंचा तो गुजरी उसे देखकर पागलों की तरह चीख पड़ी "ओह, मेरा पुत्तर! मेरा पुत्तर!" गांव के बच्चों ने भागकर गुजरी को लालू के आने की खबर दी थी।

लालू को गले से लगाकर गुजरी धाड़ें मारकर रोने लगी। उसकी चीत्कारें सुनकर घर के सब लोग वहां जमा हो गए और उन्होंने गुजरी को समझाया, झिड़कियां दीं और तसल्ली देने की कोशिश की। वे लालू और गुजरी दोनों को भीतर ले गए।

लालू के मन में अंधेरा छाया था और रह-रहकर एक अजब किस्म के अवसाद और खीज की लहरें उठ रही थीं। आले में रखे पीतल के बर्तनों से आगे, जहां अनाज और खाने-पीने की चीज़ें मटकों में रखी थीं, उसका बूढ़ा बापू ज़मीन पर लेटा था। लोग इकट्ठे होकर कुछ कह रहे थे। ढिबरी की मंद रोशनी में उसने देखा, उसके बाप का चेहरा कभी कांप उठता था, कभी पीला पड़ जाता था, और कभी काला हो उठता था। मौत और ज़िन्दगी के संघर्ष में चेहरे की रंगत भी बदलती जाती थी।

सारे सफर में और झंडू की बातें सुनकर उसके पेट में जो खलबली मची थी उसके सही कारण और असली हालत का अहसास उसे अब हो गया।

उसकी आंखों के सामने उसके बापू का बहादुर और कठोर चेहरा था, जो अब सूखकर हड्डियों का ढांचा रह गया था। लगता था जैसे किसीने ठठरी को चमड़े से मढ़ दिया हो। लालू के मन में प्रबल विरक्ति और आकर्षण पैदा हुआ। वह यह सोचकर पश्चात्ताप से कांप उठा कि उसके दिल में अपने बाप के लिए कोई कोमल भावना नहीं रही। उसकी मां अभी भी उसका सहारा लेकर खड़ी थी। लालू के जी में आया कि वह मां से दूर हट जाए और मुंह खोलकर कुछ कहे। लेकिन उसकी मां उससे लिपटकर सिसकने लगी, "हाय मेरा पुत्तर! हाय मेरा पुत्तर!" लालू अन्यमनस्कतापूर्वक मां को स्नेह से सहला रहा था। वह मां को तसल्ली देने के लिए अपने दिल में तरस पैदा कर रहा था। उसकी मां की तेज़

आवाज़ कोठे तक गूंज रही थी, उस आवाज़ में दबी हुई आशा और अवसाद था।

हरनामसिंह ने समझाया, "गुजरी, लालू को छोड़ दे। अब वह हमारे पास लौट आया है। यह यहीं रहेगा।"

"यह यहां नहीं रहेगा। इसके जाने ने ही तो हमें बर्बाद कर दिया।" गुजरी ने जवाब दिया और वह पागलों की तरह चीखें मारकर रोने लगी।

"हाय नी, ऐसी बातें मुंह से न निकाल। लालू की लंबी उम्र हो। ऐसी बात न कह सुक्खी सांदी! रब्ब न करे ऐसा हो! लड़के को आराम करने दे।" अर्जीत कौर ने ऊंची आवाज़ में कहा। बाकी औरतें भी गुजरी को समझाने के लिए एक-दूसरे से सट गई थीं।

हरनामसिंह ने गुजरी को लालू से अलग किया।

"हाय मेरा पुत्तर! हाय!" गुजरी विलाप कर रही थी। उसके चेहरे पर बुढ़ापे और चिन्ताओं से झुर्रियां पड़ गई थीं। वह दुपट्टे से आंसू पोंछती-पोंछती लालू से दूर जा खड़ी हुई।

लालू ढिबरी के पास पहुंचा जहां मद्धिम रोशनी में उसके बापू के शरीर के गिर्द पैशाचिक एकाकीपन छाया था।

बूढ़े के सिरहाने एक बर्तन में धूप जल रही थी, जिसकी तेज़ गन्ध से लालू का सर चकराने लगा। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और खून की हरकत तेज़ हो गई थी। उसकी समझ में न आया कि वह किस तरह अपने पिता के प्रति अपने आदर का प्रदर्शन करे। उसके बापू के पैर चद्दर से ढंके थे और लालू उसके सिरहाने खड़ा था, इसलिए वह अपने दाएं हाथ से उसके चरणों की धूल भी माथे से नहीं लगा सकता था। वह सोच रहा था, क्या वह बापू के माथे पर हाथ रखे या गर्दन पर।

लालू नीचे झुका। बूढ़े के होंठों से एक गर्म आह निकली और उसका चेहरा दर्द से सिकुड़ गया, वह छटपटाकर करवटें बदलने लगा।

"कौन है लालू? तू आ गया पुत्तर।" निहालसिंह की आवाज़ अंधेरे के गर्त से सुनाई दी। और फिर जैसे उसके बेटे के चेहरे से किसी अलौकिक प्रकाश की किरन बूढ़े के दिमाग में घुसकर यमदूतों को चुनौती देने लगी। ज़िन्दगी और मौत का संघर्ष फिर शुरू हो गया। बूढ़ा पाठ करने लगा।

"अंतर बैह के करम कमावे सो चहुंकुड्डी जाणिये
जो धरम कमावे तिस धरमी नांऊं होवे
पापे कमाणे पापी जाणिये···"

"सत बचन !" दयालसिंह फुसफुसाया। वह बूढ़े के पैरों के पास आसन पर गुरुग्रंथ साहब खोले बैठा था। "सी वी नानक हो सी वी नानक···"

लालसिंह ने व्याकुल दृष्टि से बूढ़े के पसीने से तर चेहरे को देखा। सफेद दाढ़ी के नीचे निहालू का निचला जबड़ा सख्त होता जा रहा था और उसकी पुतलियां जैसे आंखों से बाहर निकली जा रही थीं—उसके नथुने इस तरह कांप रहे थे जैसे उसने नसवार सूंघी हो। लालू को डर लगा कि शायद उसका बाप आखिरी सांसें ले रहा था और इसकी ज़िम्मेदारी भी कहीं उसके मत्थे न मढ़ी जाए। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि वह उसके बाप को अभी कुछ देर और ज़िन्दा रखे।

बूढ़ा भर्राई आवाज़ में कह रहा था, "सत्त नाम ! या सांई सच्चे ! सत्त नाम ! पुत्तर, तूने कुछ खा-पी लिया ?"

"हां बापू, मैं अच्छी तरह से हूं।" लालसिंह ने जवाब दिया फिर वह यह सोचकर मुस्करा पड़ा कि उसके घर के वातावरण में सांसारिक चिन्ताओं और अलौकिकता का अद्भुत मेल रहता था।

बूढ़े ने लालू का जवाब सुने बगैर कहा, "शर्मसिंह की मां, लालू को कुछ खिला-पिला। वह थक गया होगा···" बूढ़े का गला फिर रुंध गया, उसकी पुतलियां घूमने लगीं और सांस अटक गई।

"हाय-हाय !" गुजरी छातियां पीटने लगी।

"हाय-हाय ! हाय ! हाय !" अजीतकौर ने विलाप किया। आसपास खड़ी सभी औरतें विलाप करने लगीं।

किसीने कहा, "हरनामसिंह, जाकर हकीम जी को बुला ला।"

कोठे का वातावरण भर्राए कंठों के विलाप से गूंज उठा। बूढ़े का शरीर बार-बार ऐंठ रहा था और चेहरा कांप रहा था, लगता था कि वह इस यातना से मुक्ति पाना चाहता था। उसने मुश्किल से सर उठाकर मुंह खोला और बलगम फेंकी, फिर गहरी सांस लेकर बोला, "करम धरम कर मुक्ती मंगाही।

"गुरु ने कहा है, 'रब्ब को याद कर, अहंकार छोड़,' पुत्तर, बैठ जा और बता

फौज की ज़िन्दगी कैसी है।"

लालू के मन में अपने बाप के लिए दया और स्नेह उमड़ आया। उसने कभी मरते हुए व्यक्ति को नहीं देखा था।

वह धीरे-धीरे अपने बाप की देह दबाने लगा। इससे पहले उसके दिल में अपने बाप के लिए इतना प्यार कभी नहीं उमड़ा था। उसकी नज़रों में उसका बाप जाहिल, हृदयहीन, गंदा और ज़ालिम आदमी था, जो हर वक्त खांसता रहता था, गालियां देता था, और डकार लेता था। लालू ने कई बार मन ही मन बापू की मौत के लिए ईश्वर से प्रार्थना की थी। कई सालों के बाद उसने बाप के बुखार से तपते बदन को छुआ था। भावावेश से उसका गला रुंध गया और आंखों में आंसू भर आए।

"हां पुत्तर, मुझे अपनी पल्टन का हाल सुना। तू ठीक-ठाक रहा न?" बूढ़े ने पूछा। बेटे के स्पर्श से उसमें एक विचित्र प्रकार का अहंकार जागृत हो गया था और उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसकी ज़िन्दगी की मोहलत बढ़ गई हो।

लालसिंह सिसकियां ले रहा था। मन ही मन उसे खुशी हो रही थी कि उसके दिल में भी प्यार की कोमल भावनाओं के लिए जगह है। बूढ़े ने कांपते हुए होंठों से कहा, "इस साल बैसाख बहुत शानदार रहा। फसल भी अच्छी थी पुत्तर। काश तू ठंडी हवाओं में लहलहाती भरपूर हरी फसलों को देखता! लेकिन वह शादी नहीं हो सकी! सगाई के वक्त घर जल गया और शादी पर कहर टूट पड़ा। शर्मसिंह तो मुझसे पहले ही दुनिया से चला गया। मैंने फज़लू को तीन एकड़ ज़मीन देकर रायज़ादा रिखीराम को शर्मसिंह का वकील बनाया था। वह बहुत बड़ा वकील है।

"मुझे गठिया का दर्द है, तभी से मेरी कमर टूट गई है। गर्मी आने पर भी बदली हुई हवा और पानी का कोई असर नहीं हुआ। मैं चारपाई पर पड़ा रहा, क्योंकि मेरे लिए तो प्रलय आ गई थी···सुना है गांव की हालत भी अच्छी नहीं है।"

यह कहकर बूढ़े को फिर देर तक खतरनाक खांसी आती रही। आसपास खड़े लोगों के चेहरे आशंका से पीले पड़ गए। लेकिन बूढ़े ने लालू की तरफ देखकर फिर अपना प्रलाप जारी रखा, "पुत्तर, मैं भी किसी ज़माने में सिपाही था। मैं जरनैल के हुक्म का इन्तज़ार किए बगैर ही दलदल और सरकंडों में घुस गया। मेरे हाथ में तलवार थी और वाह गुरु का नाम जपते-जपते मैंने दुश्मन को मार

डाला। यह मत सोचना कि मुझे डर लगा था पुत्तर। मैं भी किसी ज़माने में सिपाही था। मेरा बस चलता तो मैं सारे दुश्मनों को खत्म कर देता, लेकिन गुरुओं का हुक्म है कि किसी इन्सान को खाना खाते वक्त तंग न किया जाए।"

"अच्छा-अच्छा, बापू, तुम आराम करो!" लालू ने बाप को खामोश करने के लिए कहा।

लेकिन बूढ़े ने कहा, "पुत्तर, किसी ज़माने में तेरी तरह मैं भी सिपाही था। हमारे पुरखे भी पंथ के सिपाही थे। उन्होंने बड़े-बड़े कारनामे किए थे, हमें उनपर नाज़ होना चाहिए।

"मेरी उम्र तुम्हारे जितनी रही होगी। मैं खालसा दल के आगे-आगे 'सत-सिरी अकाल' और 'गुरु गोविन्दसिंह की जय' के नारे लगाता हुआ जा रहा था। हम लोगों को देखकर लाल मुंह वाले फिरंगियों में भगदड़ मच गई और वे अकालियों की तलवारों के वार से कट-कटकर गिरने लगे। कुछ भाग निकले।

"जब फिरंगियों का एक नया दस्ता मैदान में आया तो पुत्तर, मैंने भी अपनी बहादुरी दिखाई। मैंने अपने से दुगने लंबे सिपाहियों को काट डाला और फिर एक पहाड़ी के पीछे छिप गया, दुश्मनों की सौ बांहें मेरा पीछा कर रही थीं।"

"उठ लालसिंहा! उठकर खड़ा हो जा और हकीम साहब के बैठने के लिए जगह छोड़!" हरनामसिंह ने आवाज़ दी। पहले की अपेक्षा अब इस आवाज़ में कोमलता थी।

कोठरी में पीले रंग और चपटी नाक वाला एक नाटे कद का बूढ़ा दाखिल हुआ। उसके चौकोर चेहरे पर साफ तराशी हुई दाढ़ी थी। उसने ढीले-ढाले पाजामे के ऊपर बन्द कलरों का कोट पहन रखा था, पैरों में तिल्ले के काम के जूते थे और लाल मखमली कुल्ले पर हरी रेशमी पगड़ी थी। लालसिंह ने पहचान लिया। वह मुल्ला मुहम्मद अली था जो गांव की मस्जिद में जुमे की नमाज़ पढ़वाता था और हकीम का काम भी करता था। अपने धार्मिक और पुराणपंथी विचारों की वजह से गांव के सब किसान उसकी इज़्ज़त करते थे, हालांकि उसका हुलिया बड़ा ही हास्यास्पद था। गुलाम और गांव के दूसरे मुसलमान लड़के हकीम साहब से नफरत करते थे क्योंकि मस्जिद के मदरसे में उन्हें कुरान मुंहज़बानी याद करनी पड़ती थी, और अगर कोई लड़का गलती करता था तो हकीम साहब उसे छड़ी से पीटते थे जो उन्होंने पेशाब में भिगोकर रख छोड़ी थी।

लालू ने 'सलाम मौलवी साहब' कहकर हकीम को बैठने की जगह दी।

साधारण परिस्थितियों में गुजरी कभी भी किसी मुसलमान को रसोई के रास्ते से कोठे में न घुसने देती लेकिन इस वक्त उसने मौलवी साहब के जूतों का छड़ी से उठाकर आंगन में फेंककर ही सन्तोष कर लिया।

मौलवी मुहम्मद अली बूढ़े के पास उकड़ूं बैठ गए और उन्होंने मरीज़ की दुबली-पतली कलाई छूकर नब्ज़ देखी, निहालू के माथे पर हाथ रखा और फिर गहरी सोच में डूब गए।

गुजरी ने सर का दुपट्टा और आगे खींचते हुए कहा, "बताइए पीर जी।"

बूढ़ा ज़ोर से कांप रहा था, जैसे उसे जूड़ी चढ़ गई थी। अंधेरे में उसकी आंखें मिचमिचा रही थीं।

मौलवी ने कहा, "मां, तुम्हें मस्जिद में जाकर शम्स तबरीज़ के मज़ार पर एक बकरा चढ़ाना चाहिए। मैं इसकी पीठ का दर्द कम करने के लिए एक काढ़ा देता हूं। मैंने इसकी बांह पर बांधने के लिए जो तावीज़ दिया था वह बांध रखा है न ?" फिर निहालू की बांह टटोलकर कहा, "अच्छा, कल मैं नया तावीज़ लिख दूंगा।"

हरनामसिंह ने पूछा, "वैसे इनकी हालत कैसी है ?"

"मेरे अज़ीज़, सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह के सामने इन्सान का बस नहीं चलता। हो सकता है, निहालू एक दिन और काट ले, एक महीना काट ले या अभी ही चला जाए।"

दयालसिंह ने पूछा, "पीर जी, क्या हम बापू को चारपाई पर लिटा दें ? उनके पैर ठंडे हो गए हैं। लगता है, बुखार कुछ कम हो गया है।"

"हां, हां," मौलवी ने अन्यमनस्कतापूर्वक कहा, इसलिए नहीं कि मरीज़ का बुखार कम हो गया था बल्कि इसलिए कि मुसलमान की नज़रों में बिस्तर पर मरना धरती पर मरना एक बराबर है। फिर वे संजीदगी से उठ खड़े हुए, "नमाज़ का वक्त हो गया है। अगर मरीज़ की हालत न सुधरे तो मुझे फिर बुला भेजना। आज चांदनी रात होगी, मैं खुदा से दुआ मांगूंगा।"

दयालसिंह ने कहा, "हरनामसिंहा, आ बापू को चारपाई पर लिटा दें। फिर तू मौलवी जी से जाकर दवा ले आना।"

"मैं मौलवी जी के साथ जाता हूं। हरनामसिंह यहां रहकर तुम्हारी मदद

करेगा।" लालू ने कहा। अपने बापू की भलाई के लिए वह मौलवी साहब के प्रति अपनी दुर्भावनाओं को भी भूल गया था।

गुजरी ने कहा, "नहीं पुत्तर। तू यहीं ठहर। नहा-धोकर कुछ खा ले। तू थक गया होगा, थोड़ी देर सो जा।"

"मौलवी जी पास ही तो रहते हैं, मैं अभी आ जाऊंगा।" लालू ने कहा।

गुजरी ने लालू को फिर मना नहीं किया क्योंकि उसे मौलवी साहब की चिकित्सा में पूरी आस्था थी।

२९

लालू ने देखा कि मौलवी साहब अपने जूतों को टटोल रहे थे। चांदनी रात में मौलवी जी के जूते नदी में खड़ी दो किश्तियों की तरह दिखाई दे रहे थे।

"निहालू अभी ज़िन्दगी से छुटकारा नहीं पाना चाहता। शैतान और उसके गुमाश्ते तितर-बितर हो रहे हैं," मौलवी ने इस तरह कहा जैसे सचमुच उसे यकीन था कि जिन्न और भूत निहालू के प्राण लेने के लिए वहां इकट्ठे हों। फिर एक लम्बी डकार लेकर उसने अपना गला साफ किया। लगता था कि उसे अकेलेपन से डर लग रहा था और इसीलिए वह कोई न कोई आवाज़ सुनते रहना चाहता था। फिर उसने दाढ़ी पर हाथ फेरा और वहां से चल पड़ा।

लालू ने क्षण-भर के लिए ड्योढ़ी के पास पशुओं के ओसारे की ओर देखा, जहां वह घर छोड़ने से पहले चारा काट रहा था। ठिब्बू, रोंडू और भैंस सुच्ची ने भी उसे पहचान लिया था, क्योंकि उसे देखकर ये रंभा रहे थे। ड्योढ़ी के एक कोने में रखे खेती के औज़ारों में एक झींगुर की भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी। ओसारे के बाहर एक गड्ढे में उपलों का धुआं जलता रहता था ताकि मच्छर और मक्खियां ओसारे में न जमा हों। फिर हवा में नथुने उठाकर जानवर खामोश हो गए।

लालू को लगा जैसे वातावरण में क्षण-भर के लिए खामोशी छा गई हो। पूर्णिमा के लाल चांद ने सारी कुदरत को एक रिक्त खामोशी में घोल दिया हो। फिर उसे ओसारे से घबराहट-भरी फुसफुसाहट की आवाज़ सुनाई दी। कच्ची

चौकोर छतों पर लोग ज़ोर-ज़ोर से खांस रहे थे। खाना खाते हुए सोने से पहले गपशप कर रहे थे।

लालू गांव का दुनिया की हर गतिविधि से परिचित था। लेकिन पांच महीनों में जैसे हर चीज़ बदल गई थी। उसे लगा कि वह बड़ा हो गया था। छावनी में रहने की वजह से अब वह एक अलग दुनिया का हिस्सा बन गया था। उसके बदन में पसीने से एक अजब किस्म की चुनचुनाहट हो रही थी जो पहले कभी नहीं हुई थी। दीवारों पर उसे अपनी परछाईं विचित्र-सी दिखाई दे रही थी। अंधेरे में उसे अपनी और दूसरों की परछाइयों से डर लग रहा था।

वह मौलवी के पीछे-पीछे चल रहा था। ऊबड़-खाबड़ गली के बीचोंबीच गंदी नाली सांप की तरह बिछी थी, मौलवी फूंक-फूंककर कदम रख रहा था। लालू किसी मार्मिक गीत की कड़ी गुनगुनाना चाहता था। लेकिन उसे गीत के स्वर ठीक से मालूम नहीं थे हालांकि वह गुनगुना रहा था।

उसे अपनी इस हरकत पर शर्म महसूस हुई। दिन-भर की थकान से उसकी आंखें जल रही थीं। सारा शरीर पसीने से तर हो गया था। उसकी नई सूती कमीज़ और पतलून गीली हो गई थी। पत्थरों पर ठोकर खाकर उसके पैरों में दर्द होने लगा था।

लालू ने एक गर्म सांस लेकर चारों तरफ देखा, लेकिन फूहड़ नाटे मौलवी के अलावा गली में और कोई नहीं था। लालू सर झुकाकर चलने लगा। उसे डर था कि अगर किसीने उसे पहचान लिया तो उसे हाथ जोड़कर फौज की ज़िन्दगी के बारे में अनगिनत प्रश्नों का जवाब देना पड़ेगा। इस मौके पर वह न किसीकी मेहरबानी झेल सकता था न ही दया। अगर किसी लंगोटिया यार से भी मुलाकात होती तो इस वक्त वह अपने स्वाभाविक रूप में नहीं आ सकता था। वह अपने परिवार के दुख-दर्द की सोच में तल्लीन था। उसपर एक भयंकर एकाकीपन छाया था।

"अल्लाह हो अकबर! अल्लाह हो अकबर!" जुलाहों की गली में मस्ज़िद की मीनार पर से आवाज़ आई। मौलवी मुहम्मद अली ने अपना पैर इस तरह उठाया जैसे मुर्गाबी पानी में से निकलती है। लालू से कुछ कहे बगैर वह मस्जिद में तेज़ी से इस तरह घुस गया जैसे देर होने पर ईश्वर के साम्राज्य में उसे जगह नहीं मिलेगी।

लालू स्तब्ध भाव से मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ा रहा। वह मन ही मन अपने को कोस रहा था कि वह मौलवी के आगे-आगे क्यों नहीं चला। वह सोचने लगा कि वह खड़ा रहे या पीछे से आवाज़ दे। भीतर नमाज़ हो रही थी। वह बेवकूफ बना वहीं खड़ा रहा। उसे डर था कि कहीं उसे कोई चोर न समझ बैठे।

एक आले में बैठी फाख्ता मुअज्ज़िन की आवाज़ से डरकर लालसिंह के सर से उड़ती हुई खेतों की तरफ चली गई, जहां ग्वाले सो रहे थे। एक रंगीन-सी धुंध हवा में छा गई। दलदल में से झींगुरों की भिनभिनाहट निस्तब्धता को भंग कर रही थी। जुलाहों की गली में से हवा के झोंकों की सरसराहट आ रही थी, लालू की ठंडी सांस खेतों में उगी लम्बी घास के ढेरों में खो गई।

मौलवी का इन्तज़ार छोड़कर लालू ढलान पार करके खारों की तरफ उस रास्ते पर चला गया जहां मठ था। दम घोंटने वाली खामोशी में हरबंससिंह की ज़मीनों के रखवालों की आवाज़ें दूर-दूर तक सुनाई दे रही थीं। लालू को जादूगरनी चंडी की आकृति दिखाई दी, जो अपने मरियल कुत्तों को साथ लेकर श्मशान भूमि में घूम रही थी। उसके खुले हुए बाल हवा में लहरा रहे थे। अचानक एक मेंढक की भर्राई टर्राहट से लालू चौंक उठा। लगता था कि कोई जानवर उस मेंढक को निगल रहा है। लालू का मुंह सूख गया और वह पसीने से तर हो उठा। वह मेंढक के रास्ते से हट गया। थर-थर कांपते हुए उसने एक चट्टान का सहारा ले लिया। उसे अपनी कायरता का अहसास था, फिर भी उसकी टांगें कांप रही थीं।

चांद को देखकर उसे याद आया कि बचपन में उसने मां से सुना था कि चांद में देवता रहता है। उसे देवता की लम्बी नाक और पतले होंठ दिखाई दिए। डरकर उसने अपनी नज़रें दूसरी तरफ फेर लीं क्योंकि चांद को देखकर उसे हमेशा डर लगता था।

इसी वक्त मठ की तरफ से किसी उल्लू का शोकपूर्ण स्वर सुनाई दिया। लालू घबराहट से कांप उठा। उसे लगा कि शर्मसिंह, हरदित्त और गांव के सारे मुर्दे और मठ में दफ़न सन्तों के प्रेत उसके गिर्द जमा हो रहे थे।

वह अपने ऊपर काबू न पा सका। उसे खौफ ने आकर जकड़ लिया था और वह अंधेरे में डर गया था। इस पुरानी दुनिया की अदृश्य, अंधेरी ताकतें हर चीज़ पर छाई थीं।

लालू भी उन ताकतों से न बच सका, हालांकि उसने ज़िन्दगी में नई-नई चीज़ें देखी थीं, वह अन्धविश्वासी नहीं था और उसे भूत-प्रेतों में बिलकुल यकीन नहीं था।

रास्ते में उसे अपने शरीर की थकान का अहसास हुआ और वह सोचने लगा कि फिरोज़पुर छावनी के मैदान में बत्तियां बुझाने का घंटा बज चुका होगा और इस वक्त अगर वह छावनी में होता तो बरामदे में चारपाई बिछाकर सो गया होता।

उसने अपने-आपसे कहा, 'फौज की ज़िन्दगी कोई हंसी-मज़ाक नहीं है।' उसे फौज में गुज़ारे शुरू के दिनों की याद आई जब उसके मन पर दशहत छाई रहती थी; जब उसे दिन-रात भद्दे और घटिया मज़ाक सुनने पड़ते थे और क्षण-भर के लिए भी एकान्त नसीब नहीं होता था। हर वक्त रसोईघर में, कुएं पर यहां तक कि पाखानों के सामने लगी कतारों में भी अफसर अपने मातहतों पर रौब डाला करते थे। लोकनाथ ने उसे ठोकरें मारी थीं, लेकिन वह जवाब नहीं दे सकता था। उस अपमान की कड़ुवाहट अभी भी उसके दिल में ताज़ी थी। लांस कारपोरल ने उसे सिर्फ इसलिए तंग किया था, क्योंकि वह गर्व से सर उठाकर चलता था, ओवन साहब और हवलदार लछमनसिंह उसपर मेहरबान थे। बदला लेने के लिए लोकनाथ ने चालाकी से कितने छोटे-छोटे बहाने खोज निकाले थे।

फिर भी उसने फौज में नाम लिखा ही लिया था। जो भी हो, अब कुछ अरसे के लिए तो उसका फौज में रहना ही बेहतर है। हरबंससिंह की नफरत के साये में रहने से तो छावनी में रहना अच्छा है। कम से कम वहां बुजुर्गों की नफरत और खौफनाक घटनाओं से तो मुक्ति मिली रहेगी।

हो सकता है वह अपनी तनख्वाह में से ज़्यादा पैसे बचा सके और गांव में लौट-कर अपने परिवार की गिरवी रखी ज़मीनों और गहनों को छुड़वा सके। लेकिन फिलहाल तो यह संभव नहीं होगा...।

३०

अपने घर को देखकर उसे फिर उसी किस्म की घबराहट महसूस हुई जो कुछ देर पहले अपने बापू के कमरे में पहुंचकर हुई थी, जहां मौत का सन्नाटा छाया था। लालू ने अंधेरी ड्योढ़ी में पहुंचकर सोचा कि वह आज फिर ओसारे की छत पर सोएगा, जहां घर छोड़ने से पहले वह सोया करता था।

"मौलवी नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद में चला गया था, वह अभी तक बाहर नहीं निकला। अब वीर दयालसिंह को जाकर दवाई लानी पड़ेगी।" लालू ने अपनी मां से कहा, जो बाहर वाली रसोई में सामान समेट रही थी।

गुजरी ने स्नेहपूर्वक अपने होंठ बिचकाकर कहा, "अच्छा पुत्तर, तू थोड़ा-सा दूध पीकर आराम कर। मैंने तेरी पुरानी चारपाई ओसारे की छत पर बिछा दी है। तू इन जिन्नों से दूर आराम से सो। मैं सदके जावां..."

"अच्छा तो मैं चलता हूं।" लालू ने झिझक-भरे स्वर में कहा, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता प्रकट करे। आंगन पार करके वह बांस की सीढ़ी के ज़रिये छत पर पहुंच गया।

लालू अपना बिस्तर ठीक कर रहा था, पिछवाड़े की छत से हरनामसिंह ने आवाज़ दी, "लालसिंह है?" अभी उसे लालू से बातचीत करने का मौका नहीं मिल सका था।

"तेरे कपड़े तो बड़े शानदार हैं। बता फौज की ज़िन्दगी अच्छी है?" हरनामसिंह ने दीवार के पास आकर पूछा।

"हां चाचा जी, बारिश के लिए किस्मत खुलने की बाट जोहने से अगर बंधी-बंधाई तनख्वाह अच्छी है, पुराने तरीकों से अगर नये तौर-तरीके अच्छे हैं तो फौज की ज़िन्दगी भी अच्छी है। और कहावत है 'चालाक लोमड़ी की दो मांदें होती हैं।'"

फिर लालू को अपने जवाब पर अफसोस हुआ। उसे लगा कि उसने बढ़ा-चढ़ाकर अपने उत्साह का प्रदर्शन किया था। लेकिन अहंकार की वजह से वह अपनी बात को बदल नहीं सकता था।

हरनामसिंह ने कहा, "यहां की बेकार मेहनत से तो बारक में निठल्ला बैठना बेहतर है।" हरनामसिंह के खयाल में फौजी ज़िन्दगी ऐशो-आराम, अच्छी

तनख्वाह, शानदार कपड़ों और फ्री रेलवे पासों के सिवा कुछ न थी, क्योंकि फौजी अपने एक इशारे से शहरियों पर रौब गालिब कर सकते थे।

"हां चाचा जी, सुनाइए गांव के क्या हाल-चाल हैं। इस बार फसल में कैसी आमदनी हुई ?" लालू ने पूछा।

"कुछ नहीं पुत्तर। अंधेर नगरी चौपट राजा। शहर के व्यापारी कहते हैं कि यह सरकार की कारस्तानी है। खाक आमदनी हुई !"

"ये व्यापारी भी चोर हैं।" लालू ने कहा।

"सवाल यह है कि या तो आदमी कमाए, खाए, या भूखा रहे।" हरनामसिंह ने लालू की पतलून की सफेदी की चमक को देखते हुए कहा। फिर वह खामोश हो गया।

"क्या बात है, चाचा जी ?"

हरनामसिंह ने आसपास देखकर एक लम्बी सांस ली और कहा, "कुछ नहीं पुत्तर···मैं तबाह हो गया हूं। मुझे अपनी सारी ज़मीन चमनलाल के पास रहन रखनी पड़ी थी। लेकिन मैं अकेला नहीं हूं, करीब-करीब सारा गांव ही बर्बाद हो गया है।"

इसी वक्त सीढ़ियों पर किसीके कदमों की आहट सुनाई दी। हरनामसिंह ने कहा, "कोई बात नहीं पुत्तर। तू आराम कर। कल बातें करेंगे।"

"लालू पुत्तर !" गुजरी की आवाज़ सुनाई दी। वह लालू के लिए एक गिलास में दूध लाई थी।

हरनामसिंह ने प्रसंग बदलने के लिए और वातावरण की उदासी दूर करने के लिए कहा, "कल लालू हमारे घर खाना खाएगा।" अनाज के गिरते हुए भाव के बावजूद हरनामसिंह के सहज स्नेह और अतिथि-सत्कार में कोई अन्तर न आया था।

"नहीं, हरनामसिंहा, अभी तो लड़के ने अपने घर में भी खाना नहीं खाया।" गुजरी बोली।

"लेकिन बाबा निहालू बीमार हैं। फिर मेरा घर लालू का घर है। क्यों ?" हरनामसिंह ने कहा।

इसी वक्त हरनामसिंह की बीवी ने आकर कहा, "जीत के बापू, गाय ठीक से नहीं बंधी। तुम्हें मालूम है कि आजकल चोरी का कितना खतरा है। जाकर

नीचे ताला लगाओ।"

"अच्छा, अच्छा।" हरनामसिंह ने जवाब दिया और जाने से पहले उसने लालसिंह से कहा, "तू थका हुआ है। हम कल बातें करेंगे। यह मत भूलना कि कल तू हमारे घर खाना खाएगा।"

गुजरी ने होंठ सिकोड़कर कहा, "अच्छा पुत्तर, न्योता मान ले। वह भी अपना ही घर है। सबसे बड़ी बात यह है कि तू वापस लौट आया है। मेरी आंखें ठंडी हो गई हैं—मैं हर वक्त तेरे रास्ते की तरफ ताका करती थी।"

लालू ने शरमाकर कहा, "मां, तू भी जाकर आराम कर।"

वह अपने भीतर उमड़ते हुए स्नेह पर काबू नहीं पा रहा था, इसलिए उसने अपनी नज़रें दूसरी तरफ फेर लीं। इसी वक्त उसे अपनी मां के कोमल और गर्म हाथ का स्पर्श माथे पर महसूस हुआ। आंखों में आंसू भरकर लालू ने कांपते हुए होंठों से कहा, "मां, तू मेरी चिंता न कर।"

"मुझे लगता था कि तुझे देखे बगैर मैं मर जाऊंगी।" गुजरी ने दुपट्टे से आंखें पोंछ लीं। "मुझे नहीं पता था कि तू कहां चला गया था पुत्तर, और तेरा क्या हाल था। शर्मसिंह..." गुजरी का गला रुंध गया और वह सिसकने लगी।

लालू भावावेश से होंठ तक न हिला सका और फटी-फटी आंखों से शून्य में ताकने लगा। उसकी मां अभी भी सिसक रही थी।

गुजरी की सिसकियां रोदन में बदल गईं और उसने स्नेहपूर्वक लालू के कंधे सहलाकर कहा, "तू अपनी बेवकूफ और बूढ़ी मां को माफ कर दे। उसका कसूर यही है कि वह तुझसे प्यार करती है।" फिर गुजरी अपना दुपट्टा संभालती हुई सीढ़ियों से नीचे उतर गई।

लालू पीठ के बल चारपाई पर बांहें और टांगें फैलाकर लेटा था। हवा के एक झोंके ने आकर उसके चेहरे को ताज़ा कर दिया, लेकिन उसका सर गर्मी से झनझना रहा था। हर चीज़ से तपिश निकल रही थी।

बहुत देर तक उसका दिमाग खाली रहा। उसे सिर्फ चारपाई का कठोर और निरर्थक स्पर्श महसूस होता रहा। उसकी आंखों के सामने तीन चीज़ें लिखी थीं—'शर्मसिंह मर गया है, बापू मर रहा है, और हरनामसिंह बरबाद हो गया है।'

धीरे-धीरे थकान और नींद से उसकी देह शिथिल हो गई। आसमान के अनगिनत तारों को देखते-देखते उसकी थकी पलकों पर नींद का अंधेरा छा गया,

हालांकि उसके भीतर का रोदन अभी शान्त नहीं हुआ था।

लालू ने आंखें बंद कर लीं—उसे डर ल रहा था कि कहीं वह भी न मर जाए।

वह यमराज के सींगों वाले सर, काने, दंतहीन यमदूतों का खयाल दिल से हटाना चाहता था। शर्मसिंह का मृत चेहरा, ढिबरी की मद रोशनी में दम तोड़ते हुए बाप का चेहरा, झुर्रियों से भरा माथा, सिकुड़ती हुई आंखें, फैले हुए नथुने, धंसे हुए गाल, सचेत, खड़े हुए कान जो अपनी मद्धम नाड़ी और आसपास के लोगों की बातचीत सुन रहे थे। बगल वाली छत पर अपनी तबाही की चिन्ताओं से ग्रस्त हरनामसिंह लेटा था।

आखिर हुआ क्या था? किस वजह से हरनामसिंह को भी ज़मीन रहन रखने के लिए मजबूर होना पड़ा था? उसने सोचा, अच्छा होता अगर उसकी मां छत पर न आती, तब वह हरनामसिंह से पूछ सकता था। उससे ज़रूर पूछना चाहिए।

वह बेचैनी से करवटें बदलता हुआ लंबी सांसें लेकर सोने की कोशिश करने लगा।

आखिरकार उसने सर ढीला छोड़कर सोने की कोशिश छोड दी।

और फिर उसके उत्तेजित दिमाग पर एक अलसाई धुंध छा गई और वह सो गया।

३१

लालू ने सपने में एक पहाड़ी प्रदेश देखा जहां भीमकाय दैत्य बसते थे। लालू को वहां आने की इजाज़त इसलिए दी गई थी क्योंकि वह ताश के करतब दिखा सकता था, अपनी नाक पर हाथी को खड़ा कर सकता था और पेट पर सैंकड़ों मन की सिल रख सकता था। वह किसानों की एक भीड़ के सामने अपने करतब दिखा रहा था। दर्शकों के आश्चर्य का पारावार नहीं था। अचानक हाथी उसकी नाक से फिसल गया। लालू हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने देखा घुग्धी पुराने दिनों की तरह एक तिनके से उसकी नाक गुदगुदा रहा था, चुरंजी चारपाई के नीचे बैठकर उसे

कोंच रहा था और गुलाम उसके कपड़ों को गुड़ीमुड़ी करके उसके ऊपर फेंक रहा था। लालू ने आंखें मलीं, ज़ोर से उबासी ली और कांपता हुआ उठ बैठा।

तेज़ धूप चमक रही थी।

लालू ने मुस्कराकर घुग्घी की बांह पकड़ी और चुरंजी की कूबड़ की तरह उभरी हुई पीठ पर धम्म से बैठ गया और गुलाम की टांग में लंगड़ी मारकर उसे नीचे गिरा दिया।

"पुत्तर, फौज की बातें सुना। सुना है तू लाट साहब बन गया है!" घुग्घी ने कहा।

"धीरे-धीरे सारी बातें सुनाऊंगा। पहले ज़रा अपनी बांह तो छुड़ाकर देख।" लालू ने शरारत से अपने दोस्त की बांह मरोड़ी। घुग्घी ने बांह छोड़ने के लिए मिन्नत की।

सब जने खिलखिलाकर हंस पड़े और एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। गुलाम ने पूछा, "यार, सच बता तू खैरियत से रहा न?"

"तुझे मैं कैसा लगता हूं?" लालू ने पूछा और वह लड़कों के साथ हाजत-फरागत के लिए खेत में जाने की तैयारी करने लगा, जैसा वह छुट्टियों में किया करता था।

"फौज में जाने से पहले तू गधा था, अब तू घोड़ा दिखाई देता है।" घुग्घी ने गुस्ताखी से कहा।

"बता पल्टन में खूब माल उड़ाता है न?" चुरंजी ने पूछा।

उन्हें जवाब देने से पहले लालू ने आंगन में खड़ी मां को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

गुजरी ने कहा, "तेरे बापू की तबियत पहले से अच्छी है पुत्तर। उसे बुखार है लेकिन वह सो गया है। तू अपने दोस्तों के साथ जाकर हाजत-फरागत कर आ फिर आकर लस्सी पीना।"

लालू दोस्तों के साथ गली में आ गया। बापू की बीमारी की चिन्ता से कुछ निश्चिन्त होकर उसने अपना दिल खोलने की कोशिश की।

लेकिन वह पहले से ज़्यादा संजीदा होता गया। उसे लगा कि अब वह पहले की तरह घुग्घी, गुलाम और चुरंजी का भोला-भाला दोस्त नहीं बन सकता। वे लालू को देखकर खुशी से पागल हो रहे थे। घुग्घी ने बताया कि किस तरह उन्होंने

ज़मींदार से बदला लेने की कोशिश की थी। मोटे रस्से का सांप बनाकर अन्धेरे में उन्होंने जमींदार को डराने की स्कीम बनाई थी। मानाबाद की एक दावत से जब बूढ़ा हरबंससिंह रात के वक्त लौट रहा था तो रास्ते में पड़ी रस्सी को देखकर वह डर से चीखने-चिल्लाने लगा था। लड़के खिलखिलाकर हस पड़े थे। हरबंससिंह ने धमकी दी थी कि वह उनके बापों से शिकायत करके उन्हें कोड़े लगवाएगा।

लालू कौतूहल से सारी बातें सुन रहा था, लेकिन उसका मन ग्लानि से भर गया था। दोस्तों से मिलकर उसका चेहरा खुशी से चमक उठा था। चिरपरिचित धरती पर पैर रखकर उसका मन खिल उठा था। लगता था इस बार कपास, गन्ने और बाजरे की फसल अच्छी होने वाली थी, लेकिन मन ही मन उसे अहसास हुआ कि इस गांव में अब वह एक मुसाफिर की तरह आया है।

लड़कों ने सोचा कि अपने बापू की बीमारी और शर्मसिंह की मौत की वजह से लालू खामोश है। वे चिड़ियों की तरह चहक रहे थे और उछल-कूद मचा रहे थे।

"आओ रब्ब को परसाद चढ़ाएं!" घुग्घी ने कहा और वह बाजरे के एक खेत में जाकर बैठ गया। चुरंजी उसके पीछे-पीछे गया।

गुलाम ने फब्ती कसी, "और ठूंस-ठूंसकर दालें खाया कर सूअर! जैसा बाप वैसा बेटा! तेरा बाप दिन-भर दूकान में बैठा हवा निकालता रहता है। उसके चूतड़ हैं या बन्दूक। तू बड़ा होकर बाप को भी मात करेगा। थोड़ा-सा गोश्त खाया कर। घर में पैसे के ढेर लगे हैं।"

लालू को गुलाम की फब्ती पर हंसी आ गई। वह कुछ दूर सरककर बैठ गया।

सब जने खेतों से आध मील दूर एक कुएं के पास इकट्ठे हुए। पहाड़ियों के नीचे, दलदलों के पास एक चरागाह थी—धूप की बाढ़ में सारी धरती डूब गई थी। लालू को लगा कि धूप की प्रचण्ड किरणों के सामने रात के सारे भूत-प्रेत गायब हो गए थे।

घुग्घी ने गुलाम को तंग करने के लिए उसे धकेलकर चुरंजी की पीठ पर गिरा दिया। चुरंजी घोड़े की तरह कमर झुकाकर खड़ा था। फिर घुग्घी भागकर बंदर की तरह कीकर के पेड़ पर चढ़ गया और उसने गुलाम को कुछ दातुन काटकर फेंके। गुलाम ने उसे माफ कर दिया।

लालू हरनामसिंह से बातें करने लगा। हरनामसिंह नहा-धोकर अपने लड़के के इन्तज़ार में बैठा था, जो खेतों में अपने दोस्तों के साथ खेल में मस्त हो गया था।

हरनामसिंह ने अपने भतीजे को बधाई दी, "तो पुत्तर-तू माल उड़ाता है और हम लोग भूखे मरते हैं।"

"हां चाचा, अपनी अक्ल और दूसरे की दौलत हमेशा ज़्यादा दिखाई देती है।" लालू ने जवाब दिया।

"फिर भी भूखे रहने से आधी रोटी खाना बेहतर है।" हरनामसिंह ने कहा।

"आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे," लालू ने कहा, "चाचा, तुम्हारी फसल का क्या हुआ ?"

"क्या बताऊं ?" हरनामसिंह ने अपने को झकझोरकर, दु:ख भुलाने की कोशिश की। "अन्धे आदमी के पेट में बहुत-सी मक्खियां चली जाती हैं। हम किसान लोग आंखों रहते हुए भी अन्धे हैं। सरकार का फर्ज़ है कि वह कीमतों का ध्यान रखे और किसान को भरोसा दिलाए कि अनाज सस्ता नहीं होगा। हम जाहिल लोगों को बाज़ार के भावों का पहले से कैसे पता चल सकता है ? क्या यह हमारे बस में है कि फसलें ज़्यादा या कम उगाई जाएं ? लेकिन सरकार कुछ नहीं करती। वह सिर्फ पटवारी को लगान वसूल करने के लिए भेज देती है और फसल पर कर लगाती है। अनाज की कीमतों की उसे ज़रा भी परवाह नहीं। जब मैंने तहसील-दार से शिकायत की तो वह बोला, 'अच्छा है, मुसीबत की वजह से तुम्हें पैसे की कद्र करना आ जाएगा।'

"मैंने तुम्हें बताया था कि मुझे लगान अदा करने के लिए और बीज खरीदने के लिए अपनी पूरी छः एकड़ ज़मीन चमनलाल के पास रहन रखनी पड़ी। मैं तबाह हो गया हूं। अब कोई भी मुसीबत आ सकती है। मेरी फसल का ज़्यादातर हिस्सा साहूकार बतौर सूद के ले लेगा और बरसों तक मैं कर्ज़ की रकम नहीं चुका पाऊंगा। लेकिन मैं आखिर करता भी क्या ? साहूकार बिना ज़मानत के कर्ज़ देने को तैयार नहीं था। वरना वह बहुत ज़्यादा सूद वसूल करता जिसे अदा करना मेरे बस में नहीं था। कर्ज़ तो सस्ता मिल गया, लेकिन मुझे इसकी कितनी बड़ी कीमत अदा करनी पड़ी ! सब लोगों को यह पता है और वे हम पर पत्थर बरसाने पर उतारू हैं। हमारी दुष्ट बिरादरी हमारे खानदान की तबाही के बारे में तरह-

तरह की अफवाहें फैला रही है। बाबा निहालू ने शर्मसिंह की पैरवी के लिए फजलू के हाथ तीन एकड़ ज़मीन बेची थी, इस बात पर भी वे बुरा-भला कह रहे हैं।

"बिरादरी के ज़्यादातर लोगों ने छिप-छिपकर खुद भी ज़मीन या गहने गिरवी रखे हैं। तुम महन्त के दो दोस्तों, भगवंतसिंह और गुरमुखसिंह को जानते ही हो। उनकी ज़मीनें भी बिक चुकी हैं। आधी नंदगीर ने खरीदी हैं और आधी हरबंससिंह ने। लगता है, ये ज़मीनें चुपके-चुपके गिरवी रखी गई थीं और वे लोग सूद की अदायगी नहीं कर सके।

"सारे ज़िले की यही हालत है। मुझे यह बताते हुए शर्म आती है कि मुझे पावर हाउस पर दिन में कुछ घण्टे मज़दूरी करनी पड़ी थी।

"अब जीतू की शादी नहीं हो सकेगी। भूखे-नंगे कुली के लड़के को कौन अपनी बेटी देगा? अगर मैं खेतों पर मुज़ारे बैठाकर फौज में जाकर कमाई करता तो अच्छा होता। कम से कम ज़मीन तो मेरी अपनी रहती और मैं दुनिया में सर ऊंचा करके चल सकता। हाय, वाह गुरु! वाह गुरु!" अपने दिल की कड़वाहट निकालकर हरनामसिंह ने आंसुओं से भीगी आंखें छिपाने के लिए मुंह दूसरी तरफ फेर लिया और शोक से सर झुकाकर बैठ गया।

लालू ने कहा, "फौज में भी पैसा नहीं बचता। गरीब कहकर किसीका मुज़ारा बनना बेहतर है। तब कर्ज़ लेने का सवाल नहीं उठता।"

"हां पुत्तर, शायद सारा कसूर हमीं लोगों का है। गांव वालों की अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं। ज़रा इस कुएं के मालिक जीवनसिंह की अक्ल देखो। वह हरबंससिंह से कर्ज़ लेकर गर्मी में बुवाई कर रहा है। जीवनसिंह का भाई लद्धा-सिंह तो खेती के झंझट से मुक्ति पाकर शेरकोट की मिल में काम करने चला गया है।

"जब मैं शेरकोट गया था तो लद्धासिंह से मिलने चला गया। वह एक तंग कमरे में सात जनों के साथ रह रहा है। कुछ लोगों ने फर्श पर चिथड़े बिछा रखे थे। ऐसी जलालत की ज़िन्दगी से तो मर जाना बेहतर है। लद्धाराम ने वैसे तो खुशहाली का स्वांग रचा, मेरे लिए बताशे लाया लेकिन मुझे पता था कि घरवालों को पैसा भेजना तो दूर रहा उसे एक जून रूखी रोटी भी नसीब नहीं होती!

"आखिर लोग क्या करें? उनके सामने कौन-सा रास्ता है?" हरनामसिंह ने कहा। वह माथे पर त्यौरियां डाले चला गया। लालू ने देखा, उसका तगड़ा

शरीर बहुत दुबला हो गया था।

घुग्घी ने कहा, "चाहे कुछ हो लालू वीर, मैं तुम्हारे साथ फौज में चलूंगा। इक्का हांकने से तो गांव में वर्दी पहनकर आना कहीं बेहतर है।" फिर वह कूद-फांद मचाता हुआ बोला, "मैं सबको दिखा दूगा ! देख लेना किसी दिन मैं वर्दी पहनकर, इसी गांव की गलियों में घूमूंगा और मेरे हाथ में राइफल होगी।"

"ज़रूर होगी, मूरख का तीर तरकस से जल्दी निकलता है।" हरनामसिंह ने कहा।

घुग्घी ने भी जान-बूझकर मज़ाक किया, "हां, बेवकूफ लोग बिना सींचे ही बेलों की तरह फलते-फूलते हैं।"

चुरंजी ने इस मज़ाक को सुनकर खीसें निपोर दीं। अमीर बाप का लाड़ला होते हुए भी उसे बातचीत में हिस्सा लेने का मौका नहीं मिला था।

हरनामसिंह ने लालू से कहा, "याद रखना, आज हमारे यहां परशादे छक्कने[1] हैं। अगर जीतू आए तो उसे घर भेजना। दोपहर से पहले वह बाज़ार जाकर कुछ चीज़ें खरीद लाए क्योंकि मुझे छः बजे बिजलीघर पहुंचना है। मुझे जल्द ही एक घड़ी खरीदनी चाहिए, क्योंकि अगर हमें पहुंचने में पल-भर की भी देरी होती है तो फोरमैन गालियां देता है और हैण्ड्री साहब गुर्राते हैं।"

गुलाम ने दांतुन चबाते हुए कहा, "मैंने सुना है कि फौज में रात के दस बजे बिगुल बजता है और सब लोग सो जाते हैं। सुबह बिगुल की आवाज़ सुनकर उठ बैठते हैं।"

"अरे बता भी, क्या फौजियों के लिए कोई स्कूल है ? क्या हर आदमी खेलों में हिस्सा ले सकता है ?" घुग्घी ने पूछा।

"हां, और हरेक का बिस्तर हीरे-जवाहरातों से जड़ा होता है, मखमल की वर्दियां होती हैं। लोग अमृत पीते हैं। और राजभोग परसे जाते हैं !" लालू ने घुग्घी के बौड़मपन से खीजकर कहा। फिर यह सोचकर कि कहीं घुग्घी बुरा न मान गया हो, वह कड़वाहट को कम करने के लिए हंस पड़ा।

चुरंजी ने कहा, "चलो नहाकर आम खाने चलें।"

"हां, हम कुत्तों वाली माई को तंग करेंगे। आजकल उसने श्मशान भूमि में झोंपड़ी बना ली है।" घुग्घी बोला।

१. खाना खाना

"हां, लेकिन इस वक्त नहीं। दोपहर को देखेंगे। बापू की हालत शायद बिगड़ गई हो।" लालू बोला।

इस बात से मित्र-मंडली का उत्साह ठंडा पड़ गया। वे जल्दी-जल्दी नहाने लगे। मसखरे घुग्घी की शरारत-भरी मुद्राओं से भी किसीको हंसी न आई।

जब लड़के गांव में पहुचे तो धूप तेज़ हो गई थी। वातावरण में गहरी खामोशी छा गई थी।

लेकिन जब लालू घर पहुंचा तो उसने देखा कि बूढ़े की हालत इतनी संगीन नहीं थी। रात को निहालू अच्छी तरह सोया था। वह बहुत कमज़ोर था लेकिन होश-हवास में था। उसे चारपाई पर लिटा दिया गया था। उसकी सांस ठीक चल रही थी और वह बिना कराहे, पाठ कर रहा था। अब उसकी हालत रात जैसी नहीं थी।

दयालसिंह बूढ़े के सिरहाने बैठा गुरु ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ कर रहा था। मखमल की जिल्द में, सुनहरी किमखाब के छत्र के नीचे ग्रन्थ साहब रखा था। शर्मसिंह की विधवा केसरी अत्यन्त भक्तिभाव से चांदी की मूंठ वाला चंवर डुला रही थी।

गुजरी ने दही बिलोकर मक्खन निकाला था और वह सबको खिलाने-पिलाने की तैयारियों में लगी थी।

लालू लस्सी पीकर बूढ़े की देखभाल करने के लिए कोठे में चला गया।

३२

अगले कुछ दिन लालू लगातार अपने बाप की सेवा में लगा रहा। उसे फौजी ज़िन्दगी की परेशानियां भूल गई थीं और वह परिवार में पूरी तरह घुल-मिल गया था। बचपन के बाद से उसने परिवार के साथ इतनी अभिन्नता कभी नहीं महसूस की थी। शर्मसिंह की मौत जैसे कुछ प्रसंगों का कभी ज़िक्र नहीं किया जाता था। घर के वातावरण में काले बादलों की तरह एक उमस-सी छाई रहती थी, लेकिन घर में और खेतों पर इन दिनों बहुत काम था। लालू हर वक्त काम में लगा

रहता था। वह गांव के लोगों से दूर-दूर रहने की कोशिश करता था।

बूढ़े को मालूम था कि उसकी मौत सर पर खड़ी थी, लेकिन उसने मरने से इन्कार कर दिया था। तेज़ बुखार में वह प्रार्थनाओं और धार्मिक गीतों की शरण लेता था, जिन्होंने हमेशा से उसकी धर्मनिष्ठा को शक्ति प्रदान की थी। वह अपनी आत्मा के अवसाद के साथ जूझ रहा था और भविष्य के रहस्यों पर साहसपूर्वक बातें करता था। कई बार वह अतीत में डुबकी लगाकर अपनी शानदार जीतों और शोकपूर्ण असफलताओं की स्मृतिओं को घसीट लाता था। कोठे की करुण खामोशी में वह गीतों की कड़ियां गुनगुनाता रहता था, ताकि उन्हें बार-बार दुहराने से शायद वह यमराज के बुलावे से बच सके जो उसके शरीर का दरवाज़ा खटखटा रहा था।

लेकिन कभी-कभी उसपर एक क्षुब्ध अपशकुन-भरी खामोशी छा जाती थी, जो इतनी गहरी और खतरनाक थी कि लगता था, किसी तहखाने के दोज़ख से निकलकर, कोई खौफनाक चीख उस खामोशी को तोड़ देगी।

कई बार बेहोशी में वह कोई दुःस्वप्न देखकर बच्चों की तरह बड़बड़ाता था मानो पाताल लोक में वह अंधकार की शक्तियों से जूझ रहा हो। उसके अंग लगातार ऐंठते रहते थे और उसके चेहरे पर सूर्यास्त की आतंकपूर्ण लाली छाई रहती थी। घर के लोग उसे हर क्षण ज़मीन पर उतारने के लिए तैयार रहते थे।

सर के एक झटके के साथ बूढ़े ने आंखें खोल दीं, जो हीरो की तरह सख्त थीं और गुस्से से जल रही थीं। उसने एक अंगड़ाई ली। उसके हाथ सख्त हो गए और वह चिल्लाया, "सत सिरी अकाल!" लगता था कि वह हाथ में तलवार लेकर लड़ाई के मैदान से लौटा है। अलीवाल के मैदान में भी वह सिक्ख राज और पंथ के दुश्मनों को और गद्दारों को कोसता हुआ लड़ा था। उस भावोन्माद ने उसके शरीर में एक दुर्दमनीय शक्ति का संचार कर दिया।

लेकिन अपनी शक्ति में उसकी भोली, सहज आस्था धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। उसके पेट में कुलबुलाता संदेह का कीड़ा उस शक्ति को खाए जा रहा था।

'एक दिन मुझे मरना होगा,' यह विचार लगातार उसके दिमाग पर मंडरा रहा था। लेकिन अभी तो मुकदमा जीतना बाकी था, गिरवीं रखे ज़ेवरों को छुड़ाना था, दो लड़कों की शादी करनी थी, ताकि वह अपनी वंश-बेल को फलता-फूलता देख सके, अपने पूर्वज़ों की स्मृतियों को अपने उत्तराधिकारी सौंप

सके।

"एक दिन मुझे मरना है···लेकिन अभी नहीं···अभी नहीं!"

उसने लालू को उस ज़माने की बातें सुनाई जब उसके खेतों में अच्छी फसलें होती थीं, जब खलिहान में अनाज के अंबार लग जाते थे, घड़ों में सिक्के रखे जाते थे, जब उसके आंगन में तीन गाएं और एक घोड़ा बंधा रहता था, जब वह हर चीज़ मौके पर खरीदता और बेचता था और मुनाफे और नुकसान का संतुलन ठीक रहता था। उसने उस ज़माने के बारे में बताया जब खानदान की मौजूदा मुसीबतों के बीज बोए गए थे, जब फिरंगी अपनी रेलगाड़ियां लेकर आए थे और सस्ते से सस्ते दामों में अनाज रेलों में भर-भरकर ले जाते थे। उनकी हर मुसीबत की जड़ फिरंगी थे। वह फिरंगियों को कभी माफ नहीं कर सकता था, क्योंकि वे नये किस्म की मशीनें लेकर आए थे, उन्होंने नये-नये टैक्स लगाए थे और उनकी हकूमत में बेइन्साफी का बोलबाला था।

लालू ने बाप को बताया कि उसकी रेजीमेण्ट के एडजुटेण्ट साहब उसपर बड़े मेहरबान थे। लालू ने कहा कि उसने जो मशीनें देखी थीं, उनमें से कुछ तो बहुत ही शानदार थीं।

लेकिन बूढ़े को यह बात पसंद नहीं आई कि उसका बेटा इन खिलौनों की तारीफ करे। लालू की बातों को सुनकर वह इस नतीजे पर पहुंचा कि शहर की चमक-दमक से लड़के की आंखें चौंधिया गई हैं।

फिर निहालू ने सिक्ख धर्म के गुरुओं के बारे में, आसपास के गांवों के पुराने मर्द-औरतों के बारे में, उनकी फसलों और लड़ाई के मैदान में उनके कारनामों के बारे में बताया। बूढ़े के मन में आस्था की अग्नि सुलग रही थी, उसे अपने ऊपर और अपने धर्म की परंपराओं पर अंधविश्वास था, वह इन स्मृतियों को भविष्य-वाणियां समझता था और चाहता था कि मरने से पहले वह यह विरासत अपने वारिसों को सौंप जाए।

"जो लोग अंग्रेज़ी सरकार का साथ देते हैं वे विधर्मी हैं। इन्ही गद्दारों ने सिक्ख राज को बेचा था। अगर फिरंगियों की तरह वे शैतानी मशीनों को चलाना सीखेंगे तो उनका अन्त बुरा होगा। वे सचाई और ईमानदारी को खत्म कर देंगे और स्वार्थ के लिए अपनी आत्मा भी बेच देंगे। उन्हें यह नहीं पता कि वे सारी धन-दौलत मरने के बाद अपनी छाती पर रख कर नहीं ले जा सकेंगे।"

अपने उत्साह की उमंग में बहकर निहालू चाहता था कि वह फिर घर से बाहर निकले, नई फसल को घर लाए और बूढ़े लोमड़ ज़मींदार का डटकर मुकाबला करे।

वह हकीम से कहता था, "मौलवी, बता, क्या कोई ऐसी दवा नहीं जो मुझे सौ बरस तक ज़िन्दा रख सके ? मैं खालसा के लिए लड़ा था, और हार गया था, मैं गद्दारों से लड़ा था और हार गया था। मैं थोड़ी ज़िन्दगी और चाहता हूं ताकि अपने दुश्मनों को सीधा कर सकूं।"

मौलवी ने कहा, "सब कुछ अल्लाह के हाथों में है। इन्सान की क्या हैसियतहै।"

बूढ़े ने घबराकर कहा, "लेकिन मैं ज़िन्दगी में सचाई और नेकी के लिए लड़ा हूं इसलिए मैं हमेशा अमर रहूंगा।"

मौलवी ने कहा, "मेरे मजहब के उसूलों के मुताबिक तुम्हें जल्द ही कयामत के दिन खुदा के सामने पेश होना पड़ेगा। चूंकि तुम काफिर हो इसलिए हमारे पैगम्बर तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे मज़हब के पहले गुरु नानक मुहम्मद साहब के मुरीद थे, शायद यह बात तुम्हारे हक में जाए।"

लालू ने बीच में टोककर कहा, "लेकिन ज़िन्दगी का हर दिन कयामत का दिन होता है। अगर सचमुच जन्नत नाम की कोई चीज़ है तो धर्म के आधार पर ईश्वर वहां भेदभाव नहीं कर सकता।"

"बेटा, तुम अभी बच्चे हो," मौलवी ने हिकारत से हाथ हिलाया, "तुम्हें न खुदा के उसूलों का पता है न इन्सान का। हज़रत मुहम्मद खुदा के भेजे हुए पैगम्बर थे। जो उनके मज़हब को मानते हैं, खुदा उन्हीं पर मेहरबानी करेगा, बाकी सबको दोज़ख में भेजा जाएगा।"

बूढ़े ने अपमानित निराश स्वर में कहा, "तो क्या मरने के बाद मेरा नाम तक ज़िन्दा नहीं रहेगा।"

"तुम्हारे बेटे तुम्हारा नेक नाम आगे बढ़ाएंगे," गुजरी ने आंखों में आंसू भरकर कहा। निहालू के शिथिल मुह को देखकर वह दु:खी हो उठी थी। "ऐसी बातें न करो जैसे तुम भी मर गए हो और हम सब भी मर गए हैं। सुक्खी सांदी !" फिर गुजरी आकर निहालू का सर दबाने लगी, उसके चेहरे पर आनन्द का प्रकाश था। स्नेह से वह खिल उठती थी और मंगलकारी शब्दों पर उसका माथा सिकुड़ जाता था।

केसरी ने शरमाकर कहा, "रब्ब कभी ऐसा न करे।" वह खामोशी से निहालू के पैरों के पास बैठी थी। इन दिनों वह अजब ढंग से गुमसुम रहने लगी थी, लेकिन वैधव्य के बावजूद उसमें सजीवता थी। गांव वालों की निन्दा का और पति की मौत के खौफनाक दुःख का उसपर कोई असर नहीं पड़ा था। वह गुमसुम थी, लेकिन उसकी सांस में जीवन की सुवास थी।

इन दो औरतों के स्नेहपूर्ण स्पर्श से जैसे बूढ़े में नई आस्था आ गई। उसकी हालत सुधरने लगी, उसे लगा जैसे वह अमर है। कम से कम उसके तूफानों में डगमगाते क्लान्त शरीर को तो ऐसा ही लग रहा था।

३३

शुरू में तो लालू पिता की मृत्यु के इन्तज़ार में था। हर बार जब वह घर से बाहर निकलता था तो उसे डर लगता था कि कहीं उसकी अनुपस्थिति में ही बूढ़ा न चल बसे।

बीमार बाप को देखकर उसके मन में ग्लानि की जो विचित्र अनुभूति हुई थी उसकी वजह से उसकी अन्तरात्मा उसे कचोट रही थी। उसने याद करने की कोशिश की कि उसका बापू किसी ज़माने में कितना तन्दुरुस्त और बहादुर आदमी हुआ करता था। उसके कठोर जबड़े, पैनी आंखें, संवेदनशील चेहरा क्रोध, घृणा, तिरस्कार और पवित्रता की सभी रंगतों को व्यक्त कर सकता था।

उसे याद आया कि उसके बाप के हाथ काम करने में कितने निपुण थे। वह खेती के सैकड़ों किस्म के काम कर लेता था। कुएं की रस्सी से मटका बांधकर पानी खींचना, जानवरों की सानी करना, ज़मीन खोदना, हल चलाना, बीज डालना, सफाई से फसल काटना, शानदार ढग से अनाज के ढेर लगाना, भूसा अलग करना और फसल को मंडी में बेचना—बुढ़ापे के बावजूद निहालू ये सारे काम तत्परता से करता था।

और उसकी बातचीत का ढंग कैसा था! उसकी गहरी आवाज़ में भावावेश के साथ-साथ उतार-चढाव आते थे। उसके हिकारत-भरे शब्द तीर की तरह चुभते

थे। उसके दुश्मन उसकी हुंकार से आतंकित हो उठते थे।

जिस दिन हरबंससिंह पुलसिये को साथ लेकर लालू को गिरफ्तार कराने के के लिए आया था, उसके बापू ने कैसी जांबाज़ी दिखाई थी और उन लोगों के सामने तनकर खड़ा हो गया था। उसे याद आया कि जब बच्चे बापू की टांगों से लिपटकर उसका स्वागत करते थे तो निहालू उनके प्रति कितना स्नेह दिखाता था। फिर भी उसमें एक प्रकार की ढिठाई थी, कठोरता और खच्चर जैसा अड़ियल-पन था जिसका मुकाबला करना मुश्किल था।

उसे लगा कि उसका बापू भारी वज़न की तरह मौत और ज़िन्दगी के बीच लटका रहेगा। वह इतना असहाय हो जाएगा कि दूसरे लोगों को उसकी देखभाल करनी पड़ेगी। अतीत की एक पुरानी बदसूरत यादगार की तरह वह वर्तमान पर छाया रहेगा। दस दिन की छुट्टी बिताने के बाद जब वह अपनी रेजीमेंट में लौटने की तैयारी करने लगा तो उसकी अन्तरात्मा का बोझ कुछ हल्का पड़ चुका था।

उसने सोचा, फौजी ड्यूटी के बाद बारक में अपनी खाट पर लेटकर वह फिर अपना मालिक खुद बन जाएगा।

जब छुट्टी खत्म होने के करीब आई तो उसे मन ही मन छावनी में लौटने की एक अज्ञात-सी प्रेरणा का अनुभव हुआ, क्योंकि गांव में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही थीं।

"हाय रब्बा! हाय रब्बा! दुनिया खत्म होने वाली है। दुनिया में अंधेरा छाने वाला है।" उसका बापू मौत के खिलाफ संघर्ष करते हुए प्रलाप कर रहा था। इस अपशकुन से घबराकर गुजरी पंडित बालकृष्ण के पास पूछने के लिए गई कि निहाल की इस भविष्यवाणी के बारे में ज्योतिष क्या कहती है।

बूढ़े पुरोहित ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा। उसका चेहरा चढ़ावे खा-खाकर सूरज की तरह दमक रहा था। वह अपनी गठी टांगों पर तोंद हिलाता हुआ एक एक कोने में गया जहां राम और सीता की मूर्तियों के पास एक अंगूठी रखी थी। अंगूठी में नगीने की जगह एक शीशा जड़ा था। पुरोहित ने गुजरी को अंगूठी दी और कहा कि वह शीशे में देखकर बताए कि उसे क्या दिखाई दे रहा है।

गुजरी बताती गई :

"रोशनी दीख रही है। अब नया दृश्य आ गया। एक खेत के बीचोंबीच तलवार लेकर एक जाट खड़ा है।"

"अंगठी को हिलाओ।" पुरोहित ने कहा।

गुजरी ने खौफज़दा होकर पुरोहित की आज्ञा का पालन किया। अंगूठी हिलाकर वह फिर शीशे में देखने लगी। लेकिन इस बार उसे सिवा अंधेरे के कुछ नहीं दिखाई दिया।

पुरोहित ने गुजरी के हाथ से अंगूठी ले ली और कहा, "मां, कलियुग आ गया है। अब नौजवान अपने बुज़ुर्गों की इज़्ज़त नहीं करेंगे। भाई भाई की मदद नहीं करेगा। लोग तलवारें लेकर आपस में लड़ेंगे। विलायत से एक बाढ़ उठेगी जो सारी दुनिया को डुबो देगी। अगर तुम अपने पति को बचाना चाहती हो तो अगले श्राद्ध पर देवताओं को भोग लगाना।"

गुजरी और मंदिर में खड़े दूसरे भक्त भी इन अमंगलकारी भविष्यवाणियों से डर गए। सबने जाकर ये बातें मिर्च-मसाला लगाकर अपने रिश्तेदारों को सुनाईं। पुरोहित ने जो बात मन्दिर में कही थी, वह बाज़ार में फैल गई। दूकानदार और निठल्ले किसानों ने, जो घरों में बैठे मक्खियां मार रहे थे, अपनी कल्पना की प्रखरता से अफवाहों का बाज़ार गर्म कर दिया।

लालू इन बातों का मज़ाक उड़ाता रहा, लेकिन घुग्घी ने आकर बताया कि उसका बाप शहर से जब इक्के में सवारियां लेकर लौट रहा था तो उसने बड़ी खौफनाक खबर सुनी थी। यह खबर पुरोहित के पास दो दिन पहले ही पहुंच गई थी। विलायत के पास किसी शहज़ादे का कत्ल हो गया है। इसलिए लड़ाई छिड़ गई है। लालू ने सोचा कि जो भी हो गांव में फैली अफवाहें झूठी साबित नहीं हुई थीं।

३४

जिस दिन लालू की छुट्टी खत्म हुई वह अपने बैग में सामान डालकर मां की मिन्नतों के बावजूद शाम की गाड़ी पर फिरोज़पुर जाने की तैयारी करने लगा।

उसकी मां फूट-फूटकर रो रही थी। लेकिन बूढ़ा बापू सर को ज़ोर से झटक-कर उठ बैठा था। हमेशा की तरह फिरंगियों के खिलाफ कड़वा ज़हर उगलने की बजाय उसने कहा, "कमज़ोर औरत! शोक न मना। न मेरी चिन्ता कर, न लालू

की। मां-बाप बच्चों को अपने स्वार्थ की खातिर नहीं पालते-पोसते, बल्कि इसलिए कि वे दुनिया की भलाई के लिए लड़ें। इसे शेरनी के बच्चे की तरह मैदान में जाकर लड़ने दे, ताकि यह अपने पूर्वजों का नाम रौशन करे। इसे ज़िन्दगी में नये तजुर्बे करने दे।"

यह सुनकर गुजरी की रुलाई और भी तेज़ हो गई। केसरी भी रोने लगी। दयालसिंह ने लालू से मिन्नत की कि वह अपनी छुट्टी बढ़ाने की दरख्वास्त भेज दे।

लेकिन बूढ़े ने कहा, "ये औरतें तो बस बकरियों की तरह मिमिया सकती हैं और रो-पीट सकती हैं।" और उसने इस तरह गुस्सा दिखाया जैसे अपनी मांद के द्वार के पास बैठकर बीमार शेर अपनी जगह से छोड़ने इन्कार कर दे। उसके नीले होंठ गुस्से से फड़क रहे थे, लगता था मौत ने अपने ज़हरीले चुंबन से उन्हें नीला कर दिया था। इसके बाद बूढ़ा अचेत हो गया, उसकी आंखें बाहर निकलने लगीं और सारा शरीर दर्द से ऐंठने लगा। उसकी मौत जैसे करीब आ गई थी।

लेकिन ज्योंही लोगों ने उसे ज़मीन पर उतारने की कोशिश की तो वह उठ बैठा। उसने गर्दन अकड़ाकर बेटों को गाली दी कि वे जल्द से जल्द उसे ज़मीन पर उतारना चाहते हैं। उसने गुजरी को डांटा कि वह उसके मरने और लालू के जाने से पहले ही छाती पीट-पीटकर सियापा कर रही है। उसने कहा कि सबके सब उसके दुश्मन हैं और चाहते हैं कि वह जल्दी से जल्दी दफा हो जाए।

लालू ने बूढ़े के चरणों को छुआ। उसके मन में अपार स्नेह उमड़ आया। "बापू, सत बचन, सत बचन, कोई बात नहीं। गुस्सा न करो! तैश में मत आओ!"

बूढ़े ने लालू के गले में बांहें डाल दीं और उसकी पीठ थपथपाकर समझाया, "पुत्तर, बहादुर बनना! गीदड़ मत बनना! जाकर अपने हाथों से काम कर, खुश रह। तू अभी जवान-जहान है। मेरी फिक्र न कर। जब मेरी मौत आएगी तो मैं चला जाऊंगा। सचाई के दुश्मनों के दांत खट्टे कर और बाप-दादों का नाम रौशन कर ताकि हमारे खानदान के बारे में कोई यह न कह सके कि वे लोग मौत से डरते थे।"

बूढ़े को बेहद कमज़ोरी महसूस हो रही थी। उसे अहसास हुआ कि उसकी ज़िन्दगी के दिन खत्म हो गए हैं, फिर भी वह हठपूर्वक मौत का मुकाबला कर रहा था। उसकी प्रबल इच्छा-शक्ति शिथिल नहीं पड़ी थी और उसकी दकियानूसी

आस्था में भी कमी नहीं आई थी। वह अपने एकाकीपन की रक्षा करने में तत्पर था।

विदा लेते वक्त लालू को अपने दिल पर एक असह्य बोझ महसूस हुआ। वह उन सभी स्त्री-पुरुषों और बच्चों के प्रति कृतज्ञ था, जो मिठाइयां, फल, फूल और प्यार-भरे शब्द लेकर उसे विदा करने आए थे। लालू के शरीर से पसीना चू रहा था और मन में बेचैनी की आग सुलग रही थी।

घुग्घी, गुलाम, चुरंजी और वे लड़के भी जिनके मां-बाप ने उन्हें लालू के साथ बोलने और खेलने की मनाही कर दी थी, कोठे में जमा हो गए थे। उनमें इस बात पर झगड़ा हो रहा था कि लालू का सामान उठाने का फख्र किसे हासिल होना चाहिए। लालू ने 'सत सिरी अकाल' कहकर अंतिम बार अपने बापू के पैर छूए और रोती-धोती मां के गले से लगकर कोठरी से बाहर निकल आया। गुजरी उसकी जुदाई नहीं सह सकी और ऊंची आवाज़ में रोने लगी। गांव की औरतें, जो बड़ी मुश्किल से अपने पतियों की आमदनी से घर चलाती थीं, आकर लालू को मिठाई और चांदी का एक-एक रुपया शगन में देने लगीं।

सद्भावना के इस प्रदर्शन से लालू में विनम्रता और संकोच जागृत हुआ। जब उसकी मां सारे सगन कर चुकी, उसके सर पर फूल डालकर मिठाइयां बांट चुकी और जब दहलीज़ पार करके उसे एक भंगी दिखाई पड़ गया, तब जाकर लालू का सफर शुरू हुआ।

गांव के करीब-करीब सारे लोग जलूस बनाकर लालू को सराय के पास वाले चौराहे तक छोड़ने गए। सबसे आगे गांव का काला कुत्ता कालू उछलता-कूदता चल रहा था। कभी-कभी वह खाने की चीज़ की गंध पाकर ज़मीन सूंघता हुआ आगे निकल जाता था और कभी पीछे मुड़कर खूंखार ढंग से भौंकने लगता था।

सब लोगों के सहृदयतापूर्ण प्यार से लालू के दिल में इतनी कोमलता छा गई कि वह रुआंसा हो गया। उसे अच्छी तरह मालूम था कि लोगों ने विदाई की परंपरागत रस्म निभाई थी। उसने देखा कि उसके रिश्तेदार उसको तोहफे देने में एक-दूसरे से होड़ लगा रहे थे, हालांकि इन्हीं लोगों ने कभी उसकी दुर्गत बनाई थी।

लालू हाथ जोड़े, सर झुकाकर, हर कदम पर गांव के मर्द और औरतों को 'सत सिरी अकाल', 'पैरी पोना', 'सलाम मियां' कहता हुआ आगे बढ़ा। उसने हर

आदमी का उसके मज़हब के मुताबिक अभिनन्दन किया। उसकी सारी कठोरता जैसे स्नेह-भरी मुस्कान में पिघल गई। उसकी हर सांस सर्द आह बन गई।

सराय के पास वाले चौराहे पर पहुंचकर, जहां घुग्घी का बाप उसे स्टेशन तक पहुंचाने के लिए इक्का जोतकर इन्तज़ार कर रहा था, लालू ने अपने रिश्तेदारों से कहा कि वे अब और ज़्यादा तकलीफ न करें, वहीं से लौट जाएं। वे सब उसके पीछे-पीछे पैदल स्टेशन तक जाने के लिए तैयार होकर आए थे। बहुत समझाने-बुझाने के बाद वे वापस जाने के लिए तैयार हुए। लालू ने सबसे गले मिलकर विदा ली। उसकी मां, केसरी और दयालसिंह रो रहे थे, उसे आशीर्वाद और नसीहतें दे रहे थे।

लालू के मन में स्नेह उमड़ आया था! वक्त कम था इसलिए दोस्तों से हाथ मिलाकर वह इक्के पर जा बैठा। उसने कहा, "हम जल्द मिलेंगे।"

गर्मी की धूप में सुनहरी, गहरे बादामी और लाल रंग के गन्ने के खेत उसकी आंखों के सामने से गुज़रते रहे। हवा के झोंकों में फसलें लहलहा रही थीं। धरती में से सौंधी गंध उठ रही थी।

लालू को लगा कि विदाई के शोक से उसका कलेजा फट जाएगा। उसकी आंखों में आंसू भर आए थे और ज़बान भी नमकीन हो उठी थी लेकिन वह रो नहीं सका। वह सूर्यास्त के बाद के गर्म सायों में तेज़ रफ्तार से भागते हुए इक्के के पहियों की आवाज़ें सुन रहा था।

"पुत्तर, तू जाकर टिकस खरीद ले, मैं तेरा सामान लेकर आता हूं," झंडू ने कहा जो गंभीर भाव से लगाम को थामे अगली सीट पर बैठा था।

"नहीं चाचा, मैं सामान उठा लूंगा।" लालू ने प्रतिवाद किया।

"नहीं पुत्तर, तू जाकर टिकस खरीद," झडू चौदह बरस के घुग्घी की तरह फुर्ती से नीचे कूद पड़ा और उसने लालू का बैग उठाकर कहा, "चल पुत्तर, उदास न हो। ज़रा सोच तू गांव का सबसे हिम्मत वाला लड़का हुआ करता था। तुझे खुशी होनी चाहिए कि ज़िन्दगी में सबसे ज़्यादा कामयाबी भी तुझे ही मिली है, तू सोच किसी दिन तू शूरवीर की तरह लौटेगा।"

साढ़े सात की गाड़ी ने ज़ोर से चीख मारी, जैसे वह आस-पास के गांवों से आने वाले मुसाफिरों को आवाज़ दे रही हो। लालू स्टेशन के बुकिंग हॉल में सधे कदमों से बढ़ा। वह अपने मन की उत्तेजनाओं, आशाओं और परेशानियों को

दबाने की कोशिश कर रहा था।

३५

"जंग ! जंग ! लड़ाई ! जंग छिड़ गई ! जंग ! लड़ाई !"

फिरोज़पुर छावनी के स्टेशन के बाहर कुलियों की आवाज़ों के बीच, प्लेट-फार्म की तपी हुई धरती कोलाहल से गूंज उठी। मानाबाद से आने वाली गाड़ी अभी-अभी स्टेशन पर पहुंची थी।

"जंग ! जंग !" लालू ने यह शब्द सुने और वह थर्ड क्लास के डिब्बे से झांककर बाहर देखने लगा। भीतर लोग सो रहे थे, खांस रहे थे, थूक रहे थे, प्रार्थना कर रहे थे और गालियां बक रहे थे। लालू ने सूर्योदय के चमत्कारपूर्ण दृश्य को आतुर आंखों से देखा। वह आसमान की सारी रोशनी को अपने अन्दर ज़ज़्ब कर लेना चाहता था।

"जंग ! जंग ! लड़ाई !" लालू ट्रंकों, सन्दूकों, मुसाफिरों की टांगों, हुक्कों, अनाज और रोटियों की फूहड़ गठरियों, चारपाइयों और चद्दरों पर से गुज़रकर डिब्बे के बाहर निकला।

नीले आसमान की विशाल रोशनी से उसकी आंखें चुंधिया गई और उसने एक अंगड़ाई ली। रात की बेआरामी और उनींदेपन से उसका शरीर दुख रहा था। उसने नीली वर्दियोंवाले कुलियों को, सफेद वर्दियों वाले गार्डों और स्टेशन मास्टरों को देखा। उनके हाथों में लाल और हरी झंडियां थीं। वे गम्भीर और क्षुब्ध भाव से इधर-उधर घूम रहे थे। स्टेशन की छोटी, लाल ईंटों की इमारत आग की लपटों की तरह आसमान में उठी हुई थी। लालू रात-भर सामान रखनेवाले तख्ते पर सोया था और डिब्बे से बाहर निकलकर उसे ऐसा लग रहा था जैसे अंधे आदमी को फिर नज़र आने लगा हो।

"जंग ! जंग !" स्टेशन के बाज़ार में ये शब्द दावानल की तरह फैल रहे थे। गंदे ढाबों, नाइयों की दूकानों, फलों के ढेरों और मिठाई बेचनेवालों के आस-पास जहां भी लोग इकट्ठे थे, जंग के बारे में बातें कर रहे थे। वातावरण में काली

घटाएं-सी छाई थीं, बस बिजली की एक लकीर के कौंधने की कसर बाकी थी।

लालू बाज़ार से गुज़रकर बारकों की तरफ बढ़ा। रास्ते में एक गंडेरी बेचने वाला अपना चाकू तेज़ कर रहा था। लालू ने उससे लोगों की उत्तेजना का कारण जानना चाहा। लेकिन वह आदमी चिढ़ा हुआ नज़र आता था। उसने लालू की बात का कोई जवाब नहीं दिया।

लालू जिज्ञासा-भरे कदमों से बारकों की तरफ बढ़ा। उसने सोचा कि वहां पहुंचकर तो बुरी से बुरी खबर का भी पता चल जाएगा। वहां पहुंचकर उसे अहसास हुआ कि छावनी के कठोर अनुशासन और मुस्तैदी के वातावरण और नंदपुर गांव की निस्तब्ध शामों में कितना अन्तर है। वहां उसे लगता था कि शाम उसके जीर्ण-शीर्ण गांव की दुर्दशा पर सर्द आहें भरती थी। सदियों के दुख-दर्द से गांव की आभा फीकी पड़ गई थी। गर्मी की जमी हुई परतों वाली धरती पर गांव झुका हुआ था।

बारक की सड़क पर पहुंचकर उसने देखा कि सिपाही वर्दियां पहनकर धीमी आवाज़ में कुछ कह रहे थे। वे रेलवे ड्यूटी पर जा रहे थे। लालसिंह समझ गया कि वे स्टेशन की तरफ जा रहे हैं। वह उनकी कवायद में खलल नहीं डाल सकता था। उसने सोचा, क्या सचमुच लड़ाई शुरू हो गई है? क्या उसकी रेजीमेंट को भी मोर्चे पर भेजी जाएगी? क्या उसको और छुट्टी मिलेगी? न जाने क्यों लालू गांव में नहीं लौटना चाहता था। वहां से आने में उसने इतनी जल्दबाज़ी मचाई थी कि अब छुट्टी लेकर दोबारा वहां जाना बेवकूफी होगी। लेकिन उसे सिपाही बने तो सिर्फ चार या पांच महीने ही हुए थे। उसे मोर्चे पर भेजने का तो सवाल ही नहीं उठता था।

उसके पीछे चौराहे पर लोग कह रहे थे, "जंग! जंग!" लालू ने अपनी चाल तेज़ कर दी।

किसी अजनबी को देखकर लोग जंग के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए आगे बढ़े। फिर वे संदिग्ध ढंग से अपने सर हिलाते हुए तितर-बितर हो गए। उनके होंठ भिंचे थे।

यहां सब नस्लों, मज़हबों और जातियों के लोग इकट्ठे हुए थे, चारों वर्णों के हिन्दू, बहत्तर फिरकों वाले मुसलमान, रेजीमेंट के बैंड वाले ईसाई, सिक्ख, अमीर-गरीब, मखमल के कुर्तों वाले व्यापारी, मैले-कुचैले, गाढ़े के कपड़े पहने कुली खड़े

थे। सब किसी बात से उत्तेजित थे।

सब बड़बड़ा रहे थे, "जंग छिड़ गई है!" तूफान की तरह देश के हर कोने में यह खबर फैल गई थी। सब जगह लोग इसकी चर्चा कर रहे थे।

लगता था जैसे सब लोगों ने यह खबर सुनी थी और सब लोग परेशान थे। हर आदमी के दिल में उम्मीदें, डर और सन्देह पैदा हो रहे थे।

लालू ने गर्दन उठाकर इन भीड़ों को देखा। वह लोगों से पूछताछ करना चाहता था, लेकिन उसने सोचा कि बारक में पहुंचकर फौजी हुक्मों से उसे सारी स्थिति का पता चल जाएगा।

लालू ने अपने अनुभव से जाना था कि छावनी के वातावरण को बाहर का शोर नहीं भेद सकता। सब लोगों को मालूम था कि साहब लोग चाहते थे कि लोग धीमी आवाज़ में फुसफुसाकर बात करें। साहबों के बंगलों के बाहर अगर लोग शोर मचाते थे तो उन्हें फौजी हवालात में बन्द कर दिया जाता था। लेकिन आज सघन वृक्षों, बाग-बगीचों और अच्छी तरह तराशी गई बाड़ों से घिरे गोरे साहबों के शरण-स्थलों में उत्तेजना व्याप गई थी।

गिरजाघर की विशाल इमारत की ऊंची मीनार का घंटा लगातार बज रहा था, जैसे गिरजाघर में आग लग गई हो। लालू ने गिरजाघर में सूली के ऊपर टंगे शांति के देवता को देखा था, जिसके धंसे हुए गालों में से जीभ बाहर लटक रही थी और सर पर कांटों का ताज था, आज उसकी जगह युद्ध की देवी ने ले ली थी।

लोगों से दूर-दूर रहने वाले, सफेद मूंछों वाले कर्नल, नये-नये सब-आल्टर्न छोकरे तेज़ चाल से चल रहे थे और सिपाहियों के सैल्यूट का जवाब दे रहे थे। उनकी नज़रों में पहले की सी कठोरता नहीं थी। अधेड़ उमर और चिड़चिड़ी शक्ल के मेजर साइकलों पर तेज़ी से आ-जा रहे थे। उनमें अचानक असाधारण फुर्ती आ गई थी। वे बेतहाशा अपने बंगलों से निकलकर भागे जा रहे थे, उत्तेजना के बावजूद भी उनके चेहरे शान्त और भावशून्य थे। लालू ने ऐसी भावशून्यता केवल अंग्रेज़ों के चेहरों पर ही देखी थी।

यहां तक कि क्लब के खामोश मैदान में भी उत्तेजना छाई थी, जहां फौजी अफसर पोलो खेलते थे। अर्दली और टॉमी अपने भरकम बूटों से 'धम्-धम्' करते हुए छोटे साहब के खत बड़े साहब को या बड़े साहब के खत छोटे साहब को

पहुंचाने के लिए जा रहे थे।

सिर्फ एक चीज़ ज्यों की त्यों थी। अंग्रेज़ बच्चे जंग से बेखबर, हंसते और उछल-कूद मचाते हुए खेल रहे थे। उन्हें किसी बात की परवाह नहीं थी। शान्ति रहे या लड़ाई छिड़े, जब तक वे लकड़ी के सिपाहियों के साथ अपनी आयाओं के हुक्मों से बचकर खेल सकते हैं, तब तक उन्हें किस बात की परवाह हो सकती है? और आज तो उन्हें खेलने का बहुत अच्छा मौका मिला था। आयाएं उनपर ध्यान नहीं दे रही थीं और अपने कलफ लगे सफेद लंहगे-दुपट्टे फहराती हुई इधर-उधर घूम रही थीं।

लालू के मन में हमेशा से अंग्रेज़ बच्चों के लिए प्रबल आकर्षण रहा था। खूबसूरत फ्रॉकों में गुलाबी रंग के वे बच्चे गुड़ियों की तरह दिखाई देते थे। इस उम्मीद में कि शायद एकाध बच्चे से बातचीत का मौका मिल सके, वह उधर बढ़ा।

साहबों के घर की नौकरानियां होने की वजह से आयायें बड़ी गुस्ताख थीं, हालांकि उनके चेहरे काले स्याह थे। हज़ारों सिपाहियों के बीच सिर्फ वे ही बिना घर-गिरस्तीवाली औरतें थीं, इसलिए उनके नखरे और भी ज़्यादा थे। लालू शरमाकर एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया, जहां आयाओं और बेयरों-खानसामों का एक दल बैठा था।

लालू ने उनकी बातचीत से अन्दाज़ लगाया कि उन्होंने सुबह नाश्ते के वक्त मेमों और साहबों में होनेवाली बातचीत के जो अंश सुने थे, वे अपनी सहेलियों को सुना रही थीं। बेयरे बहुत दुःखी थे, क्योंकि उन्हें अपनी आया प्रेमिकाओं से बिछुड़ना पड़ेगा। लालू ने सोचा कि अगर साहब लोग जंग में चले गए तो बेयरे भी बेकार हो जाएंगे। साहबों के घर की ज़िन्दगी उन्हें ज़रूर पसन्द होगी। शानदार कपड़े पहने, तेज़ चाल से चलने वाले विदेशियों के संपर्क में बेयरों और आयाओं को कितना हर्षोन्माद होता होगा! देसी लोग तो बैलों की तरह सुस्त होते हैं। साहब लोग ज़्यादा ऊंचे दर्जे के आदमी होते हैं। उनमें बस एक ही नुक्स है, वे कागज़ से अपने चूतड़ पोंछते हैं।

लालू ने एक बच्चे से बात करने की कोशिश की जो अपने साथियों को छोड़कर अकेला घूम रहा था।

एक बेयरा उत्साहपूर्वक अपने साथियों को बता रहा था, "मेरा साहब कहता

है डैम जर्मन डिक्लेयर जंग, लेकिन जब अंग्रेज़ लोग फ्रोंड पहुंचेगा, जर्मन डाई।"

दूसरे ने भावुक स्वर में कहा, "मेरा साहब फौरन फ्रोंड पर जा रहा है!" हिन्दुस्तानी नौकरों में एक विशेषता होती है। स्वामिभक्त होने पर वे बड़े भावुक ढंग से मालिकों की हर बात का ज़िक्र करते हैं।

नौकर-चाकर एक-दूसरे से उदास स्वरों में विदा लेने लगे, "अच्छा अगर ज़िन्दगी रही तो ईश्वर की कृपा से फिर मुलाकात होगी।"

आयाएं अकेली गुमसुम बैठी रहीं। बच्चों को बुलाकर वे उनकी हस्तरेखाओं को देखने लगीं और ज़मीन पर लकीरें खींचकर बच्चों की किस्मत का अनुमान लगाने में तल्लीन हो गईं। एक आया ने एक अंग्रेज़ लड़के की नीली आंखों में इतने करुण ढंग से देखा, जैसे बेचारा बच्चा अभी से यतीम हो गया हो।

लालू वहां ज़्यादा देर नहीं रुका। उसे डर था कि कहीं उसे औरतों के पास खड़ा देखकर उधर से गुज़रने वाले किसी अफसर को गलतफहमी न हो जाए। वह अभी झाड़ियों और नागफनी से भरे ऊसर मैदान को पार करके बारकों की तरफ जा रहा था कि उसे सदर बाज़ार के कोने में मुनादी करने वाले की आवाज़ सुनाई दी, जो ढोलक पीट-पीटकर मुनादी कर रहा था। उसके पीछे मर्दों, औरतों और बच्चों का हजूम चल रहा था।

"मुल्क शहंशाह का है। यहां अंग्रेज़ी सरकार का हुक्म चलता है। जंग शुरू हो गया है। शैतान जर्मनी में और अंग्रेज़ी सरकार में।"

लालू के लिए कल की अस्पष्ट अफवाह आज पक्की खबर बन गई थी।

मुनादी वाले ने फिर ढम-ढम करके ढोल बजाया और मुनादी की। और ज़्यादा भीड़ इकट्ठी हो गई। लोगों के चेहरे पर संजीदगी छा गई।

लालू के लिए यह खबर नई नहीं थी फिर भी जैसे उसे काठ मार गया। वह बिना हिले-डुले इस उम्मीद में खड़ा रहा कि कुछ न कुछ ज़रूर होगा।

क्षण-भर के लिए गहरी खामोशी छा गई। किसी सड़ांद-भरे छप्पड़ की तरह, जिसमें कोई शरारती लड़का पत्थर फेंक कर लहरें पैदा कर देता है, वातावरण के दबे हुए तनाव को ढीला करने के लिए किसी शब्द की ज़रूरत थी।

वह शब्द भी आ गया।

खामोशी के समुद्र में लहरें उठीं। एक ऊंची आवाज़ सुनाई दी। लालू ने पहचान लिया वह हवलदार लहनासिंह की आवाज़ थी :

"भरती हो जाओ ! शेरों के बच्चो ! योद्धाओं की संतानो ! भरती हो जाओ !"

यह आवाज़ बादलों की गड़गड़ाहट की तरह थी; आसमान में जैसे बिजली कौंध उठी।

"भरती हो जाओ !"

भीड़ ने यह शब्द जैसे बदला लेने के लिए दुहराए—

"भरती हो जाओ ! भरती हो जाओ !"

इसके बाद लहनासिंह ने जोशीले नारे लगाए—

"भरती हो जाओ ! लड़ाई में चलो ! काले समन्दरों के पार के जादू के देशों की सैर करो !"

"भरती हो जाओ ! लड़ाई में चलो !" भीड़ ने नारा दुहराया।

यह देखकर कि भीड़ उसके साथ है, हवलदार लहनासिंह मुनादी वाले को साथ लेकर आगे चल पड़ा। मुनादी का ढोल इस तरह बज रहा था जैसे किसी बादशाह, कमांडर-इन-चीफ या उच्च शासक के सामने परेड हो रही हो।

भीड़ ने तय किया कि वह शहंशाह की खातिर अपनी जानें दे देगी। शेरनियों के बच्चों के सम्मान में लगाए गए नारों से और मुनादी वाले के ढोल की आवाज़ से आसमान गूंज उठा।

लालसिंह को हवलदार के इस अभिनय पर हंसी आई। लेकिन उसने देखा कि भीड़ फौजी ढंग से मार्च कर रही थी। न चाहते हुए भी वह इस भावावेश की वास्तविकता से अछूता न रह सका। लालू ने सोचा कि ये लोग अभी फौज में भर्ती नहीं हुए। वह खुशकिस्मत है जो उन लोगों से पहले ही भर्ती हो चुका है। लालू बारकों की तरफ भागा। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और वह वहां जल्द से जल्द पहुंचने के लिए व्याकुल हो उठा था, उसे जिन्दगी एक रोमांचकारी अनुभव मालूम हो रही थी और वह नई घटनाओं की उत्तेजनाओं के उबाल को नज़दीक से देखना चाहता था।

३६

लालसिंह को ज़िन्दगी रोमांचकारी मालूम हो रही थी, लेकिन लांसनायक लोकनाथ के लिए ज़िन्दगी एक निश्चित स्कीम थी।

जब लोकनाथ परेड के बाद कंपनी के जवानों के साथ बारक में लौटा तो लालू ने जाकर रिपोर्ट दी, "मैं लौट आया हूं।"

लोकनाथ का चेहरा ऐंठ गया, उसने अपने घुटने की पट्टियों को यांत्रिक ढंग से खोलकर चारपाई पर फेंका और दांत पीसकर बोला, "अच्छा तो तुम आ गए हो? अटेन्शन! सैल्यूट!"

लालसिंह ने फौरन सैल्यूट किया। ऐसा लगता था कि घर जाकर उसे सैल्यूट करने का तरीका भूल गया था।

"बायां हाथ नीचे करो और दायां हाथ फुर्ती से माथे तक ले जाओ! यहां जो कुछ भी सीखा था वह तू भूल गया है सूअर!" लोकनाथ ने सख्त आवाज़ में कहा। उसकी ऊंची आवाज़ सुनकर बारक में लोग खामोश हो गए।

लालसिंह ने डर के मारे इस बार ज़्यादा मुस्तैदी से काम लिया।

"ठीक है। अब बता क्या कहना चाहता है?" लोकनाथ ने पूछा।

"मैं वापस आ गया हूं।" लालसिंह ने दोबारा कहा।

"वापस आ गया हूं! वापस आ गया हूं! लेकिन तुम किससे बात कर रहे हो! जानते हो तुम्हें मुझे हवलदार साहब कहना चाहिए।"

"लांसनायक लोकनाथ, मैं छुट्टी से लौट आया हूं।" लालसिंह ने औपचारिक ढंग से कहा।

लोकनाथ ने तड़ाक से लालसिंह के मुंह पर चांटा मारा, "बदतमीज़, सूअर! मुझे यहां सब हवलदार कहते हैं।"

"लेकिन आप लांसनायक हैं। हवलदार नहीं हैं।" लालू ने गुस्से से जलकर कहा।

"गुस्ताख! सूअर! ठहर तुझे मज़ा चखाता हूं! तूने अपने बड़े अफसर की बेइज़्ज़ती की है। छुट्टी पर जाकर ये पिल्ले सारा डिसिप्लिन भूल जाते हैं। उधर से हालात नाज़ुक है।" लोकनाथ ने आहत स्वर में कहा, ताकि फौजियों की हमदर्दी उसके साथ हो जाए।

"मैंने अपनी ड्यूटी पूरी की है। लौटकर सीधा आपके पास रिपोर्ट करने

आया हूं।" लालसिंह ने कहा।

"तू एक दिन लेट आया है," लोकनाथ ने पैंतरा बदलकर कहा, "तुझे कल रात को यहां पहुंचना चाहिए था। तू आज सुबह की परेड में भी गैरहाज़िर था।"

"मैंने सोचा मेरी कल तक की छुट्टी थी इसलिए मैं आज ड्यूटी पर पहुंच जाऊंगा।" लालसिंह की आवाज़ लड़खड़ा रही थी। वह समझ गया कि लोकनाथ ने इस बार सचमुच उसकी गलती पकड़ ली है।

कारपोरल ने दांत पीसकर लालू को मां की गाली दी।

"लोकनाथ, ज़बान संभालकर बात करो, खबरदार जो मेरी मां की बेइज़्ज़ती की।" लालसिंह ने प्रोटेस्ट किया। इस भद्दे अपमान से उसका खून खौल उठा था।

कारपोरल ने लालू को चांटा मारकर कहा, "फिर मुझे लोकनाथ कहा? मैं अफसर हूं।"

"तुम इस तरह मेरी बेइज़्ज़ती नहीं कर सकते।" लालू का मुंह गुस्से से लाल हो उठा था। उसने दीवार का सहारा ले लिया था ताकि वह आवेश से नीचे न गिर पड़े।

"ओए हवलदारा! इसे छोड़ दो!" चाचा किरपू ने बीच-बचाव किया।

"हरगिज़ नहीं, मैं इसे सबक सिखाऊंगा। इसने अपने अफसर की बेइज़्ज़ती की है। देर से आने और परेड से गैरहाज़िर रहने के जुर्म में इसकी रिपोर्ट करूंगा।" लोकनाथ ने जवाब दिया। फिर उसने अपने जूते उतारकर देसी जूते पहन लिए और अपनी पेटी हाथ में लेकर लालू को दरवाज़े की तरफ धकेलकर बोला, "चल मेरे साथ अकड़ूखान! हरामज़ादे!"

लालू का चेहरा पीला पड़ गया। मुनादी वाले के ढोल की तरह उसका दिल धड़क रहा था। वह गुस्से से बेबस और अंधा हो रहा था।

"जल्दी कर! आदमी बन!" लोकनाथ ने नफरत से लालू को बाहर धकेला। बरामदे से बाहर पहुंचकर लालू का पैर चाय की पत्तियों पर फिसल गया और वह मुंह के बल सहन में जा गिरा। उसकी पगड़ी ढीली हो गई और मुंह में धूल भर गई।

"ओह! क्या माजरा है? बारकों में कौन झगड़ रहा है? सूअर!" सूबेदार मेजर अरबेलसिंह ने पूछा, जो रेजीमेण्ट के चालाक आदमियों में से था। सूबेदार मेजर अपने क्वार्टर के बाहर हवलदार लछमनसिंह से बात कर रहा था। उसका

बेटा सूबासिंह, जो लंबे कद का गोरा लड़का था, सर झुकाए वहां खड़ा था।

लोकनाथ ने अफसरों के पास जाकर एड़ियां खड़काकर सैल्यूट किया और सूबेदार मेजर से कहा, "बी कंपनी की दूसरी पल्टन का सिपाही लालसिंह छुट्टी के बाद देर से लौटा है सूबेदार मेजर साहब, और लौटकर जब वह रिपोर्ट करने आया तो उसने मेरी बेइज़्ज़ती की।"

"उस सूअर को यहां बुलाओ।" सूबेदार ने लापरवाही से कहा। उसका चेहरा भेड़िये जैसा था और उसने दाढ़ी को बारीक जाली से बांध रखा था।

लोकनाथ ने एड़ियां खड़काकर सैल्यूट किया और लालसिंह को बुलाने के लिए बारक की तरफ चला गया।

लछमनसिंह के कृपालु चेहरे पर घबराहट-भरी मुस्कराहट छा गई। उसने कहा, "सूबेदार मेजर साहब, अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि लोकनाथ जवानों से सख्ती से पेश आता है। सिपाही उसकी शिकायतें करते रहे हैं। आप बुरा न मनाएं, मेरे ख्याल में तो वह ज़रूरत से ज़्यादा सख्ती करता है। मैं उसकी शिकायत करना चाहता था लेकिन लिहाज़ की वजह से नहीं की। सिपाही अपने अफसर की शिकायत करने में घबराते हैं इसलिए मैं यह बात जनाब को बता रहा हूं।"

सूबा ने लड़कपन से कहा, "सूबेदार साहब, लालसिंह रेजीमेण्ट की टीम में हॉकी का खिलाड़ी है।"

"अपने अफसरों की इज़्ज़त और डिसिप्लिन का भी पाबन्द होना चाहिए लछमनसिंह," सूबेदार मेजर ने कठोर स्वर में कहा। उसने अपने बेटे की बात भी अनसुनी कर दी और उसका चेहरा कठोर हो गया। उसने वह रटा-रटाया फार्मूला दुहराया, जिसकी मदद से वह अपने मातहतों की समस्याओं को सुलझाया करता था। अपने बाप के रसूक से वह फौज में जमादार बन गया था। उसका बाप एक छोटा ज़मींदार था। दूसरों की चुगली खाकर और मक्कारी से वह रेजीमेण्ट का जमादार बना था, हालांकि वह बिल्कुल अनपढ़ था। "अपने अफसरों की इज़्ज़त करनी चाहिए और डिसिप्लिन का पाबन्द होना चाहिए।" इसी वक्त लोकनाथ और लालसिंह ने आकर उसे सैल्यूट मारा।

"सूबेदार मेजर साहब, यही वह सिपाही है।" लोकनाथ ने संजीदा स्वर में कहा। उसके चेहरे की मुद्रा कठोर हो गई थी, क्योंकि वह ताड़ गया था कि हवल-

दार लछमनसिंह नें उसकी शिकायत की है।

सूबेदार मेजर ने पूछा, "ओए लड़के, बोल क्या माजरा है ?"

"जनाब, जब मैं छुट्टी से लौटकर हाजरी देने गया तो लांसनायक लोकनाथ ने मुझे गालियां दीं।" लालू ने जवाब दिया।

"हजूर, पहले इसने मेरी बेइज्ज़ती की थी। यह मेरे साथ गुस्ताखी से पेश आया था। इसने मेरे ओहदे की तौहीन की थी।" लोकनाथ झल्लाकर बोला।

"ओए, क्या यह सच है ?" सूबेदार मेजर ने पूछा।

लालू डर से कांपने लगा। उसने विनीत स्वर में कहा, "सूबेदार मेजर साहब, शुरू में मुझसे गलती हुई थी। लेकिन मैंने इनके ओहदे की तौहीन नहीं की। ये मुझसे नाराज़ हैं जब से..."

"जब से क्या ? बोलता क्यों नहीं ?" सूबेदार मेजर ने अधीरतापूर्वक पूछा।

"हजूर, लांसनायक लोकनाथ ने इस लड़के की शिकायत कंपनी कंमाडर तक पहुंचाई थी। लेकिन लेफ्टीनेण्ट ऑडले साहब ने उस इलज़ाम को डिसमिस कर दिया था।" लछमनसिंह ने बताया।

सूबासिंह ने हिम्मत बांधकर कहा, "लालसिंह आठवीं जमात तक पढ़ा है।" डर से उसका लाल चेहरा फीका पड़ गया था और उसकी नज़रें नीचे झुकी थीं, हालांकि उसका कद सबसे लंबा था।

"सूबेदार मेजर साहब, यह अकड़ खां है। अपने को बहुत बडा समझता है, इसका दिमाग आसमान पर चढ़ गया है, क्योंकि यह चार अक्षर पढ़ लेता है।" लोकनाथ ने कहा, "लेकिन सब लोगों की तरह इसे भी हुक्म तो मानना ही पड़ेगा।"

"क्या यह सच है ?" सूबेदार मेजर ने पूछा।

"जनाब, इन्होंन मुझे मां की गाली दी थी।" लालू ने हिचकिचाकर कहा।

"क्या गाली दी थी ? ठीक-ठीक बताओ !" सूबेदार मेजर ने अश्लील ढंग से आंखें मटकाकर कहा।

'जनाब, इन्होंने बहुत भद्दी गाली दी थी। आपके कानों को वह बहुत गंदी मालूम होगी।" लालू ने जवाब दिया।

"मेरे कानों के लिए कोई गाली गन्दी नहीं," सूबेदार ने अनचित्ते में मज़ाक किया, "अच्छा बता इसने क्या कहा था ?" उसने उत्सुक स्वर में पूछा।

"इन्होंने कहा था···कि मैं अपनी मां की···में छुपा हुआ था।" लालसिंह की ज़बान लड़खड़ाने लगी।

"तेरी मां की ? ओए ढीठ बदमाश, वहां तू कैसे छिप सकता था ?" फिर वह ज़ोर से हंस पड़ा। "ऐसी बातें तो होती ही रहती हैं। अब तू फौज में भर्ती हो गया है, दूधपीता बच्चा तो नहीं है। तुझे सख्त बनना चाहिए।" और फिर अपने बेटे की तरफ मुड़कर उसने कहा, "ओए, सूअर के बच्चे, सुन ले, अगर तूने फौजी बनना है तो तुझे भी सख्त बनना पड़ेगा।"

"हज़ूर, क्या सूबासिंह फौज में भर्ती हो गया है ?" लोकनाथ ने पूछा। यह सोचकर कि अब स्थिति उसके अनुकूल हो गई है, वह सूबेदार मेजर के मुंह लगने लगा।

"हां, जंग के लिए मैंने इसे रंगरूट बनाकर सरकार को बतौर तोहफे के पेश किया है।" सूबेदार मेजर ने लापरवाही का उपक्रम करते हुए कहा। "अगर यह भर्ती हो गया तो यह भी बी कम्पनी में जाएगा।"

"जनाब, अगर यह मेरी कम्पनी में आएगा तो मैं इसे आदमी बना दूंगा।" लोकनाथ ने कहा।

"हां, लेकिन अब तुम्हें भी सीधा करना पड़ेगा।" सूबेदार मेजर ने कारपोरल के जोश पर ठंडा पानी डालते हुए कहा, "तुम रंगरूटों को सधाते जाओ लेकिन मैं तुम्हारी तरक्की रोक दूंगा।

"हवलदार लछमनसिंह, कल से लोकनाथ को चार नम्बर की पल्टन में भेज दो और तुम दो नम्बर की पल्टन का चार्ज ले लो।"

"हज़ूर, मैंने क्या कसूर किया है जो मुझे सज़ा दी जा रही है ?" लोकनाथ ने पूछा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था लेकिन आंखों में खून उतर आया था। "सज़ा तो इस हरामज़ादे को मिलनी चाहिए।"

"बस-बस लांसनायक लोकनाथ !" सूबेदार मेजर ने सख्ती से कहा। लोकनाथ की तरक्की वह किसी और वजह से भी रोकना चाहता था। फिर उसने इन्साफपसन्दी के अन्दाज़ में लछमनसिंह से कहा, "यह मेरा ऑर्डर है कि अगर रेजीमेण्ट को फ्रंट पर भेजा जाए तो इस छोकरे को छुट्टी मत देना।"

"सूबेदार मेजर साहब !" लोकनाथ ने गिड़गिड़ाकर प्रोटेस्ट किया और अफ़सर के पैरों में गिर पड़ा।

"खामोश रहो ! अटेन्शन ! सैल्यूट, लेफ्ट अबाउट टर्न !" सूबेदार मेजर अरबेलसिंह गरजा और गुस्से से कांपने लगा।

लोकनाथ दुम दबाकर वहां से चल दिया।

सूबेदार मेजर ने लछमनसिंह से कहा, "बता हौलदारा, अगर मैं तेरी तरक्की करके तुझे जमादार बना दूं और फ्रंट पर पहुंचकर अगर मैं अपने लड़के को कमीशन दिलवा दूं तो तुझे बुरा तो नहीं लगेगा ?" अचानक उसे अहसास हुआ कि उसका बेटा और लालू पास खड़े इस गोपनीय वार्ता को सुन रहे थे।

"ओए, दोनों लड़के यहां से चले जाओ।" उसने कहा।

"सूबेदार साहब, मुझे तो कोई ऐतराज़ नहीं, लेकिन बहुत दिनों से लोकनाथ की आंख कमीशन पर है यहां तक कि उसने कम्पनी कमाण्डर को सलाह दी थी कि मुझे जल्दी रिटायर कर दिया जाए।" लछमनसिंह बोला।

"लोकनाथ को मैं समझ लूंगा। उसकी तरक्की रोककर मैं किरपू अर्दली को हवलदार बनाने की सिफारिश कर दूंगा, जब तुम जमादार बन जाओगे।"

लालू ने सूबासिंह के साथ बारकों में जाते वक्त यह बातचीत सुन ली। छुट्टी पर जाने से पहले हॉकी के खेल में उसने सूबासिंह की दोस्ती हासिल कर ली थी। सूबेदार मेजर के सामने पेश होने की वजह से अभी भी वह थर-थर कांप रहा था, लेकिन अपनी खुशकिस्मती पर उसे खुशी भी हो रही थी। वह छुट्टी लेकर दोबारा घर नहीं जाना चाहता था और उसे महसूस हुआ कि चलो सस्ते में ही लोकनाथ से पिंड छूटा। लेकिन उसे लछमनसिंह पर तरस आ रहा था। बेचारे का कमीशन पाने का चांस खत्म हो गया था।

उसने सूबासिंह से कहा, "अब तो तू जल्द ही मेरा अफसर बन जाएगा।"

"पता नहीं। मैं तो सिर्फ इतना जानता हूं कि मेरा बाप मेरे सौतेले भाई की पढ़ाई पर दिल खोलकर खर्च करता है। लेकिन मुझे रंगरूट बनाकर फौज में भेज रहा है, क्योंकि मेरी मां नहीं है।"

लेकिन लालू को तरक्की की साज़िशों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने यह कहावत दुहराई, 'कभी घोड़े की पिछाड़ी और अफसर की अगाड़ी नहीं जाना चाहिए, क्योंकि दोनों दुलत्तियां झाड़ते हैं।'

३७

फिरोज़पुर छावनी की बारकों में अगस्त के पहले हफ्ते में लोग अफवाहें फैलाने की जगह तरह-तरह के कयास लगाने लगे।

कुछ लोग कहने लगे कि यह जंग महाभारत की जंग जैसी है, क्योंकि कौरव-पांडवों की तरह अंग्रेज़ी बादशाह भी जमनी के बादशाह का चचेरा भाई है। सत्य और असत्य, प्रकाश और अंधेरे की शक्तियां आपस में लड़ रही हैं। कुरुक्षेत्र के मैदान की तरह शक्तिशाली देश इस संघर्ष में भाग ले रहे हैं। लोगों ने कहा, अंत में सत्य की जीत होगी, क्योंकि श्रीकृष्ण अवतरित होकर अपनी बहादुरी दिखाएंगे। गीता ने कहा है, "जब भी धर्म पर अधर्म छाएगा, मैं निर्बलों की रक्षा के लिए और आततायियों के संहार के लिए जन्म लूंगा।" ईश्वरीय शक्तियां अदृश्य रहेंगी और श्रीकृष्ण सिपाहियों का रूप धारण करके युद्धक्षेत्र में जाएंगे। सारी दुनिया तबाह हो जाएगी, क्योंकि ईश्वर ने शैतान को जर्मनी का बादशाह बनाकर मानव-जाति की परीक्षा लेने के लिए भेजा है। प्राचीन भारत में भी जब समाज पतित हो गया था और अनाचार बढ़ गया था, तब सभ्यता का समूल विनाश हुआ था। यूरोप की जंग का भी यही नतीजा निकलेगा।

कुछ लोगों ने कहा कि यह जंग महाभारत जैसी नहीं होगी, बल्कि दुनिया खून और आग के समुद्र में डूब जाएगी और कलियुग का अंत हो जाएगा, क्योंकि लोग धर्म छोड़कर भौतिकवादी बन गए हैं, खास तौर पर जर्मनी में, जहां ज्ञान का उपयोग इन्सान को वहशी बनाने के लिए किया गया है।

कुछ लोग कहते थे कि जर्मन बादशाह चंगेजखां का अवतार है और तुर्की का सुल्तान तैमूरलंग का अवतार है। दोनों दुनिया में इस्लाम फैलाना चाहते हैं।

कुछ लोगों का खयाल था कि जर्मन बादशाह आर्यसमाज का दोस्त है, जिसके नेता लाला लाजपतराय हैं। जर्मन बादशाह ने अंग्रेज़ी बादशाह के साथ इसलिए झगड़ा किया है ताकि वह आर्यावर्त को आजाद कराके वहां वैदिक धर्म का प्रचार कर सके।

लेकिन आठ अगस्त को आर्डर मिला कि लाहौर डिवीज़न के सारे फौजी, जिसमें फिरोज़पुर, जालंधर, सरहंद की ब्रिगेडें, डिवीज़नल ट्रूप, तोपखाने की टुकड़ियां थीं, मोर्चे पर जाने के लिए तैयार होजाएं। मेरठ डिवीज़न के फौजियों को

भी मोर्चे पर जाने का ऑर्डर मिला, जिसमें देहरादून, गढ़वाल और बरेली ब्रिगेडें भी शामिल थीं। ६८वीं राइफल्ज़ फिरोज़पुर ब्रिगेड का हिस्सा बनकर जा रही थी।

इस खबर से लोगों में भारी चर्चाएं बंद हो गई और खामोशी छा गई।

एक फौजी बड़बड़ाया, 'मैं घर में बीवी, तीन लड़के और एक लड़की को छोड़कर आया हूं। मैं फौज में सिर्फ इसलिए भर्ती हुआ था ताकि आमदनी का एक और ज़रिया निकल आए और मेरे लड़के ज़मीन के वारिस बन सकें। मैंने सुना था कि यह पल्टन एक बार चीन जा चुकी है, इसलिए मैंने सोचा कि मेरे रिटायर होने तक तो यह फिर मुल्क से बाहर नहीं जाएगी। मेरा ख्याल था कि फौज को सरकार की हकूमत बनाए रखने के लिए छावनियों में और सरहदों पर रखा जाता है। इसलिए मुझे काले समन्दरों के पार भला क्यों जाना पड़ेगा?"

दूसरे ने कहा, "घर पर मेरी ज़मीनों की देखभाल कौन करेगा? मेरे भाई तीनों एकड़ों को आपस में बांट लेंगे। हम लोग ज़िन्दा तो लौटेंगे नहीं। मेरी बीवी पर्दानशीन औरत है, मेरे भाइयों पर दावा करने वाला कोई नहीं है। मैं तो बर्बाद हो गया! सत्यानाश हो इस दुष्ट सरकार का और इसके साथियों का!"

"मैंने तो अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी चलाई है। कुछ महीने पहले मुझे पेन्शन मिल सकती थी," धन्नू बाबा ने हुक्के की नली चबाते हुए कहा, "पता नहीं, अब मुझ जैसे बूढ़ों को सरकार रिटायर करेगी या नहीं। सरकार की बातें सरकार जाने।"

किरपू ने कहा, "पन्द्रह साल की नौकरी के बाद ही धन्नू अपने को बूढ़ा समझने लगा है, लेकिन मैंने तो अट्ठारह बरस नौकरी की है। मालिक का हुक्म मानने वाला और डांट-फटकार सहने वाला बैल शिकायत करने वाले आदमी से बेहतर है। लेकिन बात क्या है? आखिर हम परदेसों में जाकर किसलिए लड़ें-मरें? ये लोग आपस में क्यों झगड़ रहे हैं? मैंने साहबों का नमक ज़रूर खाया है, लेकिन अपनी आत्मा तो नहीं बेची?"

"सरकार का हुक्म है।" धन्नू ने कहा।

"लोकनाथ तो कहता है कि सिपाही का पहला फर्ज़ हुक्म बजाना है। उसे डिसिप्लिन मानना चाहिए। उसे चीन भेजा जाए, मद्रास या कोयटा, उसे जाना ही पड़ेगा। पसंद-नापसंद का सवाल नहीं उठता। हुक्म बजाने के सिवा सिपाही

का कोई हक नहीं। उसे इसलिए लड़ना चाहिए ताकि सूबेदार मेजर अरबेलसिंह की तरक्की हो जाए। वह कप्तान बन जाए और साहबों को खूबसूरत चीनी छोकरियां मिल सकें। रही मेरी बात, सो मुझे सूबेदार मेजर के घर में खाना पकाने का इतना अभ्यास है कि मुझे रेजीमेण्ट का बड़ा रसोइया बना दिया जाएगा।"

"बेवकूफ की बातों पर ध्यान न दो धन्नू बाबा," लालू ने तसल्ली दी। "डाक्टरी जांच तक इन्तज़ार करो।"

"पुत्तर, तू तो बड़ा ज्ञानी है। बता जंग क्यों छिड़ी है?" धन्नू ने पूछा।

"मुझे तो सिर्फ यही पता है कि 'अंग्रेज़ी सरकार और शैतान जर्मनी' में जंग छिड़ी है। मुनादी वाला यही कह रहा था। हम सब मोर्चे पर जा रहे हैं। मुझे तो सिर्फ पांच महीने की ट्रेनिंग दी गई है, मैं भी जाऊंगा, और बाबा, तूने तो सरहद पर जाकर सचमुच की लड़ाई देखी है। इसलिए सरकार तुम्हारे तजुर्बे से फायदा उठाना चाहती है।"

"चलो भाइयो, बैठने का वक्त नहीं," हवलदार लछमनसिंह ने बरामदे में से आवाज़ दी, "काम में ही आदमी की पहचान होती है। हस्पताल में इन्स्पेक्शन परेड हो रही है। वहीं चलो।"

किरपू ने गुस्ताखी से कहा, "ज़रा इस आदमी को देखो तो सही! लगता है सचमुच लोगों की जांच होती है।"

कुछ देर तक सब लोग जंग से बचने के उपाय सोचते रहे। बाहर सख्त गर्मी पड़ रही थी। लोग पंखे झल रहे थे, उनके चेहरों और बगलों में पसीना जमा हो रहा था। वे सोच रहे थे कि हेड क्लर्क को रिश्वत देकर जान छुड़ाई जाए या हस्पताल के डाक्टर साहब को। जिस तरह से लोग लोटे हाथ में लेकर पाखाने की तरफ जा रहे थे, उससे तो मालूम होता था कि जान छुड़ाने का सबसे आसान तरीका है कि छावनी के बाज़ार में जाकर हकीम से कोई दस्तावर दवाई लाकर खाई जाए। लेकिन पंजाबी मुसलमान कंपनी के दो सिपाही अचानक मर गए थे और ऐसी दवाएं खतरनाक थीं। लोगों ने भागने की योजना पर भी विचार किया, लेकिन उन्हें पता था कि कानून की पहुंच से कोई नहीं बच सकता—हां, अगर कोई तिब्बत या लद्दाख चला जाए तो दूसरी बात है।

लालू को छुट्टी की अब कोई उम्मीद नहीं थी। हस्पताल में उसका डाक्टरी मुआइना हुआ था और उसे 'फिट' करार दिया गया था। डिस्पेंसरी की उमस में

उसका दम घुटा जा रहा था। उसे टीका लगाया गया। आयोडीन और कुनीन की गन्ध से उसका सर चकराने लगा। वह हांफता आ बारक में लौटा और 'फौजी अखबार' के पन्ने पलटने लगा, जो वह हवलदार लछमनसिंह से मांग कर लाया था।

अखबार बड़ा ही नीरस और मामूली था, लेकिन उस अंक में कई कविताएं छपी थीं। एक कविता मैसूर के महाराजा को समर्पित की गई थी और अंग्रेज़ी से उर्दू में अनूदित थी।

"घमंडी जर्मन कहा करते थे
कि जिस दिन वे
शक्तिशाली इंग्लैंड पर हमला करेंगे
उसी दिन भारत इंग्लैंड की पीठ में छुरा भोंकेगा
लेकिन ऐ किसानो, सिपाहियो, रईसो और ज़मींदारो,
तुम इसका जवाब दो।
कहो 'ऐ विशाल साम्राज्य के मालिक
हमारी स्वामिभक्त तलवारों को कबूल करो!'"

लालू को नहीं मालूम था कि जर्मनी का खयाल था कि भारत इंग्लिस्तान की पीठ में छुरा भोंक देगा। उसने अंग्रेज़ सरकार के खिलाफ आन्दोलन करने वालों में लाला लाजपतराय और अजीतसिंह का नाम सुना था। पंजाब में एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था जिसमें अजीतसिंह ने किसानों को फटकारा था। 'पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओए!' लेकिन लालू को यह नहीं मालूम था कि और कौन-से लोग सरकार के खिलाफ साज़िशें कर रहे हैं। उसने सुना था कि कुछ बंगालियों ने दिल्ली के दरबार के बाद वायसराय की गाड़ी पर बम फेंके थे और लॉर्ड हार्डिंग को मारने की कोशिश की थी। लेकिन यह तो बहुत पुरानी घटनाएं थीं जब लालू स्कूल में पढ़ा करता था। तब से लालू ने सरकार के किसी दुश्मन के बारे में नहीं सुना था, अगर सुना भी होगा तो उसे इस वक्त याद नहीं था। टीका लगवाने के बाद से उसका सर चकरा रहा था और धूप से उसका शरीर जल रहा था।

अखबार में एक और कविता थी। कवि कोई मशहूर जज था।

कविता की पहली पंक्ति थी, "ऐ इंगलिस्तान, हम समझते हैं तुझे किस चीज़

३८

जवानों को मोर्चे पर भेजने की तैयारियां बड़ी फुर्ती से की गई। जवानों की छुट्टियां मन्सूख कर दी गई और 'जुर्म' करने वालों को सज़ाएं मिलने लगीं। उन्हें थकाया जाता या डिपो में रखा जाता।

कुछ दिनों तक चर्चा का एक ही विषय रहा। रेजीमेंट किस दिन मोर्चे के लिए रवाना होगी ? डिवीज़नों को कहां भेजा जा रहा है ? लेकिन जवानों को किसी बात की जानकारी नहीं थी, इसलिए वे तरह-तरह के कयास लगा रहे थे।

लालू एक हफ्ते से 'क्वार्टर गार्ड' ड्यूटी पर था। वह गारदघर के लालईंटों से बने बरामदे की चारपाई पर वर्दी पहने बैठा रहता था या धूप में उसे चहल-कदमी करनी पड़ती थी। वह कई बार व्यर्थ ही में आतंकित हो उठता था। ज्योंही कोई अंग्रेज़ या हिन्दुस्तानी अफसर क्वार्टर मास्टर हवलदार के पास गारदघर में अपना बैग लेने आता और जमादार उन्हें हथियार देने लगता तो लालू को लगता कि अफसर अब कोई न कोई नई खबर सुनाएगा। हर बार जब संतरी किसी मटरगश्ती करते हुए सिविलियन को रोकता तो लालू को लगता कि जल्द ही कोई न कोई तबाही आने वाली है। जब वह संतरी की ड्यूटी पर था तो उसकी नज़रें सारे वक्त गारदघर के पास शस्त्रागार पर लगी रहती थीं, जहां सिपाही अपनी बन्दूकों को सफाई और मरम्मत करवाने के लिए खड़े रहते थे। तपती धूप में ड्यूटी देता हुआ वह उस वक्त का इन्तज़ार करता रहता था जब वह अपनी चारपाई पर जाकर लेट सकेगा और अपने साथियों की बातें सुन सकेगा।

लांसनायक देवासिंह, जो क्वार्टर मास्टर के स्टोर में काम करता था, अपने-आपको बहुत बड़ा अफसर समझता था। उसे मोर्चे पर नहीं भेजा जा रहा था। उसने एक दिन जवानों को बताया कि उसे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि रेजीमेंट को जल्द ही मोर्चे पर भेजा जाएगा। लेकिन वे लोग कहां भेजे जाएंगे यह बात गोपनीय रखी गई है।

जमादार सुचेतसिंह के बहनोई सिपाही दीनदयाल ने, जो डिपो में काम करता था, फौजियों को बताया कि अगले महीने उनकी रेजीमेंट को मिसर भेजा जाएगा।

सूबेदार मेजर साहब बहादुर का लड़का सूबासिंह रंगरूट बन गया था। सीधे

कमीशन के लिए उसके नाम की सिफारिश कर दी गई थी। उसे रेजीमेंट में आने वाले हर आर्डर का पता रहता था। उसने बताया कि उनकी रेजीमेंट एक बड़ी डिवीज़न का हिस्सा है। हिन्दुस्तान के मशहूर राजाओं ने एक डिवीज़न खड़ी की है जिसमें हाथी, ऊंट और तोपें भी रहेंगी। इस डिवीज़न के कमाण्डर, महाराजा सर प्रतापसिंह होंगे जो उसके बाप के दोस्त हैं।

किरपू चाचा ने हांगकांग और दूसरे शहरों के बारे में बताया जो उसने चीन के रास्ते में देखे थे। सिंगापुर में बहुत-से अंग्रेज़ी जहाज़ थे। किरपू का अनुमान था कि फौज वहीं भेजी जाएगी, क्योंकि जर्मनी अंग्रेज़ी फौजों पर पीछे से ही हमला करेगा।

धन्नू बाबा का खयाल था कि साल-भर तक वे लोग सरहद के पास पड़े रहेंगे, यह अच्छा होगा क्योंकि वे लोग अपने देश के नज़दीक तो रहेंगे। अंग्रेज़ों की धरती पर जाकर मरना ठीक नहीं। जनरल कुक साहब को जिस धूमधाम से दफनाया गया था, उसे देखकर धन्नू इस नतीजे पर पहुंचा था कि अंग्रेज़ों की मौत बहुत खर्चीली होती है। अगर मरने के बाद उसे जलाने की बजाय कब्र में गाड़ा गया तो उसका धर्म नष्ट हो जाएगा। लेकिन सरकार की बातें सरकार ही जानती है।...

लालू हवलदार लछमनसिंह के कमरे में इस उम्मीद से गया था कि शायद उसे कोई अखबार या कम्पनी का आर्डर पढ़ने को मिल सके लेकिन फर्श पर सिर्फ 'फौजी अखबार' के पुराने अंक बिखरे पड़े थे। हवलदार अपना सामान बांध रहा था। लालू की जिज्ञासा-भरी दृष्टि को देखकर लछमनसिंह ने कहा, "घबरा नहीं पुत्तर, इसी हफ्ते किसी दिन भी मोर्चे पर जाने का आर्डर आ जाएगा।"

और सचमुच उसी दिन ऑर्डर आ गया। लाहौर डिवीज़न के फौजियों को २४ अगस्त को करांची पहुंचकर समुद्री जहाज़ पर चढ़ने का हुक्म मिला था। फिरोज़पुर ब्रिगेड २३ तारीख को रवाना होने वाली थी।

करांची से वे लोग कहां भेजे जाएंगे, चीन, मिसर या जर्मनी, यह उन्हें मालूम नहीं था। छावनी में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही थीं। सिपाही तैयारियों में लगे थे। बारकों से बैग और सामान खच्चरों के रेड़ों पर लादकर स्टेशन पर पहुंचाए जा रहे थे। सुनने में आया था कि कई हिन्दुस्तानी राजाओं ने लाखों रुपये का चन्दा इकट्ठा करके 'लॉयल्टी' नाम के एक समुद्री जहाज़ में फौजियों के लिए

शानदार हस्पताल बनाया है। एक महाराजा ने सिपाहियों के अलावा अपना सारा खज़ाना और ज़ेवरात भी अंग्रेज बादशाह को दे दिए हैं। राजाओं, रईसों, ज़मींदारों, साहूकारों, रिटायर्ड अफसरों और वकीलों ने भी सरकार की मदद की है। तिब्बत का लामा, जो कभी नहीं मरता, उपवास रखकर दिन-रात अंग्रेज कौम की जीत के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है। उसने एक हज़ार तिब्बती सिपाही भी फौज में भेजे हैं।

२४ की दोपहर को सब छोटे-बड़े इन्तज़ाम पूरे हो गए। सिपाही दो-दो, तीन-तीन की कतार बनाकर स्टेशन की तरफ मार्च करने के लिए तैयार हो गए।

सख्त कड़कती धूप में लालू भी किरपू चाचा और धन्नू बाबा के साथ स्टेशन जा रहा था। उसके अंदाज़ में लापरवाही थी। उसने चांदमारी के मैदान के सफेद पर्दों को देखा। पहली बार जब उसने सचमुच की गोलियां चलाई थीं तो उसके दिल की धड़कन करीब-करीब रुक गई थी, लेकिन बाद में उसे निशानेबाज़ी में मज़ा आने लगा था। इस बार लालू सचमुच की लड़ाई देखने जा रहा था। साथियों के मज़ाक, धोबी के गधे की उछल-कूद और आसमान को देखने का मज़ा अब नहीं मिलेगा।

लालू ने किरपू की तरफ देखा, जिसने दाएं हाथ से अपनी आंखों को ढांप रखा था। लगता था, उसकी नज़रें दूर किसी चीज़ को तलाश कर रही थीं। धन्नू का शरीर गर्मी में पसीने से लथपथ हो गया था और उससे अपने 'किट' का वज़न नहीं संभाला जा रहा था। अचानक किरपू 'ओए बल्लू ! ओए बल्लू !' पुकारता हुआ बाज़ार में बने फैमिली क्वार्टरों की तरफ भागा, जहां बच्चे हमेशा की तरह पीपल के पेड़ के नीचे खेल रहे थे। किरपू ने पुकारा, "ओए बल्लू !"

लेकिन बनिए का लड़का बल्लू, जिसे लालू ने लोकनाथ के चंगुल से बचाया, फौजी वर्दी को देखकर डर गया था और टाट के पर्दों के पीछे जा छिपा था। किरपू वहीं खड़ा हो गया और अपने साथियों से बोला, 'मैंने सोचा था, मैं इस बेवकूफ बच्चे को खर्चने के लिए एक पैसा देता जाऊं।"

लालू ने क्षण-भर के लिए किरपू चाचा के चेहरे की तरफ देखा और फिर नज़रें दूसरी तरफ फेर लीं। बूढ़े की आंखों में आंसू थे।

दो सौ गज़ के ऊसर मैदान को पार करके जब वे पक्की सड़क पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि अधिकांश सिपाही कीकर के पेड़ों की नाममात्र की छायातले

खड़े होकर अपने दोस्तों से गले मिलकर विदाई ले रहे थे या अपने सामान और पेटियों को ठीकठाक कर रहे थे। उनके बादामी चेहरे गर्मी में झुलस रहे थे। छावनी की भयंकर चौंधियाने वाली धूप में चलकर वे थक गए थे।

लालू, किरपू और धन्नू ने अपने माथों से पसीना पोंछा और थोड़ी देर तक वे भंगियों, धोबियों, दूकानदारों और डिपो के सिपाहियों की भीड़ के पास खड़े रहे, जो रेजीमेंट को विदाई देने के लिए आई थी।

एक सिख सिपाही दूसरे सिपाही से कह रहा था, "खत लिखना। जब तुम यहां थे, तो एक और एक ग्यारह थे लेकिन अब मैं अकेला रह जाऊंगा।" मालूम होता था, दोनों सगे भाई थे।

बड़े भाई ने कहा, "कोई बात नहीं चाननसिंहा, हम जल्द मिलेंगे।" लेकिन न चाहते हुए भी उसके चौड़े, खूबसूरत दाढ़ी से ढंके चेहरे में खामोशी छा गई, क्योंकि उसके गाल आंसुओं से भीग गए थे।

एक धोबी के लड़के ने लछमनसिंह के पास आकर कहा, "हवलदार साहब, क्या आप विलायत से मेरे लिए अंग्रेजी छड़ी लाएंगे?" लछमनसिंह बाबू खुशीराम के साथ खड़ा किसी रजिस्टर की चैकिंग कर रहा था। खुशीराम ने भी वर्दी पहन रखी थी। वर्दी पर बनी दो लकीरों से पता चलता था कि उसे लांस-नायक का ओहदा मिल गया है। वह भी रेजीमेंट के साथ जा रहा था। खुशीराम ने टिप्पणी की, "ऊंट सींगों की तलाश करने गया और अपने कान गंवाकर लौटा!" नई वर्दी में खुशीराम खूब अकड़ रहा था।

हवलदार लछमनसिंह ने मुस्कराकर स्नेहपूर्वक लड़के का सर थपथपाया और कहा, "अच्छा पुत्तर, जब हम लौटेंगे तो तुम सबको मिठाई देंगे।"

"मिसरी की तरह मीठी ज़बान भी लाखों में एक की होती है।" बड़े भंगी की बीवी ने कहा। बाकी औरतें दुपट्टों में मुह छिपाए दूर खड़ी थीं। सिर्फ वही आगे बढ़कर रेजीमेंट को विदाई देने के लिए आई थी।

सूबेदार मेजर के लड़के सूबासिंह ने आगे आकर कहा, "ओए लालू, ले मैं भी आ गया। हमारी कंपनी सामने खड़ी है। मैं भी तेरी पलटन में भर्ती हो गया हूं।"

इसी वक्त कर्नल साहब और कुछ दूसरे अफसर घोड़ों पर सवार होकर जवानों का मुआइना करने आए। शोर-शारबा फौरन शान्त हो गया।

ऑर्डर मिला, "फाल इन!" सर्द आहों और एड़ियां खड़काने की आवाजें

आई।

पल्टनें कंपनियों में बंट गई। जमादार और दूसरे हिन्दुस्तानी अफसर अपनी जगहों पर जाकर खड़े हो गए। कम्पनी कंमांडर जवानों से अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल दूरी बनाकर एकसाथ खड़े थे।

कुछ और ऑर्डर दिए गए। जवानों में एक गम्भीर खामोशी छा गई। सिर्फ कपड़ों की सरसराहट और दर्शकों की फुसफुसाहटें सुनाई दे रही थीं।

इसी वक्त बैंड बज उठा। कर्नल ने लाउड स्पीकर के सामने खड़े होकर कुछ कहा और फिर मार्च करने का हुक्म दिया। पहले तो फौजी उस आर्डर का मतलब नहीं समझे और प्रश्नसूचक दृष्टि से कर्नल का मुंह ताकते रहे। लेकिन औरों को चलते देखकर वे भी चल पड़े।

सिक्ख कम्पनी के आगे एक आदमी ने नारा लगाया, "जो बोले सो निहाल! सत सिरी अकाल!" पीछे-पीछे नपे-तुले कदम 'लेफ्ट राइट! लेफ्ट राइट!' करते हुए चल रहे थे।

डोगरा कम्पनी का एक जवान बोल उठा, "बोलो श्री रामचन्द्र की जै।" पहले तो सिपाहियों ने मुस्कराकर एक-दूसरे की तरफ देखा और फिर दूसरा नारा बुलन्द हुआ—"काली माई की जै!" 'लेफ्ट राइट! लेफ्ट राइट!' करते हुए कम्पनी आगे बढ़ी।

"अल्लाह हो अकबर!" मुसलमान कम्पनियों के आगे-आगे चलते एक मौलवी ने नारा बुलन्द किया।

लालू इन नारों से बहुत प्रभावित हुआ। हर्षोन्माद से उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह सचमुच विलायत जा रहा था! लेकिन उसे डर था कि वे लोग जंग में लड़ते-लड़ते मर जाएंगे। उसके पेट में कुलबुलाहट-सी हुई। उसने सोचा, बारक से आने से पहले अगर वह पाखाने हो आता तो अच्छा रहता। लेकिन इसी वक्त बैंड बज उठा, जिसकी आवाज़ में लालू की सारी खुशी, डर और पेट की कुलबुलाहट खो गई।

३९

सरकार की मशीनरी बड़ी निपुणता से काम कर रही थी। सारी फिरोज़पुर ब्रिग्रेड कराची बन्दरगाह के स्टेशन पर पहुंच गई थी और ट्रेनों में आराम कर रही थी। आध-आध घंटे में दूसरी ब्रिगेडों के सिपाहियों से भरी ट्रेनें स्टेशन पर पहुंच रही थीं।

हर रेजीमेंट से पचास-पचास लोगों की टुकड़ी भारी किट, मशीनगन, खच्चर, अफसरों के घोड़े जहाज़ पर लादने के लिए भेजी गई थी और सारी रेजीमेंटें यूनिटों में बंटकर मार्च करती हुई जहाज में जा रही थीं। कनॉट रेंजर्ज, १२९वीं बलोच रेजीमेंट जा चुकी थीं और उसके बाद ६९वीं राइफल्ज़ की बारी थी।

लालू रास्ते में खूब सोया था। कई दिनों की सरगर्मी के बाद उसका शरीर थक गया था। ट्रेन की एकरस आवाज़ में लालू की सारी भावनाएं और संवेदन डूब गए थे। कभी-कभी वह सोचने की कोशिश करता था कि वह कहां जा रहा है। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि सरकार सचमुच लड़ रही है और सैकड़ों सिपाहियों के साथ लालू को भी दुश्मन के सिपाहियों का कत्ल करना पड़ेगा। लेकिन उसे यह पक्की तरह मालूम था कि लड़ाई चल रही है क्योंकि फौजी आर्डर में भी यह बात साफ तौर पर बताई गई थी, हालांकि बहुत-सी बातें सिपाहियों से छिपाकर रखी जाती थीं। लालू को खुशी थी कि वह विलायत जा रहा है लेकिन वह चाहता था कि उसकी रेजीमेंट को समन्दर पार के किसी और देश में भेजा जाए, जंग में न भेजा जाए क्योंकि वहां जान का खतरा था।

लेकिन उसने सोचा, यह नामुमकिन है। उसके शरीर में उत्तेजना छाई थी। कुछ अरसे के लिए तो उसे गांव से छुट्टी मिलेगी। विदेश में रहकर जब वह वापस गांव में लौटेगा तो लोग शायद पुरानी बातें भूल जाएंगे। लालू किसी अफसर की मदद से फौज से इस्तीफा देकर वापस खेतों पर चला जाएगा। उसने फैसला कर लिया था कि लौटने के बाद वह फौज में नहीं रहेगा।

उसने सोचा, उसकी मां रो रही होगी, क्योंकि उसने घर वालों को खत लिख दिया था कि वह मोर्चे पर जा रहा है। और उसका बाप? उसने अपनी पे-शीट में लिख दिया था कि उसकी सारी तनख्वाह उसके बाप को भेजी जाए। मुमकिन है, बूढ़े की हालत सुधर रही हो और धीरे-धीरे वह सारा कर्ज़ चुका दे। कम से

कम निहालू की एक परेशानी तो दूर हो जाएगी, क्योंकि शर्मसिंह की मौत से उसे गहरा सदमा पहुंचा था। वह इतना कमज़ोर हो गया था कि ज़्यादा दिन तक ज़िन्दा रहना मुश्किल था। फिर भी लालू को उम्मीद थी कि अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति से शायद बूढ़ा लालू के घर लौटने तक ज़िन्दा रहे। इसी शक्ति के बल पर तो बूढ़ा सत्तर बरस जी चुका था।

लेकिन न जाने क्यों विलायत की सभ्यता देखने की जिज्ञासा ने उसे हृदय-हीन बना दिया था। बाकी सारी बातें मन की भूल-भुलैयों में हल्की फुसफुसाहट बनकर रह गई थीं, जिन्हें वह मुश्किल से सतह पर ला रहा था। उसने अपने को ट्रेन की आवाज़ और नींद की खुमारी के हवाले कर दिया था।

इस वक्त वह किरपू और धन्नू के साथ जहाज़ पर सवार होने के आर्डर की बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था। उसने ट्रेन की खिड़की में से जलते हुए सूरज और चौड़ी सड़कों पर बनी ऊंची अंग्रेज़ी इमारतों को देखा। उसे अभी से नवीनता का अहसास हो रहा था।

जब लाइनें बनाकर बन्दरगाह पर जाने का हुक्म मिला तो लालू फौरन कूद-कर प्लेटफार्म पर चला गया। किरपू ने कहा, "ज़रा इस छोकरे को देखो, अभी विलायत नहीं पहुंचा, लेकिन अभी से अपने को मिस्टर खुशदिल समझने लगा है!"

लालू ने झट से जवाब दिया, "अगर तुम्हारी आंखों पर चरबी चढ़ गई है और तुम दुनिया की खूबसूरती को नहीं देख सकते तो मुझे खुश देखकर क्यों गालियां देते हो?"

लेकिन जब तिमंज़ली इमारतें, बैंकों, क्लबों और दफ्तरों के नीचे से गुज़रते वक्त लालू के दिल में एक अजब-सी घबराहट पैदा हुई तो वह इस चमचमाती हुई नई दुनिया का मज़ा न ले सका। वह अंधविश्वासी नहीं था, लेकिन अपने-आपसे बुड़बुड़ाया, 'कहीं किरपू चाचा की बात अपशकुन तो नहीं थी! कहीं उस पहाड़िये ने मुझे नज़र तो नहीं लगा दी!' भरकम बूटों से पक्की सड़क पर मार्च करते हुए उसका दिल ज़ोर से धड़क उठा। सड़क से कोलतार, कांक्रीट, तेल और समुद्र के नमकीन पानी की गन्ध आ रही थी।

फौजियों की टुकड़ियां बन्दरगाह के बड़े गोदाम की तरफ मुड़ीं। एक तख्ती पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, 'रल्ली ब्रदर्ज़ एक्सपोर्टर्ज़ एण्ड इंपोर्टर्ज़'।

'रल्ली' शब्द का उच्चारण करने के लिए उसने अपनी जीभ लपेटी—इस शब्द की ध्वनि कितनी परिचित थी। उसे याद आया, उसका बापू अनाज भरने के लिए शहर से बोरे खरीदकर लाता था और बेचने के लिए शहर ले जाता था। उन बोरों पर नीली स्याही में 'रल्ली ब्रदर्ज़' की मुहर लगी रहती थी। यह दुनिया कितनी छोटी है। रल्ली ब्रदर्ज़ कराची में और मानाबाद में भी मौजूद हैं। उनके बोरे नन्दपुर तक पहुंचते हैं।

उसने सोचा, काश, किसानों को मालूम होता कि उनके अनाज के खरीदार कितने ठाट-बाट से रहते हैं, तब कहीं वे अपनी ज़िन्दगी का रहन-सहन सुधारेंगे। लेकिन किसान गरीब हैं और कराची बंदरगाह पर बनी शानदार इमारत को देखकर मालूम होता है कि रल्ली ब्रदर्ज़ साहब लोग हैं। लालू सोचने लगा कि क्या ये साहब भी हिन्दुस्तानी व्यापारियों की तरह सस्ते दामों में अनाज खरीदते होंगे? कहीं ऐसा तो नहीं कि उनके एजेण्ट लाला लोग किसानों को चुपके-चुपके लूटते हैं?

"समन्दर! समन्दर!" अगली कतार के सिपाही चिल्ला उठे। गोदामों के पीछे खजूर के पेड़ों में से समन्दर का नीला पानी साफ दिखाई दे रहा था। बहुत-से सिपाहियों ने ज़िन्दगी में पहली बार समन्दर देखा था—वे अपनी कतारों से निकलकर इस दृश्य को देखने के लिए प्रार्थनाएं बुड़बुड़ाते और ईश्वर के अनेक नामों का उच्चार करते हुए किनारे की तरफ बढ़े।

लालू अभी भी तनकर चल रहा था। उसने देखा कि समन्दर का पानी आसमान की परछाई की वजह से नीला दिखाई दे रहा था। जहां-जहां बादलों की परछाई पानी में पड़ रही थी वहां पानी का रंग मटमैला था। जहां नीले आसमान की परछाई पड़ रही थी वहां समन्दर भी साफ नीले रंग का दिखाई दे रहा था।

डॉक पर पहुंचकर वे 'स्टैण्ड एट ईज़' की मुद्रा में खड़े हो गए। उन्हें एक फौजी जहाज़ में सवार होने का हुक्म मिला, जो उनके इन्तज़ार में खड़ा था। जहाज़ के ऊपर लिखा था—'एस० एस० मोंगरा।" ए कम्पनी के फौजी सिंगल कतार बनाकर जहाज़ पर जा रहे थे। हर फौजी अपना थैला कंधे पर रखकर ले जा रहा था और अचकचाती चाल से गेंग-वे की सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। दूसरी कम्पनियां अपनी बारी का इन्तज़ार कर रही थीं। इसी वक्त हवलदार लछमनसिंह खतों का एक पुलिन्दा लेकर आया और उसने लालू को एक टेलीग्राम देकर कहा, "यह डिपो से तुम्हारे नाम जहाज़ के पते पर भेजी गई थी।"

लालू ने पतले कागज़ के लिफाफे पर अपना नाम पढ़ा, 'सिपाही लालसिंह, बी कम्पनी, ६८वीं राइफलज़' और वह तार का मज़मून भांप गया।

उसके मन के किसी कोने में यह शंका उठ रही थी कि शायद तार उसके बाप के बारे में न हो। लिफाफा फाड़कर उसने तार निकाली, उसकी बंदूक हाथों से गिरते-गिरते बची। तार में लिखा था, "बाबा निहालू का स्वर्गवास हो गया है। —हरनामसिंह।"

लालू भावशून्य ढंग से तार के गुलाबी कागज़ की तरफ देखता रहा और बार-बार तार के शब्दों को फुसफुसाकर दुहराने लगा जैसे वह अपने भीतर भावुकता पैदा करने की कोशिश कर रहा हो। फिर वह लछमनसिंह की तरफ देखकर मुस्कराया और क्षमा-याचना के स्वर में बोला, "मेरा बापू चल बसा।" इसी वक्त उसके होंठ कांपने लगे और अनजाने में दो आंसू उसकी आंखों से ढुलक पड़े।

लछमनसिंह खड़ा दूसरे खतों को तरतीब से छांट रहा था। उसने हमदर्दी से कहा, "बड़ा अफसोस है पुत्तर।" उसने अपने होंठों से सान्त्वना की आवाज़ निकाली। लालू सर झुकाए खड़ा था। लछमनसिंह ने कहा, "कोई बात नहीं पुत्तर! तुझे मज़बूत होना चाहिए। कमज़ोरी तो हारने वाले आदमी की निशानी होती है।" फिर वह जान-बूझकर लापरवाही का उपक्रम करके वहां से चल दिया मानो वह लालू के दुख में हस्तक्षेप करना शिष्टाचार के विरुद्ध समझता हो।

किरपू ने कहा, "कोई बात नहीं पुत्तर, एक-एक करके हम सब लोगों को वहीं जाना है। तू अभी जवान है। जब तक सांस है, तब तक ज़िन्दगी है।"

लालू अभी भी खामोश खड़ा था। वह अपने चेहरे को सिकोड़कर कुछ सोचने या महसूस करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसका खून जम गया था। वह मौत के रहस्य को नहीं समझ पाया था, सिर्फ डर उसके सर पर मंडरा रहा था।

घन्नू बाबा ने तसल्ली दी, "पुत्तर, ईश्वर की मर्ज़ी को कोई नहीं टाल सकता। यह हमारे कर्मों में लिखा है। इन्सान को धीरज रखना चाहिए। जो होता है ईश्वर की मर्ज़ी से होता है।"

"तुम्हारे बापू की क्या उम्र थी? उसे क्या हुआ था? वह क्या करता था?" सूबासिंह ने सवालों की बौछार की।

लालू ने बेचैनी से कहा, "चलो चलें। हमारी कम्पनी जा रही है।"

उसने अपना सामान उठाकर कंधे पर रख लिया और धीरे-धीरे सीढ़ियां

चढ़ने लगा। अगली कतार के सिपाही उत्तेजित स्वर में बातें कर रहे थे और डेक पर खड़े फौजियों का अभिवादन कर रहे थे। इस वक्त उनमें मानवीय भावनाएं पहले से ज़्यादा दिखाई दे रही थीं, फिर भी वे सिपाही थे, नियम कायदों के पाबंद, जो कभी-कभी अपनी ज़मीनों के बारे में, पैसे के बारे में और रिश्तेदारों के बारे में सोच लेते थे—दुनिया में उन्हें और किसी बात की परवाह नहीं थी।

'इनमें से कोई आदमी भी नहीं जान सकता कि मेरे दिल पर क्या बीत रही है।'

और दूसरी चींटियों की तरह वह भी कतार में चल पड़ा। वह संवेदनशून्य हो गया था, क्योंकि मन ही मन उसने अपने और बापू के बीच बहुत बड़ा फासला रख छोड़ा था—बूढ़े की मौत की खबर से न उसे दुःख हुआ था न ही जी हल्का हुआ था। उसने डेक के नीचे से समन्दर के मटमैले पानी को देखा। उसकी आंखों के सामने ज़मीन पर लेटे हुए बापू का लाल चेहरा आ गया। लालू लड़खड़ाने लगा। अचानक उसकी नज़र डेक के नीचे खड़े नीली वर्दी वाले एक अंग्रेज़ अफसर पर पड़ी जो जहाज़ में काम करता था। लालू ने अपने को संभाल लिया। उसने सोचा कि शायद अफसर को सैल्यूट करना पड़े।

"लालू, आ चलकर देखें जहाज़ भीतर से कैसा है।" सूबासिंह ने लालू की आस्तीन खींचते हुए कहा। जब वे सामान रख चुके तो सूबासिंह ने आवाज़ दी, "आ किरपू चाचा, धन्नू ओए, आओ चलें।"

लालू चुपचाप उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। जहाज़ पर सवार होकर वह खुश था, लेकिन उसे आत्मग्लानि भी हो रही थी कि अभी-अभी उसके बाप की मौत हुई है और वह खुश है। वह दोबारा अपने बापू के बारे में सोचने लगा। वह बार-बार अपने को याद दिला रहा था कि उसे बापू के बारे में सोचते रहना चाहिए। डेक के एक कोने पर पहुंचकर वह अपने साथियों को छोड़कर दूसरी जगह चला गया, जहां बिलोच फौजी खड़े समुद्र को देख रहे थे और अपनी भाषा में बातें कर रहे थे।

लालू ने समुद्र की लहरों के पार क्षितिज की तरफ देखा, जहां धुंध छाई थी। क्षण-भर के लिए उसे अपनी मां का पीला क्लान्त चेहरा दिखाई दिया। उसकी मां विलाप करती हुई अपने बाल नोंच रही थी। वह जानता था कि बापू की मौत के बाद कई दिन तक औरतें अपने सर और छातियां पीट-पीटकर सियापा करेंगी।

सीमेण्ट की आधुनिक इमारतों, शहर की छतों और बंदरगाह से दूर लालू

की नज़रें अपने गांव के कच्चे झोंपड़ों और दरवों को देख रही थीं, जहां मर्द, औरतें और बच्चे घर के कोठे में बैठकर बूढ़े के लिए विलाप करते-करते पसीने से तर हो गए थे। लालू की आंखों के आगे अतीत के कुछ दृश्य घूम गए। स्कूल से लौटने में देरी होने के कारण उसके बड़े भाई ने उसे पीटा है और वह कोठरी के कोने में बैठा बिसूर रहा है। उसकी मां अपनी तेज़ आवाज़ में केसरी को फटकार रही है, दयालसिंह जाप कर रहा है और शर्मसिंह को समझा रहा है कि वह अपनी बीवी की तरफदारी करने के लिए मां से झगड़ा न करे। बूढ़ा नींद में खुर्राटे भर रहा है। अचानक वह जाग उठता है और पागल कुत्ते की तरह खोखियाने लगता है और गुजरी के बाल पकड़कर उसे घसीटने लगता है—परिवार के वातावरण में शान्ति लाने के लिए वह शर्मसिंह को चांटे मारता है। और अब शर्मसिंह और बूढ़ा दोनों इस दुनिया से चले गए हैं और वह लड़का जो कोठरी में बैठकर उनसे चिढ़ता था वह बहुत दूर जा रहा है···

सामने जहां रेतीले तट पर समुद्र की फेनिल लहरें टकरा रही थीं, खजूर के पेड़ों में सरसराहट हो रही थी। लालू के भीतर स्नेह और कोमलता की एक लहर उमड़ आई—उसने पिछली सभी बातों को माफ कर दिया।

उसे घर की याद सता रही थी, उसकी नज़रें कराची से दूर विस्तृत मैदानों में बसे शहरों और गांवों के बीच नंदपुर की तलाश कर रही थीं।

लेकिन उसके मानसपटल पर गांव की रेखाएं नहीं उभर पा रही थीं। कभी घुग्घी का चेहरा उसके सामने आ जाता, कभी कुएं की परिक्रमा करने वाले ठिब्बा और रोंडू की पिछली टांगें सामने आ जातीं, फिर उसकी नज़र के सामने भेंगी आंखों वाले, मक्कार महन्त नंदगीर का दुराचारी वक्र चेहरा दिखाई देने लगता जो गांजा पी-पीकर गले से पीले रंग की बलगम फेंक रहा था, कभी ज़मींदार की घनी दाढ़ी, मुक्का उठाए सेठ चमनलाल की सूरत—सब एक साथ दिखाई देतीं। ये आकृतियां अवास्तविक और धुंधली थीं, वे जल्द ही गायब हो गईं और लालू के मन में कई किस्म की भावनाएं एक साथ पैदा हुईं जिनसे उसके स्नायु झनझना उठे। वह अपनी उंगलियों से रेलिंग के पीतल के बने जोड़ों को बजाने लगा। उसने कनखियों से अपने आसपास खड़े फौजियों को देखा। उसे डर था कि कोई उसे इस मुद्रा में न देख ले। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और उसके सर के भीतर नगाड़ा-सा बज रहा था।

उसने मन ही मन सोचा कि उसे बहुत सारी तकलीफें झेलनी पड़ी हैं। बाल कटवाने पर और माया वाली घटना पर उसे व्यर्थ में ही इतना जलील किया गया था। वे लोग नहीं समझ सके कि उन दिनों माया के प्रेम ने उसके दिल को कितना स्वच्छन्द बना दिया था, वे नहीं जानते थे कि उसकी नज़रों में माया कितनी सुन्दर थी! कितनी कोमल, सजीव और प्यारी! मास्टर हुकमचन्द माया को पढ़ाने आते थे। पढ़ाई-लिखाई के बावजूद उसका चेहरा सोने की तरह दमकता था, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें सरोवर की तरह थीं। लालू ने कल्पना में माया के पैरों को, होंठों को, बालों को, छातियों को और उसकी अदाओं को देखा! उसकी आवाज़ को सुना! माया ने उसके दिल में खुशी का कैसा तूफान पैदा कर दिया था! उसे कितना पागल बना दिया था! उस रात जब वे लोग मेले में जा रहे थे, और लालू ने माया को गोद में उठाकर चारे की गाड़ी से नीचे उतारा था तो उसे कैसी कमज़ोरी महसूस हुई थी! कैसा डर लगा था! उसने सोचा था कि वह क्षण आखिरी क्षण था जो कभी नहीं लौटेगा और वही क्षण उसकी ज़िन्दगी को बर्बाद करके छोड़ेगा!

इन स्मृतियों ने जैसे उसके शरीर का सारा खून खींच लिया था, वह सर से लेकर पैर तक पसीने में तर हो गया था। लालू ने सोचा कि यात्रा की रोमांचकारी उत्तेजना ने, फौजियों की भीड़भाड़ ने और उस शोक-भरी खबर ने उसकी यह हालत कर दी थी! उसने अपने भीतर के तूफान को शान्त करने के लिए समुद्र-तट पर छाई गुलाबी धुंध की तरफ देखा, लेकिन घर की ज़िन्दगी की स्मृतियां बार-बार उसके दिल को कचोट रही थीं, स्मृतियों की धुंधली रेखाओं ने उसे बेचैन और असन्तुष्ट बना दिया था। लालू ने सर को झटका देकर किनारे की तरफ देखा जो समन्दर की लहरों से कठोर कंपन में बातें कर रहा था जैसे उसमें पीड़ा की टीसें उठ रही हों। कुछ देर तक लालू का मन भावनाशून्य बना रहा।

फिर उसकी आंखों के सामने दयालसिंह की बलिष्ठ आकृति आई। वह खेत में हल चला रहा था। पुराने हल की फाल को एक बरस से तेज़ नहीं किया गया था, ठिब्बा और रोंडू धीमी चाल से आगे-आगे चल रहे थे। उस निर्मम आसमान के नीचे वे आकृतियां छाई रहीं। दयालसिंह जाप करता हुआ कह रहा था, "जो ईश्वर को मंज़ूर है वही होगा।" बैल पूरी ताकत से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। लालू ने महसूस किया कि उसके बाप और शर्मसिंह की मौत के बावजूद, लालू की गैरहाज़री के बावजूद, इस बात के बावजूद कि ज़मीन के मुकद्दमे का

कोई फैसला नहीं हुआ और शर्मसिंह की पैरवी के लिए परिवार को तीन एकड़ ज़मीन फज़लू को बेचनी पड़ी है—खेत का काम जारी रहेगा।

चाहे ऊपर से दयालसिंह का व्यक्तित्व आध्यात्मिक था और मालूम होता था कि उसे इस संसार में कोई दिलचस्पी नहीं है, फिर भी वह सांसारिक मामलों से तटस्थ नहीं रह सकता था। अब घर की सारी जिम्मेदारी उसीपर आ गई है, इसलिए उसे अध्यात्म छोड़कर भौतिकवादी बनना पड़ेगा। पिछली बार जब लालू गांव गया था तो गांव के लोग शरीर की ज़रूरतों के बारे में ही बातें कर रहे थे, उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि वे शरीर कैसे ढक पाएंगे, लगान कैसे चुकाएंगे। वे ज़मींदार के ज़ुल्मों की और साहूकार सेठ चमनलाल की शैतानी-भरी मक्कारी की चर्चा कर रहे थे और अगली फसल के बारे में तरह-तरह के अनुमान लगा रहे थे।

इसी वक्त सूबासिंह की ऊंची जवान आवाज़ सुनाई दी, "ओए ! लालसिंहा ओए ! बी कम्पनी आर्डर लेने के लिए डेक पर इकट्ठी हो रही है। चल। हवलदार लछमन तुझे बुला रहा है !" लालू ने कोई जवाब नहीं दिया न ही वह अपनी जगह से हिला। वह बड़बड़ा रहा था, 'आर्डर्ज़...'

गोदाम के ऊपर आसमान में एक बाज़ मंडरा रहा था और डॉक्स के पास कुछ समुद्री चिड़ियों का शिकायत-भरा स्वर सुनाई दे रहा था जहां समन्दर की लहरें किनारे के पत्थरों से टकरा रही थीं। लालू की मां कहती थी कि ईश्वर पक्षियों द्वारा गुप्त सन्देश भेजता है ! लालू ने सोचा, उसकी मां के अन्धविश्वास कितने व्यर्थ थे।

वह सोचने लगा, 'बापू की मौत का मेरे मन पर क्या असर हुआ है ?' इस सवाल का उसे कोई जवाब न मिला। सिर्फ उसकी आंखों के सामने खेतों की लम्बी कतारें दिखाई दीं जिनपर लम्बे, मैले-कुचैले, पसीनेसे तर किसान हल चला रहे थे, जो हांफते हुए बैलों को गालियां दे रहे थे। हलों की फालें धरती की सीली परतों में नीचे, और नीचे घुसती जा रही थीं और नन्दपुर गांव सुबह की धूप की गुलाबी आभा में नहाया दिखाई दे रहा था। टूटे-फूटे मकानों की दीवारों पर उपले पाथे गए थे जहां कौए 'कां-कां' करते हुए उपलों में चोंचें मार रहे थे। उसकी मां कह रही थी, 'उड़ जाओ कव्वो, उड़ जाओ। मैं तुम्हें मीठी रोटियां खिलाऊंगी। पहले बताओ मेरे बेटे की क्या खबर लाए हो ?'

नन्दपुर की स्मृतियों के भंवर में उसका मन चकरा रहा था। उसने बुदबुदाकर हवा के झोंकों को सन्देश दिया, "मैं फिर तुम्हारे पास लौटूंगा। लेकिन अभी नहीं—कुछ दिनों तक नहीं।..."

और इन शब्दों के साथ ही उसके शरीर में एक भयंकर कंपकंपी उठी और उसके स्नायु झनझना उठे। क्षण-भर के लिए उसे उन सारी दुखदायी उत्तेजनाओं से मुक्ति मिल गई जो भारी पत्थर बनकर उसके मन पर छाई थीं और जिनकी वजह से वह सर्द हो गया था। एक शान्ति-भरी खामोशी हर्षोन्माद की तरह उसकी नस-नस में व्याप गई। आसमान तले समन्दर की लहरें खुशी से उछल रही थीं और सफेद चमकदार झाग चट्टानों से टकरा रहे थे—जहां तक नज़र जाती थी, सफेद झाग ही झाग दिखाई दे रहे थे। समन्दर के विद्रोही गर्जन में फौजियों की बातचीत और हंसी की आवाज़ें डूब गई थीं।

सूबासिंह की आवाज़ फिर सुनाई दी, "ओए लालू! आ! ओए लालू! फैटिग पार्टियां बन रही हैं!" लालू ने मुड़कर देखा। उसकी पल्टन के सिपाही कतार में खड़े हो रहे थे।

लालू ने अपने पीछे मुड़कर दूर तक फैली धरती, आसमान और समन्दर के मिलन को देखा। फिर उसने अपने कन्धों को एक झटका दिया और डेक की तरफ भागा जहां सिपाही कतारें बनाकर खड़े हो रहे थे।

○ ○ ○